निवेदन

१८५७ का प्रथम स्वतन्त्रता सग्राम असफल हो जाने के उपरात देश मे मृत्यु जैसी निस्तब्धता और निष्क्रियता छा गई। ऐसा प्रतीत होता था कि मानो समस्त राष्ट्र निश्चेष्ट और निर्जीव हो गया हो। क्रूर ब्रिटिश शासन के भयानक दमन, देश की स्वतन्त्रता के लिए युद्ध करने वालो के विरुद्ध क्रूरता को भी भयभीत कर देने वाली नृशसता, तोपो के मुह पर बाध कर उनके शरीरो की धज्जिया उडा देने का वीभत्स और क्रूर प्रदर्शन, पेडो से लटके हुए निरपराध व्यक्तियो के शव, सब मिला कर ब्रिटिश शासन की अमानवीय क्रूरता से समस्त देश आतकित होकर सहम गया। यही कारण था कि देश जैसे निश्चेष्ट और निर्जीव हो गया हो ऐसा प्रतीत होता था। सम्पूर्ण देश मे भय और आतक छा गया था। जिस किसी पर तनिक भी सदेह हो गया कि उसकी सहानुभूति विद्रोहियो के साथ थी उन्हे बिना किसी जाच पडताल अथवा अभियोग के फासी पर लटका दिया गया अथवा गोली मार दी गई।

१८५७ मे जिन बलिदानी वीर देशभक्तो ने ब्रिटिश दासता के अपमान जनक जुए को अपने कधो पर से उतार कर फेक देने का प्रयत्न किया उनमे से अधिकाश या तो रणभूमि पर देश के स्वतन्त्रता सग्राम मे वीर गति को प्राप्त हो गए, अथवा मानवता को लज्जित और कलकित करने वाले अग्रेजो के नृशस अत्याचारो के शिकार होकर देश की स्वतन्त्रता के लिए अपनी आहुति दे चुके थे। वे कतिपय स्वतन्त्रता-सग्राम के नेता जिनका देश मे छिप कर रह सकना सम्भव नही था देश छोड कर नैपाल, अफगानिस्तान तथा अन्य पडौसी देशो मे चले गए। परन्तु उनमे से कुछ देश मे ही रह कर भूमिगत हो, सन्यासियो अथवा फकीरो का वेश धारण कर अनुकूल समय की प्रतीक्षा कर रहे थे।

अग्रेजो के अमानवीय नृशस अत्याचारो से जो भय और आतक देश मे फैल गया था उसके कारण बाह्य रूप से ऐसा अवश्य लगता था कि मानो देश निस्तेज और निष्क्रिय हो गया हो परन्तु वास्तव मे ऐसा नही था। भूमिगत क्रातिकारी देशभक्त देश मे पुन क्रातिकारी भावना को जागृत करने का प्रयत्न कर रहे थे। वे उपयुक्त समय की प्रतीक्षा मे थे।

उन भूमिगत क्रातिकारियो, राष्ट्रीय सन्यासियो, और फकीरो के प्रयत्नो के फलस्वरूप देश मे पुन जागृति उत्पन्न होने लगी। देशभक्त स्वाभिमानी भारतीयो को अपमान जनक और राष्ट्र को पद दलित करने वाली दासता अखरने लगी थी। वे देश पर विजातियो का शासन सहन नही कर सकते थे। पर चतुर अग्रेजो ने देश को निशस्त्र कर दिया था बदूक, पिस्तौल आदि विस्फोटक शस्त्र ही नही तलवार कटार आदि पर भी कडा प्रतिबध लगा दिया गया और एक ऐसा देशद्रोही वर्ग देश मे उत्पन्न कर दिया था कि गौराग प्रभुओ की चाटुकारिता मे ही अपने जीवन का साफल्य मानता था। अग्रेजो की सत्ता स्थापित होने के पूर्व देश मे जो अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई थी उसके कारण एक वर्ग ऐसा भी उत्पन्न हो गया कि जो अग्रेजो के शासन का प्रशसक बन गया था। भारत के परम्परागत राजवश हतप्रभ और शक्तिहीन हो गए। वे अग्रेजो की दया और अनुग्रह पर अवलम्बित रहने लगे। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध कोई सगठित अभियान करना असम्भव हो गया। ऐसा प्रतीत होने लगा कि सर्व साधारण

मे स्वतन्त्र होने की भावना सर्वथा लुप्त हो गई हो। शासन का ऐसा आतंक छाया हुआ था कि राष्ट्रीय विचारो के शिक्षित भारतीय जन एकात मे और छिप कर ही देश की दुर्दशा पर परस्पर बात करते थे। प्रगट मे कोई भी राष्ट्रीय विचारो का व्यक्ति देशभक्ति की बातें करने का साहस नही करता था।

ऐसे निराशा और अधकार के समय मे क्रातिकारी बलिदानियो ने स्वतत्रता की भावना को जागृति करने, निर्जीव और निश्चेष्ट राष्ट्र मे स्वतत्रता प्राप्ति की भावना को जमा कर एक बार पुन. उठ खडे होने का सदेश दिया। गुप्त षडयत्रो और सशस्त्र विद्रोहो के द्वारा देश को स्वतत्र बनाने का अत्यन्त जोखिम भरा प्रयत्न किया। देश में सशस्त्र क्राति करने के इस खतरनाक प्रयास मे लाखो क्रातिकारी देशभक्त मारे गए, हजारो 'वन्दे मातरम्' का जयघोष करते हुए फासी के तख्ते पर चढ गए, लाखो को आजन्म देश से निर्वासित कर काले पानी (अडमन तथा निकोबार) भेज दिया गया। जहा अमानवीय क्रूर अत्याचारो के कारण या तो वे मर गए अथवा पागल हो गए।

यद्यपि सशस्त्र क्राति करने के उनके प्रयत्न सफल नही हुए, परन्तु साधारण भारतियो के हृदयो मे जो अग्रेजो का आतक बैठ गया था, अग्रेज अजेय है, उनकी महान शक्ति को चुनौती नही दी जा सकती, भारत को उनकी दासता मे रहना ही होगा, देश पुन कभी भी स्वतत्र नहीं हो सकता—ऐसी राष्ट्र मे व्याप्त शौर्य हीन भावना और नैराश्य को उन्होने अपने साहसी आत्म बलिदान से छिन्न भिन्न कर दिया।

जब क्रातिकारी बलिदानी युवक दम्भी और अत्याचारी अग्रेज अधिकारियो और देशद्रोही भारतीयो को गोली मारते, उन पर बम फेंकते और पकडे जाने पर 'वन्दे मातरम' का जयघोष करते हुए अपने प्राणो की मातृभूमि की स्वतत्रता के लिए आहुति देते तो जैसे निस्तेज शौर्यहीन भारत में शौर्य जाग उठता। सर्व साधारण के हृदय मे गहरा बैठा हुआ मनोवैज्ञानिक अग्रेजो का आतक नष्ट हो जाता, स्वतत्रता की चाह जनसाधारण मे तीव्र हो उठती। एक क्रातिकारी बलिदानी का बलिदान लाखों करोडो भारतीयो को झकझोर देता, देश को स्वतत्र करने की भावना से अनुप्राणित कर देता, उनमे आशा का सचार करता और अग्रेजो की अजेयता की गलत धारणा को चकनाचूर कर देता।

जब वीर क्रातिकारी छापेकर बन्धुओ ने अत्याचारी रैण्ड' की हत्या की, युवक कनाईलाल दत्त को फासी हुई और लाखो भारतीयो ने उसके अन्तिम सस्कार के समय शव के जुलूस मे "जब जात्रे जीवन चोले" को गाकर लाखो अश्रुपूरित भारतीयो ने कलकत्ते को गु जायमान कर दिया, जब वीर शहीद मदनलाल धींगरा ने लदन मे कर्नल वायली को गोली मारदी और केवल भारतीयो ने ही नही ससार के सभी परतत्र देश के देशभक्तो ने एक स्वर से कहा आत्म बलिदानी वीर धींगरा हम तुम्हे शतशत नमस्कार करते है, जब खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकसी के आत्म बलिदान से सम्पूर्ण भारत क्रोध से उन्मत्त हो उठा और खुदीराम की भस्मि को मगलमय प्रभू के पावन प्रसाद की भाति लाखो भारतीयो ने सोने, चादी, हाथीदात और साधारण धातु की डिब्बियो मे भर कर अर्चना और पूजा के लिए सुरक्षित रक्खा, वीर भगतसिंह और चन्द्रशेखर आजाद के आत्म बलिदान से समस्त देश जिस प्रकार रोष और शोक से सन्तप्त हो उठा तो लोगो ने देखा कि एक क्रातिकारी के आत्म बलिदान से जैसी प्रबल क्रातिकारी शक्ति उत्पन्न होती है, राष्ट्र के मानस पर जैसा चमत्कारी प्रभाव पड़ता है,

जन साधारण के अन्तर मे देशभक्ति और स्वतत्रता की चाह जैसी गहन होती है, वैसी शक्ति और भावना लाखो सभायें करने, भाषण देने और प्रस्ताव पारित करने से भी उत्पन्न नही हो सकती। यही कारण था कि भविष्य मे सरकार जिन क्रांतिकारियो आत्म बलिदानियो और देशभक्तो को फासी देती थी उनके शवो को उनके सम्बन्धियों को नही देती थी। उनका जेल मे अथवा गुप्त रूप से अन्तिम संस्कार करवा देती थी क्योंकि वह उनके शव के जुलूस और आत्म बलिदान का सर्व साधारण के मानस पर चमत्कारी प्रभाव को देख चुकी थी।

उद्दात भावनाओ से प्रेरित देशभक्त क्रातिकारियो के आत्म बलिदान से उत्पन्न होने वाली राष्ट्र व्यापी प्रेरक शक्ति के रहस्य को जो नही समझते वे अज्ञ व्यक्ति देश की स्वतत्रता के लिए देशभक्त क्रातिकारी आत्म बलिदानियो द्वारा किए गए आत्म बलिदान की गरिमा और महत्व को भी नही समझ सकते। परन्तु प्रत्येक विचारवान विज्ञ भारतीय उन क्रातिकारी आत्म बलिदानियो के प्रति श्रद्धा से नतमस्तक हुए बिना नही रह सकता जिनके साहसी क्रातिकारी कार्यो और आत्म बलिदान के परिणाम स्वरूप ही देश मे मातृभूमि को स्वतत्र बनाने की भावना बलवती हो उठी थी, और जिसका राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ने लोकशक्ति को उत्पन्न करने के लिए उपयोग किया था। यदि मातृभूमि की दासतान की शृखलाओ को काटने के लिए उन देशभक्त दीवानो ने अपने प्राणो की आहुति न दी होती तो महात्मा गाधी के नेतृत्व मे जो राष्ट्र व्यापी लोक शक्ति उत्पन्न हुई वह नही होती।

वास्तविकता यह थी कि भारत की स्वतत्रता के सग्राम मे क्रातिकारी आत्म बलिदानी 'हरावल' अगली पक्ति मे थे और असहयोग आन्दोलन मे जेल जाने वाले और लाठी खाने वाले पिछली पक्ति मे थे। भारतीय स्वतत्रता के उस युद्ध मे दुर्भाग्यवश उन दो राष्ट्रीय विचार धाराओ का मिलन नही हो सकता। प्रात. स्मरणीय नेताजी सुभाषचन्द्र क्रातिकारी बलिदानी राष्ट्रीय विचारधारा की चरम सफलता के प्रतीक थे। उन्होने प्रयत्न किया कि भारत को स्वतत्र बनाने के लिए द्वितीय महायुद्ध के समय जो दैवी प्रदत्त अनुकूल और सुविधाजनक अवसर आया था उसका उपयोग कर बृटेन को भारत से बलपूर्वक खदेड दिया जावे। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के ज्ञाता प्रात स्मरणीय नेता जी का कहना था कि द्वितीय विश्व युद्ध मे ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियो का उदय हो गया है कि यदि मित्र राष्ट्रो की उस युद्ध मे विजय भी हो जावे। (उस समय मित्र राष्ट्रो की स्थिति अत्यन्त निर्बल थी) तो भी बृटिश साम्राज्य का विघटन होना अवश्यम्भावी है। भारत अवश्य स्वतत्र होगा कोई शक्ति भारत को स्वतत्र होने से नही रोक सकती। परन्तु यदि अग्रेजो को बलपूर्वक भारत से खदेड दिया गया तो भारत अविभाजित स्वतत्र होगा परन्तु यदि अग्रेजो से समझौता करके और बातचीत करके देश स्वतत्र हुआ तो देश विभाजित होकर स्वतत्र होगा। पर देश के अविभाजित स्वतत्र होने के लिए दोनो ही राष्ट्रीय विचार धाराओ का मिलन होना आवश्यक था। दुर्भाग्यवश वे नही मिल सकी और उसका मूल्य भारत को विभाजित और खडित होकर चुकाना पड़ा।

स्वतत्रता प्राप्ति के उपरांत प्रत्येक विचारवान देशभक्त भारतीय ने आश्चर्य और क्षोभ के साथ अनुभव किया कि भारत को स्वतत्र बनाने मे उन पागल देशभक्त बलिदानी क्रांतिकारियो का जो अत्यन्त गौरवपूर्ण हिस्सा रहा है उसकी उपेक्षा की जा

रही है। स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास लेखको ने उनकी उपेक्षा की, देश ने उनकी प्रेरणादायक स्मृति को चिर स्थायी बनाने का कोई प्रयत्न नही किया। कृतघ्नता की पराकाष्टा हो गई जब वीर आत्म बलिदानी क्रातिकारियो को भुला देने का प्रयत्न किया जाने लगा। आज की पीढी यह भी नही जानती कि भारत की स्वतन्त्रता के लिए लाखो बलिदानी क्रातिकारियो ने हसते हसते अपने प्राणो की आहुति दी थी। जिन्होंने मातृभूमि को स्वतत्र करने के लिए यह शपथ ली थी कि उनका जीवन केवल मातृभूमि को स्वतत्र करने के कार्य मे ही लगेगा। उन्होने अपना व्यक्तिगत सुख, परिवार, प्रियजनो को छोड दिया और जो "करो सब निछावर बनो तुम फकीर" मत्र का जाप करते हुए बलिदान यज्ञ मे अपनी आहुति देने के लिए कूद पड़े थे। जिनके रुधिर और हड्डियो से मातृभूमि की स्वतन्त्रता का यह भवन खडा हुआ है—उनको हम भारतीयो ने भुला दिया। हमारे इस अशोभनीय आचरण पर स्वय कृतघ्नता लज्जित हुई होगी।

उन देशभक्त क्रातिकारियो द्वारा अपना सर हथेली पर रख कर मातृभूमि की बलिवेदी पर प्राणोत्सर्ग करने की परम्परा से आत्म विभोर होकर कवि की वाणी से फूट पडा।

"शहीदो की चिताओ पर लगेंगे हर बरस मेले, वतन पर मरने वालो का यही बाकी निशा होगा।"

तो सम्भवत. वह भूल गया कि स्वतन्त्रता के उपरात देश उन हुतात्माओ को सर्वथा भूल जावेगा। कवि, लेखक, साहित्यकार तथा इतिहास की लेखनी उनकी यशोगाथा लिखने और कीर्ति रक्षा के लिए नही उठेगी वह तो ऊपर लिखी पक्तियो को क्रातिकारी बलिदानियो की नीचे लिखी भावना को सुन कर लिखने के लिए प्रेरित हुआ था।

"सर फरोशी की तमन्ना आज मेरे दिल मे है।
देखना है जोर कितना बाजुये कातिल मे है,।"

राजस्थान के महान क्रातिकारी स्वर्गीय विजय सिह पथिक ने देश वासियो को क्रातिकारियो के प्रति अपने कर्त्तव्य की ओर ध्यान दिलाते हुए "भूल न जाना" शीर्षक कविता मे लिखा था।

"न भूल जाना खुशी के दिन,
तुम वतन परस्तो के वे फिसाने।
कि जिनके बदले हुए मुय्यसर है,
ये जशन, महफिल और तराने।
लेटो पलग पर तब याद करना,
उन नौजवानो की जानबाजी।
जिन्होने फासी के तख्त पर ही,
थे नीद लेने को पैर ताने। .... इत्यादि।

उन्हें क्या पता था कि स्वतत्र हो जाने पर भारत, अपने उन शहीदो की प्रेरणादायक जीवनी को भुला देगा। स्वतन्त्रता के उपरात राष्ट्रीयता और गहन देशभक्ति की भावना क्षीण हो गई। गहन राष्ट्रीयता और देशभक्ति की भावना को देश में बलवती बनाने का हमने कोई प्रयत्न नही किया। देश यह भूल गया कि जितना त्याग, तपस्या और बलिदान देश को स्वतत्र बनाने के लिए आवश्यक था उससे दस गुना

अधिक त्याग, तपस्या और वलिदान की आवश्यकता देश का निर्माण करने उसको समृद्धि शाली और शक्तिशाली वनाने के लिए अपेक्षित है। देश सर्वोपरि है—जाति धर्म, सम्प्रदाय, प्रदेश, वर्ग, भाषा, लिंग के भेद देश भक्ति का स्थान नही ले सकते। देश वासियो को आज भी क्रातिकारियो का वह प्रेरणादायक मत्र सर्वदा याद रखने की आवश्यकता है। देश के लिए—"करो सव निछावर वनो तुम फकीर"

देश की स्वतत्रता के लिए जिन देशभक्तो ने अपना सर्वस्व माता के चरणो में अर्पित कर दिया उनके इस मत्र को भूल जाने का परिणाम आज हमारे सामने प्रत्यक्ष है। सत्ता के लिए देश मे अशोभनीय प्रतिस्पर्द्धा, आया राम गया राम का लज्जाजनक आचरण, प्रदेशवाद, वर्ग विद्वेष, भाषावाद, सम्प्रदायवाद, जातिवाद का ताण्डव नृत्य देश में सर्वत्र देखने को मिल सकता है। भ्रष्टाचार चरम सीमा को पहुच गया है और जनतत्र को खतरा उत्पन्न हो गया है। यही नही देश की स्वतत्रता और एकता के लिए भी खतरा उत्पन्न हो गया है। अतएव आज देश मे पुन गहन देश भक्ति और राष्ट्रीयता की भावना को उत्पन्न करने की आवश्यकता है। इसके लिए हमे नई पीढी को, देश की तरूणाई को उन देशभक्त वलिदानियो के प्रेरणादायक जीवन की गाथा सुनानी होगी जिनके रुधिर और हड्डियो पर स्वतत्रता का यह भव्य भवन खडा हुआ है।

देश की नई पीढ़ी उन वलिदानियो के प्रेरणादायक जीवन मे यह प्रेरणा ले सके कि जननी जन्म भूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है हम उसके लिए जियेंगे और उसके लिए मरेंगे, इसी उद्देश्य को लेकर लेखक ने कतिपय क्रान्तिकारी वलिदानियो की जीवनिया लिखने का प्रयास किया है।

आज प्रकाशको के लिए सत्ता धारियो का यशोगान करने वाली कृतियां प्रकाशित करना अधिक लाभदायक है अस्तु मैं इस पुस्तक के प्रकाशक को साधुवाद देना नही भूल सकता जिन्होने इस पुस्तक को प्रकाशित करने का साहस किया है। यदि हिन्दी ससार ने इस पुस्तक का स्वागत किया तो लेखक "जिन्हें देश भूल गया" माला मे अन्य क्रातिकारियो की जीवन गाथा लेकर उपस्थित होगा।

—शंकर सहाय सक्सेना

अध्याय १
मैडम कामा

भारत की स्वतन्त्रता के लिए जिन लाखों स्त्री-पुरुषो ने अपने जीवन को मातृभूमि की वलवेदी पर अर्पण कर दिया उनमे श्रीमती के आर कामा का नाम स्वर्णाक्षरो मे लिखा जावेगा। बीसवी शताब्दी के आरभ मे और विशेषकर इङ्गलैड, जरमनी और फ्रास मे जो क्रान्तिकारी सगठन वने, वहा भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति का आन्दोलन हुआ उसको तेजवान वनाने मे मैडम कामा का वहुत वडा हाथ था। भारत मे जो क्रान्तिकारी सगठन देश व्यापी विप्लव करने की योजना वना रहे थे उन्हे अस्त्र शस्त्रो की सहायता पहुंचाना, विदेशी सरकारो की भारतीय स्वन्त्रता के इस आन्दोलन के लिए सक्रिय सहानुभूति प्राप्त करना और विदेशो मे भारतीय क्रान्तिकारियो को सगठित करने का जो खतरनाक कार्य उन्होने किया वह भुलाया नही जा सकता। वास्तव मे वे योरोप मे भारतीय क्रान्तिकारियो की सरक्षक और प्रेरणा श्रोत थी। उनके प्रेरणास्पद जीवन से प्रेरणा पाकर अनेक भारतीय युवको ने मातृभूमि के लिए सर्वस्व वलिदान कर देने का व्रत लिया था। श्रीमती कामा ने तो अपना समस्त जीवन ही देश के लिए अर्पित कर दिया था, उनका अपना जीवन जैसे कुछ था ही नही। वे अपने जीवन काल मे वस्तुत प्रति क्षण केवल भारत की आजादी के लिए जीवित रही। उनके हृदय मे देश प्रेम का जो अविरल श्रोत वहता था उससे हजारो भारतीय युवको को प्रेरणा और देश भक्ति की दीक्षा मिली थी। जो भी उनके सपर्क मे आता उसको वे मातृभूमि के उस वलिदान यज्ञ मे अपनी आहुति देने के लिए तैयार करती थी। उनके व्यक्तित्व मे ऐसा अद्भुत तेज और आकर्षण था कि कोई भी उनसे प्रभावित हुए विना नही रहता था। आश्चर्य की वात तो यह थी कि श्रीमती कामा ने एक अत्यन्त धनी और समृद्धिशाली परिवार मे जन्म लिया था। उनके पति एक प्रसिद्ध सालिसिटर थे और उनके ससुर एक प्रसिद्ध समाज सुधारक थे परन्तु वे स्वय उग्र क्रान्तिकारी विचारो की थी। उन जैसी महिला ने उस वैभव पूर्ण ऐश्वर्यशाली पारिवारिक जीवन को तिलाजलि देकर कटकाकीर्ण क्रान्तिकारी जीवन को अपनाया यह एक वास्तव मे एक अनहोनी वात थी। परन्तु उनके हृदय मे जो मातृभूमि को स्वतन्त्र करने की अमिट प्यास थी। उसने उन्हें उस ऐश्वर्यशाली जीवन और अपने परिवार को छोडकर विदेशो मे भारत की स्वतन्त्रता के लिये कार्य करने की ओर आकर्षित किया था।

अत्यन्त खेद और लज्जा की वात है कि उस वीर क्रान्तिकारी स्वतत्रता की देवी को देश भूल गया। हम भारतीयो की कृतघ्नता का इससे अधिक लज्जाजनक प्रमाण क्या हो सकता है कि स्वतन्त्रता की उस महान देवी का आज तक कोई जीवन चरित्र प्रकाशित नही हुआ, कोई स्मारक नही बना। जिसने तिल-तिल करके अपना समस्त जीवन देश के लिए अर्पित कर दिया उसके सम्वध मे देश मे इतना घोर अज्ञान है कि भारत के एक विश्वविद्यालय के विद्वान अध्यापक ने अपनी पी एच डी उपाधि के शोधग्रथ मे उनके सम्वध मे लिखा कि वे फ्रैंच महिला थी*

मैडम कामा का जन्म २० सितवर १८६१ को ववई के एक अत्यन्त धनी और समृद्धिशाली पारसी परिवार मे हुआ था। उनके पिता श्री सोरावजी फ्रामजी पटेल

*Indian Revolutionary Movement in the United States of America by Dr. L P Mathur Page 31 Line - 6.

बबई के प्रसिद्ध व्यापारी थे और उन्होने अपनी पुत्री का लालन-पालन अत्यन्त स्नेह और वात्सल्य प्रेम से वैभव और ऐश्वर्य के बीच किया था। उनकी शिक्षा बबई के अलक्जेंडरा पारसी स्कूल मे हुई थी। शिक्षा समाप्त होने पर उनका विवाह श्री रुस्तम कामा के साथ हुआ। श्री रुस्तम कामा राष्ट्रीय विचारो के उच्च शिक्षा प्राप्त युवक थे। उन्होंने १९१५ से १९२८ तक बाम्बे क्रानिकल दैनिक पत्र निकाला था।

मैडम कामा मे आरभ से ही देश भक्ति की उत्कट भावना उत्पन्न हो गई थी। मातृभूमि की दासता उन्हे बहुत अखरती थी। वे सशस्त्र क्रान्ति के द्वारा मातृभूमि को विदेशियो की दासता से मुक्त करने का स्वप्न देखती थी। यही कारण था कि एक समृद्धिशाली परिवार मे जन्म लेने और सुधारवादी पतिगृह की गृहणी बनने पर भी उनकी क्रान्तिकारी भावना कुन्टित नही हुई और वे नवनिर्मित क्रान्तिकारी सगठन 'अभिनव भारत समिति' की सदस्या और कार्यकर्त्ता बन गईं। वे क्रान्तिकारी साहित्य को तरुणो मे छिपे छिपे बाटती और उन्हे 'अभिनव भारत समिति' के क्रान्तिकारी उद्देश्य से अवगत कराकर स्वतन्त्रता के उस यज्ञ मे सम्मिलित करती। यह उनके प्रयत्नो का ही परिणाम था कि 'अभिनव भारत समिति' एक अत्यन्त प्रभावशाली क्रान्तिकारी सगठन बन गया और महाराष्ट्र के तरुण उसकी ओर आकर्षित हुए।

सन १९०१ मे वे रोग ग्रस्त हो गईं। बहुत चिकित्सा हुई किन्तु रोग उग्र होता गया। चिकित्सको ने उन्हे इङ्गलैड जाकर चिकित्सा कराने का परामर्श दिया। स्वास्थ्य लाभ और चिकित्सा के लिए वे १९०१ मे इङ्गलैड गईं। कुछ विद्वानो का मत है कि चिकित्सको का इङ्गलैड जाकर चिकित्सा कराने तथा स्वास्थ्य लाभ करने का परामर्श एक बहाना था कि जिससे वे अपने क्रान्तिकारी कार्य को आगे बढा सकें, और भारत से बाहर रहकर भारत सरकार की पहुच के बाहर हो जावें। इङ्गलैड जाकर उन्होंने अपने राजनीतिक तथा क्रान्तिकारी कार्यों की गति को तीव्र कर दिया। वे अपने स्वास्थ्य की चिन्ता न कर वहा भी क्रान्तिकारी कार्यो मे जुट गईं।

वे बहुधा लदन के हायड पार्क मे जहा बहुत बडी सख्या मे लदनवासी प्रतिदिन एकत्रित होते थे भारत की राजनीति के सम्बध मे भाषण देती और ब्रिटेन की जनता को बतलाती कि ब्रिटेन जिस प्रकार तलवार और सगीनो के बल पर भारत पर शासन कर रहा है और भारत मे स्वतत्रता के लिए आन्दोलन करने वाले देश भक्तो का जैसी क्रूरता और कठोरता से दमन किया जा रहा है यदि वह बन्द न हुआ और अग्रेजो ने भारतवासियो की भावनाओ का आदर कर भारत पर से अपना पजा हटा न लिया तो भारत मे १८५७ की भाति पुन विप्लव होगा, क्रान्ति फूट पडेगी, उसका उत्तरदायित्व ब्रिटिश शासको का होगा। वे इङ्गलैड मे केवल भाषण देकर ही नही पत्रो मे लिखकर भारत के पक्ष मे धुआधार प्रचार करती रही। शीघ्र ही वे योरोप के भ्रमण के लिए निकली। योरोप मे भ्रमण करने का उनका एकमात्र उद्देश्य योरोप के राजनीतिज्ञो से सम्पर्क स्थापित कर भारत के क्रान्तिकारियो के लिए अस्त्र-शस्त्र प्राप्त करना और उनका भारत की स्वतत्रता के लिए समर्थन प्राप्त करना था। वे एक वर्ष जरमनी मे, एक वर्ष स्काटलैंड, और एक वर्ष पेरिस मे रही और १९०६ मे लदन आकर स्थायी रूप से भारतीय क्रान्तिकारी दल का कार्य करने लगी।

उस समय तक विदेशो मे भारतीय क्रान्तिकारियो के अग्रदूत श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा ने लदन मे भारत की स्वतत्रता के पक्ष मे प्रचार करने के लिए अपना प्रसिद्ध

पत्र "इडियन सोश्योलाजिस्ट प्रकाशित कर दिया था और भारतीय युवको मे जो वृटेन मे शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे उनमे क्रान्तिकारी भावना उत्पन्न कर उनको देश की स्वतत्रता के लिए सर्वस्व अर्पण कर देने की दीक्षा देने के लिए इडिया हाऊस की स्थापना कर दी थी। यहा मैडम कामा का श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर, वीरेन चट्टापाध्याय, तथा मुकुन्द देसाई आदि प्रसिद्ध क्रान्तिकारियो से परिचय हुआ। वे भी उन क्रान्तिकारियो के साथ मिलकर कार्य करने लगी। परन्तु वृटिश सरकार को श्याम जी कृष्ण वर्मा की क्रान्तिकारी गतिविधियो का अपने गुप्तचरो से परिचय मिल गया था। लदन मे रहना सुरक्षित न समझकर श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा लदन छोडकर पेरिस चले गए और मैडम कामा ने लदन के क्रान्तिकारी दल का कार्य सम्भाल लिया। वे लदन की 'अभिनव भारत समिति' का कार्य उसके उत्साही मत्री श्री ज्ञानचन्द्र वर्मा के सहयोग से बहुत उत्साहपूर्वक करने लगी। यह उन्ही के अथक परिश्रम और प्रेरणा का परिणाम था कि भारतीय युवक बहुत बडी सख्या मे क्रान्तिकारी दल मे सम्मिलित हो गए। श्रीमती कामा निरतर भारतीय क्रान्ति के लिए कार्य करती रहती। अपने शरीर की ओर तनिक भी ध्यान न देकर वे निरन्तर देश की स्वतन्त्रता के लिए अपनी सम्पूर्ण शक्ति से कार्य करती रही। वे सभाओ के द्वारा लेखनी के द्वारा भारतीय स्वतत्रता के पक्ष मे विदेशो मे प्रचार करती थी। अमेरिका मे भारत की स्वतन्त्रता के के लिए समर्थन के लिए तथा अमेरिकनो को भारत मे अग्रेजो द्वारा किए जाने वाले शोषण और अत्याचार से अवगत कराने के लिए वे सयुक्त राज्य अमेरिका गई और न्यूयार्क तथा अन्य नगरो मे भाषणो तथा लेखो के द्वारा भारत के पक्ष मे प्रचार किया अमेरिका मे उन्होंने भारतीय क्रान्तिकारियो से सम्पर्क स्थापित कर उन्हे सगठित होकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

उसी समय २२ अगस्त, १६०७ को जरमनी के स्टटगार्ट नगर में अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी काग्रेस का अधिवेशन बुलाया गया। भारतीय क्रान्तिकारियो ने मेडम कामा को उस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे भारत का प्रतिनिधि चुन कर भेजा। उस अन्तर्राष्ट्र्य समाजवादी सम्मेलन मे योरोप के सभी प्रमुख समाजवादी नेता उपस्थित थे। योरोप के मूर्धन्य समाजवादी नेता हायडमैन, रैम्जे मैकडानल्ड, स्वीगर (जरमनी) भी उपस्थित थे।

जब मैडम कामा स्टटगार्ट के उस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे पहुची तो वृटिश समाजवादी प्रतिनिधि श्री रैमजे मैकडानल्ड ने उनके बोलने पर आपत्ति की किंतु इङ्ग्लैंड के श्री हाइन्डमैन तथा फ्रास के श्री जीन जार्स के समर्थन करने पर अध्यक्ष ने उनको बोलने की आज्ञा दे दी। उस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे सभी राष्ट्रो के प्रतिनिधि अपने-अपने राष्ट्रीय ध्वज को फहरा रहे थे। भारत का कोई राष्ट्र ध्वज नही था जब भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप मे वृटेन का यूनियन जैक फहराया जाने वाला था तो मैडम कामा ने उसका घोर विरोध किया और उन्होने भारत के उस प्रथम राष्ट्रीय ध्वज को फहराया जिसको उन्होने तैयार किया था और अपने साथ ले गई थी। उन्होने उस तिरगे झडे को फहरा कर समस्त अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे सम्बोधित करते हुए कहा "यह भारतीय स्वतन्त्रता की ध्वजा है। साथियो देखिए अब इसका आविर्भाव हुआ है। भारतीय युवको के बलिदानो से वह पुनीत हो चुका है। सज्जनो! मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप खडे होकर भारतीय स्वतन्त्रता के इस ध्वज का अभिवादन करें।

मैं इस पवित्र ध्वज के नाम पर ससार के समस्त स्वतत्रता प्रेमी व्यक्तियो से अनुरोध करती हूँ कि वे उस ध्वज से सहयोग कर समस्त मानव जाति के पांचवें भाग को दासता से मुक्त कराने मे सहायता दे।

जब वे उस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के मच पर बोलने के लिए खडी हुईं तो उन्होंने इस आशय का प्रस्ताव रक्खा कि वह अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन घोषणा करे कि वृटेन का शासन भारत पर जारी रहना भारत के हितो के लिए अत्यन्त हानिकारक और निश्चित रूप से खतरनाक है और विश्व के सभी स्वतत्रता प्रेमी उस अत्याचार से पीडित देश को जिसमे मानव जाति का पांचवा भाग निवास करता है दासता से मुक्त कराने मे उसकी सहायता करे। वृटिश प्रतिनिधियो ने उस प्रस्ताव का सम्मेलन के द्वारा इस आधार पर स्वीकार करने का विरोध किया कि वह अन्तर्राष्ट्रीय व्यूरो को सम्मेलन मे रखने से पहले नहीं दिया गया था।

अपना प्रस्ताव रखकर मैडम कामा ने भारत के लिए पूर्ण स्वतत्रता की माग की। यहा यह उल्लेखनीय है कि मैडम कामा ने भारत के लिए डोमीनियन स्टेटस, स्वायत्त शासन अथवा अन्य प्रकार के शासनाधिकारी की माग न कर भारत के राजनीतिक इतिहास मे प्रथम वार पूर्ण प्रभुसत्ता सम्पन्न स्वतत्रता की माग की थी। हाईडमैन ने मैडम कामा की पूर्ण स्वतत्रता की माग का समर्थन किया किन्तु रैम्जे मैकडानल्ड ने उसका विरोध किया। मैडम कामा की माग का वहुमत ने समर्थन किया और उनका प्रस्ताव स्वीकार हो गया।

वह दिन भारत के लिए स्वर्णिम दिवस था जव उस वीर महिला ने भारत का प्रथम वार एक महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे राष्ट्रीय ध्वज फहराया था और भारत के लिए प्रथम वार पूर्ण स्वतत्रता का दावा किया था। रैमजे मैकडानल्ड के विरोध करने पर भी जव सम्मेलन के अध्यक्ष ने मैडम कामा को वोलने की अनुमति दे दी और जव मैडम कामा उस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे बोली तो मानो उनकी आत्मा और वाणी एकाकार हो गई। अत्यन्त भाव वेग मे उन्होंने भारत व्रिटिश शासन के अत्याचारो और व्रिटिश पूंजीपतियो के शोषण की मर्मस्पर्शी कथा सुनाई। उन्होंने अपने ओजस्वी भाषण में उस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन को कि किस प्रकार व्रिटिश शासन भारत मे दमन के द्वारा उसका भीषण शोषण कर रहा है, वतलाया और अन्त मे जव उन्होंने भारत के उस राष्ट्रीयध्वज को फहरा कर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के प्रतिनिधियो का उसे अभिवादन करने का आह्वान किया तो सभी प्रतिनिधि उठ खडे हुए और उन्होने खडे होकर स्वतत्रत भारत के उस राष्ट्रीयध्वज को सलामी दी। मैडम कामा के ओजस्वी भाषण ने उस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन को जैसे मोहित कर लिया। लम्बे समय तक सभी प्रतिनिधि कर्तल ध्वनि करते रहे। उन्होंने मैडम कामा के उस ऐतिहासिक भाषण की भूरि-भूरि प्रशसा करते हुए कहा "इस भारतीय राजकुमारी ने हमें जिस प्रकार उद्वोधित किया है हम उसे कभी भूल नही सकते" वास्तव मे मैडम कामा ने उस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे अपने उस ओजस्वी भाषण द्वारा भारत की स्वतत्रता के प्रश्न को अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न बना दिया था। यह मैडम कामा के प्रयत्नो का ही परिणाम था कि जरमनी के सम्राट विलियम कैसर ने प्रैसीडैंट विलसन को अपनेप्रसिद्ध पत्र में, जो उन्होंने प्रैसीडैंट विल्सन के पत्र के उत्तर मे भारत की स्वतत्रता का समर्थन करते हुए लिखा था "भारत की पूर्ण स्वतत्रता विश्व शान्ति की एक अनिवार्य शर्त है।"

स्टटगार्ट के उस अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन के अध्यक्ष हर्रसिगर ने मैडम कामा के उस दैवीप्रेरणायुक्त भाषण के उपरान्त उठकर घोषणा की कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यूरो और यह अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी काग्रेस मैडम के प्रस्ताव की भावना को स्वीकार करती है और उसका समर्थन करती है ।

मैडम कामा ने उस अन्तर्राष्ट्रीय काग्रेस मे स्वतत्र भारत की जिस राष्ट्रीय ध्वज को फहराया था उसमे तीन रग थे हरा, पीला, और लाल तथा बीच की पट्टी मे "वन्दे मातरम्" शब्द नागरी अक्षरो मे अकित था। पहली पट्टी मे तारे अकित थे और नीचे की पट्टी मे एक ओर सूर्य और दूसरी ओर चन्द्रमा बना हुआ था। मैडम कामा पहली भारतीय थी जिन्होने विदेश मे स्वतत्र भारत के राष्ट्रीय ध्वज को एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे फहराया था।

स्टटगार्ट की अतर्राष्ट्रीय काग्रेस मे सम्मिलित होने के उपरान्त मैडम कामा जरमनी से सयुक्त राज्य अमेरिका गई। सयुक्त राज्य अमेरिका जाने का एकमात्र उनका उद्देश्य यह था कि वे सयुक्त राज्य अमेरिका जैसे महान जनतत्र की सहानुभूति भारतीय स्वतत्रता के आन्दोलन के लिए प्राप्त करे। उनकी मान्यता थी कि विदेशो मे और विशेषकर योरोप तथा सयुक्त राज्य अमेरिका मे यदि भारत की स्वतत्रता के लिए सहानुभूति उत्पन्न हो जावे और भारत की स्वतत्रता के आन्दोलन का महत्वपूर्ण राष्ट्रो का नैतिक समर्थन मिल जावे तो भारत की स्वतत्रता का आन्दोलन और अधिक प्रभावशाली और तेजवान बनेगा और अग्रेजी साम्राज्यवाद का भारत पर पजा उतना ही निर्बल होगा। अतएव वे सयुक्त राज्य अमेरिका जैसे महान गणतत्र की भारतीय स्वतत्रता आन्दोलन के लिए सहानुभूति प्राप्त करने के लिए अमेरिका पहुची।

२८ अक्टोबर १९०७ को मैडम कामा ने प्रसिद्ध 'मिनर्वा क्लब' के सदस्यो के सामने 'वल्डोर्फ-अस्टोरिया होटल' न्यूयार्क मे भारत के सम्वध मे भाषण दिया। श्रोता मैडम कामा की ओजस्वी वाणी सुनकर चकित और मत्रमुग्ध हो गए। एक श्रोता ने पूछा कि आपका लक्ष्य क्या है? मैडम कामा ने दृढता और स्पष्ट वादिता से उत्तर दिया "मैं भारत के लिए स्वतत्रता, पूर्ण स्वराज्य और स्वशासन की माग करती हूँ।" मैडम कामा के उस भाषण का उपस्थित श्रोताओ पर ऐसा गहरा प्रभाव पडा कि उन्हे अनेक संस्थाओ से निमत्रण मिलने लगे और सयुक्त राज्य अमेरिका मे उनके भाषणो की धूम मच गई। वे सयुक्त राज्य अमेरिका के विभिन्न नग्ररो मे घूम-घूम कर भारत की स्वतत्रता के लिए सयुक्त राज्य अमेरिका मे भारत के पक्ष मे प्रचार करने लगी। उनके प्रचार का परिणाम यह हुआ कि सयुक्त राज्य अमेरिका मे भारत की स्वतत्रता के लिए गहरी सहानुभूति उत्पन्न हो गई।

सयुक्त राज्य अमेरिका मे भ्रमण कर नवम्बर १९०८ मे वे पुनः लदन वापस लौटी और पुन. क्रातिकारी कार्य मे जुट गई। उन्होने इण्डिया हाऊस मे एक वहुत वड़ी सभा मे भाषण दिया और उस सभा मे उन्होने दृढता और साहस के साथ स्वतत्रता आन्दोलन और राष्ट्र की मुक्ति सघर्ष मे हिंसा के औचित्य का समर्थन किया। उस भाषण मे उन्होने कहा थाः—

"—हम स्वतत्रता के सघर्ष मे हिंसा के उपयोग के लिए खेद प्रगट क्यो करे जबकि हमारा शत्रु ब्रिटेन हमे ऐसा करने के लिए विवश कर देता है। हम तभी दल और हिंसा का प्रयोग करते हैं जबकि हमे हिंसा का उपयोग करने पर विवश कर दिया

जाता है। स्वतत्रता के सघर्ष मे असाधारण उपायो को काम मे लाना आवश्यक है।"
इडिया हाऊस का मैडम कामा का भाषण एक ऐतिहासिक भाषण था। सम्पूर्ण वृटेन मे उनकी चर्चा हुई उस भाषण की लाखो की सख्या मे प्रतिया छपवाकर क्रातिकारियो ने भारत तथा विदेशो मे उसे वाटा। मैडम कामा का वह भाषण भारतीय क्रातिकारियो का घोषणा पत्र वन गया।

मैडम कामा ने अपना समस्त जीवन मातृभूमि की स्वतत्रता के लिए अर्पित कर दिया था। वे भारत की स्वतत्रता के लिए विदेशो मे प्रचार करती। इङ्गलैड तथा अन्य योरोपीय देशो मे जो भारतीय युवक शिक्षा प्राप्ति के लिए आते उन्हे भारतीय स्वतत्रता के यज्ञ मे अपनी आहुति देने के लिए प्रेरित करती और आजन्य देश सेवा के व्रत की दीक्षा देती। वे भारतीय क्रातिकारियो के लिए विदेशो से अस्त्र-शस्त्र भिजवाती तथा गुप्त रूप से क्रातिकारी साहित्य भारत मे भिजवाती। भारतीय क्रातिकारियो से उनका वरावर सम्पर्क वना हुआ था वे विदेश मे रहकर भी उनका मार्ग दर्शन करती थी।

ब्रिटिश सरकार उन्हे अव खतरनाक क्रातिकारी के रूप मे देखने लगी थी। उनके पीछे प्रत्येक क्षण अग्रेज गुप्तचर लगा रहता था। जहा वे रहती वहा भी स्काटलैडयार्ड के गुप्तचर कडी निगाह रखते। मैडम कामा के लिए अव इङ्गलैड मे रहकर क्रातिकारी कार्य कर सकना सम्भव नही रहा। अतएव उन्होने इङ्गलैड छोड़कर फ्रांस से भारतीय स्वतत्रता के कार्य को आगे वढाने का निश्चय किया। वे लदन से पेरिस चली गई और वही स्थायी रूप से रहकर भारतीय स्वतत्रता के आन्दोलन का कार्य करने लगी।

उसी समय 'स्वराज्य' के सम्पादक विपिनचन्द्र पाल को क्रातिकारी लेख लिखने के कारण सजा हो गई और स्वराज्य वद हो गया तो मैडम कामा को विदेशो मे भारत की स्वतत्रता के लिए प्रचार कार्य करने के लिए एक पत्र की आवश्यकता का अनुभव हुआ और उन्होने १९०९ मे पेरिस से 'वन्देमातरम' पत्र निकालना आरम्भ किया। सौभाग्यवश मैडम कामा का लाला हरदयाल जैसे मेधावी प्रकाण्ड पडित और विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न क्रातिकारी पत्र के लिए सम्पादक के रूप मे मिल गए। 'वन्देमातरम' पत्र को भारतीय तथा भारत से सहानुभूति रखने वाले व्यक्ति स्वेच्छादान देकर उसके प्रकाशन के व्यय को पूरा करते थे क्योकि 'वन्देमातरम' का कोई वार्षिक चदा नही लिया जाता था। वन्देमातरम् के द्वारा मैडम कामा क्रातिकारी विचारधारा का भारतीयो मे प्रचार करने लगी। लाला हरदयाल तथा मैडम कामा वन्देमातरम के द्वारा भारत तथा विदेशो मे क्राति की अग्नि प्रज्ज्वलित करने लगे। पत्र योरोप मे तो सर्वत्र पहुचता ही था भारत मे भी छिपाकर वहुत वडी सख्या मे भेजा जाता था। देखते-देखते 'वन्देमातरम्' भारतीय स्वतत्रता का अत्यन्त प्रभावशाली सदेशवाहक वन गया।

वन्देमातरम के मुखपृष्ठ पर दो चित्र रहते थे—एक भारत के राष्ट्रीय ध्वज का जिसे मैडम कामा ने स्टटगार्ट (जरमनी) की अतर्राष्ट्रीय समाजवादी काग्रेस के अधिवेशन मे फहराया था और दूसरा भारत माता का जो म्यान से तलवार निकाल रही होती थी। भारत माता के चरणो मे भगवद्गीता का नीचे लिखा श्लोक देवनागरी मे लिखा रहता था :—

अथ चेत्त्वमिम धर्म्यं सग्रामम न करिष्यसि ।
तत. स्वधर्मं कीर्तिञ्च हित्वा पापभवाप्स्यसि ॥

अर्थात् इसके बाद भी यदि तुम धर्मयुद्ध नही करते तो इसमे स्वधर्म और कीर्ति का त्यागकर पाप को प्राप्त होगे। राष्ट्रीय ध्वज के नीचे लिखा रहता "भारतीय सस्कृत का मासिक मुख पत्र। उसके नीचे लिखा रहता" अत हे आनद, अपने आप के लिए तुम ही दीप बनो। बाहर के किसी आश्रय की खोज मत करो। अपना निर्वाण परिश्रम से प्राप्त करो (गौतम बुद्ध)।

वन्देमातरम आरम्भ से ही सशस्त्र क्राति का समर्थक था और भारत के नरम दलीय राजनीतिज्ञो पर जो वृटिश सरकार से दया भिक्षा के रूप मे कुछ राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने मे विश्वास रखते थे करारी चोट करता था। प्रथम अक मे ही वन्देमातरम ने मदनलाल धीगरा के बलिदान के सम्बध मे लिखा "अमर धीगरा वे वीर थे जिनके उपास्य शब्दो तथा कृत्यो का हमे शताब्दियो तक सच्चे हृदय से ध्यान रखना चाहिए। धीगरा ने अपने अभियोग की अवस्था मे प्राचीन वीरो के समान आचरण किया है उन्होने हमे उन मध्यकालीन राजपूतो और सिक्खो के इतिहास का स्मरण दिला दिया है जो मृत्यु से वधू के समान प्रेम करते थे। इङ्गलैंड समझता है कि उसने उन्हे मार डाला है वास्तव मे वे सदा जीवित रहेगे। उन्होने भारत मे अग्रेजो की प्रभुसत्ता को घातक चोट पहुचाई है।"

१६१० मे भारत सरकार ने इडियन प्रेस एक्ट बनाकर राष्ट्रीय विचारधारा के समाचार पत्रो के विरुद्ध कठोर कार्यवाही करना आरम्भ कर दिया था। बहुत से राष्ट्रीय समाचार पत्र बद हो गए। परन्तु मैडम कामा और उनका वन्देमातरम उसकी पहुच के बाहर थी अतएव वे अपनी लोह लेखनी से ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर कठोर प्रहार करती रही। एक सम्पादकीय मे उन्होने लिखा—"हमे यह स्वीकार करना चाहिए कि प्रेस एक्ट के कारण भारत मे स्वतत्र लेखन और विचार प्रकाशन की गु जाइश नही रही है अतएव हमे विदेशो से क्रातिकारी साहित्य का भारत मे आयात करने के कार्य को क्रातिकारी दल का एक महत्वपूर्ण अग बनाना चाहिए और इन परिस्थितियो मे क्राति-कारी और राजनीतिक कार्यो का केन्द्र कलकत्ता, पूना और लाहौर से हटकर जेनेवा, पेरिस, लदन और न्यूयार्क बनना चाहिए।"

भारत सरकार और ब्रिटेन की सरकार मैडम कामा की इस योजना और कार्यप्रणाली से बहुत अधिक सशकित हो उठी। अब उनकी डाक पर कडी निगाह रक्खी जाने लगी। वे जो समाचार पत्र साहित्य या अन्य वस्तुए भारत के क्रातिकारियो को भेजती थी उनको जब्त किया जाने लगा। उनके साधारण पत्र भी खोल लिए जाते थे। परन्तु मैडम कामा परास्त होने वाली नही थी। उन्होने पाडीचेरी के द्वारा भारत मे अपने पत्र तथा साहित्य को भेजने का प्रबध कर लिया। सब कुछ प्रयत्न करने पर भी भारत सरकार विदेशो से भारत मे आने वाले क्रातिकारी साहित्य को न रोक सकी।

मैडम कामा केवल 'वन्देमातरम' का प्रकाशन करके ही सतुष्ट नही हुई उन्होने बर्लिन से 'मदन तलवार' नामक पत्र अमर शहीद धीगरा के नाम मे निकाला जो अपने प्रत्येक अक मे क्राति और विद्रोह की अग्नि प्रज्ज्वलित करता था। पहले वन्देमातरम जैनवा से निकलता था बाद को वह राटर्डम से निकलने लगा परन्तु उस पर जैनवा का ही नाम रहता था।

इस सम्बंध मे भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के निदेशक ने भारत सरकार के गृह विभाग के मत्री के नाम ३० मई १९१२ को जो पत्र लिखा उसमे यह सिद्ध होता है कि पत्र राटर्डम मे छपता था। पत्र नीचे लिखे अनुसार था।

"वन्देमातरम प्रगट करता है कि वह जेनेवा का प्रकाशन है परन्तु वास्तव मे वह राटर्डम मे छपता है। मैं स्काटलैंड यार्ड की रिपोर्ट भेजता हूँ जो प्रकट करती है कि वे मुद्रको को भली भाति जानते है। मैं फरवरी और मार्च के अक भेज रहा हूँ। मार्च १९१३ के अक मे छपे लेख "हम क्या करें" की ओर मैं विशेष ध्यान दिलाता हूँ। यह लेख खुले रूप मे लोगो को विद्रोह करने के लिए उत्तेजित करता है और उन्हें परामर्श देता है कि यह कार्य सेना की राजभक्ति के तलोच्छेदन से आरम्भ करना चाहिए। "वन्देमातरम" राटर्डम के टी- एच हेकेम ने मैंडम कामा के लिए छापा था। भारत मत्री के समक्ष यह सुझाव रखना चाहिए कि वे डच सरकार से इस विषय में विरोध प्रदर्शन करें।

जब भारत सरकार ने वीर विनायक दामोदर सावरकर को लंदन मे गिरफ्तार कर लिया और ब्रिक्सटन जेल मे उनको रक्खा गया तो मैंडम कामा की प्रेरणा से उनके सहयोगी श्री वी- वी एस अय्यर तथा कुछ आयरिश तथा अन्य क्रातिकारी मित्रों ने सावरकर को ब्रिक्सटन जेल से, उडा ले जाने का प्रयत्न किया, परन्तु उसमे वे सफल नही हुए। इससे सरकार चौकन्नी हो गई और उसने निर्णय किया कि मौर्य नामक जहाज जिसमे सावरकर को भारत ले जाया जाय वह किसी वदरगाह मे न ठहरे सिवाय उन वदरगाहो के जहा तेल, कोयला, पानी, सब्जिया आदि लेनी हो। अभिनव भारत समिति के सदस्यो ने मैंडम कामा तथा अय्यर के निर्देशन में यह निर्णय किया कि जब वह जहाज ८ जुलाई को मर्सलीज (फ्रास) पहुचे तब सावरकर को अपने साथ भगा ले जाय।

यह योजना जेल के अन्दर सावरकर को भी पहुचा दी गई। जब मौर्य जहाज मार्सलीज के निकट पहुचा तब सावरकर ने शौच जाने का वहाना बनाया। स्नानघर मे जाकर उन्होने अपने सभी कपडे उतार कर उनसे उस आइने को ढांक दिया जिसकी सहायता से पुलिस के पहरेदार यह देख पाते थे कि सावरकर अन्दर क्या कर रहे हैं। कुछ ही क्षणो मे सावरकर ने अपना शरीर स्नानगृह के गोल झरोखे से वाहर निकाला और वे समुद्र मे कूद गए। झरोखे से निकलने के कारण शरीर छिल गया था अस्तु समुद्र का खारा पानी उनके शरीर मे लगने लगा परन्तु उन्होने कष्ट की चिन्ता न कर तेजी से तैरना आरम्भ कर दिया। जब वे लगभग आधा मील जा चुके थे तब जहाज पर के पहरेदारो को पता चला कि पक्षी पिंजडे से उड गया है। पहरेदारों ने उन पर गोलियो की वर्षा कर दी परन्तु सब व्यर्थ सावरकर जल मे डुबकी लगा कर तैर रहे थे।

तैरते हुए सावरकर फ्रास की भूमि पर पहुच गए। वे फ्रास की भूमि पर पहुच कर बहुत प्रसन्न हुए वे एक वाजार मे दौडने लगे। चालीस अग्रेज अफसर और स्काटलैंड यार्ड के गुप्तचर उनका पीछा कर रहे थे। मैंडम कामा और अय्यर मोटर लेकर वहा से केवल दो फर्लांग पर ही खडे थे। उन दोनो को इस नाटक का कुछ पता नही था। इधर सावरकर के पास एक पाई भी न थी वे किससे कहते कि तुम मुझे अपने वाहन पर विठाकर ले चलो। उन्होने फ्रासीसी पुलिस के कहा कि मुझे मैजिस्ट्रेट के पास ले चलो। इतने में वे चालीस अग्रेज अफसर तथा स्काटलैंड यार्ड के गुप्तचर

भी वहा पहुंच गए। उन्होने सिपाही से कहा—यह आदमी चोर है इसे हमारे हवाले करो "मैं चोर नही हूं" सावरकर ने तुरन्त पुलिम वालो से कहा "परन्तु यदि मैं चोर हूं तो भी मुझे कानून के अनुसार तुम इन विदेशियो (अंग्रेजो) के सुपुर्द नही कर सकते, मुझे आप न्यायालय मे ले चलिए।

अब मैडम कामा भी वहा पहुच गई उन्होने ने भी अंग्रेजो की माग का विरोध किया परन्तु सब व्यर्थ हुआ। चतुर अंग्रेज अधिकारियो ने फ्रासीसी सिपाही का मुह स्वर्ण देकर वद कर दिया। अतर्राष्ट्रीय प्रसभा (कन्वेन्शन) तथा कानून की नितान्त अवहेलना करते हुए वे सावरकर को घसीट कर जहाज पर ले गए।

सावरकर की समुद्र मे रोमाटिक छलाग ने अतर्राष्ट्रीय क्षेत्रो मे सनसनी उत्पन्न कर दी। क्या अंग्रेज उस व्यक्ति को जो फ्रास की स्वतत्र भूमि पर पहुंच गया हो वलात पकड कर अपने साथ ले जा सकते हैं?

मैडम कामा तथा लाला हरदयाल ने फ्रासीसी समाजवादी नेता जे जारविस की सहायता से सावरकर की मुक्ति के लिए फ्रास मे आन्दोलन किया। उनके कहने पर मार्सलीज के महापौर ने सारे मामले की छानवीन की। इस कारण फ्रासीसी चेंवर ने इङ्गलैंड की सरकार से सावरकर को लौटने की माग की। मैडम कामा तथा लाला हरदयाल ने फ्रासीसी सरकार से इस मामले मे दिलचस्पी लेने के लिए प्रयत्न किया परन्तु फ्रांसीसी सरकार कोई सीधी कार्यवाही नही करना चाहती थी। फ्रास के समाजवादी पत्र 'लहयू मानती' ने अवश्य सावरकर के पक्ष मे लिखा और उसने सावरकर की मुक्ति की जोरदार शव्दो मे माग की। कोपिन हेगन मे अतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन हुआ मैडम कामा तथा लाला हरदयाल के प्रयत्नो से उसमे भी सावरकर की मुक्ति की माग की गई वृटेन और फ्रास की सरकारो के दवाव डालने पर तथा मैडम कामा और लाला हरदयाल के प्रयत्नो से हेग के अतर्राष्ट्रीय न्यायालय ने इस प्रश्न को अपने हाथ मे ले लिया परन्तु उसका कोई परिणाम नही निकला।

मैडम कामा की क्रातिकारी गतिविधियो से तथा भारत मे क्रातिकारी साहित्य तथा अस्त्र शस्त्र वहा के क्रातिकारियो के पास पाडीचेरी के द्वारा गुप्त रूप से पहुँचाने मे सफल हो जाने के कारण भारत सरकार वौखला उठी। उसने वृटिश सरकार को लिखा कि वृटिश सरकार फ्रासीसी सरकार पर दवाव डाले कि वह मैडम कामा को फ्रास से निकल जाने का आदेश दे। परन्तु फ्रास की सरकार ने इसको स्वीकार नही किया। बात यह थी कि मैडम कामा के महान व्यक्तित्व और भारत की स्वतत्रता के लिए उनके द्वारा किए गए महान कार्य से फ्रास के राजनीतिज्ञ उनके प्रति श्रद्धा और आदर की भावना रखते थे और प्रशसक थे। अस्तु फ्रैंच सरकार ने ब्रिटिश सरकार के प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

ब्रिटिश सरकार खीज से झुंझला उठी। वह मैडम कामा को अत्यन्त भयकर भारतीय क्रातिकारी के रूप मे देखती थी। वह जान गई थी कि भारतीय क्रातिकारियो को अस्त्र-शस्त्र भेजने तथा विप्लव सम्वधी साहित्य पहुचाने तथा विदेशो मे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध प्रचार का कार्य मैडम कामा के है। मैडम कामा स्वय अंग्रेजो की पहुच के वाहर हो गई थी अतएव ब्रिटिश सरकार ने उन्हे आर्थिक दृष्टि से पगु वना देने का निश्चय किया। भारत सरकार ने उन पर सम्राट के शासन को उखाड फेंकने के षडयत्र का आरोप लगाया और उनके अनुपस्थिति होने पर उन्हे अपपलायक (भगोडा) घोषित कर दिया। उनकी लाखो रुपए की सम्पत्ति भारत सरकार ने

ज़ब्त कर ली। भारत सरकार का यह भ्रम था कि इस आर्थिक प्रहार से मैडम कामा धराशायी हो जावेगी, टूट जावेंगी और उनकी क्रांतिकारी गतिविधियां बंद हो जावेंगी। परन्तु भारत की स्वतन्त्रता के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देने वाली उस महान स्वतन्त्रता की देवी को ब्रिटिश सरकार की महान शक्ति भी नहीं झुका सकी। भारत सरकार के इस कठोर प्रहार की तनिक भी चिन्ता न कर वे पूर्ववत अपना क्रांतिकारी कार्य करती रही।

उसी समय प्रथम महायुद्ध छिड़ गया तो मैडम कामा ने अपने क्रांतिकारी कार्य की गति को और अधिक तेज़ कर दिया। युद्ध के पूर्व ही प्रसिद्ध क्रांतिकारी वीरेन चट्टोपाध्याय के सहयोग से उन्होंने "वेंगार्ड" पत्र निकालना आरम्भ किया था मैडम कामा ने इन पत्रों में लेख लिखकर भारतीय सैनिकों से अनुरोध किया कि वे अंग्रेजों के लिए युद्ध न करें क्योंकि यह भारत का युद्ध नहीं है यह साम्राज्यवादी युद्ध है। उन्होंने केवल पत्रों द्वारा ही भारतीय सैनिकों को हथियार डाल देने और अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने का अनुरोध नहीं किया वे स्वयं मार्सलीज़ तथा अन्य स्थानों पर स्थित भारतीय सैनिक शिविरों में जा जाकर भारतीय सैनिकों को विद्रोह कर देने के लिए प्रोत्साहित करने लगी। अंग्रेज उनके इस बृटिश विरोधी कार्य से अत्यन्त सशंक और क्षुब्ध हो गए। उन्हें भय होने लगा कि यदि मैडम कामा के भारतीय सैनिकों में अंग्रेज विरोधी प्रचार को नहीं रोका गया तो उसका भारतीय सैनिकों के मानस पर विनाशकारी प्रभाव पड़ेगा और उनकी राजभक्ति संदिग्ध हो जावेगी। दुर्भाग्यवश उसी समय जरमनी ने फ्रांस पर आक्रमण कर दिया तो फ्रांस घबरा गया अब वह इस स्थिति में नहीं था कि अपने मित्र तथा सहायक ब्रिटेन की इच्छा की अवहेलना कर सके। ब्रिटिश सरकार ने अनुकूल अवसर देखकर पुनः फ्रांस की सरकार पर यह दबाव डाला कि वह मैडम कामा को देश निकाला देकर उन्हें बृटिश सरकार के सुपुर्द करदे। इस बार फ्रांस की सरकार झुक गई। यद्यपि फ्रांस सरकार ने मैडम कामा को देश निकाला तो नहीं दिया परन्तु उन्हें पेरिस से बहुत दूर ले जाकर नज़रबंद कर दिया। फ्रांसीसी सरकार ने उनके क्रांतिकारी राजनीतिक कार्यों पर रोक लगा दी और सप्ताह में एक बार पुलिस में हाज़री देना अनिवार्य कर दिया गया। युद्ध के समाप्त होने पर उनको मुक्त कर दिया गया और वे पुनः पेरिस वापस आईं। उस बीच लेनिन ने उन्हें रूस में आने के लिए आमन्त्रित किया परन्तु उन्होंने लेनिन के निमन्त्रण को अस्वीकार कर दिया। १९२६ में जब पंडित जवाहरलाल नेहरू योरोप गए थे तो भारत की उस क्रांतिकारी देवी के दर्शन करने के लिए पेरिस गए थे।

मैडम कामा जीवन के अन्त तक मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए अनवरत कार्य करती रही। उनकी गहन देशभक्ति और मातृभूमि के लिए अपना पारिवारिक जीवन अटूट धन सम्पत्ति संक्षेप में सर्वस्व निछावर करने की कहानी जितनी प्रेरणादायक है उतनी ही रोमांचकारी भी है। भारत माता की वह महान पुत्री अपने जीवन के अन्त समय में लौटकर अपनी मातृभूमि के दर्शन तो कर सकी परन्तु वास्तव में वह अपनी मातृभूमि की पावन गोद में मृत्यु का आलिंगन करने के लिए ही वापस आई। वह स्वतन्त्रता की देवी जो देश के लिए बलिदान होने की अभूतपूर्व परम्परा अपने पीछे छोड़ गई है वह भारत की भावी पीढ़ी को देश के लिए बलिदान होने की अनवरत प्रेरणा देती रहेगी।

३५ वर्षों के निर्वासन के वाद और उन पैंतीस वर्षों मे अनवरत सघर्ष का जीवन विताने तथा अपने निर्वल शरीर की चिंता न कर अथक परिश्रम करने के कारण उनका स्वास्थ्य गिर गया। वे अशक्त हो गईं परन्तु फिर भी वे प्रत्येक क्षण मातृभूमि के लिए ही जीवित रहती थी। जव उन्हे लगा कि उनका जीवन दीप बुझने वाला है तो वे मातृभूमि की पावन धरा पर चिरनिद्रा मे सोने के लिए लालायित हो उठी। ब्रिटिश सरकार उन्हे भारत जाने का पासपोर्ट देने के लिए तैयार नही थी वहुत कुछ प्रयत्न करने पर उन्हे भारत जाने के लिए पासपोर्ट तो मिल गया परन्तु जव वे बम्वई पहुची तव तक उनका स्वास्थ्य वहुत अधिक गिर चुका था। वम्वई पहुचते ही उन्हे पारसी हास्पिटल ले जाया गया जहा आठ महीने तक रोगी शय्या पर रहकर मातृभूमि की स्वतत्रता के लिए अपने जीवन का वलिदान कर देने वाली वह देवी १६ अगस्त १९३६ को चिरनिद्रा मे निमग्न हो गई।

अपनी मृत्यु के पूर्व उन्होंने राष्ट्र को नीचे लिखे शब्दो मे अपना प्रेरणादायक सदेश दिया था "जो व्यक्ति अपनी स्वतत्रता खो देता है वह अपने सद्गुणो मे भी हाथ धो बैठता है। अत्याचार का प्रतिरोध ही भगवान की आज्ञा पालन है।"

हम कृतघ्न भारतीयो ने उस स्वतत्रता की देवी की स्मृति की रक्षा करने के लिए कुछ करने की आवश्यकता नही समझी। उनका प्रेरणादायक जीवन चरित्र नही लिखा गया कोई स्मारक नही वना। केवल डाक विभाग ने उनके नाम का डाक टिकट निकाल कर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझली। जहा कृतघ्न भारतीयो ने भारत माता की उस वरद पुत्री की अत्यन्त अशोभनीय उपेक्षा की। जिसको देखकर स्वय कृतघ्नता भी लज्जित हुई होगी। वहा पेरिस मे जहा उस देवी ने अपने जीवन के लम्बे वर्ष व्यतीत किए थे वहा 'पैरे ला-चेज' सिमटरी मे उनके प्रशसको ने एक स्तूपशिला उनकी स्मृति में स्थापित की जिस पर नीचे लिखे वाक्य अकित है जो युगो-युगो तक स्वतत्रता के प्रेमियो को अनुप्राणित करते रहेगे।

"He who loses his libevty, loses his Virtue, Resistence to tyranny is obedience to God."

"जो व्यक्ति अपनी स्वतत्रता खो देता है वह अपने सद्गुणो से भी हाथ धो वैठता है। अत्याचार का प्रतिरोध ही भगवान की आज्ञा पालन है।"

मैडम कामा केवल प्रभावशाली वक्ता और लोह लेखनी का धनी ही नही थी वे कुशल राजनीतिज्ञ भी थी उन्होंने फ्रास, जरमनी, स्विटज़रलैंड तथा योरोप के अन्य देशो के समाजवादियो से घनिष्ट सम्पर्क स्थापित कर लिया था और उनकी तथा उनके सगठनो की भारत की स्वतत्रता के पक्ष में सक्रिय सहानुभूति प्राप्त करली थी। जव भारत सरकार ने लाला लाजपत राय और सरदार अजीतसिह को देश से निर्वासित कर दिया तव उस भारत की स्वतत्रता की देवी ने जो अपील निकाली उसको अमेरिकन, फ्रैंच, जरमनी, और स्विटज़रलैंड के पत्रो ने मुख पृष्ठ पर प्रकाशित किया और उनकी अपील का समर्थन करते हुए सहानुभूतिपूर्ण सम्पादकीय टिप्पणिया लिखीं। उन्होंने केवल योरोप तथा अमेरिका के प्रगतिशील राजनीतिज्ञो से ही निकट सम्वध स्थापित कर उनकी भारत के लिए सहानुभूति प्राप्त नही की वरन उन सभी देशो के राजनीतिक नेताओ से भी घनिष्ट सम्वध स्थापित कर लिया जोकि अपने देशो की स्वतत्रता के लिए सघर्ष कर रहे थे।

डाक्टर अविनाशचन्द्र भट्टाचार्य ने अपनी पुस्तक "योरोपेय भारतीय विप्लवेर साधना" मे लिखा है कि जब मैं १६१३ में मैडम कामा से पेरिस में मिला तो उन्होंने हमें जो आयरलैंड, तथा पोलैंड के क्रातिकारियो, तथा मिश्र (ईजिप्ट) टर्की और मरक्को की स्वतत्रता के सेनानियो और क्रातिकारियो के बहुसख्यक पत्र दिखाए जो उन्होंने मैडम कामा को लिखे थे उन्हें पढकर हम बहुत उत्साहित हुए थे।

जब वे पेरिस में थी तब एक घटना ऐसी हुई जो उनके दृढ चरित्र पर अच्छा प्रकाश डालती है। नासिक के जिलाधीश जैक्सन को उनके विदाई समारोह के समय नासिक मे कन्हारे ने गोली मार कर हत्या कर दी क्योकि जैक्सन ने ही गणेश सावरकर को गिरफ्तार कर उन पर राजद्रोह का अभियोग चलाया था जिसमें उन्हें आजन्म काल पानी हुआ था। जिस पिस्तौल से कन्हारे ने जैक्सन पर गोली चलाई थी वह उन बीस पिस्तौलो में से था कि जिन्हें इडिया हाऊस के रसोइया चतुर्भुज अमीन के बाक्स के गुप्त तले में छिपाकर विनायक सावरकर ने बम्बई भेजे थे। जब भारत में चतुर्भुज अमीन गिरफ्तार हो गया और पुलिस के नृशस अत्याचार के कारण सरकारी गवाह बन गया तो उसने यह बयान दिया कि वह बाक्स जिसमे बीस ब्राउनिंग पिस्तौल थे पेरिस मे वह सरदारसिह जी राणा के मकान से लेकर लदन आया और विनायक सावरकर ने उसको बम्बई उसके द्वारा भिजवाया। अतएव भारत तथा बृटिश सरकार विनायक सावरकर तथा सरदारसिंह जी राणा को जैक्सन की हत्या के अभियोग में फस ना चाहती थी। जब मैडम कामा ने देखा कि सरदारसिंह राणा और विनायक सावरकर दोनो ही फस जावेंगे और क्रातिकारी कार्य को गहरा धक्का लगेगा तो उन्होंने एक अत्यन्त अप्रत्याशित साहसिक और खतरनाक कार्य किया। वे स्वय पेरिस में बृटिश कासल जनरल के कार्यालय में गईं और उनको एक लिखित बयान दिया कि "यद्यपि यह सही है कि पिस्तौलो वाला सन्दूक सरदारसिंह राणा के मकान में था परन्तु राणा और सावरकर को तनिक भी यह ज्ञात नही था कि उसमें पिस्तौल हैं अतएव दोनो ही निर्दोष है "इन पिस्तौलो को एकत्रित करने और उनको सदूक में रखकर चतुर्भुज अमीन के साथ भेजने की उत्तरदायी मैं हू अतएव पिस्तौलो के सम्बध में मैं ही अकेली जिम्मेदार हू मैं ही अकेली दोषी हू।"

अपने साथियो को बचाने के लिए स्वय अपने को खतरे में डालना मैडम कामा जैसी वीर महिला ही कर सकती थी कितने देशभक्त हैं जो इस प्रकार अपने को खतरे में डाल सकते हैं।

मैडम कामा का रुस के क्रातिकारी लेखक गोर्की से भी पत्र व्यवहार था और वे एक दूसरे के प्रशसक थे। गोर्की ने एक पत्र में मैडम कामा से प्रार्थना की थी कि वे (मैडम कामा) उनके पत्र के लिए भारतीयो के अपनी स्वतत्रता के लिए किए जाने वाले सघर्ष की कहानी लिख भेजे। उन्होंने लिखा था कि "रुस के जनतत्रवादी लोग आपके अत्यन्त कृतज्ञ और आभारी होगे यदि आप उन्हे महान भारत के जनतत्रवादी पुरुष स्त्रियो के सम्बध में जो गगा के तट पर निवास करते हैं तथा जो किस प्रकार अपनी स्वतत्रता का सघर्ष चला रहे है, उसकी कहानी लिख भेजें।"

गोर्की के उस पत्र का उत्तर देते हुए मैडम कामा ने ३१ अक्टोबर १६१२ के अपने पत्र मे लिखा था "मेरा सम्पूर्ण जीवन मेरे देश और उसकी स्वतत्रता के सघर्ष के लिए अर्पित है मैं आपकी इच्छा को पूरा करने की भरसक चेष्टा करूगी अर्थात् मैं मेरे

देश के आदर्शों तथा सघर्ष के सम्वध मे लेख लिखूंगी । मैडम कामा ने गोर्की को सावरकर लिखित १८५७ के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास की पुस्तक भेजी थी जिसकी गोर्की ने बहुत प्रशसा की थी ।

पेरिस में मैडम कामा एक साधारण वोर्डिग हाऊस में 'ऐप्यूल' क्षेत्र में रहती थी । भारतीय युवक जो कि पेरिस में थे वे उनके पास आया करते थे । यद्यपि उनका स्वास्थ्य खराब हो चला था परन्तु उनमें अदम्य साहस और स्फूर्ति थी । वे भारतीय तरुणो से भारत के क्रातिकारी आदोलन की चर्चा करती और भारतीय युवको को देश भक्ति की दीक्षा देतीं । उनका व्यक्तित्व इतना तेजस्वी था कि जो भी उनके सम्पर्क मे आता वह उनसे प्रभावित हुए विना नही रहता था । वे पेरिस मे अपने छोटे से कमरे मे वैठी प्रत्येक क्षण भारत की स्वतन्त्रता के लिए कार्य करती रही । कृतघ्न भारतीय आज उनको भूल गए अधिकाश भारतीय यह भी नही जानते कि उस वीर महिला ने देश की आजादी के लिए अपने को तिल-तिल कर मिटा दिया वह केवल अपनी मातृभूमि के लिए जीवित रही और अपने जीवन के प्रत्येक क्षण का उपयोग उसने केवल मातृभूमि की स्वतन्त्रता को प्राप्त करने मे किया ।

एक लेखक ने मैडम कामा को "भारतीय क्राति की जननी" कह कर सम्वोधित किया है । यह लेखक उस महिमामयी देवी को जिसने विदेश मे वैठकर भारतीय स्वतन्त्रता के लिए जीवन पर्यन्त सघर्ष किया भारत के उन महान स्वातत्र वीरो की गौरवशाली परम्परा की एक अत्यन्त प्रकाशवान तेजोमय नक्षत्र मानता है जिसके तेज और प्रकाश से प्रदीप्त होकर हजारो भारतीयो के हृदय मे मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए अपने को वलिदान कर देने की भावना उत्पन्न हुई थी और वे "करो सब निछावर वनो तुम फकीर" मन्त्र के अनुयायी वने ।

मैडम कामा की भारतीयों के नाम अपील

१० मई, १९०७ को भारत सरकार ने लाहौर मे लाला लाजपत राय और सरदार अजीतसिंह को गिरफ्तार कर लिया और एक वडे पुलिस दल के साथ उन्हे देश के वाहर किसी अज्ञात स्थान पर ले जाया गया । लाला लाजपत राय जैसे उच्च कोटि के नेता के इस देश निर्वासन से समस्त भारत स्तब्ध रह गया । पेरिस मे भारतीय क्रातिकारियो ने इसका विरोध करने के लिए सभा की । मैडम कामा ने भारतीयो के नाम नीचे लिखी अपील निकाली ।

"प्रात काल जव मैंने सुना कि लाला लाजपत राय जैसे सच्चे देशभक्त को उनके गृह से गिरफ्तार कर लिया गया और वे कैदी वना दिए गए तो मुझे गहरा आघात लगा ।"

"भारत के स्त्री पुरुषो इस अत्याचार का डट कर विरोध करो तुम अपने मन मे यह विचार दृढ करलो कि सम्पूर्ण भारत की जन सख्या इस प्रकार की दासता का जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा समूल नष्ट हो जाना पसद करती है ।"

"भारत, ईरान, अरव के गौरवशाली अतीत की चर्चा करने से क्या लाभ यदि तुम आज दासता का जीवन व्यतीत कर रहे हो । वीर राजपूतो, सिक्खो, पठानो, गोरखा, देशभक्त मराठा, वगालियो, क्रियाशील पारसियो और साहसी मुसलमानो और ऐ नम्र जैनियो धैर्यवान हिन्दुओ तुम महान शक्तिशाली जातियो की सतान हो तुम अपनी प्राचीन परम्पराओ के अनुसार क्यो नही रहते । क्या कारण है कि तुम दासता मे रह

रहे हो। उठो स्वराज्य के अन्तर्गत स्वतत्रता और समानता की स्थापना करो। उठो अपने लिए, अपनी सतान के लिए उठो।

"भाइयो और बहिनो मानवीय अधिकारो का युद्ध लडो और ससार को बतला दो कि पूर्व पश्चिम को पाठ पढा सकता है। इन अग्रेजो को पाठ पढाओ जिन्हे महान कवि के पोते विलियम वड्स्वर्थ ने "सफेद कपडो मे जगली और बर्बर कहा है।"

"काश यदि मैं उस कारागार के लोह फाटको को तोडकर लाला लाजपत राय को बाहर निकाल ले आ सकती उस देशभक्त को कारागृह की दूषित वायु मे सास लेने के लिए नही छोड देना चाहिए।"

"हमे मिलकर एक हो जाना चाहिए। यदि हम सब भारतवासी लाला लाजपत राय की भाति वीर वाणी मे बोलें तो सरकार को कितने अधिक दुर्ग और कारागृह बनाने पडेंगे जिनमे वह हम सबो को बदी बनाकर रख सकेगी। हम सब भारतवासी मिलकर तीस करोड है। इसमे केवल मात्र एकता की आवश्यकता है। आवश्यकता है कि भारतीयो मे इस सकट के क्षण म एकता की कमी न हो।"

"मित्रो अपने मे स्वाभिमान जागृत करो और इस स्वेच्छाचारी शासन को उसके लिए किसी भी रूप मे सहयोग देने तथा उसके लिए किसी भी स्थिति मे काम करने से इनकार करके उसको ठप्प करदो।"

"हम भारतीय "वन्दे मातरम" की प्रेरणा से एक होकर उठ खडे हो यही मेरी कामना है।"

मैडम कामा की यह अपील 'सोश्योलाजिस्ट' के जून अक मे ही प्रकाशित नही हुई वरन सात जून को लदन मे इडिया हाऊस मे लाला लाजपत राय और सरदार अजीतसिंह के देश निर्वासन के विरोध मे जो सभा हुई उसमे भी पढी गई। उस सभा का सभापतित्व श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा ने किया था। श्याम जी कृष्ण वर्मा ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे तत्कालीन भारत मन्त्री पर कडा प्रहार किया था। मैडम कामा की यह अपील बहुत अधिक संख्या मे छपवा कर योरोप मे बाटी गई तथा गुप्त रूप से भारत भेजी गई जिसे क्रातिकारियो ने भारत मे बाटा।

अध्याय २

श्यामजी कृष्ण वर्मा

श्यामजीकृष्ण वर्मा का जन्म तत्कालीन कच्छ राज्य के माडवा स्थान पर ४ अक्टोबर, १८५७ को हुआ उनके माता पिता अत्यन्त निर्धन थे। उनकी जाति भसाली था। उनके पिता जीवकोपार्जन के लिए बम्बई चले आए थे। जब गर्भवती माता के प्रसव का समय समीप आया तो श्यामजी के पिता ने उनको उनकी माता के घर कच्छ मे भेज दिया। जब १८५७ मे उनका जन्म हुआ, तब भारत की स्वतन्त्रता की देवी लक्ष्मी बाई और तात्या टोपे मा भारती की दासता की श्रखलाओ को काट डालने के लिए जूझ रहे थे तब कच्छ के सुदूर माडवी नामक स्थान मे श्यामजी ने जन्म लिया।

श्यामजी बचपन मे उस स्वतन्त्रता के युद्ध की कहानिया सुनते और आत्म-विभोर हो उठते। बहुत कम आयु मे ही उनको माडवी की प्राथमिक पाठशाला मे भरती करा दिया गया। आरम्भ से ही उस मेधावी बालक की असाधरण प्रखर बुद्धि ने सभी को चकित कर दिया। पढने मे उन्होने इस तेजी से उन्नति की और उनके मस्तिष्क की प्रखरता ने सभी को इतना अधिक प्रभावित किया कि उनके माता-पिता यद्यपि अत्यन्त निर्धन थे उन्होने उन्हे कच्छ राज्य की राजधानी 'भुज' ले जाकर उन्हें अंग्रेज़ी पढाने का निश्चय किया।

उस मेधावी बालक के जीवन मे एक अत्यन्त दारुण दुर्घटना घटित हुई। जब वह केवल दस वर्ष का था उसकी माताश्री का स्वर्गवास हो गया। उनकी स्नेहमयी माता के स्वर्गवासनी हो जाने मे उनके कोमल मन को गहरा आघात लगा। निर्धनता परिवार का घोर अभिशाप था और श्यामजी को पग-पग पर उसके कारण कठिनाई उठानी पढती थी परन्तु स्नेहमयी माता के स्नेह और सेवा के कारण वह उस निर्धनता से न घबडा कर विद्याध्ययन कर रहे थे। अब वे एक प्रकार से अनाथ हो गए। परन्तु उनकी नानी ने माता का स्थान ले लिया और उनकी पढाई को रुकने नही दिया। उनके पिता उस समय भी बम्बई मे थे पर तु वे अपने पुत्र को पढा नही सकते थे।

श्यामजी भुज के अंग्रेजी स्कूल मे पढ रहे थे। अध्यापक उनकी कुशाग्र बुद्धि और अद्भुत मेधा से चकित थे। उन्हे यह समझने मे देर नही लगी कि यह बालक महान प्रतिभा-सम्पन्न है।

उनके पिता बम्बई मे किसी प्रकार व्यापारिक कारबार कर अपनी जीविका उपार्जन करते थे। उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी परन्तु कच्छ भुज के बहुत से व्यापारी वहा व्यापार करते थे वे श्यामजी की विलक्षण प्रतिभा के बारे मे जानते थे क्योकि वे भुज जाते आते रहते थे। उनके द्वारा श्यामजी की विलक्षण प्रतिभा और कुशाग्र बुद्धि की कहानी श्री मथुरादास लावाजी एक अत्यन्त धनी उदार भाटिया व्यापारी के कानो तक पहुची उन्होने श्यामजी का बम्बई मे लाकर पढाने का निश्चय किया।

वे व्यापार के सिलसिले मे शीघ्र ही कच्छ गए और श्यामजी तथा उनकी नानी को बम्बई ले आए। उनके रहने और खाने पीने की व्यवस्था कर दी। श्यामजी को विल्सन हाई स्कूल मे प्रविष्ट करा दिया गया। यद्यपि एक ग्रामीण स्कूल से सबसे बडे नगर के स्कूल मे जहा दक्षिण के विभिन्न प्रदेशो से अत्यन्त मेधावी छात्र पढने आते थे श्यामजी को एक साथ लाया गया परन्तु उस बालक की प्रतिभा ने वहा भी सबो

को आश्चर्यचकित कर दिया। अध्यापक और छात्र सभी उस ग्रामीण बालक की प्रतिभा से आश्चर्य चकित थे श्यामजी अपनी कक्षा में सर्वप्रथम रहे।

यदि श्यामजी केवल अग्रेजी शिक्षा प्राप्त करके बम्बई विश्वविद्यालय से स्नातक हो जाते तो सम्भवत उनको जो ख्याति प्राप्त हुई वह न होती उनके भाग्यो-उत्कर्ष मे सस्कृत का बहुत अधिक योगदान रहा।

भाटिया जाति के वशपरम्परागत पुरोहित शास्त्री विश्वनाथ ने एक-एक सस्कृत पाठशाला चला रखी थी। श्यामजी के उदार आश्रयदाता श्री मथुरादास लावाजी ने उनका परिचय शास्त्री विश्वनाथ से करा दिया और उन्हे अपनी पाठशाला मे प्रवेश देने के लिए कहा।

अब श्यामजी दिन मे तो विलसन स्कूल मे पढते और सायकाल को पाठशाला जाते और रात्रि को अपना निज का अध्ययन करते। अपने धर्म और प्राचीन सभ्यता के महान ग्रन्थो को मैं पढ सकूगा इस विचार ने श्यामजी को सस्कृत पढने के लिए उत्साहित किया और वे उसके अध्ययन मे जुट गए। इस दोहरी पढाई का उन्होने इस कुशलता से निर्वाह किया कि विलसन स्कूल मे वे अपनी कक्षा मे तो प्रथम आते ही रहे साथ ही उन्होने सस्कृत का इतना ऊचा ज्ञान अठारह वर्ष की आयु मे ही अर्जित कर लिया कि देश के प्रसिद्ध प्रकाड पडित सस्कृत विद्वान और सुधारक उनके सस्कृत ज्ञान से बहुत अधिक प्रभावित हो गए।

श्यामजी को विलसन स्कूल मे प्रथम आने के कारण स्वर्गीय गोकुलदास काहनादास पारिख प्रदत्त छात्रवृत्ति मिली और उन्हें ऐल्फिस्टन स्कूल मे भेजा गया। ऐल्फिस्टन स्कूल मे बम्बई के धनाढय और ऊचे घरो के लडके पढते थे। वे अपने स्कूल के सबसे अधिक मेधावी छात्र थे इस कारण शीघ्र ही वे सर्वप्रिय हो गए। सेठ छबील दास लल्लूभाई का पुत्र रामदास उनका सहपाठी था। बम्बई के वे प्रसिद्ध और धनाढय व्यवसायी थे परन्तु उनकी अध्ययन मे रुचि थी एक दिन उन्होने अपने पुत्र से पूछा कि उसकी कक्षा मे सबसे कुशाग्र बुद्धि छात्र कौन है। उसने श्यामजी का नाम लिया और उनकी प्रशसा की। सेठजी ने अपने पुत्र से उस निर्धन किन्तु मेधावी छात्र को घर पर निमत्रित करने के लिए कहा। श्यामजी से मिलकर सेठ छबीलदास लल्लूभाई इतने प्रभावित हुए कि उन्होने उन्हे बहुधा उनसे मिलने आने के लिए कहा। श्यामजी का उस धनी घर आना जाना होने लगा। सेठ छबीलदास श्यामजी से स्नेह करने लगे। वे श्यामजी से इतने अधिक प्रभावित हुए कि एक दो वर्ष के बाद उन्होने अपनी पुत्री का विवाह उनसे करने की बात सोची उन्होने अपनी पुत्री से पूछा उनकी पुत्री भी श्यामजी के व्यक्तित्व से आकर्षित थी। उसने सहमति दे दी और १८७५ मे श्यामजी का विवाह हो गया। अकिंचन युवक एक धन कुबेर का जानाता बन गया। परन्तु उन्होने एक दिन भी अपने धनाढय ससुर के सहायता लेने अथवा उनके विस्तृत व्यापार मे साझीदार बनने की कल्पना भी नही की।

जब श्यामजी का विवाह हुआ तब तक उनका सस्कृत का ज्ञान इतना अधिक बढ चुका था कि ऊचे पडित और विद्वान उनसे प्रभावित होते थे। उनके भाटिया आश्रयदाता श्री माथुरदास लावाजी ने उनका परिचय तत्कालीन समाज सुधारक नेताओ से करा दिया। उसी समय उनका परिचय आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के सस्कृत के प्रोफेसर से हुआ जब वे पहली बार भारत आए। वे उनसे इतने अधिक प्रभावित हुए

कि उन्होने दो वर्ष के भीतर उन्हें ग्राक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अपने सहायक के रूप में नियुक्त करना स्वीकार कर लिया।

श्यामजी का १८७४ मे जब स्वामी दयानद बम्बई आए तो उनसे भी परिचय हुआ। स्वामी दयानद उस युवक से बहुत प्रभावित हुए। परतु श्यामजी को एक गहरा आघात लगा। १८७६ मे मैट्रिक्यूलेशन की परीक्षा के समय उनकी आखें खराब हो गईं इस कारण वे ठीक से परीक्षा न दे सके और अनुत्तीर्ण हो गए। परतु उससे श्यामजी निराश नही हुए ट्यूशन करके अपना काम चलाते थे अपने धनाढय ससुर से उन्होने याचना नही की।

अब उनका ध्यान आक्सफोर्ड की ओर गया और उनकी इच्छा आक्सफोर्ड जाने की हुई। परतु वे प्रोफेसर विलियम्स के पास तभी जाना चाहते थे जब वे भारत मे अपनी विद्वता की धाक जमा लेते। अतएव उन्होंने भारत के सभी सस्कृत केन्द्रो मे घूम कर सस्कृत मे भाषण देने का निश्चय किया। मार्च १८७७ मे वे इस उद्देश्य से नासिक गए। उस समय वे केवल बीस वर्ष के थे परन्तु नासिक मे उनके भाषण की सस्कृत के महान पडितो ने मुक्त कठ से प्रशसा की। धाराप्रवाह सुंदर सस्कृत मे गम्भीर विषय पर भाषण सुनकर लोग मुग्ध हो गए।

डाक्टर मोनियर विलियम्स को जब देशमुख ने श्यामजी की सस्कृत की विद्वता की प्रशसा करते हुए पत्र लिखा तो आक्सफोर्ड से प्रोफेसर विलियम्स का पत्र आया कि मैं श्यामजी को अपने सहायक के रूप मे ले लूगा।

नासिक से श्यामजी पूना गए वहा भी उनके भाषणो की बहुत प्रशसा हुई। बम्बई के टाइम्स आफ इडिया पत्र ने उनकी प्रशसा मे सम्पादकीय टिप्पणी लिखी। वे अहमदाबाद बडौदा आदि स्थानो पर भी गए। उनकी ख्याति अब चारो ओर फैल गई। उसी समय प्रोफेसर विलियम्स का श्री देशमुख के पास पत्र आया कि यदि श्यामजी १८७७ के अत मे अथवा आरम्भ मे आक्सफोर्ड आ सके तो वे उन्हे अपना सहायक नियुक्त कर सकेंगे।

श्यामजी के सामने अब प्रश्न था कि इङ्गलैंड कैसे पहुचा जावे। साथ ही उनका ध्येय वहा से डिगरी लेना और बार-एट-ला बनना था। अस्तु रुपए की आवश्यकता थी क्योकि जो छात्रवृत्ति प्रो विलियम्स ने देने का आश्वासन दिया था वह पर्याप्त नही थी। उन्होने कच्छ राज्य से छात्रवृत्ति और आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए कच्छ का दौरा किया उस समय अपने पैतृक गृह माडवी भी गए। उनके सस्कृत के भाषणो की वहा धूम मच गई। राज्य के दीवान और वरिष्ठ अधिकारी सभी उनकी विद्वता और सस्कृत के ज्ञान से उनके भक्त बन गए। परतु कच्छ राज्य से उन्हे आर्थिक सहायता नही मिली। वे उसी बीच बनारस गए और वहा भी उन्हे ख्याति प्राप्त हुइ परतु इङ्गलैंड जाने के लिए उन्हे आर्थिक सहायता नही मिल सकी। अत मे सब ओर से निराश होकर उन्होने डाक्टर और श्रीमती कुन्हा से कुछ रुपया उधार लिया जिन्हे सस्कृत पढाई थी और थोडा रुपया अपनी पत्नी से उधार लिया और मार्च १८७९ मे वे इङ्गलैंड चल दिए।

एप्रिल १८७९ के मध्य मे वे लिवरपूल पहुंचे परतु उन्हे वहा प्रो विलियम्स का अत्यन्त निराशाजनक पत्र मिला। उन्होने लिखा था कि तुम्हारे आने की अतिम तिथि मार्च १८७८ थी जब उस समय तक तुम नही आए तो मैंने तुम्हारी आशा छोड दी।

अतएव तुम्हे भारत से चलने पूर्व मुझसे फिर पूछना था । फिर भी वे आक्सफोर्ड पहुंचे । प्रो. विलियम्स उनसे बहुत प्रभावित हुए उनकी सहायता मे उन्हे छात्रवृत्ति तथा आक्स-फोर्ड विश्वविद्यालय मे प्रवेश दोनो ही मिल गए । परतु छात्रवृत्ति की राशि थोडी थी श्री कृष्ण वर्मा उसके ऊपर निर्भर रहकर कानून अध्ययन नही कर सकते थे अतएव उन्होंने प्रोफेसर विलियम्स के द्वारा पुन कच्छ राज्य से छात्रवृत्ति पाने का प्रयत्न किया । प्रो० विलियम्स ने वम्वई के तत्कालीन गवर्नर को इस सम्वध मे लिखा । उसका परिणाम यह हुआ कि श्यामजी को कच्छ राज्य से सौ पौंड वार्षिक की छात्रवृत्ति मिल गई । अब श्यामजी आर्थिक दृष्टि से निश्चित होकर विद्या अध्ययन मे जुट गए । आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय मे भी उनकी विद्वता की धाक जम गई । आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के उपकुलपति तथा प्रोफेसरो ने उनकी भूरि-भूरि प्रशसा की । पाच वर्ष आक्सफोर्ड मे रह कर वे जनवरी १८८५ मे भारत लौट आए । उनकी विद्वता की धाक इतनी अधिक थी कि भारत के भूतपूर्व वायसराय लार्ड नार्थब्रुक ने उनके विषय मे एक अत्यन्त प्रशसात्मक प्रमाण पत्र उन्हे दिया और भारत सरकार से निवेदन किया कि उन्हे भारत सरकार मे ऊचा स्थान दिया जाय ।

भारत मत्री ने वर्लिन काग्रेस आव ओरिंटेलिस्ट मे उन्हे भारत का प्रतिनिध वन कर भेजा वहा उनके भाषण का सभी विद्वानो पर गहरा प्रभाव पडा ।

राजनीति में प्रवेश

भारत मे लौटने पर श्यामजी १९ जनवरी १८८५ मे वम्वई के उच्च न्याया-लय मे एडवोकेट के रूप मे वैरिस्टरी करने लगे । उन्होंने वम्वई हाईकोर्ट मे प्रवेश ही किया था कि वे अपने पुराने सरक्षक श्री गोपालराव देशमुख से मिलने गए जो उस समय रतलाम राज्य के दीवान थे । श्री गोपालराव देशमुख ने उन्हे रतलाम के महाराजा से मिलाया । महाराजा श्यामजी कृष्ण वर्मा के व्यक्तित्व तथा विद्वता मे वहुत अधिक प्रभावित हुए । दीवान देशमुख वृद्धावस्था के कारण दीवान पद से अवकाश लेने वाले थे । उन्होने श्यामजी कृष्ण वर्मा को अपने स्थान पर दीवान नियुक्त करने की सिफारिश की जिसे महाराजा ने स्वीकार कर लिया ।

श्यामजी कृष्ण वर्मा वम्वई लौट आए और अपने पैतृक गृह कच्छ गए । इसी वीच मे १९ फरवरी को रतलाम के महाराजा ने उन्हे रतलाम राज्य का दीवान नियुक्त कर दिया । वे उस समय अट्ठाइस वर्ष के थे । शायद ही कोई व्यक्ति इतनी कम आयु मे एक राज्य का दीवान नियुक्त हुआ हो । डेढ वर्ष के कार्यकाल मे महाराजा श्यामजी कृष्ण वर्मा की कार्यकुशलता और योग्यता मे इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होने श्यामजी की वेतन वृद्धि करदी और एक अनुवध किया कि यदि अनुवध काल मे सेवा से मुक्त किया गया तो उनको ३३३ रुपये मासिक पेंशन दी जावेगी । उस अनुवध का काल पंद्रह वर्षो का था ।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने पद्रह वर्ष के लिए एक देशी राज्य की नौकरी करने के लिए अपने को क्यो वाध लिया यह एक विचारणीय प्रश्न है । उस समय भारत मे जो राष्ट्रीय और धार्मिक विचारो के व्यक्ति थे वे अग्रेजी सरकार की अपेक्षा देशी राज्यो को पसद करते थे । आखिर शासक भारतीय नरेश थे, वे पुराने राजवशो के उत्तरा-धिकारी थे, देशी राज्यो मे भारतीय सस्कृत और परम्परा जीवित थी । भारतीय त्योहार, पर्व वहा वहुत धूमधाम से मनाये जाते थे । पग-पग पर अग्रेजो का वर्चस्व और उनका दम्भ सहन नही करना पडता था । अस्तु श्यामजी कृष्ण वर्मा ने रतलाम

महाराजा से यह अनुबंध कर लिया। इसके अतिरिक्त उस समय एक शिक्षित वर्ग देश मे ऐसा भी था जो राजाओ की सहायता से भारत को स्वतंत्र बनाने की कल्पना करता था परंतु वास्तविकता इससे भिन्न थी १८५७ के उपरान्त देशी नरेश इस मनःस्थिति मे नही थे। वास्तव मे दीवान का कार्य बहुत कठिन था। एक ओर तो उसे राजा को प्रसन्न रखना पड़ता था दूसरी ओर पोलीटिकल डिपार्टमेंट को प्रसन्न रखना पडता था देशी नरेशो के दरबारो मे होने वाले षडयन्त्रो और कुचक्रो का सामना करना आसान नही था। देशी नरेशो की विलासिता तथा फिजूल खर्ची के लिए उसे नये-नये करो तथा आय के साधनो का आविष्कार करना पडता था उधर महाराजा के कृपा पात्रो के दबाव का सामना करना पडता था। फिर उसे यह भी देखना पडता था कि शासन इतना अव्यवस्थित न हो जावे या राज्य की वित्तीय स्थिति इतनी खराब न हो जावे कि भारत सरकार के विदेशी विभाग को हस्तक्षेप करने का अवसर मिल जावे। परंतु श्यामजी कृष्ण वर्मा ने इस योग्यता से रतलाम राज्य का शासन सम्भाला कि रतलाम के महाराजा तथा विदेशी विभाग दोनो ही उनसे बहुत प्रसन्न रहे। महाराजा रतलाम ने दो वर्षों के भीतर ही उन्हे उनकी प्रशंसनीय सेवाओ के लिए खिताब देकर सम्मानित किया। विदेशी विभाग के अधिकारी उनकी योग्यता तथा आक्सफोर्ड मे उनकी विद्वता की धूम के कारण प्रभावित थे। सैन्ट्रल इंडिया एजेंसी की प्रशासनिक रिपोर्ट मे श्यामजी की नियुक्ति पर बहुत प्रसन्नता प्रकट की गई।

परंतु रतलाम मे श्यामजी कृष्ण वर्मा का स्वास्थ्य एक साथ गिर गया और उन्हे अस्वस्थता के कारण १८८८ मे अपने पद से त्याग पत्र देना पडा। क्योंकि उन्होंने १९०० के पूर्व त्याग पत्र दिया अतएव वे अनुबंध की शर्तों के अंतर्गत पेंशन या ग्रेच्युटी के हकदार नही थे। परंतु महाराजा उनसे इतने प्रभावित थे कि उन्होने उन्हे ३२,०५२ रुपये की एक मुश्त रकम भेंट की।

रतलाम से श्यामजी बम्बई आए परंतु उन्होने बम्बई उच्च न्यायालय मे प्रेक्टीस नही की वे पुन. किसी देशी राज्य मे ही काम करना चाहते थे। परंतु बम्बई रहकर दीवान पद पाना कठिन था। अतएव उन्होने अजमेर मे प्रेक्टीस करने का निश्चय किया। इस उद्देश्य से वे १८८८ के अंत मे अजमेर आ गए। इनर टैम्पिल के बेरिस्टर आक्सफोर्ड के स्नातक और एक रियासत के भूतपूर्व दीवान के लिए धनी मानी व्यक्तियो को आकर्षित कर लेना कठिन नही था। परिणाम यह हुआ कि श्यामजी की बेरिस्टरी अजमेर मे खूब चमकी और उन्होंने अजमेर के ही समीप तीन कपास के पेच स्थापित कर दिए। यह तीनो कारखाने बहुत सफल हुए और जीवन पर्यन्त श्यामजी की आय के स्थायी साधन बने रहे। यही नही उन्होंने देशभक्त श्री दामोदरदास राठी के साथ मिल कर ब्यावर मे एक सूती कपडे की मिल भी स्थापित की। दामोदरदास जी राठी क्रांतिकारियो को आर्थिक सहायता देते थे।

प्रसिद्ध एडवोकेट, प्रखर बौद्धिक प्रतिभा के धनी और व्यापारिक सफलता प्राप्त करने वाले श्यामजी अजमेर म्यूनिस्पैलटी के सदस्य चुने गए।

यद्यपि श्यामजी अजमेर मे जम गए और जहा तक आय का प्रश्न था उनकी आय बहुत अधिक थी परंतु फिर भी वे किसी राज्य के दीवान पद को प्राप्त करने के लिए बहुत इच्छुक और प्रयत्नशील थे। इस उद्देश्य मे वे राजपूताने के विभिन्न राज्यो से बातचीत कर रहे थे। महाराजा उदयपुर उनकी योग्यता से प्रभावित हुए और

उन्होने एक हजार रुपए मासिक पर उन्हें उदयपुर राज्य का दीवान नियुक्त कर दिया। यह नियुक्ति पहली वात तीन वर्षों के लिए थी।

रतलाम की ही भाति श्री श्याम कृष्ण वर्मा ने महाराणा को अपनी विद्वता और कार्यकुशलता मे इतना अधिक प्रसन्न और प्रभावित कर लिया कि वे उनके अन य प्रशसक वन गए। परतु श्यामजी की महत्वाकाक्षा उदयपुर के दीवान पद से शांत नहीं हुई। वे उससे भी अधिक विस्तृत कार्यक्षेत्र की खोज मे थे। १८९५ के आरम्भ मे श्री मनसुखाराम त्रिपाठी ने उन्हे जूनागढ के दीवान पद के लिए आमंत्रित किया। श्यामजी ने अपनी शर्तो पर जूनागढ जाना स्वीकार कर लिया शर्ते यह थी कि उनकी नियुक्ति तीन वर्षो के लिए हो, मासिक वेतन डेढ हजार रुपए हो। यदि रियासत उनको तीन वर्षों से पूर्व सेवा मे मुक्त करना चाहे तो भी उन्हे पूरे तीन वर्षों का वेतन दिया जावेगा। यही नही उन्होने यह भी शर्त रक्खी कि नियुक्ति पत्र पर स्वय नवाव के हस्ताक्षर हो। उनकी सभी शर्ते मानली गईं और वे जूनागढ के दीवान पद पर नियुक्त कर दिए गए।

महाराणा उदयपुर श्यामजी कृष्ण वर्मा से बहुत प्रसन्न और प्रभावित थे उन्होने अनिच्छा से श्यामजी को जूनागढ जाने दिया। महाराणा ने उन्हे एक वर्ष की सवेतन छुट्टी दे दी। और यदि वे उदयपुर पुन वापस आना चाहे तो उन्हे दीवान पद पर नियुक्त करने का आश्वासन दे दिया।

यो तो प्रत्येक देशी राज्य मे षडयत्र तथा भ्रष्टाचार था परतु जूनागढ़ की दशा और भी खराव थी। नवाव नाम मात्र का नवाव था। सारी शक्ति और सत्ता जमादार वहाउद्दीन वजीर के हाथ मे थी। नायव दीवान पुरुषोत्तमराय नागर वास्तव मे दीवान था। दोनो आपस मे मिलकर नाम मात्र के नवाव तथा दीवान की आड मे मन माने ढग से राज्य का शोषण करते थे।

श्यामजी वर्मा के पूर्व जो भी दीवान थे उन्होने यह स्वीकार कर लिया था कि उनके निर्णयो की स्वीकृत हुजूरी अदालत मे वजीर के प्रतिनिधि के रूप मे नायव दीवान करेंगे। श्यामजी भला इस प्रकार परोक्ष रूप से अधीनस्थ कर्मचारी नायव दीवान के हस्तक्षेप को कैसे सहन कर सकते थे। उन्होने इस प्रथा को समाप्त कर दिया। इससे वजीर तथा नायव दीवान श्यामजी के विरोधी हो गए। समस्त रियासत मे नागर ब्राह्मणो का प्रभाव था। सभी महत्वपूर्ण पदो पर नागर ब्राह्मण नियुक्त थे और वे मन मानी करते थे। रियासत का भयकर शोषण हो रहा था, भ्रष्टाचार चरम सीमा पार कर गया था। श्यामजी ने जाते ही कठोरतापूर्वक इस लूट को समाप्त करना चाहा। समस्त नागर जाति और अधिकारी उनके विरुद्ध हो गए। वे उनके विरुद्ध षडयत्र करने लगे। भाग्यवश उन्हे एक अग्रेज सिविलियन मिल गया उनको मिलाकर उन्होने श्यामजी के विरुद्ध षडयत्र खडा कर दिया।

श्री ए० एफ० मैकानोची ओक्सफोर्ड मे श्यामजी के सहपाठी थे वे ब्रिटिश सिविल सर्वेंट थे। वडौदा राज्य ने उनकी सेवाए ले रक्खी थी। परन्तु वे अत्यन्त अयोग्य तथा दम्भी थे। अतएव वडौदा राज्य से उनके निकाले जाने की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। जब उन्होने देखा कि वडौदा मे उनके दिन समाप्त होने वाले हैं तो उन्होंने अपने सहपाठी श्याम कृष्ण वर्मा को सहायता के लिए लिखा। श्याम कृष्ण वर्मा ने दया कर उन्हें जूनागढ मे नियुक्त करवा दिया। उसी समय कर्नल हैनकाक काठियाड़ के राज्यो के ए० जी० जो श्यामजी के अत्यन्त प्रशसक थे छुट्टी पर चले गए

श्रीर कर्नल हटर ने चार्ज लिया। श्यामजी के विरोधियो ने मैकानोची से मिलकर उनके द्वारा कर्नल हटर को श्यामजी का विरोधी बना दिया। विश्वासघाती मैकानाची ने सोचा कि श्यामजी को हटाकर वह स्वय जूनागढ का दीवान बन जावे।

इस षडयत्र का परिणाम यह हुआ कि एक सायकाल उन्हे नवाब का पत्र मिला कि उन्हे दीवान के पदा से मुक्त किया जाता है। श्यामजी बीकानेर पोलीटिकल एजेट से मिलने गए परन्तु उनके उस अग्रेज सहपाठी ने उनके विरुद्ध वहा भी षडयत्र कर रक्खा था परन्तु अभी तक श्यामजी को यह ज्ञात नही था कि उनका सहपाठी उस षडयत्र मे शामिल है। अतएव जब वे बीकानेर से लौटे तो १८ सितम्बर को उससे मिलने गए परतु दरवाजे पर ही उनको मैकानोची का एक नोट उनके हाथ मे दिया गया। उसमे लिखा था महाशय मैं आपसे मिलना अस्वीकार करता हू मेरी आपके बारे मे बहुत बुरी राय है। मैं भविष्य मे आपसे कोई वास्ता नही रखना चाहता। यह उस अग्रेज सहपाठी का व्यवहार था जिसे श्यामजी ने नौकरी दिलवाई थी।

उसने केवल श्यामजी को अपमानित ही नही किया वरन श्यामजी के विरुद्ध अनेक झूठे आरोप लगाकर उसको विदेशी विभाग, पोलीटिकल एजेंटो, भारत सरकार, बम्बई सरकार तथा विभिन्न राज्यो और समाचार पत्रो को एक विज्ञप्ति भेज दी।

महाराणा उदयपुर ने श्यामजी को पुन उदयपुर के दीवान पद पर नियुक्त कर दिया। किन्तु उदयपुर के पोलीटिकल एजेंट कर्नल वायली ने श्यामजी की नियुक्ति का विरोध किया। वायली ने श्यामजी को लिखा कि वे बुरे आचरण के कारण जूनागढ से निकाले गए हैं इस कारण वह उनको उदयपुर मे नियुक्ति का समर्थन नही कर सकता और न उनसे दीवान के रूप मे राजकीय व्यवहार ही कर सकता हूं। इधर अग्रेज समर्थक पत्रो ने भी श्यामजी कृष्ण वर्मा के विरुद्ध विष उगलना आरम्भ कर दिया। परतु महाराणा उदयपुर ने कर्नल वायली के विरोध की परवाह नही की और श्यामजी वर्मा को दीवान मनोनीत कर दिया। कर्नल वायली को विवश होकर श्यामजी कृष्ण वर्मा को दीवान स्वीकार करना पडा और उनसे राजनीतिक व्यवहार करना पडा।

अभी तक श्यामजी अग्रेजो के बहुत बडे प्रशसक और भक्त थे। वे भी यह मानते थे कि अग्रेज न्यायप्रिय हैं और भारत का हित ब्रिटिश साम्राज्य के अतर्गत रहने मे ही है। परतु जूनागढ के काड से उनकी आखो के सामने जो आवरण था हट गया। उन्होने देखा कि जिस अग्रेज सहपाठी को उन्होने आपत्ति मे शरण दी थी उसने केवल विश्वासघात ही नही किया, वरन उसने जो पोलीटिकल एजेटो तथा भारत सरकार के विदेशी विभाग को उनके विरुद्ध पत्र लिख दिया तो बहुत कुछ प्रयत्न करने पर भी उनको न्याय नही मिला। किसी ने उनके पत्रो की ओर ध्यान तक नही दिया क्योकि ब्रिटिश न्यायप्रियता का भव्य और सुन्दर दृश्य उनकी आखो के सामने से तिरोहित हो गया और अग्रेजो का वास्तविक स्वरूप प्रगट हो गया। यही नही जब उन्होने जूनागढ राज्य से अपने वेतन के चालीस हजार रुपए मागे तो पोलीटिकल एजेट ने उन्हे धोखा दिया और उनको उनके वेतन की रकम भी नही मिल सकी। इस काड ने ब्रिटिश राज्य का सच्चा चित्र उनके सामने उपस्थित कर दिया। उन्होने जान लिया भारत और ब्रिटेन के हित एक दूसरे के विरुद्ध हैं उनमे कोई साम्य नही है।

उस समय लोकमान्य बालगगाधर तिलक भारत के राजनीतिक क्षितिज पर उभर आए थे। काग्रेस मे अग्रेज भक्त नरम दलोय नेताओ से उनका सघर्ष आरम्भ

हो गया था। लोकमान्य तिलक ने श्यामजी को लिखा और उनके सब कागज मगवाए। उन्होने 'मराठा' और 'केसरी' मे श्यामजी के साथ जो अन्याय हुआ था उसको लेकर ब्रिटिश सरकार पर बहुत कडे प्रहार किए। श्याम कृष्ण वर्मा तिलकजी की सहानुभूति पाकर उनकी ओर आकर्षित हुए और क्रमश उनका तिलकजी से घनिष्ट सम्बध हो गया।

१९०७ मे पूना के भयकर अत्याचारो के फल स्वरूप तिलक ने जो ब्रिटिश सरकार का विरोध किया और नाटू बन्धुओ ने जो क्रातिकारी और युद्धोचित आचरण किया उसने श्यामजी कृष्ण वर्मा को उनका भक्त और प्रशसक बना दिया। उनका यह दृढ विश्वास बन गया कि अग्रेजो को बलपूर्वक ही देश से निकाला जा सकता है और क्रातिकारी मार्ग ही देश को स्वतत्र बनाने का सही मार्ग है। उसी समय नाटू बन्धुओ को सरकार ने पकड कर अज्ञात स्थान मे निर्वासित कर दिया। लोकमान्य तिलक को लम्बे समय के लिए कैद कर दिया। रैंड की हत्या के सबध मे चापेकर बन्धुओ को फासी दे दी गई।

इन घटनाओ ने श्यामजी के सामने एक बहुत बडा प्रश्न उपस्थित कर दिया? वे काग्रेस के नरम दलीय नेताओ की ब्रिटिश राज्य के प्रति भक्ति मे विश्वास नही करते थे। वे तिलक के अनुयायी बन चुके थे। उनके सामने दो ही मार्ग थे। वे चाहते तो एक सफल बेरिस्टर बन कर धन कमाते या व्यापार या व्यवसाय मे प्रवेश कर नए कारखाने स्थापित करते, अथवा राजनीति मे प्रवेश कर तिलक की नीति को स्वीकार कर उग्रदल का नेतृत्व करते। उन्होने मातृभूमि की स्वतत्रता के लिए कार्य करना अपना जीवन उद्देश्य बना लिया किन्तु उन्होने देखा कि भारत मे लेखन और भाषण की स्वतत्रता नही है और यदि वे भारत मे रहे तो नाटू बधुओ और तिलक की भाति उन्हे भी निर्वासित कर दिया जावेगा अस्तु उन्होने यह निश्चय कर लिया कि वह विदेश मे रहकर भारत की स्वतत्रता के लिए कार्य करेंगे। अस्तु उन्होने भारत को छोडने का निश्चय कर लिया। सेडीशन कमेटी की रिपोर्ट मे उनके भारत छोड कर जाने का एक दूसरा ही कारण बताया गया है। सेडीशन कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा का श्री रैंड की हत्या मे हाथ था परतु वे भारत से निकल गए इस कारण उन पर अभियोग नही चल सका (सेडीशन कमेटी रिपोर्ट पृ० ४-५)

इस सम्बध मे अपने पत्र 'इण्डियन सोस्योलाजिस्ट' मे लिखते हुए उन्होने लिखा था कि १८९७ मे उन्होंने भारत और १९०७ की जुलाई मे लदन क्यो छोडा।

'सस्कृत की एक कहावत है कि अपना पैर कीचड मे रखकर फिर धोने की अपेक्षा कीचड मे पैर न रखना ही उत्तम है। एक दुष्ट सरकार द्वारा अपने को कैद करने देना भूल है क्योकि उसमे कार्य रुक जाता है जबकि उस सम्भावना को जानकर उससे बचा जा सकता है।

आज से ठीक दस वर्ष पूर्व जब मेरे मित्र श्री बालगगाधर तिलक और नाटू बधु कैद कर लिए गए तो हमने भारत को छोड कर इगलैंड मे बसने का निश्चय किया। अब जब कि हमारे मित्र लाला लाजपतराय को देश से निर्वासित कर दिया गया तब हमारे भाग्य मे लिखा था कि हम बहुत अधिक व्यय और असुविधा उठाकर इगलैंड को छोड कर पेरिस को अपना मुख्य निवास स्थान बनाए। यह हमारा दृढ विश्वास है कि कोई भी भारतीय जो राजनीतिक स्वतत्रता चाहता है और चाहता है कि

उसका देश विदेशियो की दासता के जुए से मुक्त हो ब्रिटिश साम्राज्य मे कही भी सुरक्षित नही है । भारतीयो को छोड कर इगलैंड ससार के सभी देशो के राजनीतिक पीडितो के लिए सुरक्षित आश्रय स्थल है ।

जव श्यामजी लदन आए तो उन्होने वहा भी काग्रेस की सदस्यता स्वीकार नही की वे काग्रेस की नीतियो की कठोर आलोचना करते थे । लदन मे रहकर उन्होने उन सभी विदेशी नेताओ से सवध स्थापित किया कि जो अपने देश की स्वतत्रता के लिए सघर्ष कर रहे थे ।

उसी समय वृटिश सरकार का ट्रासवाल और आरेज फ्री स्टेट से युद्ध छिड गया । वोयर युद्ध मे महात्मा गाधी ने जो उस समय दक्षिण अफ्रीका मे थे विटिश सरकार का साथ दिया । भारतीयो को ब्रिटिश की ओर से युद्ध करने के लिए भर्ती किया । श्यामजी लदन मे भारतीयो के इस कृत्य की कठोर आलोचना करते थे । उन्होने गाधी जी तथा उनके अनुयायियो की यह कह कर कि वे साम्राज्यवादी आक्रमण का समर्थन करते हैं कडी भर्त्सना की । उन्होने लिखा कि भारतीय स्वय अग्रेजो द्वारा स्वतत्र देशो को दास वनाए हुए हैं । उनका कहना था कि दक्षिण अफ्रीका के भारतीयो का नाम इतिहास मे श्रद्धा के साथ लिया जाता यदि वे अग्रेजो की सहायता करने के वजाय वोयर लोगो को अपनी स्वतत्रता की रक्षा के लिए जो वे युद्ध कर रहे थे उसमे उनकी सहायता करते ।

वोयर युद्व के परिणाम स्वरूप श्यामजी के मस्तिष्क मे यह विचार दृढ हो गया कि भारतीयो मे वुद्धिवाद और स्वतत्रता की भावना को जागृति करना आवश्यक है । अतएव उन्होने प्रसिद्ध दार्शनिक स्पैंसर के विचारो को भारत मे फैलाने के लिए भारत मे प्रोफेसरो को नियुक्त करने की योजना तैयार की और स्पैंसर को लिखा । परतु स्पैसर उस समय रोग शय्या पर था अतएव उस योजना के वारे मे कोई सुझाव न दे सका और १६०५ मे उनका स्वर्गवास हो गया ।

१४ दिसम्वर को स्पैसर के अतिम सस्कार मे श्यामजी सम्मिलित हुए और जव गोल्डर्स ग्रीन मे उस प्रसिद्ध दार्शनिक के प्रशसक और भक्त अपनी अतिम श्रद्धाजलि भेंट करने के लिए इकट्ठे हुए तो श्यामजी ने घोषणा की कि वे उस महान दार्शनिक के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय को एक हजार पौड देंगे जिससे स्पैंसर लैक्चररशिप स्थापित की जावे ।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने न केवल आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय मे ही स्पैंसर लैक्चररशिप की स्थापना करके ही सतोष नही कर लिया । अपितु उन्होंने हर्वर्ट स्पैंसर और स्वामी दयानद की स्मृति मे भी दो हजार रुपए वार्षिक की ६ छात्रवृत्तिया भारतीय छात्रो के लिए स्थापित की । जो छात्र इसके लिए चुने जावेगे उन्हे इङ्गलैंड मे अध्ययन करना होगा परतु केवल एक शर्त थी कि जो भी छात्र इस छात्रवृत्ति की सहायता से इङ्गलैंड मे अध्ययन करेगा वह भारत लौटने पर ब्रिटिश सरकार की नौकरी नही करेगा ।

उन्होने सर विलियम्स वैडरवर्न के द्वारा तत्कालीन काग्रेस के अधिवेशन मे अपनी छात्रवृत्तियो की घोषणा करवाना चाही परन्तु काग्रेस ने उसकी घोषणा करने से इन्कार कर दिया क्योकि उस समय काग्रेस अग्रेज भक्तो का एक समूह मात्र थी ।

अभी तक श्यामजी सक्रिय राजनीति मे नही उतरे थे परतु भारत मे जो क्रातिकारी आदोलन फूट पड़ा और वग भग के परिणाम स्वरूप भारत मे जो राज-

नीतिक क्षोभ उत्पन्न हुआ उसने श्यामजी को झकझोर दिया। उन्होने लदन से जनवरी १९०५ मे अपना प्रसिद्ध पत्र 'इडियन सोश्योलाजिस्ट' प्रकाशित करना आरम्भ किया जिसमे भारत की स्वतत्रता तथा सामाजिक सुधार के लिए क्रातिकारी विचारो को अपनाने का वे प्रभावशाली शब्दो मे समर्थन करते थे।

'इडियन सोश्योलाजिस्ट' का उद्देश्य तथा आदश मत्र उन्होने स्पैंसर के शब्दो मे इस प्रकार व्यक्त किया —

'अभ्याक्रमण का प्रतिरोध केवल उचित हो नही वरन अनिवार्य है—प्रतिरोध न करने से परार्थ और स्वार्थ दोनो की हानि होती है।'

अब श्यामजी अपने पत्र के द्वारा भारत की दयनीय स्थिति का चित्रण उपस्थित करने लगे और यह वतलाने का प्रयत्न करते कि भारत की दासता ही वहा का सबसे वडा अभिशाप है। भारत की उन्नति तभी होगी जब भारत पूर्ण स्वतत्रता प्राप्त करेगा।

श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा केवल पत्र निकालकर ही सतुष्ट नही हुए उन्होंने ब्रिटेन मे जो भी भारतीय थे उनका एक क्रान्तिकारी सगठन स्थापित किया। १८ फरवरी १९०५ को श्यामजी कृष्ण वर्मा के मकान पर बीस भारतीयो ने मिलकर "इडियन होम रुल सोसायटी" की स्थापना की जिसका उद्देश्य भारत को स्वतत्र करना था।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने हाईगेट लदन मे भूमि और भवन खरीद कर वहा "इडिया हाऊस" की स्थापना की। जो भारतीय छात्र श्यामजी की छात्रवृत्तिया पाकर लदन मे अध्ययन करने जाते वे तथा अन्य भारतीय छात्र जो वहा के उद्देश्यो को स्वीकार करें, रह सकते थे। वास्तव मे इडिया हाऊस श्यामजी के नेतृत्व मे तरुण भारतीयो का क्रान्तिकारी केन्द्र वन गया।

श्यामजी ने इडिया हाऊस का उद्घाटन करने के लिए श्री हाइडमैन को आमत्रित किया। उस समय उस सभा मे इगलैंड के सभी राजनीतिक दलो के प्रतिनिधि तथा प्रमुख पत्रो के सम्वाददाता उपस्थित थे। श्रीमती डेस्पर्ड (आयरलैंड) भी उस समारोह मे उपस्थित थी। श्री दादाभाई नौरोजी, लाला लाजपतराय, मैडम कामा श्री हसराज, श्री दोस्त मुहम्मद तथा अनेक भारतीय छात्र उपस्थित थे।

श्री हाइन्डमैन ने उस अवसर पर जो भाषण दिया वह ऐतिहासिक था। उन्होंने कहा "आज जो स्थिति है उसमे बृटेन के प्रति भक्ति और निष्ठा भारत के प्रति विश्वासघात है।" मैं बहुत से भारतीयो से मिला हूँ उनमे से अधिकाश जो बृटिश शासन के प्रति भक्ति और निष्ठा की स्वीकारोक्ति करते हैं वह अत्यन्त अरुचिकर और घृणास्पद है। या तो वे सच्चे नहीं है या फिर वे अनभिज्ञ हैं। किन्तु मुझे यह देखकर प्रसन्नता और सतोष है कि भारत मे एक नई भावना उत्पन्न हो रही है। यहा इस सभा मे भारत के सभी भागो से तथा विभिन्न विचार वाले भारतीय उपस्थित हैं परन्तु भारत की स्वतत्रता सभी का एक समान लक्ष्य है।

स्वय इङ्गलैंड से कोई आशा रखना व्यर्थ है, भारत की मुक्ति के प्रश्न को क्रान्तिकारी दृढ़ निश्चय वाले मातृभूमि के लिए अपने को बलिदान करने वाले लोग हल करेंगे।

इडिया हाऊस की यह सस्था भारत की मुक्ति मार्ग में एक कदम है और आज जो लोग यहा जमा हैं उनमे से कुछ लोग उसकी सफलता के प्रथम पुण्यो को देखने के लिए जीवित रहेगे ।"

श्यामजी उन तथा कथित अग्रेजो के जो अपने को भारत का मित्र और हितैषी घोषित करते नही थकते थे, के कटु आलोचक थे । सर विलियम वैडरवर्न तथा उनके सहयोगियो के सम्वध मे लिखते हुए उन्होने कहा था ।

"यद्यपि सर विलियम वैडरवर्न तथा उनके सहयोगी भारत के मित्र है परन्तु वे देशभक्ति के सकुचित प्रभाव से मुक्त नही है । उनका एक मात्र उद्देश्य केवल मात्र भारत पर ब्रिटेन का अधिपत्य बनाए रखना है । अच्छे दासो का सचालन करने वाले मालिको की भाति अथवा भेड का मास खाने वाले गडरियो की भाति वे भारतीयो को सम्पन्न और सतुष्ट देखना चाहते हैं जिससे कि भारत मे ब्रिटिश शासन स्थायी बन सके ।

श्यामजी के इन सव कार्यो का परिणाम यह हुआ कि भारत मे ऐंग्लो इण्डियन प्रेस वौखला उठा उसने श्यामजी के विरुद्ध धु आधार विष वमन करना आरम्भ कर दिया । परन्तु राष्ट्रीय और क्रातिकारी विचारो के भारतीयो ने श्यामजी के प्रयत्नो की भूरि-भूरि प्रशसा की वे उनकी श्रद्धा के पात्र वन गए । लोकमान्य तिलक ने लिखा कि आप जैसे यदि थोडे से कार्यकर्त्ता इङ्गलैंड मे और होते तो वहुत अधिक कार्य हो सकता था । आपने जिस त्याग की भावना से प्रेरित होकर इन सस्थाओ को जन्म दिया है उसके लिए मेरी हार्दिक वधाई स्वीकार कीजिए ।

एक ऐंग्लोइण्डियन सवाददाता ने लिखा था कि "भारत के लिए स्वायत्तशासन (होमरुल) व्यवहारिक राजनीति के क्षेत्र के नितान्त वाहर है । उसका उत्तर देते हुए श्यामजी ने इण्डियन शेश्योलाजिस्ट के अक्टोवर नवम्वर के अङ्को मे लिखा था ।

"जो साम्राज्य एक दिन मे वृटेन ने प्राप्त किया था एक रात्रि मे खो जावेगा ।"

भारत मे न तो गोरे नौकर हैं, न गोरे सईस है, न गोरे पुलिसमैन और पोस्टमैन हैं । कोई भी कर्मचारी तथा दुकानदार आदि गोरे नही हैं । यदि भारतीय एक सप्ताह के लिए गोरो का काम करना वद कर दें तो यह साम्राज्य ताश के पत्तो की तरह ढह जावेगा और प्रत्येक शासन करने वाला अग्रेज अपने मकान मे भूख से पीडित कैदी की भाति रहने पर विवश होगा । वह न कही जा सकेगा, न अपना भोजन प्राप्त कर सकेगा और न उसे पीने को पानी ही मिलेगा ।

स्पष्ट है कि यदि कोई किसी की कोई चीज खरीदता वेचता नही अथवा किसी प्रचार का उससे वास्ता नही रखता तो कानून की दृष्टि से कोई अपराध नही करता है । अस्तु स्पष्ट है कि यदि भारतीय केवल अपने विदेशी शासको को सहायता करना वद कर दें तो विना हिंसक क्राति किए ही वे अपनी स्वतत्रता प्राप्त कर सकते हैं ।

तत्कालीन कांग्रेस मे गोखले तथा नरम दलीय नेताओ का वोलवाला था । वग भग आन्दोलन चल रहा था वनारस काग्रेस अधिवेशन के लिए गोखले सभापति चुने गए । श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अपने पत्र द्वारा श्री गोखले का खुलकर विरोध किया और लोकमान्य तिलक का समर्थन किया उन्होने श्री गोखले की नरम नीति और वृटेन की भक्ति की कठोर आलोचना की, उसका परिणाम यह हुआ कि ऐंग्लो इडियन प्रेस उनको अत्यन्त खतरनाक और विद्रोह फैलाने वाला कहकर वदनाम करने लगा ।

हो गया था। लोकमान्य तिलक ने श्यामजी को लिया और उनके सब कागज मगवाए। उन्होने 'मराठा' और 'केसरी' मे श्यामजी के साथ जो अन्याय हुआ था उसको लेकर ब्रिटिश सरकार पर वहुत कडे प्रहार किए। श्याम कृष्ण वर्मा तिलकजी की सहानुभूति पाकर उनकी ओर आकर्षित हुए और क्रमश उनका तिलकजी से घनिष्ट सम्बध हो गया।

१८०७ मे पूना के भयकर अत्याचारो के फल स्वरूप तिलक ने जो ब्रिटिश सरकार का विरोध किया और नाटू वन्धुओ ने जो क्रातिकारी और पुरुषोचित आचरण किया उसने श्यामजी कृष्ण वर्मा को उनका भक्त और प्रशसक वना दिया। उनका यह दृढ विश्वास वन गया कि अग्रेजो को वलपूर्वक ही देश से निकाला जा सकता है और क्रातिकारी मार्ग ही देश को स्वतत्र वनाने का सही मार्ग है। उसी समय नाटू वन्धुओ को सरकार ने पकड कर अज्ञात स्थान मे निर्वासित कर दिया। लोकमान्य तिलक को लम्वे समय के लिए कैद कर दिया। रैड की हत्या के सम्वध मे चापेकर वन्धुओं को फासी दे दी गई।

इन घटनाओ ने श्यामजी के सामने एक वहुत वडा प्रश्न उपस्थित कर दिया ? वे काग्रेस के नरम दलीय नेताओ की ब्रिटिश राज्य के प्रति भक्ति मे विश्वास नही करते थे। वे तिलक के अनुयायी वन चुके थे। उनके सामने दो ही मार्ग थे। वे चाहते तो एक सफल वेरिस्टर वन कर धन कमाते या व्यापार या व्यवसाय मे प्रवेश कर नए कारखाने स्थापित करते, अथवा राजनीति मे प्रवेश कर तिलक की नीति को स्वीकार कर उग्रदल का नेतृत्व करते। उन्होने मातृभूमि की स्वतत्रता के लिए कार्य करना अपना जीवन उद्देश्य वना लिया किन्तु उन्होने देखा कि भारत मे लेखन और भाषण की स्वतत्रता नही है और यदि वे भारत मे रहे तो नाटू वधुओ और तिलक की भाति उन्हे भी निर्वासित कर दिया जावेगा अस्तु उन्होने यह निश्चय कर लिया कि वह विदेश मे रहकर भारत की स्वतत्रता के लिए कार्य करेंगे। अस्तु उन्होने भारत को छोडने का निश्चय कर लिया। सेडीशन कमेटी की रिपोर्ट मे उनके भारत छोड कर जाने का एक दूसरा ही कारण वताया गया है। सेडीशन कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा का श्री रैंड की हत्या मे हाथ था परतु वे भारत से निकल गए इस कारण उन पर अभियोग नही चल सका (सेडीशन कमेटी रिपोर्ट पृ ४-५)

इस सम्वध मे अपने पत्र 'इण्डियन शोस्योलाजिस्ट' मे लिखते हुए उन्होने लिखा था कि १८९७ मे उन्होंने भारत और १९०७ की जुलाई मे लदन क्यो छोडा।

'सस्कृत की एक कहावत है कि अपना पैर कीचड मे रखकर फिर धोने की अपेक्षा कीचड मे पैर न रखना ही उत्तम है। एक दुष्ट सरकार द्वारा अपने को कैद करने देना भूल है क्योकि उससे कार्य रुक जाता है जवकि उस सम्भावना को जानकर उससे वचा जा सकता है।

आज से ठीक दस वर्ष पूर्व जव मेरे मित्र श्री वालगगाधर तिलक और नाटू वधु कैद कर लिए गए तो हमने भारत को छोड कर इगलैंड मे वसने का निश्चय किया। अव जव कि हमारे मित्र लाला लाजपतराय को देश से निर्वासित कर दिया गया तव हमारे भाग्य मे लिखा था कि हम वहुत अधिक व्यय और असुविधा उठाकर इगलैंड को छोड़ कर पेरिस को अपना मुख्य निवास स्थान वनाए। यह हमारा दृढ विश्वास है कि कोई भी भारतीय जो राजनीतिक स्वतत्रता चाहता है और चाहता है कि

उसका देश विदेशियो की दासता के जुए से मुक्त हो ब्रिटिश साम्राज्य मे कही भी सुरक्षित नही है। भारतीयो को छोड कर इगलैंड ससार के सभी देशो के राजनीतिक पीडितो के लिए सुरक्षित आश्रय स्थल है।

जब श्यामजी लदन आए तो उन्होने वहा भी काग्रेस की सदस्यता स्वीकार नही की वे काग्रेस की नीतियो की कठोर आलोचना करते थे। लदन मे रहकर उन्होने उन सभी विदेशी नेताओ मे सबध स्थापित किया कि जो अपने देश की स्वतत्रता के लिए सघर्ष कर रहे थे।

उसी समय बृटिश सरकार का ट्रासवाल और आरेज फ्री स्टेट से युद्ध छिड गया। बोयर युद्ध मे महात्मा गाधी ने जो उस समय दक्षिण अफ्रीका मे थे ब्रिटिश सरकार का साथ दिया। भारतीयो को ब्रिटिश की ओर से युद्ध करने के लिए भर्ती किया। श्यामजी लदन मे भारतीयो के इस कृत्य की कठोर आलोचना करते थे। उन्होने गाधी जी तथा उनके अनुयायियो की यह कह कर कि वे साम्राज्यवादी आक्रमण का समर्थन करते है बडी भर्त्सना की। उन्होने लिखा कि भारतीय स्वय अग्रेजो द्वारा स्वतत्र देशो को दास बनाए हुए है। उनका कहना था कि दक्षिण अफ्रीका के भारतीयो का नाम इतिहास मे श्रद्धा के साथ लिया जाता यदि वे अग्रेजो की सहायता करने के बजाय बोयर लोगो को अपनी स्वतत्रता की रक्षा के लिए जो वे युद्ध कर रहे थे उसमे उनकी सहायता करते।

बोयर युद्ध के परिणाम स्वरूप श्यामजी के मस्तिष्क मे यह विचार दृढ हो गया कि भारतीयो मे बुद्धिवाद और स्वतत्रता की भावना को जागृति करना आवश्यक है। अतएव उन्होने प्रसिद्ध दार्शनिक स्पैंसर के विचारो को भारत मे फैलाने के लिए भारत मे प्रोफेसरो को नियुक्त करने की योजना तैयार की और स्पैंसर को लिखा। परतु स्पैंसर उस समय रोग शय्या पर था अतएव उस योजना के बारे मे कोई सुझाव न दे सका और १६०५ मे उसका स्वर्गवास हो गया।

१४ दिसम्बर को स्पैंसर के अतिम सस्कार मे श्यामजी सम्मिलित हुए और जब गोल्डर्स ग्रीन मे उस प्रसिद्ध दार्शनिक के प्रशसक और भक्त अपनी अतिम श्रद्धाजलि भेंट करने के लिए इकट्ठे हुए तो श्यामजी ने घोषणा की कि वे उस महान दार्शनिक के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय को एक हजार पौंड देंगे जिससे स्पैंसर लैक्चररशिप स्थापित की जावे।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने न केवल आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय मे ही स्पैंसर लैक्चररशिप की स्थापना करके ही सतोष नही कर लिया। अपितु उन्होने हर्बर्ट स्पैंसर और स्वामी दयानद की स्मृति मे भी दो हजार रुपए वार्षिक की ६ छात्रवृतिया भारतीय छात्रो के लिए स्थापित की। जो छात्र इसके लिए चुने जावेंगे उन्हे इङ्गलैंड मे अध्ययन करना होगा परतु केवल एक शर्त थी कि जो भी छात्र इस छात्रवृत्ति की सहायता से इङ्गलैंड मे अध्ययन करेगा वह भारत लौटने पर ब्रिटिश सरकार की नौकरी नही करेगा।

उन्होने सर विलियम्स वैडरबर्न के द्वारा तत्कालीन काग्रेस के अधिवेशन मे अपनी छात्रवृत्तियो की घोषणा करवाना चाही परन्तु कांग्रेस ने उसकी घोषणा करने से इन्कार कर दिया क्योकि उस समय कांग्रेस अग्रेज भक्तो का एक समूह मात्र थी।

अभी तक श्यामजी सक्रिय राजनीति मे नही उतरे थे परतु भारत मे जो क्रातिकारी आदोलन फूट पडा और बग भग के परिणाम स्वरूप भारत मे जो राज-

परन्तु श्यामजी कृष्ण वर्मा के कार्यों का प्रभाव पडने लगा था। कतिपय देशभक्त भारतीय भारत और भारत के बाहर उनके विचारो के समर्थक बनते जा रहे थे। उनमे श्री यस आर राना प्रमुख थे। यद्यपि वे पेरिस मे बस गए थे परन्तु वे श्यामजी कृष्ण वर्मा के निकट सम्पर्क मे थे और इडियन होम रूल लीग के उपाध्यक्ष थे। उन्होने श्यामजी से प्रेरणा प्राप्त कर तीन छात्रवृत्तिया दो-दो हजार रुपए की स्थापित की जो कि विदेश मे जाने वाले भारतीयो को दी जाती थी। उन्होने उनमे से दो छात्रवृत्तिया राणाप्रताप सिंह तथा शिवाजी के नाम पर रक्खी और तीसरी छात्रवृत्ति किसी मुस्लिम शासक, विचारक, अथवा भारत की स्वतन्त्रता के लिए कार्य करने वाले मुस्लिम नेता के नाम पर रखने का प्रस्ताव रक्खा। श्री राना के इस प्रशसनीय कार्य से सहमत होते हुए श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अपनी ओर से ६ नई छात्रवृत्तियो की ओर घोषणा की। श्यामजी चाहते थे कि देशभक्त मेघावी भारतीय युवक उच्च शिक्षा प्राप्त कर भारत की दासता के विरुद्ध सघर्ष करने के लिए देश मे जाकर कार्य करें अतएव वे अपने पास जो भी धन था इस सद्कार्य मे लगाते थे। वे केवल राजनीतिक आन्दोलन कर्त्ता ही नही थे। वरन वे देश की स्वतन्त्रता के भवन की नीव को गहरी और मजबूत रखना चाहते थे।

श्यामजी कृष्ण वर्मा जहा नरम दलीय नेताओ का विरोध करते थे और क्रांतिकारियो और लोकमान्य तिलक का समर्थन करते थे वहा वे भारत के हितैषी बनने का दावा करने वाले ह्यूम, वैडरबर्न काटन आदि अग्रेज भारत हितैषियो का जिनका काग्रेस पर बहुत अधिक प्रभाव था कडी भर्त्सना करते थे। उनका कहना था कि इन कथित भारत हितैषी अग्रेजो से काग्रेस को अपना सम्बध तोड देना चाहिए।

हैनरीकाटन के सम्बध मे लिखते हुए श्यामजी कृष्ण वर्मा ने लिखा "प्रत्येक विचारवान भारतीय भारत के राजनीतिक पुर्नजीवन के प्रति निराश हो जाता है जब वह देखता है कि जिस ऐंग्लो इडियन ने पैंतीस वर्ष तक भारत का खून चूसा और जो आज भी एक हजार पौंड के रूप मे भारत के रुधिर को पी रहा है काग्रेस का मार्ग दर्शक है।"

श्यामजी की लेखनी इस भ्रम को छिन्न-भिन्न करने मे बहुत सफल हुई कि अग्रेजी शासन भारत के लिए एक वरदान है। इण्डियन शोस्योलाजिस्ट मे उनके धारा प्रवाह लेख तथ्यो के आधार पर कि बृटिश शासन मे भारत का सर्वागिण पतन हुआ है प्रकाशित न होते तो यह भ्रम बना रहता। ऐंग्लो इडियन उनके इन लेखो का कोई समाधान कारक उत्तर तो दे नही पाते वे उनको हिंसक विप्लवी कह कर बदनाम करने का प्रयत्न करते थे। परन्तु विदेशो मे अध्ययन करने वाले भारतीयो तथा भारत मे विचारको पर उनका गहरा प्रभाव पडता था।

इसी समय एक ऐसी घटना हुई जिसने भारत मे तथा विदेशो मे हलचल उत्पन्न कर दी। श्री पी० यम० बापट (जो बाद को सेनापति बापट के नाम से प्रसिद्ध हुए) बम्बई विश्वविद्यालय मे स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण कर ऐडिनबरा विश्वविद्यालय मे सर मंगलदास छात्रवृत्ति लेकर अध्ययन कर रहे थे, उन्होने लदन मे भारत मे बृटिश शासन विषयक एक आलोचनात्मक भाषण दिया और उसको प्रकाशित भी करवा दिया उसका परिणाम यह हुआ कि उनकी छात्रवृत्ति बद कर दी गई।

लोकमान्य तिलक ने श्यामजी को पत्र लिखकर श्री बापट को आर्थिक सहायता

देने के लिए कहा, साथ ही उन्होंने श्री विनायक दामोदर सावरकर (वीर सावरकर) को भी छात्रवृत्ति देने के लिए कहा। श्यामजी ने उन दोनो को ही छात्रवृत्तिया दी। दोनो ही ने भविष्य मे मा भारती के चरणो मे अपने जीवन को समर्पित कर दिया। श्याम कृष्ण वर्मा ने इडिया हाऊस द्वारा इसी प्रकार उनके देशभक्तो को मातृभूमि के लिए वलिदान होने की प्रेरणा दी।

श्यामजी अत्यन्त स्पष्टवादी थे सिद्धा त का जहा प्रश्न आता था तो वे वडे से वडे नेता पर कटोर प्रहार करने से नही चूकते थे। जब दक्षिण अफ्रीका के भारतीयो के अधिकारो के लिए गाधीजी लदन आए तो उन्होंने उनकी यह कह कर आलोचना की कि उनके नेतृत्व मे भारतीयो ने वोयर युद्ध मे अग्रेजो की सहायता की, इस सम्वध मे इडियन शोश्योलाजिस्ट मे लिखते हुए उन्होने आयरिश नेता श्री माइकेल के उन शब्दो का उल्लेख किया जो उन्होंने वृटिश पार्लियामेन्ट मे कहे थे "यदि मुझे केवल होम रुल ही नही वरन वृटिश सरकार ट्रासवाल के जनतत्रो की स्वतत्रता को नष्ट करने के लिए लडे जाने वाले इस युद्ध के पक्ष मे एक शब्द बोलने या अपना एक वोट देने के वदले स्वतत्र आयरिश जनतत्र भी देती तो भी मैं इस युद्ध के पक्ष मे एक शब्द या एक वोटनही देता। श्रीमन मैं आयरलैंड की स्वतत्रता को दक्षिण अफ्रीका की स्वतत्रता के विरुद्ध मत देने की नीचतापूर्ण कीमत पर नही खरीदू गा।

दादा भाई नौरोजी और तिलक

इसी समय गोखले इडियन नेशनल कांग्रेस के सभापति की हैसियत से इङ्गलैंड आए। श्यामजी ने उनके आने पर नरम दलीय नीति की कडी आलोचना की। गोखले ने ४ अगस्त के "डेली न्यूज" के सम्वाददाता को इन्टरव्यू मे यह कह दिया।

"कि पिछले कुछ महीनो मे पूर्वीय वगाल सरकार ने व्यक्तिगत स्वतत्रता का जिस प्रकार दमन किया है प्रसन्नता की वात है कि ऐसी भूल भारत मे वृटिश शासन के इतिहास मे और कभी नही हुई।"

श्यामजी ने कांग्रेस अध्यक्ष के इस वक्तव्य पर अपने पत्र मे लिखा "यह अत्यन्त खेद और आश्चर्य की वात है कि जो व्यक्ति कुछ समय तक भारत के एक कालेज मे इतिहास का प्रोफेसर रहा हो वह इङ्गलैंड मे यह कहने का अहकार पूर्ण दावा करे कि सर वैम्पफील्ड फुलर के शासन मे पूर्वीय वगाल मे होने वाले अत्याचारो और दमन की समता करने वाला दमन वृटिश शासन के इतिहास मे पहले कभी नही हुआ। उसके उपरान्त श्यामजी ने १८५७ के समय अग्रेजो की क्रूरता और पाशविक अत्याचारो का विशद वर्णन किया। उन्होंने लिखा कि अग्रेजो की क्रूरता, पाशविकता, विश्वासघात और नीचता के उदाहरण अनयत्र कही ढूढने से नही मिल सकते थे। उन्होने लिखा कि श्री गोखले वृटिश सरकार के कृपा पात्र हैं इस कारण वे सही स्थिति को कहना नही चाहते। मुझे खेद है कि दादा भाई नौरोजी भी उनका समर्थन करते है।

उस समय लोकमान्य तिलक स्वाराज्य स्वदेशी और विदेशी वस्तु वहिष्कार के आदोलन के द्वारा नवचेतना भर रहे थे। विपिन चन्द्रपाल ने कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन के सभापतित्व के लिए लोकमान्य तिलक के नाम का प्रस्ताव किया। नरम दल मे हडकम्प आ गया। नरम दलीय नेता नही चाहते थे कि तिलक कांग्रेस के सभापति हो परन्तु प्रश्न यह था कि तिलक का विरोध कौन करे। लोकमान्य के विरोध मे किसी भी नेता के चुने जाने की सम्भावना नही थी। फिरोजशाह मेहता को एक युक्ति

सूझी उन्होने दादा भाई नौरोजी का नाम प्रस्तावित कर दिया। दादा भाई उस समय वृटिश पार्लियामेट के सदस्य थे दो बार काग्रेस के अध्यक्ष रह चुके थे परन्तु फिर भी उन्होने चुनाव मे खडा होना स्वीकार कर लिया। उनको नरम और गरम दोनो ही आदर की दृष्टि से देखते थे। जब श्यामजी को नरम दल के नेताओ की इस चाल का पता चला तो वे बहुत अधिक क्षुब्ध हुए परन्तु उन्होने दादा भाई के विरुद्ध एक महीने तक कुछ नही लिखा। वे दादा भाई को व्यक्तिगत रूप से काग्रेस के सभापति पद के लिए खडे न होने के लिए तैयार करना चाहते थे। इस उद्देश्य से श्याम कृष्ण वर्मा ने गाधी जी के द्वारा दादा भाई के पास अपना सदेश भेजा। गाधीजी बहुधा उन दिनो श्यामजी से मिलते थे साथ ही श्याम कृष्ण वर्मा ने उस लेख की एक प्रतिलिपि भी भेजी जो यदि दादा भाई ने उनकी बात न मानी तो वे प्रकाशित करने वाले थे। किन्तु दादा भाई नरम दलीय नेताओ के इतने अधिक प्रभाव मे थे कि उन्होने श्यामजी की बात पर ध्यान नही दिया। गाधीजी ने लिखा कि वे श्यामजी के कहे अनुसार बैठने के लिए तैयार नही हैं साथ ही गाधीजी ने श्यामजी को यह भी लिखा कि ऐसी दशा मे वयोवृद्ध और सम्माननीय देशभक्त नेता की निन्दा करना महान अपराध और पाप होगा।

किन्तु श्यामजी सिद्धात मे समझौता करने वालो मे से नही थे। अस्तु नवम्बर के शोस्योलाजिस्ट मे दादा भाई नौरोजी के राजनीतिक कार्यो की कडी निन्दा करते हुए श्यामजी का लेख प्रकाशित हुआ। श्यामजी ने दादा भाई नौरोजी के लगभग पचास वर्षो के इङ्गलैंड मे रहकर किए गए राजनीतिक कार्य के कारण जो उनके व्यक्तित्व के प्रति परम्परागत आदर की भावना उत्पन्न हो गई थी उस पर कठोर प्रहार किया उन्होने लिखा।

"हमने दादा भाई नौरोजी के इङ्गलैंड मे लम्बे समय तक रहकर किए गए राजनीतिक कार्य का मूल्याकन करने के लिए यथेष्ट परिश्रम किया है और हम इस निर्णय पर पहुचे हैं कि उनका राजनीतिक कार्य खेदजनक रूप से असफल रहा। उस लम्बे लेख मे उन्होने दादा भाई नौरोजी के राजनीतिक कार्यों की कडी आलोचना की परन्तु उनके आर्थिक विचारो की प्रशसा की।

श्यामजी ने केवल लेखो द्वारा ही लोकमान्य तिलक की विचार धारा का समर्थन नही किया वरन उन्होने २३ फरवरी १९०७ को इण्डियन होम रूल सोसायटी की वार्षिक बैठक मे लदन मे घोषणा की कि वे भारत मे राजनीतिक कार्यकर्ताओ का एक सगठन खडा करने के लिए दस हजार रुपये का दान देंगे और इस सम्बध मे लोकमान्य तिलक, लाला लाजपतराय और खापर्डे से परामर्श करेंगे। इसके लिए एक नई समिति का सगठन किया गया। सर्वप्रथम इस योजना मे गरम दल के विचारो का प्रचार करने के लिए श्री विपिनचन्द्र पाल व्याख्याता मनोनीत किए गए। इस प्रकार श्याम कृष्ण वर्मा विदेश मे बैठकर भी काग्रेस मे क्रातिकारी विचारो वाले राजनीतिको की सफलता के लिए कार्य करते रहे।

उनकी नजर देशी राज्यो पर भी थी। वे जानते थे कि बहुत से देशी नरेश वृटिश शासन के विरोधी हैं उन्हे उनकी आधीनता अखरती है यदि प्रयत्न किया जावे तो देशी नरेशो को भी क्रातिकारी दल मे सम्मिलित किया जा सकता है और उनका सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। साथ ही वे यह भी जानते थे कि देशी राज्यो में कुशासन और निरकुशता है अतएव उन्होने कई लेख लिखे कि देशी नरेशो को अपने

राज्यो मे क्या करना चाहिए।

पहले लेख मे उन्होने देशी नरेशो का राष्ट्र की सेवा के लिए आह्वान करते हुए नीचे लिखे सुधारो पर बल दिया।

(१) प्रत्येक राज्य मे मालगुजारी क्रमशः पाच वर्षों के अन्दर आधी करदी जाये।
(२) किसी भी परिस्थिति मे देशी राज्यो मे आयकर न लगाया जावे।
(३) अग्रेज अधिकारियो और विशेषकर ऐग्लो इडियनों को किसी देशी नरेश को अपने यहा नौकर नही रखना चाहिए।
(४) प्रत्येक देशी राज्य मे नरेश अपनी प्रजा को राज्य परिषद मे अपने प्रतिनिधि चुनकर भेजने का अधिकार दे। परिषद को कानून बनाने, वर्तमान कानूनो मे सशोधन सलघ्न करने तथा कर लगाने का अधिकार हो। परिषद की सहमति के बिना कोई नया कर न लगे।
(५) देशी नरेशो को अपने जागीरदारो सरदारो से झगडा नही करना चाहिए जिससे विदेशी सत्ता उनके आन्तरिक मामलो मे हस्तक्षेप न कर सके।
(६) जिस प्रकार की सरकार बृटेन मे प्रचलित है ठीक उसी प्रकार की सरकार देशी नरेश अपने राज्य मे स्थापित करें यह उनके तथा प्रजा के हित मे है।
(७) यदि कोई देशी नरेश ऊपर लिखे सिद्धातो को कार्यान्वित करेगा तो लोग उसे देश का शुभेच्छु मानेगे और स्वतत्र भारतीय जनतत्र का वह प्रथम राष्ट्रपति बन सकता है।

श्यामजी कृष्ण वर्मा एशियाई देशो की स्वतत्रता के प्रयत्नो की अपने पत्र मे विशद चर्चा करते थे। और भारतीयो को उत्साहित करते थे। आयरलैंड के स्वतत्रता के आदोलन से प्रेरणा लेने के लिए वे आयरलैंड के देशभक्तो के भाषणो को अपने पत्र मे दिया करते थे यही कारण था कि जब दो आयरिश देशभक्तो पर डब्लिन मे राजद्रोहात्मक पर्चों को चिपकाने के अपराध मे अभियोग चलाया गया तो श्यामजी कृष्ण वर्मा ने उस पर्चे के लेख को पूरा का पूरा अपने पत्र मे छाप दिया। और अपने भारतीय पाठको को उस उदाहरण मे पाठ पढने के लिए कहा। वह लेख इस प्रकार था।

"आयरिशमैन" क्या तुम अपने देश को इगलिश आर्मी, नेवी मे तथा पुलिस मे भरती होकर, दासता मे जकडे और इगलैंड की एडी के नीचे दबाए रखना चाहते थे ?

तुम्हारी प्यारी मातृभूमि की कलाइयो मे दासता की हथकडी मजबूत और जकडी हुई है क्या तुम उस जजीर और हथकडी को सेना मे भर्ती होकर कि जो उसको दास बनाए हुए है और अधिक जकडने मे सहायता करोगे ?

तुम आइरिश राष्ट्र को ऊचा उठाने मे अग्रेजी सेनाओ मे भर्ती न होकर मदद कर सकते हो। यदि तुम आयरिश हो, तुमको आयरलैंड के प्रति सच्चा होना चाहिए और घृणित सैक्सन धन शिलिंग को लेने से इनकार कर तुम अपनी मातृभूमि 'इरिन' को पुन एक राष्ट्र की स्थिति मे पहुचाने मे अपना हाथ बटा सकते हो।

श्यामजी भी लगातार यह प्रचार करते थे और भारतीयो को सरकारी नौकरी न करने तथा सरकार से सहयोग न करने के लिए प्रोत्साहित करते थे। उनका मानना था कि यह विदेशी शासन को समाप्त करने का सबसे शातिपूर्ण और अहिंसक

तरीका है।

उस समय तक १८५६ के भारतीय स्वतन्त्रता के प्रथम सघर्ष का पचास वां वर्ष आ गया था। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने उनकी जुवली मनाने, और भारतीयो को उन वीरो की याद करने के लिए धुंआधार प्रचार किया।

१० मई को वीर दामोदर विनायक सावरकर जो उस समय लदन मे इडिया हाऊस मे अध्ययन करते थे, उनके प्रयत्नो से १८५७ के विद्रोह की जयन्ती मनाई गई।

उसी दिन भारत मे लाला लाजपतराय और सरदार अजीतसिंह को सरकार ने कैद कर लिया और उन्हे अज्ञात स्थान को ले जाया गया समस्त भारत मे क्षोभ की लहर फैल गई। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने वृटिश शासन पर कठोर प्रहार किया अपने लेख में उन्होने लिखा कि "लाला लाजपतराय का देश निकाला एक ऐसी घटना है जो हमारी सम्मति मे भारत मे वृटिश शासन के पतन का पूर्वाभास है। एक सस्कृत श्लोक है जिसमे कहा गया है कि जव दुर्भाग्य आता है तो मनुष्य की वुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। जिस प्रकार राम जैसे प्रसिद्ध शासक एक लोभी व्यक्ति की भाति स्वर्ण हिरन के पीछे भागे यद्यपि सोने का हिरन का अस्तित्व ही एक असम्भव वात थी। अत मे उन्होंने लिखा कि लाला लाजपतराय का यह वलिदान भारतीयो को प्रेरणा देगा और इस सत्य को उद्भासित करेगा कि ससार की उन्नति के चरण एक सूली से दूसरी सूली की ओर वढते हैं।

भारतीय क्राति की जननी मैडम कामा ने सोश्योलाजिस्ट मे लाला लाजपतराय की गिरफ्तारी पर भावनापूर्ण शब्दो मे लिखा और अपने देशवासियो से आवेगपूर्ण शब्दो मे अपील की।

"एक प्रात काल मुझे यह जानकर गहरा धक्का लगा कि लाल लाजपतराय हममे से एक सच्चे देशभक्त को उनके घर से ले जाया गया और वे वन्दी वना दिए गए।

"भारत के स्त्री पुरुषो, इस क्रूर अत्याचार का साहस के साथ विरोध करो। दृढ निश्चय करलो कि चाहे समस्त भारतीय जनसख्या नष्ट क्यो न हो जाय परन्तु हम इस दासता का जीवन व्यतीत नही करेंगे।

"भारत, परशिया, अरेविया के प्राचीन वैभव के गीत गाने से क्या लाभ जवकि आज तुम दासता का जीवन व्यतीत कर रहे हो। वीर राजपूतो, सिक्खो, पठानो, गुरखाओ, देश भक्त मराठो और वगालियो, चेतनाशील पारसियो और साहसी मुसलमानो और तुम शात प्रकृत जैनियो और धैर्यवान हिंदू महान जातियो के पुत्रो तुम अपनी गौरवशाली परम्पराओ के अनुसार क्यो नही रहते। क्या वात है जो कि तुम्हें दासता का जीवन व्यतीत करने के लिए विवश करती है। उठो स्वराज्य के अतर्गत समानता और स्वतन्त्रता स्थापित करो। अपनी भावी सतानो के भविष्य का निर्माण करने के लिए उठ खडे हो। भाइयो और वहिनो मानव-के अधिकारो के युद्ध के लिए लडो और पश्चिम को यह वतलादो कि पूर्व पश्चिम को कुछ सिखा सकता है। अग्रेज जैसे प्रसिद्ध कवि वर्डस्वर्थ के पौत्र श्री विलियम वर्डसवर्थ ने "श्वेत वस्त्र मे राक्षको की सज्ञा दी, शिक्षा दो।"

मैं सोचती हू कि यदि मैं जेल के फाटको को तोडकर लाला लाजपतराय को वाहर निकाल ला सकती—लाजपत जैसे देशभक्त को जेल की दूषित वायु मे श्वास

लेने के लिए नही छोडा जा सकता ।

हमे एक हो जाना चाहिए । यदि हम लाला लाजपतराय की भांति निडर होकर बहादुरी से बोले तो सरकार को हम सबो को देश से निष्कासित करने के पूर्व बद रखने के लिए अगणित कैद खाने बनाने होगे । हम सख्या मे तीस करोड है । हमको केवल एकता की आवश्यकता है और इस सकट के समय हममे उसकी कमी है ।

मित्रो स्वाभिमान जागृत करो और उसका प्रदर्शन करो । इस निरकुश शासन को उसके लिए किसी रूप मे भी सेवा करने से इनकार करके ठप्प करदो ।

भारत एकता के सूत्र मे बध कर उठे, आज वदेमातरम मत्र से जागृत होकर उठ खडा हो । श्रीमती कामा की यह अपील सोश्योलाजिस्ट के जून के अक मे केवल प्रकाशित ही नही हुई परतु ७ जून, १९०७ को इण्डिया हाउस मे भारतीयो की सभा मे पढ़ कर सुनाई भी गई ।

अग्रेज राजनीतिज्ञ श्यामजी कृष्ण वर्मा से बहुत क्षुब्ध हो उठे । उन्होंने देखा कि इगलैंड की राजधानी मे ही बैठ कर श्यामजी कृष्ण वर्मा ब्रिटिश शासन पर कठोर प्रहार कर रहे है । सर्व प्रथम टाइम्स ने उनके विरुद्ध कडी कार्यवाही करने के सम्बध मे टिप्पणी लिखी । उसके बाद सभी पत्रो ने उनके विरुद्ध लिखना आरम्भ किया । पार्लियामेट मे उनके विरुद्ध जिहाद बोल दिया गया ।

एक फ्रासिस यफ स्क्राठन ने लिखा कि इस स्काऊड्रल (दुष्ट) के कारण बहुत से भारतीय तरुण जिन्हें उनके सम्बधियो ने मेरी देख रेख मे रख दिया था बिगड गए ।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने उसका उत्तर देते हुए लिखा "स्काऊड्रल" शब्द बहुत मजेदार है । वह केवल यह बतलाता है कि अपने राजनीतिक विरोधी को बदनाम करने के लिए एक ऐग्लो इडियन नीचता की कितनी गहराई तक उत्तर सकता है ।

स्काटलैंड यार्ड के गुप्तचर अब श्यामजी कृष्ण वर्मा के चारो ओर चक्कर काटने लगे । सोश्योलाजिस्ट की पिछली प्रतियो को गुप्तचर ले गए । आए दिन स्काटलैंड यार्ड के अधिकारी पूछ ताछ के लिए आने लगे ।

उसी समय श्यामजी कृष्ण वर्मा ने फ्रासीसी क्राति के प्रसिद्ध गीत "ला मार्सेलाज" जो क्राति के उपरात फ्रास का राष्ट्रीय गीत बन गया, अपने पत्र मे प्रकाशित किया और साथ ही उसका हिंदी, उर्दू, सस्कृत, बगला, गुजराती, मराठी अनुवाद भी छाप दिया जिससे कि वह क्राति गीत समस्त भारत के लोग गा सके—

गीत

चलो तुम स्वदेश के सब जन
फतह का आ गया अब दिन
झण्डा जुल्म का खूनी
चढा है रुबरु अपनी
मैदान मे सुनते हो यार
जालिम सैनिको की ललकार
देखो तुम आते है वे पास
करने पुत्र प्रिया का नाश
स्वदेशी चलो लो हथियार

करो तुम पल्टनें तैयार
खून से होवे खेत भरपूर

श्यामजी कृष्ण वर्मा समझ गए कि अब उन पर वार होने वाला है। श्यामजी के सामने अब केवल तीन ही विकल्प थे। या तो क्षमा माग कर भविष्य मे अपने कार्य को बद कर दिया जाय। अथवा वृटिश जेल मे सडा जावे। तीसरा विकल्प यह था कि इगलैंड को छोडकर किसी अन्य देश को चला जाय। वृटिश सरकार से क्षमा मागने की वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे और जेल मे बद होकर निष्क्रिय वे पसद नही करते थे अस्तु उन्होने पेरिस चले जाने का निर्णय किया और उन्होने लदन छोड दिया।

इस सम्वध मे अपने पत्र के सितम्वर के अक मे उन्होने लिखा।

"सस्कृत मे एक कहावत है कि अपना पैर गदगी मे रख कर धोने की वजाय पैर को गदगी मे न रखना ही श्रेष्ठ है। दूसरे शब्दो मे यह मूर्खता होती है कि कोई एक क्रूर और असहानुभूतिपूर्ण सरकार द्वारा अपने को कैद हो जाने दे और इस प्रकार अपने कार्य करने की स्वतत्रता नष्ट करदे। इस सिद्धात के अनुसार मैंने अपने शत्रुओ के उद्देश्य को जानकर इगलैंड को सदा के लिए छोड दिया।

आज से ठीक दस वर्ष हुए जव हमारे परम मित्र वालगगाधर तिलक तथा नाट्वन्धु गिरफ्तार हुए थे हमने भारत छोडकर इङ्गलैंड मे वसने का निश्चय किया था। और अव जवकि हमारे दूसरे मित्र लाला लाजपतराय को देश से निष्काशित कर दिया गया है तव हमारे भाग्य मे यह लिखा था कि हम इङ्गलैंड छोडकर पेरिस को अपना निवास स्थान वनाए। हमे पूर्ण विश्वास हो गया है कि कोई भी भारतीय जो राजनीतिक स्वतत्रता का प्रेमी है और अपनी मातृभूमि की वर्तमान अत्याचारी विदेशी दासता से मुक्ति चाहता है वृटिश साम्राज्य मे कही भी सुरक्षित नही है।

उस समय भारत मे क्रान्तिकारियो पर घोर दमन चक्र चल रहा था। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अपने पत्र के द्वारा अग्रेजो के इस दमन की कथा समस्त योरोप के सभी देशो को सुनाई तथा अमेरिका मे उन्होने भारत के लिए सहानुभूति उत्पन्न कर दी। उधर वे भारतीय क्रान्तिकारियो को प्रोत्साहन देते और सहायता पहुचाते थे।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने भारत की स्वतत्रता प्राप्ति के लिए जो कार्यक्रम वनाया था उसका रूप वहुत कुछ महात्मा गाधी के असहयोग आन्दोलन से मिलता जुलता था। उन्होने अपने पत्र मे अग्रेजो से युद्ध करने के लिए नीचे लिखी योजना प्रकाशित की थी।

१–किसी भी भारतीय को अपना धन वृटिश अथवा भारत सरकार की सिक्यूरिटियो मे नहीं लगाना चाहिए और जो भी सरकारी प्रामिसरी नोट या वाड हो उन्हे तुरत भुना लेना चाहिए।

२–भारतीयो को समस्त भारतीय सरकार के ऋण को अस्वीकार कर देना चाहिए स्वतत्र भारत उस कर्ज का भुगतान करने के लिए जिम्मेदार न होगा।

३–प्रत्येक भारतीय को वृटिश सरकार के अधीन सैनिक अथवा नागरिक सेवाओं को अस्वीकार कर देना चाहिए।

४–समस्त भारत मे हडताल का आयोजन करना चाहिए। आम हडताल के द्वारा सरकारी तत्र को ठप्प कर देना चाहिए।

५–भारतीयो को सरकारी स्कूलो और कालेजो का वहिष्कार करना चाहिए।

और राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाएं स्थापित करनी चाहिए।

६–भारतीय वकीलो को सरकारी अदालतो का बहिष्कार करना चाहिए और राष्ट्रीय न्यायालय स्थापित करने चाहिए।

७–भारतीयो को उन सभी ऐंग्लो इण्डियन पेपर्स का बहिष्कार करना चाहिए जो भारतीय स्वतन्त्रता के आन्दोलन का विरोध करते हैं।

८–अन्त मे श्यामजी ने भारत के सभी हितैषियो और मित्रो का इस बात के लिए आह्वान किया कि वे भारतीयो को बतलाए कि यह अत्यन्त लज्जाजनक बात है कि वे बृटिश सरकार द्वारा भारत पर अपना अधिपत्य बनाए रखने मे सहायता करे साथ ही भारतीयो मे राष्ट्र प्रेम और देश भक्ति की भावना को घोषित करे। जिससे कि बृटेन का अधिपत्य भारत पर टिक सकना असम्भव हो जावे।

श्यामजी का एक विचार यह भी था कि भारत तथा उन सभी देशो के स्वतन्त्रता आन्दोलनो मे एकता का सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए जो कि बृटिश दासता से मुक्ति पाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

यद्यपि श्यामजी की योजना शातिपूर्ण ढग से स्वतन्त्रता प्राप्त करने की थी परन्तु श्यामजी का यह भी कहना था कि यदि बृटिश सरकार उसी प्रकार कठोर दमन करती रही और भारतीयो को शातिपूर्वक ढग से आन्दोलन नही करने दिया तो हिंसा को बचाया नही जा सकता। किसी भी पराधीन देश के लिए यदि हिंसा द्वारा मुक्ति मिल सकती हो तो उसको उसे स्वीकार करना चाहिए।

उस समय भारत सरकार ने श्यामजी के पत्र 'इण्डियन शोस्योलाजिस्ट' के प्रवेश को भारत मे वर्जित कर दिया था किन्तु गुप्त रूप से पत्र भारत मे आता था और लोग गुप्त रूप से उसे खूब पढते थे। भारत मे उसकी बहुत माग थी और उसका यहां की राजनीति पर गहरा प्रभाव था।

उसी समय सूरत मे काग्रेस मे फूट पड गई। गरम दल और नरम दल एक दूसरे से पृथक हो गए। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने तिलक जी का जोरदार शब्दो मे समर्थन किया और उन्हे साहसिक निर्णय पर बधाई दी।

श्यामजी और राणा के पेरिस चले जाने के उपरात इडिया हाऊस की देखभाल तथा इङ्गलैंड मे भारतीय राष्ट्रवादियो का नेतृत्व वीर सावरकर के हाथ में आ गया था। उन्होने जब १० मई १९०८ को १८५७ के भारतीय विद्रोह की जयन्ती इडिया हाऊस मे मनाई तो इङ्गलैंड के पत्रो ने उसमे घोर आराजकता की गध पाई और उसका कडा विरोध किया। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने उसका खुले रूप मे समर्थन किया। उस समय मे भारत मे क्रातिकारी युवको को फासी दी जा रही थी। गोलियो से क्रातिकारियो का शिकार किया जा रहा था। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने प्रफुल्ल चाकसी, खुदीराम बोस, कनाई लाल, दत्त सत्येन्द्र नाथ बोस, जो मातृभूमि की बलीवेदी पर शहीद हो गए उनके स्मीरक स्वरूप उनके नाम की छात्रवृत्तिया घोषित की। जब मदन लाल धीगरा ने लदन मे कर्नल वायली की हत्या कर दी तो समस्त इङ्गलैंड मे भय और सनसनी फैल गई।

धीगरा ने भारतीय क्रातिकारी इतिहास मे एक नया और गौरवशाली अध्याय जोड दिया था। उसने भारतीय विद्रोह का बृटिश साम्राज्य के हृदय मे उसकी राजधानी मे शङ्खनाद किया था। बृटेन की जनता इस साहसिक कार्य से अत्यन्त आतकित और

क्षुब्ध हो उठी थी। बृटेन के पत्रों ने इस काण्ड में श्यामजी कृष्ण वर्मा का हाथ बताया और उन्होंने सरकार से माग की कि श्यामजी कृष्ण वर्मा को वायली की हत्या के लिए उत्तरदायी ठहराया जावे और उन पर अभियोग चलाया जावे। फ्रैंच सरकार से कहा जाने कि वे उन्हे बृटिश सरकार के सुपुर्द कर दें।

लदन के प्रमुख पत्र ने लिखा कर्जन वायली की हत्या के अपराध मे श्यामजी कृष्ण वर्मा पर अभियोग चलाना साधारण न्याय का कार्य होगा और न्यायाधीशो का निर्णय ही इङ्गलैंड की जनता का भी निर्णय होगा।

जब बृटेन के समस्त पत्रो मे चिल्ला कर एक स्वर से श्यामजी कृष्ण वर्मा को कर्जन वायली की हत्या के सम्बध मे अपराधी घोषित किया तब प्रथम बार अपने राजनीतिक जीवन मे श्यामजी कृष्ण वर्मा थोडे विचलित हो गए। २ जुलाई के प्रातः काल पेरिस के 'डेली मेल' समाचार पत्र के प्रतिनिधि ने जब उनको कर्जन वायली की हत्या का समाचार सुनाया और बृटिश पत्रो द्वारा उनका उस हत्या से सम्बध बतलाया तो वे भ्रमित हो गए। उस पत्र प्रतिनिधि ने उनकी मानसिक स्थिति का पूरा लाभ उठाया और उनके विचारो को बढा चढा कर और तोड मरोड कर प्रकाशित कर दिया।

डेली मेल के प्रतिनिधि ने जब उनसे पूछा कि धींगरा का इंडिया हाऊस से सम्बध था या नहीं तो उन्होंने कहा कि जहा तक उन्हे ज्ञात है कि इस नाम का कोई भारतीय युवक इडिया हाऊस मे नहीं रहा। जब पत्रकार ने उसको कृत्य के औचित्य पर उनके विचार जानने चाहे तो पहले तो उन्होंने कोई स्पष्ट उत्तर नही दिया, पत्र प्रतिनिधि का कहना था 'कि मेरे विशेष बल देने पर उन्होंने उस कृत्य की निन्दा की और कहा कि मेरे विचार मे यद्यपि इस प्रकार की राजनीतिक हत्याए भारत मे सर्वथा उचित है परन्तु इङ्गलैंड अथवा विदेशो मे निन्दनीय हैं।'

उक्त पत्र प्रतिनिधि से श्यामजी कृष्ण वर्मा ने क्या कहा यह किसी को ज्ञात नही है परन्तु उस साक्षात्कार की रिपोर्ट के कारण पेरिस तथा लदन के राष्ट्रीय विचारो के भारतीय अत्यन्त ममहित और क्षुब्ध हुए। उनके विरुद्ध क्रुद्ध भारतीयो ने प्रदर्शन किया और उनकी कठोर आलोचना की। बृटिश पत्र तीव्रता से श्यामजी कृष्ण वर्मा पर प्रहार कर रहे थे और उन्हे दोषी घोषित कर रहे थे। उधर राष्ट्रीय विचारो के भारतीय उनकी निंदा कर रहे थे। वीर सावरकर तथा इंडिया हाऊस मे रहने वाले अन्य युवक भारतीयो ने पत्र लिखकर उनके विरुद्ध अपना रोष प्रगट किया।

जब बृटिश प्रेस और राष्ट्रीय विचारों के भारतीय उन पर आक्रमण करने लगे तो उन्होंने 'टाइम्स' पत्र में एक लम्बा पत्र प्रकाशित किया जिसमे उन्होने मदनलाल धींगरा की मातृभूमि की बलिवेदी पर अपना बलिदान कर देने की प्रशसा की और उसे एक महान शहीद कहा। साथ ही उस साहसिक कृत्य से अपना कोई सम्बध न होने की भी घोषणा की।

अपने वक्तव्य मे उन्होंने कहा था "यद्यपि कर्नल वायली की हत्या से मेरा कोई सम्बध नही है। और जैसा कि गत शनिवार को श्री धींगरा ने पुलिस अदालत मे अपने साहसिक वक्तव्य में कहा है कि उन्होंने कर्नल वायली की हत्या राजनीतिक कारणो से की है, मैं स्पष्ट रूप से कहना चाहता हू कि मैं उनके इस साहसिक कृत्य का समर्थन करता हू और धींगरा को मातृभूमि की स्वतत्रता के लिए अपने को बलिदान कर देने वालो मे एक बलिदानी मानता हूं।" आगे उन्होंने कहा :—

'मदनलाल धींगरा का नाम भारत की भावी पीढिया अत्यन्त श्रद्धा के साथ एक ऐसे वीर पुरुष के रूप में लिया करेंगी जिसमे अपने आदर्शो को बलिवेदी पर अपने जीवन का बलिदान कर दिया। मजिस्ट्रेट के समक्ष अपने वक्तव्य मे तथा लन्दन मे पुराने वैले की अदालत मे सुनवाई के समय जो उन्होने घोषणा की वे दोनो ही वक्तव्य साहस, सत्य और देश भक्ति का भावना से परिपूरित होने के कारण असाधारण हैं और वे मदल लाल धीगरा को ससार मे स्वतत्रता के लिए अपना बलिदान कर देने वाले वीरो में सर्वोच्च स्थान पर पहुचा देते है।'

अपने प्राणो की आहुति देकर उन्होने जो गौरवशाली परम्परा स्थापित की है उसके प्रति हम अपनी विनम्र श्रद्धा और भक्ति प्रदर्शित करने के लिए उनके नाम से चार छात्रवृत्तिया देने की घोषणा करते है।

श्याम जी कृष्ण वर्मा के धीगरा के सम्बन्ध मे ऐसे प्रशसात्मक वक्तव्य के पश्चात ब्रटिश सरकार ने लदन मे भारतीय राष्ट्रवादियो के समस्त प्रचार कार्य को समाप्त कर देने का निश्चय कर लिया। क्योकि श्यामजी कृष्ण वर्मा पेरिस मे थे इस कारण उन पर तो कोई मुकदमा नही चल सका परन्तु 'सोश्योलजिस्ट' के मुद्रको श्री आर्थर वर्सले. और श्री गुई ऐलडर्ड को क्रमश. चार महीने और एक वर्ष की जेल की सजा दे दी गई। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने मुद्रको के दडित होने पर लिखा यह 'सोश्योलाजिस्ट' के लिए कम गौरव की वात नही है लन्दन की पुराने वैले के न्यायालय ने उसकी निन्दा की और मुद्रको को सजा दे दी उससे सभ्य ससार को यह ज्ञात हो जावेगा कि इग्लैंड जो पत्रो की स्वतत्रता का झूठा दम्भ करता था वह मिथ्या है वहा पत्रो की स्वतत्रता नही है।

धीगरा के अभियोग का एक परिणाम यह हुआ कि इडिया हाऊस भी समाप्त हो गया। इडिया हाऊस जो रहस्यमय था और जिसे राष्ट्रवादी भारतीय 'स्वतत्रता के मदिर' के नाम से सम्बोधित करते थे और जिसका श्यामजी कृष्ण वर्मा, राणाजी तथा अत मे सावरकर के नेतृत्व में विकास हुआ था वह भारतीय स्वतत्रता का लदन मे प्रतीक माना जाता था' समाप्त हो गया।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने उस भवन को जिसमें इडिया हाऊस स्थित था वेच दिया और इडिया हाऊस के लिए अन्य कोई इमारत नही ली।

इन सव कारणो मे पेरिस में जो भी राष्ट्रीय विचारो के भारतीय थे वे श्यामजी कृष्ण वर्मा से असतुष्ट हो गए। उनके घनिष्ट मित्र मैडम कामा, और सरदार सिंह जी राणा भी उनसे दूर पड गए। मैडम कामा योरोप मे अव भारतीय क्रातिकारियो की सर्वोच्च नेता थी और उन्होने लाला हरदयाल के सम्पादकत्व मे 'वदेमातरम' पत्र निकालना आरम्भ किया और वाद को धीगरा की स्मृति में वर्लिन (जरमनी) से 'मदन-तलवार' पत्र निकाला।

जव भारत मे क्रातिकारियो द्वारा वम और पिस्तौल का खुल कर प्रयोग होने लगा और क्रूर अग्रेज अधिकारियो की हत्या की जाने लगी तो यह आवश्यक हो गया कि श्यामजी कृष्ण वर्मा हिंसा के द्वारा भारत की स्वतत्रता प्राप्त करने के इस प्रयोग के सवध मे अपने विचार प्रकट करें क्योकि उससे पूर्व उन्होने भारतीय स्वतत्रता के लिए अहिंसक कार्यक्रम का समर्थन किया था। सितम्बर १९०८ के सोश्योलाजिस्ट के अक मे 'डाइनेमाइट का नीतिशास्त्र' और भारत मे वृटिश निरकुशता शीर्षक से लम्बा

लेख लिख कर उन्होंने नीचे लिखे शब्दों मे हिंसा का समर्थन किया :—

'यदि ब्रटिश शासक और उनकी सेना ने भारतीयों की स्वतन्त्रता ही नहीं उनकी राष्ट्रीय सम्पति को भी चुरा लिया है और पिछले डेढ सौ वर्षों मे करोडों भारतीयो को मृत्यु का ग्रास बना दिया है तो उनके अत्याचार के शिकार भारत भूमि के निवासी और स्वामी क्या इस बात का न्याय के आधार पर अधिकारपूर्वक दावा नही कर सकते कि आत्मरक्षा करना केवल न्यायोचित ही नही सदैव के लिए एक पावन कर्त्तव्य है। और उन्हे उन सभी उपायो को अपनाने का अधिकार है कि जो विदेशी आक्रमणकारियो का प्रतिरोध करने मे सफल हो। जैसा कि ब्रटिश दण्ड सहिता (पेनल कोड) मे डकैती के मामले मे अपने धन सम्पति की रक्षा करने के लिए किसी भी व्यक्ति को डाकू की हत्या तक कर देने का अधिकार स्वीकार किया गया है उसी प्रकार भारतीयो का यह नितांत न्यायोचित अधिकार है कि वे बृटिश शासको के प्रतिनिधियो के विरुद्ध युद्ध करें कि जो भारतीय जनता के सबसे बडे और सुसंगठित लुटेरो और हत्या करने वालो का गिरोह है।'

उन्होने आगे लिखा कि हिंसा हमारे कार्यक्रम का भाग नही था परन्तु बृटिश सरकार जब तक स्वतत्रता पूर्वक स्वतत्रता के लिए आदोलन करने देती तभी तक वह अहिंसक कार्यक्रम लागू किया जा सकता था। परतु बृटिश सरकार ने जब क्रूर दमन के द्वारा समाचार पत्रो तथा लेखनी और भाषण की स्वतत्रता का अपहरण कर लिया है तो भारतीय देशभक्तो का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि भारत की स्वतत्रता को प्राप्त करने के लिए सभी सम्भावित उपायो को काम मे लावें।

जब वीर विनायक सावरकर के बडे भाई श्री गणेश सावरकर पर नासिक के जिलाधिश जैकसन ने सम्राट के विरुद्ध युद्ध करने का अभियोग चलाया और जज ने उन्हें आजन्म देश निकाले और काले पानी का दण्ड दे दिया तो क्रातिकारियो ने श्री जैकसन की हत्या करने का निश्चय किया। जब कि जैकसन को विदाई दी जा रही थी तो २९ दिसम्बर १९०९ को अनन्तलक्षण कन्हारे ने उनको गोली मार दी। कन्हारे ने जेकसन को उन्ही बीस स्वचलित पिस्तोलो में से एक ब्राऊनिग पिस्तौल से मारा था जिन पिस्तौलो को लदन से विनायक सावरकर ने इडिया हाऊस के रसोइये चतुर्भुज अमीन के साथ उसके बाक्स के गुप्त तले में रख कर भेजे थे।

इस घटना पर जनवरी १९१० के 'सोश्योलाजिस्ट' में टिप्पणी करते हुए श्याम जी कृष्ण वर्मा ने गणेश सावरकर के एक निकट सबधी को लिखा था—

'उन्हे अत्ययत खेद है कि गणेश सावरकर को मलेच्छ (विदेशी) राजा के विरुद्ध युद्ध करने के अभियोग मे जो आजन्म देश निकाले का दण्ड दिया गया और उस दण्ड की बम्बई उच्च न्यायालय ने पुष्टि कर दी जिसके दो जजो मे से एक भारतीय देशद्रोही (सरयन-चद्रावारकर) था और जिसकी यह आज्ञा कि गणेश सावरकर की समस्त सम्पति जब्त कर ली जावे अत्यत बर्बर और नृशस थी। उस वीर तरुण देश-भक्त के प्रति अपनी श्रद्धा और सहानुभूति के प्रतीक हम उनके परिवार के लिए यह चेक भेज रहे हैं जो वे कृपा कर स्वीकार करें। यही नही उन्होंने गणेश सावरकर तथा हेमचन्द्रदास की स्मृति मे दो छात्रवृत्तिया भी घोषित कीं।

जैकसन की मृत्यु के उपरात पुलिस ने बहुत छानबीन की और इण्डिया हाऊस के रसोइए चतुर्भुज अमीन को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के अत्याचार को वह सह

नही सका और वह पुलिस का मुखविर वन गया। उसने पुलिस को वतला दिया कि वे पिस्तौल भारत मे कहा-कहा भेजे गए थे। उसने यह भी बताया कि धीगरा ने भी कर्जन वायली को मारने मे उसी हथियार का उपयोग किया था। पुलिस की छानवीन से यह तथ्य स्पष्ट हो गया कि भारत मे जो भी पिस्तौल काम मे लाए गए वे एक फेंच फर्म के थे। यद्यपि सरकारी मुखविर चतुर्भुज अमीन ने उस सम्पूर्ण षडयन्त्र के नियोजक सावरकर वधुओ को वतलाया परतु ब्रिटिश पुलिस ने सरदार सिंह राणा और श्यामजी कृष्ण वर्मा को भी इस षडयत्र में घसीटना चाहा। मैडम कामा ने इस पर पेरिस में ब्रिटिश काऊसिल के कार्यालय में जाकर एक वयान अपने हस्ताक्षरो सहित लिख कर दिया, कि इस सम्पूर्ण षडयत्र के लिए केवल वे ही उत्तरदायी हैं। यह उनकी निर्भीकता साहस और अपने साथियो के प्रति भावना का एक उज्ज्वल उदाहरण था।

श्यामजी कृष्ण वर्मा हिंसा के कार्यों का समर्थन करते, उन वीर क्रातिकारियो की राष्ट्रीय वीर की भानि प्रशसा करते, और उनके नाम से छात्र वृतिया देने की घोषणा करते थे। उन्होने सभी प्रमुख क्रातिकारियो के नाम से छात्रवृति की घोषणा की थी परतु वे स्वय किसी हिंसक कार्य में सम्मलित नही हुए। उनके स्वय को हिंसक कार्यो से वचने की प्रवृति की उनके विरोधी तो आलोचना करते ही थे स्वय उनके साथी भी उनके इस आचरण की आलोचना करते थे। ऐंग्लोइण्डियन पत्र 'पायनियर' ने श्यामजी कृष्ण वर्मा पर नीचे लिखे शब्दो मे कठोर प्रहार किया था।

वे (श्यामजी कृष्ण वर्मा) ससार के सबसे सुंदर नगर पेरिस के सर्वोत्तम मकान मे रहते हैं और उनका मकान उस नगर के सबसे अधिक फैशनेविल क्षेत्र मे स्थित है। जैसे ही कि आप ट्रामकार से उतरें तो आपको सुदर पेडो की लम्वी कतार मिलेगी उसको पार कर उन सत के मकान '१० ऐवेन्यू इनग्रेस' पहुचेगे। वह एक अत्यत शानदार भव्य इमारत है और प्रसिद्ध 'वोयस डी वोलोगे' के ऊपर दिखलाई देती है उसमे सभी आधुनिक सुविधाए प्राप्त हैं। उस मकान मे विद्युति सचालित लिफ्ट लगा है, विजली का प्रकाश है, स्नानघर मे गरम और ठण्डे पानी की व्यवस्था है और शीतकाल मे मकान को स्टीम से गरम रखा जाता है। उस मकान के कमरे वहुत वडे और शानदार है तथा खिडकियो से सुन्दर दृश्य दिखलाई पडते हैं। उस मकान मे जहा भगवान ने मनुष्य को जो कुछ वैभव और समृद्धि दे रखी है उसके मध्य वैठ कर वह पीडित सत रविवार को मध्यान्ह उपरात अपने सहकारियो और अनुयायियो से मिलता है। उनमे से वहुत से उनके वर प्रचुर मात्रा मे परोसी जाने वाले स्वादिष्ट वढ़िया चाय, केक और फलो की प्रचुरता के कारण आकर्पित होते है। इन पार्टियो मे पण्डित श्यामकृष्ण वर्मा करोडो दुर्भिक्ष से पीडित भारतीयो के लिए मगर के आंसू वहाते हैं। इन सभाओ मे श्यामजी कृष्ण वर्मा सभी सम्मिलित होने वालो को प्रोत्साहित करते हैं कि वे ससार के सभी सुखो को तिलाजलि देकर सादा जीवन व्यतीत करे। उनकी सभाओं मे राष्ट्रीय गीत गाए जाते हैं और घृणित फिरगिये (अग्रेजो) की सभी के द्वारा कठोर निंदा की जाती है।

इस प्रकार की आलोचना का उत्तर देते हुए श्यामजी कृष्ण वर्मा ने लिखा था। वहुधा गिरते हुए स्वास्थ्य, वढ़ती हुई आयु, स्वभाव तथा विशेप परिस्थिति वश

यदि कोई व्यक्ति कार्य विशेष को स्वय नही कर सकता तो भी वह उन व्यक्तियो के कार्यो को जिनमे उस कार्य की क्षमता है उसकी परिस्थितिया अनुकूल है की सराहना और प्रशसा तो कर ही सकता है। कौन ऐसा व्यक्ति है जो जोन ग्राफ आर्क तथा रानी लक्ष्मी बाई जैसी वीर रमणियो के उत्साहित और शौर्य की सराहना नही करेगा। यदि हम दैनिक जीवन मे घटने वाले उदाहरण को लें तो क्या हम ऐसे किसी वीर और साहसी युवक की सराहना या प्रशसा नहीं करेंगे कि जो सफर तूफानी समुद्र में एक पथरीले तट पर टूटे हुए समुद्री जहाज को बचाने के लिए जीवन रक्षक रस्सी को तट से उस टूटे जहाज तक ले जाता है और भयकर विपत्ति मे पडे जहाज मे यात्रा करने वाले यात्रियो की जीवन रक्षा करता है। उस समय तट पर खडे होने वालों मे से कितने ऐसे व्यक्ति होगे जो इच्छा रहते भी वह साहसिक कार्य कर सकें।

जब श्यामजी कृष्ण वर्मा तथा उनके द्वारा स्थापित इडिया हाऊस पर समाचार पत्रो मे आक्रमण होने लगे तो श्यामजी कृष्ण वर्मा ने एक पत्र ६ मई के 'डेली मेल' अपने विश्वास की 'स्वीकारोक्ति' शीर्षक से प्रकाशित किया।

'भारत मे आज जो कुछ हो रहा है निरपराध भारतीय देशभक्तो की अधाधुध गिरफ्तारिया, बल प्रयोग के द्वारा उनसे उनके अपराधो को स्वीकार कराना, उन्हे उत्पीडित करना और उन पर निर्दयता पूर्वक शारीरिक अत्याचार करना उसको ध्यान मे रखते हुए मैं कहना चाहता हूँ कि जिस सिद्धात को मैं प्रतिपादित करता हूँ और जिस सिद्धात पर मैं अडिग हूँ वह नीचे लिखा है—

'भारतवर्ष का सम्पूर्ण स्वामित्व अर्थात भारत का नैतिक और भौतिक आकाश से लेकर पृथ्वी तक केवल भारत के निवासियो मे निहित हैं। केवल भारतवासी ही (अन्य कोई नही) अपने देश की भूमि के स्वामी और कानून निर्माता हैं। वे सभी कानून जो उन्होने नही बनाए है गैर कानूनी और अमान्य हैं और वे सभी भूमि स्वामित्व के स्वत्व आलेख जो कि भारतीयो ने नही दिए हैं अमान्य हैं। देश के पूर्ण स्वामित्व के इस देवी अधिकार को प्राप्त करने के लिए भारतीयो को उन सभी उपायो को काम मे लाने का अधिकार है जिन्हे देवी शक्ति ने मनुष्यो को प्रदान किए हैं।'

'भारत को यह विश्वास उसको प्रभुसत्ता सम्पन्न स्वतत्रता प्राप्त करने मे प्रेरणा देगा।'

कहने का तात्पर्य यह कि यद्यपि श्यामजी कृष्ण वर्मा ने स्वय कोई हिंसा का कार्य नही किया परतु देश की स्वतत्रता के लिए वे हिंसक उपायो का समर्थन करते थे। क्रातिकारियो को आर्थिक सहायता देते थे क्रातिकारी विचारो का प्रचार और प्रसार करने के लिए 'सोश्यालाजिस्ट' पत्र प्रकाशित करते थे और भारत के क्रातिकारियो को साहित्य, अस्त्रशस्त्र तथा आर्थिक सहायता भेजते थे। विदेशो मे जो भारत की स्वतत्रता के लिए कार्य हुआ उसमे उनका बहुत अधिक हाथ था। उस समय इङ्गलैंड मे जो भी भारतीय क्रातिकारी थे उनका इडिया हाऊस से सम्बध था जिसे श्यामजी कृष्ण वर्मा ने स्थापित किया और वे उसके अध्यक्ष तथा सरदार सिंह जी राणा उसके व्यवस्थापक थे। जब वे लदन से पेरिस चले गए तो इडिया हाऊस की व्यवस्था श्री विनायक

सावरकर के हाथ मे छोड गए थे परतु उनका अभिभावकत्व तथा स्वामित्व पूर्ववत था।

यह हम पहले ही कह आए है कि धीगरा काण्ड के उपरात श्यामजी कृष्ण वर्मा के मित्र तथा क्रातिकारी सहयोगी मैडम कामा तथा सरदार सिंहजी राणा उनसे मतभेद हो जाने के कारण दूर हट गए। मैडम कामा भारतीय क्रातिकारियो की सर्वमान्य नेता और माग दर्शक थी। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने इडिया हाऊस के भवन को बेच दिया और वह प्रसिद्ध भारतीय क्रातिकारियो का केन्द्र समाप्त हो गया। फिर भी श्यामजी कृष्ण वर्मा पेरिस से 'सोश्यालाजिस्ट' निकालते थे और भारत की स्वाधीनता के पक्ष मे प्रचार करते थे।

जब हेग के अतर्राष्ट्रीय न्यायालय ने सावरकर को फ्रास की भूमि पर अग्रेजो द्वारा पकड कर ले जाने पर यह फैसला दिया कि यद्यपि सवैधानिक दृष्टि से फ्रास का यह दावा सही था कि उसे सावरकर को शरण देने का अधिकार था परन्तु सावरकर को फ्रास की सरकार के सुपुर्द करने से अब कोई लाभ नही होगा जबकि उनकी जन्म-भूमि के सर्वोच्च न्यायालय ने उन्हे गम्भीर अपराधो का दोषी पाया है। उस समय श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अतर्राष्ट्रीय न्यायालय तथा बृटेन पर कठोर प्रहार करते हुए लिखा था।

'हेग के अतर्राष्ट्रीय न्यायालय के सावरकर के सम्बध मे इस निर्णय ने कि वह राजनीतिक शरण लेने के सर्वमान्य अधिकार को सुरक्षित रखेगा इस विश्वास को चूर-चूर कर दिया है और यह अत्यत दुख की बात है कि वे राष्ट्र जो कि व्यक्तिगत वैचारिक स्वतन्त्रता मे आस्था और निष्टा रखने का बढ चढ कर दावा करते हैं वे इस अधिकार को राजनीतिक कारणो से समय आने पर स्वीकार नही करते। यल ह्यूमेनाइट पत्र की यह आलोचना न्यायपूर्ण और उचित थी कि सावरकर के मामले को अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय को देना ही फ्रास की राजनैतिक भूल थी और एक मित्र जो कि बृटिश पार्लियामेट के सदस्य थे उन्होने हमे विश्वास के साथ बतलाया कि फ्रास ने जिस प्रकार से मामले को न्यायालय के समक्ष उपस्थित किया उसमे असफल होना निश्चित था। जो भी फ्रास के दावे के अकाट्य और सबल आधार थे उनका उल्लेख तक नही किया गया। अब केवल हम अपने प्रिय मित्र तथा सहयोगी सावरकर के लिए दुख और सहानुभूति प्रकट करने के अतिरिक्त और कुछ नही कर सकते।'

उसी समय एक ऐसी घटना हुई कि जिससे इङ्गलैंड के समाचार पत्रो ने श्यामजी कृष्ण वर्मा के विरुद्ध भयकर विष उगलना आरम्भ कर दिया। बात यह थी कि श्यामजी कृष्ण वर्मा के परम मित्र श्री जेम्स पेरिस से निकलने वाले 'लिबरेटर' पत्र का सम्पादन करते थे उसमे पत्र के लन्दन के सवाददाता. 'मिनियस' का एक लेख छपा कि बादशाह पाचवे जार्ज ने माल्टा मे १८९० मे एडमिरल सर माइकेल सेमो की पुत्री से द्विपत्नीत्व विवाह किया था। इङ्गलैंड के सभी पत्रो तथा फ्रास के अधिकाश पत्रो ने इसमे श्यामजी कृष्ण वर्मा का हाथ बतलाया और उनके विरुद्ध घृणा का प्रचार किया।

टाइम्स ने लिखा 'वही बदनाम कृष्ण वर्मा जो भारत मे अग्रेजो की हत्या करने के लिए भारतीयो को उकसाता है वही सम्राट के विरुद्ध इस लाछन का

आविष्कर्त्ता है।' डेली मेल ने लिखा कि श्यामजी कृष्ण वर्मा का षडयत्र मे हाथ है, वह चाहता है कि भारतीयो की दृष्टि मे सम्राट गिर जाय। यहा तक कि उदार पत्रो ने भी श्यामजी कृष्ण वर्मा के ऊपर कठोर प्रहार किया। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने इसका उत्तर देते हुए लिखा कि यदि यह बात सच हो कि पाचवें जार्ज ने दूसरी पत्नी की तो भी मैं इसकी किस मुंह से आलोचना कर सकता हूँ कि जिसके देश मे हिन्दू मुसलमानो और यहूदियो मे बहुपत्नित्व की प्रथा प्रचलित है।'

अप्रेल १९११ मे श्यामजी कृष्ण वर्मा ने सयुक्त राज्य अमेरिका के प्रेसीडेंट श्री 'टफफ' को एक खुला पत्र लिख कर उन्हे अन्य राष्ट्रो की सम्पति के लुटेरे तथा उन्हे दास बनाने वाले इगलैंड मे सधि का घोर विरोध किया और लिखा कि आप के इगलैंड के प्रति वर्तमान रुख को जान कर आपके यशस्वी अग्रेज सयुक्त-राज्य अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति (प्रेसीडेंड) की उनकी कब्र मे रखे हुए उनके कफन (ताबूत) मे उनके शव की हड्डिया चरमराने लगी होगी। आपकी इगलैंड के साथ प्रस्तावित सधि का केवल यही अर्थ होगा कि आप दासता को तरजीह देते हैं। सयुक्त राज्य अमेरिका जिसने स्वय इङ्गलैंड की दासता के जुए को उतार फेंका था अब इस सधि के द्वारा इङ्गलैंड उन अन्य देशो को दास बनाए रखने के घृणित कार्य मे सहायता देने के लिए सयुक्त राज्य अमेरिका को आमत्रित करेगा कि जिनके निवासी इगलैंड के अत्याचार और दमन मे मुक्ति पाने के लिए और स्वतत्रता की प्राप्ति के इच्छुक हैं जितने कि सयुक्त-राज्य अमेरिका के लोग इच्छुक थे।'

श्यामजी कृष्ण वर्मा के इस पत्र का अमेरिका के आइरिश निवासियो ने अभूतपूर्व स्वागत किया जो बृटिश दासता के जुए के नीचे कराह रहे थे। अत मे अमेरीका की सीनेट ने उस सधि परियोजना को रद्द कर दिया।

मार्च १९११ मे श्यामजी कृष्ण वर्मा ने जरमनी की सर्वश्रेष्ठ और प्रभावशाली पत्रिका मे लेख लिखा। उस समय बृटेन के समस्त समाचार पत्र जरमनी के विरुद्ध शत्रुता की भावना को भड़का रहे थे। श्यामजी कृष्ण वर्मा के उस लेख ने समस्त बृटेन तथा योरोप मे सनसनी उत्पन्न करदी। वास्तव मे प्रथम महायुद्ध के समय जो भारतीय क्रातिकारियो का जरमन सरकार से गठ-बधन हुआ उसका सूत्रपात श्यामजी कृष्ण वर्मा के उस लेख से हुआ था।

रूस के प्रसिद्ध क्रातिकारी लेखक और विचारक मैक्सिम गोर्की ने २८ अक्टूबर १९१२ के पत्र मे श्यामजी कृष्ण वर्मा को भारत का मैजनी कह कर सम्बोधित किया था। उन्होने अपने पत्र मे लिखा था—

'मैं हृदय के गहन तल से आपको 'इडियन सोस्योलाजिस्ट' भेजने के लिए धन्यवाद देता हूँ और आपसे हाथ मिलाता हूँ। मैं उस महान देश भारत की स्वतन्त्रता के लिए सघर्ष करने वाले अथक योद्धा से हाथ मिलाता हूँ जिस देश ने मानव जाति को मानव की आत्मा के रहस्यो को बतलाया है।'

आप कृष्ण वर्मा भारत के मैजनी— आप अपने महान देशवासियो की भावनाओ और इच्छाओ को समझते हैं और यह जान सकते हैं कि वर्तमान भारत के सम्बन्ध मे रूस के लोगो को क्या जानना चाहिए। आप भारत के सम्बन्ध मे लेख भेजिये।

—यम गोर्की

के श्री विला सेराफिना
२०-१०-१९१२

मैक्सिम गोर्की जैसे महान क्रातिकारी साहित्यकार लेखक और विचारक की दृष्टि मे श्यामजी कृष्ण वर्मा का व्यक्तित्व कितना महान था वह उनके इस पत्र से प्रकट हो जाता है।

जब २३ दिसम्बर १९१२ को देहली मे भारत के क्रातिकारियो ने लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका तो समस्त विश्व मे तहलका मच गया। बम फेकने वाले का पता नही चला। उसी दिन अमेरिका के पत्र 'सन' के सवाददाता ने श्यामजी कृष्ण वर्मा से उस घटना के सम्बन्ध मे उनकी प्रतिक्रिया जाननी चाही तो वर्मा ने कहा— 'मुझे इस समचार से आश्चर्य नही है। जब तक तर्क के पीछे शक्ति न हो कोई तर्क को नही सुनता। आप एक लुटेरे को तर्क करके समझा नही सकते उसको धराशायी करना होगा। अपनी स्वतत्रा के लिए युद्ध करते समय सभी साहसिक कार्य उचित है। भारतीय पूर्ण स्वतत्रता से कम कुछ भी स्वीकार नही करेंगे और वे जानते है कि वे अनुनय विनय करके उसे प्राप्त नही कर सकते।'

श्यामजी कृष्ण वर्मा केवल भारतीय क्रातिकारियो का ही समर्थन नही करते थे उनका मिश्र, माल्टा, जावा तथा अन्य सभी पराधीन देशो के क्रातिकारियो से सवध था और वे उनको सहायता देते थे तथा उनके पक्ष मे प्रचार करते थे।

१९१४ मे योरोप का राजनैतिक वातावरण अत्यन्त क्षुब्ध था प्रत्येक राजनीतिक जानता था कि महायुद्ध अवश्यम्भावी है और बृटेन तथा जरमनी मे युद्ध अनिवार्य है। अप्रेल १९१४ मे जार्ज पाचवें स्वय फ्रास से सधि करने पेरिस आए। दूरदर्शी श्यामजी कृष्ण वर्मा ने देख लिया कि अब फ्रास मे रहना खतरनाक होगा अस्तु उन्होंने पेरिस तुरन्त छोड दिया और वे जेनवा (स्विट्जरलैंड) चले गए और मृत्यु पर्यन्त वहीं रहे।

जब श्यामजी कृष्ण वर्मा ने स्वीटजरलैंड मे रहने का निश्चय कर लिया तो स्विटजरलैंड की सरकार ने उनसे यह आश्वासन ले लिया कि वे सक्रिय राजनीति मे भाग नही लेंगे। यद्यपि युद्धकाल मे जरमनी की बरलिन कमेटी, लाला हरदयाल द्वारा सयुक्त राज्य अमेरिका मे गठित गदर पार्टी और रविबहारी के नेतृत्व मे भारतीय क्रातिकारी दल द्वारा भारत मे विप्लव कराने के क्रातिकारी कार्यों से श्यामजी कृष्ण वर्मा अवगत थे लाला हरदयाल तथा बर्लिन कमेटी के सगठन कर्ताओ चम्पक रमन पिलाई, चट्टोपाध्याय, तारकनाथ दास, बरकतउल्ला आदि से उनका पत्र व्यवहार था और भारत मे क्रातिकारी दल तथा गदर पार्टी के कार्यो से वे अवगत थे परन्तु स्विटजरलैंड जाने के उपरात उन्होने राजनीति मे कोई सक्रिय भाग नही लिया।

दूरदर्शी और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के पारखी श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा यदि आने वाले महायुद्ध की विभीषका का अनुमान लगा कर फ्रास को छोड कर जेनवा न चले जाते तो मैडम कामा और सरदार सिह जी राणा की भाति ही वे भी फ्रास के किसी सुदूर स्थान मे वन्दी जीवन व्यतीत करते होते। पेरिस से जेनवा जाने पर इडियन 'शोस्योलाजिस्ट' का प्रकाशन बन्द हो गया। ६ वर्षो के उपरात उन्होने इडियन 'शोस्योलाजिस्ट' का प्रकाशन पुनः जेनवा से आरम्भ किया। उसके द्वारा वे भारत की स्वाधीनता के सवध मे प्रचार करते रहे।

जब लीग आफ नेशस की दूसरी एसेम्बली मे महाराव कच्छ और श्री श्रीनिवास शास्त्री ने भारत के प्रतिनिधि के रूप मे भाग लिया तो श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अपने पत्र मे इस नाटक पर कड़ा प्रहार किया। उन्होने लिखा कि लीग आफ नेशस किसे धोखा देना चाहती है। भारत 'न तो स्वतत्र है और न स्वशासित राष्ट्र है' यह दोनो सज्जन भारत के प्रतिनिधि नही हैं वे उस साम्राज्यवादी बृटेन के मनोनीत किए हुए हैं जो भारत को दास बनाए हुए हैं उन्होने भारत के देशी नरेशो का एक बार पुन. आवाहन किया कि वे जिस प्रकार १९१९ मे अफगानिस्तान के अमीर ने बृटेन से अपनी स्वतन्त्रता को छीन लिया उसी प्रकार सब देशी नरेश मिल कर बृटेन की दासता से देश को स्वाधीन करें।

व्यक्तिगत रूप से महाराव कच्छ के प्रति श्यामजी कृष्ण वर्मा की आदर की भावना थी क्योकि वे स्वय कच्छ के थे। परन्तु श्री शास्त्री के प्रति श्यामजी कृष्ण वर्मा ने कठोर प्रहार किया। श्री श्रीनिवास शास्त्री के सबध मे उन्होने लिखा—

'दूसरे भारतीय प्रतिनिधि जो कि नरम दल के वशानुक्रमिक वशज हैं वे भी उसी विदेशी सत्ता के मनोनीत किए हुए हैं जिसने भारत को पदाक्रात कर रखा है। वे अपने देशवासियो के प्रतिनिध न होकर स्वार्थी पदलोलुप हैं तथा उस अत्याचरी विदेशी सरकार के एजेंट मात्र हैं। वह अत्याचारी सरकार कुछ भारतीयो को धन, नौकरी, पद और सम्मान देकर भाडे पर अपना एजेट बनाने के लिए अथवा उनको खरीदने के लिए सदैव तैयार रहती है। शास्त्री ने जेनवा से लौटने पर अप्रेल १९२२ मे बम्बई मे नीचे लिखा वक्तव्य देकर अपने अपराध को और अधिक गुरुतर बना लिया। उन्होंने बम्बई मे कहा— 'मेरा विश्वास है कि जैसे-जैसे अधिक समय बीतता जायेगा बृटेन निवासी यह अनुभव करने लगेंगे कि भारतीयो की बृटिश सिंहासन के प्रति भक्ति और श्रद्धा भारत मे जो अभी हाल मे अशोभनीय घटनाए घटी हैं उनसे प्रभावित नही हुआ है और भारत एक महान शक्तिशाली गौरवशी साम्राज्य का अग है। जब तक कि वह उस साम्राज्य के अन्तर्गत हैं वे (भारतीय) सदैव उन्नति करते रहेंगे।'

श्री निवास शास्त्री के यह शब्द श्यामजी कृष्ण वर्मा को भाले की नोक की तरह हृदय मे छिद गए उन्होने अत्यन्त कठोर शब्दो मे शास्त्री की भर्त्सना करते हुए कहा 'यदि कोई भी व्यक्ति किसी योरोपीय देश अमेरिका अथवा अन्य किसी समय देश मे अपने देश पर विदेश के प्रभुत्व की प्रसशा करते हुए इस प्रकार की भावना व्यक्त करे तो नि सदेह वह देशद्रोही माना जावेगा और उसके साथ वही व्यवहार किया जावेगा जो कि एक देशद्रोही के साथ किया जाना चाहिए।'

परंतु १९२३ मे "इण्डियन शोश्योलाजिस्ट" का श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा ने प्रकाशन बद कर दिया क्योकि उनकी आखें खराब हो गई थी और आयु अधिक हो जाने से उनका स्वास्थ्य खराब रहने लगा था।

१९२९ मे जरमनी के फ्रैंकफर्ट नामक स्थान पर ससार के पदाक्रात राष्ट्रो का दूसरा विश्व सम्मेलन हुआ था। उसमे भारत माता के मदिर, काशी विद्यापीठ और "आज" के सस्थापक श्री शिवप्रसाद गुप्त भारत के प्रतिनिधि होकर सम्मिलित हुए। वे फ्रैंकफर्ट जाते समय और वहा से लौटते समय दोनो बार जनेवा मे श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा से मिले थे। अतिम बार मार्च १९३० मे जब बाबू शिवप्रसाद गुप्त

श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा के दर्शन करने गए उस समय वे मृत्यु शय्या पर थे। बाबू शिवप्रसाद जी गुप्त उस वयोवृद्ध देशभक्त के आकर्षक और भव्य व्यक्तित्व से इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होने श्यामजी कृष्ण वर्मा के चरणो मे पुष्प चढाए और हिन्दू पद्धति के अनुसार उस मृत्यु शय्या पर पडे देशभक्त की विधिवत पूजा अर्चना की। बाबू शिवप्रसाद गुप्त के पोस्ट कार्ड से ही पेरिस मे सरदार सिंह जी राणा तथा संसार को महान भारतीय देशभक्त की मृत्यु का समाचार मिला।

जब श्यामजी कृष्ण वर्मा ने राजनीति से सन्यास ले लिया तो उन्होने अपने धन के विनयोजन की ओर अधिक ध्यान दिया वे जेनवा की स्टाक ऐक्सचेंज मे प्रतिदिन जाते थे और योरोप के देशो तथा दक्षिण अमेरिका के देशों की सरकारो के ऋणों तथा बडी व्यवसायिक कम्पनियो के अशो को खरीदते बेचते थे। इसमे उन्हे बहुत सफलता मिली और उन्होने यथेष्ट धन सचय कर लिया।

१९३० मे उनका स्वास्थ्य बहुत गिर गया उनकी आंतो की बिमारी उग्र रूप से उभरी। आपरेशन हुआ और ऐसा प्रतीत होने लगा कि वे बच जायेंगे परन्तु उनका जीवन दीप ३१ मार्च १९३० को सदैव के लिए बुझ गया और वे चिरनिद्रा मे सो गए।

यद्यपि सरदार सिंह जी राणा का श्यामजी कृष्ण वर्मा से मतभेद हो गया था और वर्षों से वे एक दूसरे से दूर थे परन्तु जब उन्हे बाबू शिवप्रसाद जी गुप्त का कार्ड मिला तो वे दौडे आए और श्रीमती भानुमती कृष्ण वर्मा की विपुल सम्पत्ति की उनकी इच्छयानुसार सारी व्यवस्था की।

श्रीमती भानुमती कृष्ण वर्मा सच्चे अर्थों मे सहधर्मणी थी उन्होंने कठिन परिस्थितियो मे धैर्य से अपने पति का साथ दिया था उन्होने जेनवा विश्वविद्यालय को दस हजार फ्रेंक अपने पति के नाम पर समाजशास्त्र विषय पर शोध ग्रथ छपाने के लिए दिए परतु उन्होने सबसे बडा दान अपने पति के नाम पर पेरिस के सोरबोन विश्वविद्यालय को दिया उन्होने उस विश्वविद्यालय को बीस लाख फ्रेंक भारतीय छात्रो की सहायता तथा भारत सम्बन्धी अध्ययन की व्यवस्था करने के लिए दिए। वर्माजी के पुस्तकालय को जिसमे संस्कृत और प्राच्य विद्या की हजारो मूल्यवान पुस्तकें थी सोरबोन (पेरिस) "इस्टिटयूट डी सिवलीजेशन इडियने" को भेंट कर दिया। इसके अतिरिक्त उन्होने जेनवा के एक हास्पिटल को भी दस हजार स्विस फ्रेंक इसलिए दिए कि निर्धन रोगियो को सहायता दी जावे।

श्रीमती भानुमती कृष्ण वर्मा अपने पति की मृत्यु के उपरान्त केवल तीन वर्ष जीवित रही और मृत्यु के उपरात उनकी भी भस्मि और अस्थिया जेनवा के सेंट जार्ज के कब्रिस्तान मे श्री कृष्ण वर्मा की समाधि के पास ही समाधिस्थ कर दी गई। उन दोनो की स्मृति जेनवा के उस कब्रिस्तान मे सगमरमर के पाषाण लेख के द्वारा सुरक्षित है जिस पर खुदा हुआ है.—

भानुमती कृष्ण वर्मा	श्यामजी कृष्ण वर्मा
१८६२-१९३३	१८५७-१९३०

श्यामजी कृष्ण वर्मा की मृत्यु पर भारत मे केवल थोडे से पत्रो ने ही उनके सम्बन्ध मे लिखा। उनकी मृत्यु के समय भारत मे उनके सम्बन्ध मे कोई विशेष

चर्चा नही हुई एक प्रकार से उपेक्षा ही हुई। हम कृतघ्न भारतीयों ने उस महान देशभक्त के प्रति अपनी श्रद्धा के सुमन चढाने की आवश्यकता भी नही समझी। जिस व्यक्ति ने जीवन पर्यन्त देश के लिए सघर्ष किया उसकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने का भारत ने कोई प्रयत्न नही किया। उनका कही स्मारक नही बना, यहा तक कि भारत के डाक विभाग ने उस महान भारतीय देशभक्त के नाम पर डाक टिकट निकालने की भी आवश्यकता नही समझी। हम भारतीयो की इस कृतघ्नता को देखक स्वय कृतघ्नता लज्जित होती होगी।

क्या ही अच्छा हो कि उनके जन्म स्थान माडवी मे उनका एक स्मारक बनाया जावे और सस्कृत तथा प्राच्य विद्या की शोध का कार्य हो। पर आज की सत्ता की राजनीति मे हमारी सरकार को भूले हुए क्रातिकारी देशभक्तो की स्मृति को चिरस्थायी बनाने का अवकाश कहा है ?

अध्याय ३

मदनलाल-धींगरा

यह उस समय की बात है जबकि भारत मे क्रातिकारी विचारधारा बलवती हो उठी थी। अग्रेजी की दासता भारत की देशभक्त तरूणाई को अखरने लगी थी। बगाल, पजाब और महाराष्ट्र मे शक्तिशाली क्रातिकारी सगठन स्थापित हो गए थे, और भारत विरोधी साम्राज्यवादी मनोवृत्ति के अग्रेज प्रशासको को क्रातिकारी अपनी गोलियो का शिकार बनाने लगे थे। देश मे जैसे-जैसे क्रातिकारी सक्रिय होते गए उनकी गतिविधिया तेज हुई वैसे ही वैसे बृटिश सरकार का दमन चक्र भी अत्यन्त तीव्र गति से चलने लगा। प्रमाण न मिलने पर अपराध सिद्ध न होने पर भी केवल सदेह मात्र पर फासी, कालापानी, आजन्म कैद का दण्ड दे दिया जाता था। इस कारण क्रातिकारियो मे प्रतिशोध लेने की तीव्र भावना जागृति हो उठी थी। क्राति की यह लहर केवल भारत मे ही नही बह रही थी। इगलैंड, अमेरिका, फ्रास और जरमनी मे रहने वाले और शिक्षा प्राप्ति के लिए गए हुए तरूणो मे भी क्रातिकारी धारा प्रबल वेग से प्रवाहित हो रही थी। मानिकतल्ला विद्रोह मे सम्मिलित क्रातिकारियो के साथ सरकार ने क्रूर और निर्दयतापूर्ण व्यवहार किया वीर सावरकर के बड़े भाई गणेश दामोदर सावरकर को कुछ देशभक्तपूर्ण कविताए लिखने के कारण २८ फरवरी १६०६ को गिरफ्तार कर लिया गया और ४ जून को नासिक मे आजीवन कारावास का दण्ड देकर कालापानी भेज दिया गया तथा अन्य देशभक्त वीर क्रातिकारी जिस प्रकार बृटिश सरकार की नृशसता के शिकार बने उसके कारण तरूण क्रातिकारियो मे प्रतिशोध लेने की भावना अत्यन्त बलवती हो उठी थी।

उस समय लन्दन मे श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला हरदयाल, मैडम कामा, वीर सावरकार आदि प्रसिद्ध भारतीय क्रातिकारी नेता, क्राति की अग्नि प्रज्ज्वलित कर रहे थे। ऐसे समय एक अमृतसर का पजाबी युवक जो लन्दन विश्वविद्यालय मे इजिनियरिंग की शिक्षा लेने आया था जिसमे देशभक्ति कूट-कूट कर भरी थी इस क्रातिकारी भावना से प्रभावित हो गया। वह इडिया हाऊस मे रहता था और वह उन सभी सभाओ मे सम्मिलित होता था जिनमे भारत को स्वतत्र बनाने के सम्बध मे चर्चा होती थी। श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अपने धन से एक भवन खरीद कर इडिया हाऊस की स्थापना की थी और वे देशभक्त भारतीय युवको को छात्रवृत्ति देकर वहा रखते थे। छात्रवृत्ति की एक ही शर्त थी कि छात्रवृति पाने वाला विद्यार्थी भारत लौट कर सरकारी नौकरी नही करेगा। वह युवक लाला हरदयाल तथा श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा प्रकाशित "इडियन शोसियोलाजिस्ट" पत्र का नियमित पाठक था। वह युवक मदनलाल धीगरा था धीगरा की सावरकर से बहुत घनिष्ठता थी। वह वीर सावरकर को आदर और श्रद्धा की दृष्टि से देखता था और सावरकर उसे अपने छोटे सहोदर भाई की तरह ही स्नेह करते थे।

इडिया हाऊस लन्दन मे देशभक्त क्रातिकारियो का मुख्य केन्द्र था। उस सस्था के अदर जो गहरी देशभक्ति की भावना प्रवाहित हो रही थी उसका एक छोटा सा उदाहरण देना पर्याप्त होगा। १० मई १६०६ को १८५७ के प्रथम भारतीय स्वातत्रीय

युद्ध की याद मे इ डिया हाउस में भारतीयों की सभा बुलाई गई और वहां १८५७ की क्राति के नेताओ झासी की रानी, लक्ष्मी बाई, तात्याटोपे, नानासाहब आदि को श्रद्धाजलि अर्पित की गई। यह सभा १० मई १६०६ को सायकाल के समय बुलाई गई थी उसी दिन—दिन मे मदनलाल धीगरा यूनीवर्सिटी कालेज की कक्षा मे १८५७के वीरो की स्मृति के रूप मे बिल्ला लगा कर उपस्थित हुआ। जब उससे कहा गया कि वह उस बिल्ले को उतार दे तो उसने दृढता-पूर्वक बिल्ले को उतारने से इन्कार कर दिया। इस पर अग्रेज छात्रो ने उसको तग करना शुरू कर दिया। धीगरा ने उनके नेता की गरदन पकड कर कहा कि तुम शालीनता का व्यवहार नही करोगे तो यह गरदन धड से पृथक कर दी जावेगी। फिर किसी का साहस धीगरा से बोलने का नही हुआ।

यह समाचार धीगरा के पिता के पास भारत पहुचा जो कि एक धनी और प्रसिद्ध डाक्टर थे। उनका बडा भाई एक सफल बैरिस्टर था। भाई ने कर्जन वायली को लिखा कि वह उसके भाई की देखभाल रखे और उसे बुरे प्रभाव से बचाने का प्रयत्न करे। धीगरा ने अपने बडे भाई को लिख भेजा कि वह उस अवगोरे कर्जन वायली के अभिभावकत्व को किसी प्रकार भी सहन नही कर सकता।

कर्जन वायली भारतीय सेवा का अवकाश प्राप्त अधिकारी था जो सेना से अवकाश प्राप्त करने पर भारत सचिव का राजनीतिक ए डी सी. नियुक्त किया गया था। कर्जन वायली भारतीयो से घृणा करता था और देशभक्त भारतीयों का घोर शत्रु था। वह इङ्गलैंड मे शिक्षा प्राप्त करने वाले देशभक्त भारतीय युवको पर दृष्टि रखता था। अनेक देशभक्त भारतीयो को उसके कारण कठोर दण्ड भुगतना पडा था। देशभक्त भारतीयो को दडित कराने मे उसे सुख की अनुभूति होती थी। यही कारण था कि प्रत्येक भारतीय उससे घृणा करता था।

धीगरा के पिता साहिब दित्ता विलियम कर्जन वायली के मित्र थे। वे अमृतसर के निवासी और धनाढ्य थे अपने पुत्रो को उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इङ्गलैंड भेजा था। मई १६०६ मे धीगरा उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से इगलैंड पहुचे। १६ अक्टूबर से वे यूनिवर्सिटी कालेज (गावर स्ट्रीट) मे इजीनियरिंग पढने लगे वे जून १६०६ के अतिम दिन तक कालेज जाते रहे। इगलैंड आने के बाद वे इडिया हाऊस गए। इडिया हाऊस छोडने पर लेडबरी बेजवाटर मे रहने लगे और अत तक वही रहे। उनके कमरे मे दो पिक्चर पोस्टकार्ड पाए गए। एक पर तारकनाथ दास के "फ्री हिन्दुस्तान" (न्यूयार्क) मे कुछ ही दिनो पहले छपे चित्र की नकल थी। इसमे भारतीय विद्रोहियो को तोपो के मुंह से उडाया जा रहा था। दूसरा लार्ड कर्जन का चित्र था जिस पद पेंसिल से लिखा था, "बेईमान कुत्ता"।

उस समय भारत सरकार भारतीय क्रातिकारियो का क्रूरता के साथ दमन कर रही थी। मुजफ्फरपुर बमकांड मे खुदीराम बोस तथा प्रफुल्ल चाकी फासी के तख्ते पर चढ चुके थे। लोकमान्य तिलक को उनके लेख पर लम्बी अवधि के लिए मदमन का निर्वासन हो चुका था। भारत सरकार उस समय क्रोध के कारण बौखला गई थी। वीर विनायक सावरकर के बडे भाई गणेश सावरकर को भारत सरकार ने केवल इस अपराध मे आजन्म कालेपानी का दड दिया था क्योकि उन्होने एक कविता की पुस्तक प्रकाशित की थी। भारत सरकार ने उस कविता की पुस्तक मे लिखी कविताओ का यह अर्थ लगाया कि उनमे हिन्दू देवताओ तथा छत्रपति शिवाजी तथा राणाप्रताप

आदि वीरों के नाम मे वर्तमान वृटिश सरकार के विरुद्ध युद्ध करने के लिए भडकाया गया है। न्यायाधीश ने अंग्रेज सरकार के विरुद्ध युद्ध के लिए जनता को भडकाने के अपराध मे उन्हे आजन्म कालेपानी की सजा दे दी। इडिया हाऊस लन्दन को एक केबिल द्वारा सूचना भेजी गई कि गणेश सावरकर को आजन्म कालेपानी का दड दिया गया है। भारत सरकार उस समय कितनी अधिक बौखला गई थी और कितने क्रूर दमन पर उतर आई थी यह इस घटना से स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत कविता लिखने पर आजन्म कालेपानी का दड दे दिया गया।

वीर विनायक सावकर को जब यह केबिल मिला तो वे इतने अधिक उत्तेजित हो उठे कि उस सम्बध मे अपने मित्रो तथा सहयोगियो से चर्चा और विचार विमर्श करते हुए उन्होंने अपनी इस शपथ को दोहराया कि वे उसका प्रतिशोध अग्रेजो से अवश्य लेंगे। गणेश सावरकर को ९ जून १९०९ को आजन्म कालेपानी का दण्ड दिया गया था। उसके कुछ ही दिनो के पश्चात मदनलाल धीगरा जिसका वीर विनायक सावरकर से घनिष्ट आत्मीयता का सम्बध था, उसने कर्जन वायली को गोली मार दी। धीगरा ने अपने उस ऐतिहासिक बयान मे जो भारतीय युवको को देश निर्वासिन (कालेपानी) और फासी दिए जाने की बात कही थी सम्भवत: गणेश सावरकर को आजन्म कालेपानी और खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चासकी को फासी को ध्यान मे रखकर कही गई थी। यही कारण था कि कुछ लोग ऐसा मानते थे कि वीर विनायक सावरकर ने धीगरा को कर्जन वायली को मारने के लिए प्रोत्साहित किया था परतु यह विचार भ्रांतिपूर्ण है। मदनलाल धीगरा ने अग्रेजो द्वारा क्रातिकारियो के क्रूर दमन के प्रतिशोध स्वरूप ही कर्जन वायली को मारने का स्वय निर्णय लिया था। उसने इस सम्बध मे किसी से भी यहा तक कि वीर विनायक सावरकर से भी परामर्श नही किया था। सावरकर के सम्पर्क मे आने पर उन्होने दीक्षा देकर अभिनव भारत का सदस्य उन्हे अवश्य बनाया था।

जब मदनलाल धीगरा ने प्रतिशोध लेने का निर्णय कर लिया तो उसने इडिया हाऊस छोड दिया और अन्यत्र रहने लगा ऐसा जोखिम भरा निर्णय कर लेने के उपरात भी उसके वाह्य आचरण मे कोई अतर नही पडा। वह अत्यत शात और गम्भीर रहता था। उन दिनो जबकि वह प्रतिशोध लेने की तैयारी कर रहा था किसी ने भी उसमे उद्विग्नता, उत्तेजना और अधीरता नही देखी। वह अत्यत शात था। वह एक मनोरजन क्लब का सदस्य बन गया जहा पिस्तौल चलाने और निशाना लगाने का अभ्यास कराया जाता था। पिस्तौल खरीद कर उसने अभ्यास करना आरम्भ कर दिया।

धीगरा, ज्ञानचद वर्मा और कोरेगावकर मराठा युवक ने निश्चय किया कि गणेश दामोदर सावरकर के अतिरिक्त— कन्हैयालाल दत्त, खुदीराम बोस, प्रफुल्ल चाकसी, भूपेन्द्र और हेमचद्र दास की सजाओ का बदला वृटिश साम्राज्य की राजधानी के ठीक मध्य लदन मे कर्नल वायली का वध करके लिया जाय। वायली राष्ट्रभक्त विद्यार्थियो के विरुद्ध भारत मत्री से शिकायतें किया करता था।

इन लोगो ने रिवाल्वर से चादमारी शुरू की। धीगरा कुछ महीनो तक इसका अभ्यास करते रहे और इसमे वे बहुत अधिक सिद्धहस्त हो गए। दो तीन मास के अभ्यास से ही निशाना लगाने मे उन्होंने पर्याप्त प्रगति कर ली। वे बहुत जल्दी-जल्दी

फायर करने का अभ्यास करते थे। पहली जुलाई के सायंकाल उन्होंने चादमारी पर ग्यारह शाट मारे थे। अंतिम दिन उन्होने जो टर्गेट काम मे लिया उस पर ग्यारह निशान थे। सात आठ निशानो को हाथ की हथेली ढाप लेती थी।

उस क्लब मे लार्ड मारले, लार्ड कर्जन तथा सरकर्जन वायली जैसे दम्भी और भारत से घृणा करने वाले भारतद्वेषी अंग्रेज अधिकारी जाते थे। धींगरा ने उस क्लब की सदस्यता इन व्यक्तियो की गतिविधियो के सम्बध मे जानकारी प्राप्त करने के लिए स्वीकार की थी। धीगरा का प्रथम लक्ष्य लार्ड कर्जन थे। कर्जन वायली को मारने के कुछ दिन पूर्व धीगरा ने लार्ड कर्जन का पीछा किया था। वह अपने शिकार पर अनुकूल स्थान पर वार करना चाहता था। परतु जैसे ही लार्ड कर्जन हॉल मे घुसे हाल के द्वार वद कर दिए गए। धीगरा अन्दर प्रवेश न कर सका। निराश होकर वह वापस लौट आया। परतु अंग्रेजो द्वारा भारतीय क्रातिकारियो पर जो क्रूर दमन किया जा रहा था उसका प्रतिशोध लेने का धीगरा ने निश्चय कर लिया था। अतएव उसने कर्जन वायली को मारने का निश्चय किया जो भारतीय क्रातिकारियो को दण्ड दिलाने मे वहुत उत्साह प्रदर्शित करता था और भारतीयो से घृणा करता था। वह भारतद्रोही था।

एक जुलाई १९०९ को इडियन नेशनल ऐसोशियेशन की वार्षिक बैठक थी इम्पीरियल इस्टीट्यूट के जहागीर हाल मे मीटिंग का आयोजन किया गया था। धींगरा को ज्ञात था कि कर्जन वायली उस मीटिंग मे अवश्य सम्मिलित होगा। अतएव धीगरा अपने स्थान से दो घन्टे पूर्व चल दिया और 'वेस्टवोर्न' गया जहा उसके कुछ अतरग मित्र रहते थे। वास्तव मे वह अपने उन मित्रो से अंतिम वार मिलने गया था। वह जानता था कि वह उसका अंतिम मिलन होगा। परन्तु उसने अपने उन मित्रो को कुछ भी नही वतलाया और न ऐसा कोई सकेत ही दिया कि जिससे उन्हें कोई सन्देह होता। उनसे मिल कर और विदा लेकर जो उसकी अंतिम विदा थी, वह समय पर मीटिंग मे पहुँच गया। सभा के अंत मे सगीत का कार्यक्रम होते ही कर्जन वायली हाल से निकला और सीढिया उतरने लगा। धीगरा ने वढ कर मुस्कराते हुए उनसे वातचीत करनी आरभ की और तुरत ही अपना रिवाल्वर निकाल कर एक के वाद दूसरी पांच गोलिया उसके चेहरे पर दाग दी। वायली वहीं मर कर गिर पडा। एक पारसी कोवास लालकाका वायली को वचाने के लिए आगे वढे तो धीगरा ने उन पर भी गोली चलाई जिससे वे घातक रूप से घायल हो गए और उसका चेहरा क्षत विक्षत हो गया।

आसपास के लोगो ने धींगरा को पकड़ लिया लेकिन उसने अपने हाथो को छुडा लिया और रिवाल्वर से अपने सिर पर गोली चलाई किन्तु रिवाल्वर खाली हो चुका था उसमे कोई गोली नहीं थी। धीगरा के पास एक भरा हुआ रिवाल्वर तथा एक छुरा और था और यदि वह चाहता तो वह अपने पकडने वालो को भी मार सकता था। परंतु उसने गम्भीरता पूर्वक कहा कि वह अन्य किसी को भी मारना नहीं चाहता वे सुरक्षित है और उन्हे भयभीत होने की आवश्यकता नही है। यह कह कर उसने रिवाल्वर फेंक दिया। भीड उसके निकट आ गई। लोगो ने उसके हाथ बाधने का प्रयत्न किया। इस पर धींगरा ने हसते हुए व्यग और उपहास के रूप मे कहा—"अरे मुझे चश्मा तो ठीक तरह से रख लेने दीजिए तत्पश्चात हाथ वाधते रहिएगा।"

वहां एक डाक्टर भी मौजूद थे। उसने देखा जब प्राय: हर एक का दम फूल रहा था तव केवल धीगरा ही शात एव अक्षुब्ध थे। उनका व्यवहार ऐसा था मानो कुछ हुआ ही नही।

जिस समय मदनलाल धीगरा पकडा गया उसके चेहरे पर तनिक भी उत्तेजना तथा घवराहट का चिन्ह नही था। उसने शात किन्तु गम्भीर होकर कहा– "मैं एक देशभक्त हूँ जो अपनी मातृभूमि को विदेशियो की दासता से मुक्त करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। मेरे लिए 'खूनी' शव्द के प्रयोग के प्रति मुझे घोर आपत्ति हैं क्योकि मैंने जो कुछ किया है वह न्यायोचित है। यदि जरमन लोग इगलैंड पर अधिकार कर लेते तो इगलेड के लोग भी यही करते।"

मदनलाल धीगरा पर २३ जुलाई १६०६ को 'पुराने वेली' की सेशन अदालत मे अभियोग चलाया गया। वीस सैकिंड मे अदालत ने उसको मृत्यु दण्ड की सजा दे दी और शेरिफ ने उसकी फासी का दिन १७ फरवरी १६०६ निर्धारित कर दिया।

जव न्यायाधीश ने पूछा कि अभियुक्त को कुछ कहना है तो धीगरा ने उत्तर दिया—"तुम मेरे साथ जो भी व्यवहार चाहो कर सकते हो मुझे उसकी तनिक भी चिन्ता नही है। तुम श्वेत लोग सर्वशक्ति हो और जो चाहो कर सकते हो। लेकिन याद रक्खो कि भविष्य मे हमारा भी एक दिन समय आवेगा तव हम तुमसे वदला लेंगे।"

धीगरा का एक लिखित वक्तव्य था जो उसकी जेव मे था। वह चाहता था कि उसका वह लिखित वक्तव्य अदालत मे पढा जावे। परन्तु पुलिस ने उस लिखित वक्तव्य को उसकी जेव मे से ले लिया और यह घोषणा कर दी कि उसकी जेव से कोई लिखित वक्तव्य उन्हे नही मिला। पुलिस ने उसके उस ऐतिहासिक वक्तव्य को छिपा लिया। वह नहीं चाहती थी कि वह वक्तव्य कभी भी प्रकाश मे आवे। धीगरा ने न्यायालय से प्रार्थना की कि पुलिस ने जो वक्तव्य को दवा लिया है वह अदालत मे पढा जाये परतु अदालत ने उसकी कोई सुनवाई नही की।

क्रातिकारियो के इतिहास मे मदनलाल धीगरा का वक्तव्य अभूतपूर्व और अनोखा था जिसकी प्रशसा वृटेन के साम्राज्यवादी राजनीतिज्ञो ने भी की थी। उसके वक्तव्य का हिन्दी अनुवाद नीचे लिखे अनुसार था।

"मैं यह स्वीकार करता हूँ कि उस दिन मैंने देशभक्त भारतीय युवको की, फासी आजन्म कारावास तथा काले पानी के अमानवीय दड का विनम्र प्रतिशोध लेने के लिए एक अग्रेज का रुधिर वहाया था।"

"मेरा यह विश्वास है कि जिस राष्ट्र को विदेशी किरचो के वल पर पराभूत किया जाता है और दास वनाए रक्खा जाता है, वह राष्ट्र आक्रमक राष्ट्र से शाश्वत युद्ध की स्थिति मे रहता है। क्योकि उस जाति के लिए जिसे निशस्त्र कर दिया गया हो खुला युद्ध कर सकना असम्भव है, मैंने सहसा आक्रमण किया, और क्योकि मुझे वदूक नही दी गई मैंने अपनी पिस्तौल निकाली और गोली मार दी।"

"एक हिन्दू के नाते मेरा विश्वास है कि मेरे देश के प्रति दुर्भावनापूर्ण दुष्कृत्य भगवान का घोर अपमान है, मातृ-भूमि का पथ श्रीराम क पथ है, उसकी सेवा श्रीराम की सेवा है। मेरा जैसा माता का पुत्र जो धनहीन है और जिसके पास वुद्धि और चातुर्य भी कम है मा को अपने रुधिर के अतिरिक्त और क्या भेट कर सकता हूँ। वही

मैंने माता की वलवेदी पर चढा दिया है ।"

"भारतीयो को आज एक ही पाठ पढने की आवश्यकता हैं– वह यह कि किस तरह मरा जावे और इस पाठ को पढने का एक ही तरीका है कि हम स्वय मरें । इसलिए मैंने मृत्यु का अभिनन्दन किया है और मुझे अपने इस वलिदान पर गर्व है ।"

"यदि भारत और इगलैंड का वर्तमान अप्राकृतिक सम्बन्ध समाप्त नही होता तो भारत और इगलैंड के वीच यह क्रम वरावर चलता रहेगा जव तक पृथ्वी पर हिन्दू और अग्रेज जातियां जीवित हैं ।"

"आत्मा अमर है । यदि मेरे देशवासियो मे से हर एक मरने के पूर्व कम से कम दो अग्रेजो को मार दे तो माता की मुक्ति एक दिन का काम है ।" जव तक हमारा देश स्वतन्त्र नही हो जाता श्रीकृष्ण इन शब्दो के द्वारा हमे प्रवोधित करते ही रहेगे— 'यदि तुम युद्ध करते हुए मर जाते हो तो तुम्हे स्वर्ग प्राप्त होगा, यदि सफल होगे तो पृथ्वी तल पर राज्य करोगे ।'

'मेरी भगवान से केवल एक ही प्रार्थना है कि मैं पुन भारत माता की पावन भूमि मे जन्म लू और पुन इसी कार्य के लिए मरु जव तक की माता को मुक्त करने का कार्य सफल न हो जावे और भारत माता मानवता के श्रम के लिए और भगवान की गौरव गरिमा को प्रकाशित करने के लिए स्वतत्र न हो जावे ।'

धीगरा ने अपनी अतिम इच्छा प्रगट करते हुए कहा कि उसका हिन्दू पद्धति के अनुसार दाह सस्कार किया जावे कोई गैर हिन्दू या उसके सगे भाई उसके शरीर को न छुए । अन्तिम सस्कार के समय ब्राह्मण वेद मत्रो का उच्चारण अवश्य करें । उसके कपडो तथा अन्य सामान को वेच दिया जावे और जो रुपया आवे वह राष्ट्रीय कोष मे दे दिया जावे ।

धीगरा के इस साहसिक कार्य से समस्त इगलैंड मानो सोते से जाग पड़ा । मानो इगलैंड को किसी ने भयंकर रूप से झकझोर दिया हो । इगलैंड के वाजारो में मकानो मे वलवो मे रेलवे स्टेशन पर वसो तथा ट्रेनो, पार्लियामेट मे तथा समाचार पत्रो मे धीगरा की ही चर्चा थी । धीगरा काड ने केवल इगलैंड को ही आदोलित नही किया वरन समस्त योरोप और सयुक्त राज्य अमेरिका विडोलित हो गया । साम्राज्यवादी राष्ट्रो को जैसे एक गहरा धक्का लगा । अदालत के समक्ष धीगरा ने कहा– "मैं जो यह वक्तव्य दे रहा हूँ तो इसलिए नही कि मैं दया या कृपा चाहता हूँ । मैं तो यह मानता ही नही कि आपका मुझ पर अधिकार है । मैं चाहता हूँ कि अग्रेज मुझे फासी की सजा दें क्योकि इस दशा मे मेरे देशवासियो के अन्दर प्रतिकार की भावना और भी अधिक तीव्र होगी । मैं यह वक्तव्य इसलिए दे रहा हूँ कि ससार को विशेष कर अमेरिका मे हमारे समर्थको को पता लग जाय कि हमारा यह पुण्य कार्य न्यायोचित है ।

कायर हृदय पिता ने लार्ड मारले को तार भेजकर कहा कि उन्हें लज्जा है कि धीगरा उनका पुत्र है, वे उसको अपना पुत्र नही स्वीकार करते । धीगरा के कायर और साहसहीन भाई ने भी सार्वजनिक रूप से धीगरा को अपना भाई मानने से इनकार कर दिया । इङ्गलैंड मे जो भारतीय उस समय मौजूद थे उन्होंने भी ५ जुलाई १९०९ को प्रसिद्ध 'केक्सटन हाल' मे धीगरा की निन्दा करने के लिए सभा वुलाई । उस समय मे सर मनचेरजी भेवानगिरी, हिज हाइनिस सर आगाखां, सर सुरेन्द्र नाथ वनर्जी, श्री वी० सी० पाल तथा खापर्डे ने वहुत जोरो से धीगरा की निन्दा की ।

उनके इस लज्जाजनक आचरण से स्वय लज्जा भी लज्जित हुई होगी । सभा मे महाराजकुमार कूच बिहार, सर दिनशा पैटिट, फजल भाई करीम-भाई आदि अग्रेज भक्त लोग उपस्थित थे । उस समय थ्योडोर मारिसन धीगरा के भाई को मच पर ले आए और उससे धीगरा के विरुद्ध अपने द्वारा बतलाए हुए निन्दात्मक वाक्य कहलवाए । उसके उपरात सभापति सर आगाखा ने घोषणा की कि सभा सर्वसम्मत से मदन लाल धीगरा की निन्दा करती है । सभापति के यह शब्द निकले ही थे कि भीड मे से एक गम्भीर गर्जना हुई । एक गम्भीर वाणी सुनाई दी, "नही—सर्वसम्मत से नही" सभापति ने क्रोधित स्वर मे पूछा "कौन नही कहता है" तुरत उत्तर मिला "मैं कहता हूं नही" अध्यक्ष ने पुन पूछा "महोदय आपका नाम"। उस समय मच पर बैठे हुए अग्रेजो के चाटुकार कुछ राजभक्त अधीर हो उठे और जोर-जोर से चिल्ला कर कहने लगे 'उसे बिठा दो, उसे भगा दो।' सर मनछेरजी भोवानगिरी मच से कूदे और जिधर से आवाज आई थी उधर दौडे । चुनौती देते हुए उस गम्भीर और तेज आवाज ने कहा— 'यह मैं हूं मेरा नाम सावरकर है ।'

'सावरकर' नाम सुनते ही श्रोताओ मे भगदड पड गई क्योकि उन्हे भय हो गया कि कही क्रातिकारी बम न फेंक दें। कुछ लोग तो भय के कारण कुर्सियो के नीचे छिप गये । उस उत्तेजना तथा भगदड के वातावरण मे एक यूरोपियन 'पामर' ने सावरकर के सिर पर प्रहार किया, सावरकर का चश्मा टूट गया और उनके सर से खून बहने लगा । फिर भी वीर सावरकर वहा से नही हटे उन्होने दृढता से गम्भीर वाणी मे कहा— 'यह सब होते हुए भी मैं कहता हूं कि मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूं।' सावरकर के समीप खडे हुए उनके सहयोगी तिरुमलाचार्य ने श्री पामर पर इतने बल पूर्वक प्रहार किया कि पामर गिर गए और लुढकते हुए कुछ दूर जा कर रुके । उनके दूसरे साथी ऐयर पामर को गोली मारने ही जा रहे थे कि सावरकर ने आख के सकेत से उन्हे रोक दिया ।

श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा ने टाइम्स मे लिखते हुए धीगरा के सम्बन्ध मे लिखा "मेरा इस हत्या से कोई सम्बन्ध नही है परन्तु मैं यह स्पष्टतया स्वीकार करना चाहता हूं कि मैं धीगरा के कार्य का समर्थन करता हूं और उसे भारत की स्वतत्रता के लिए बलिदान होने वालो मे ऊचा स्थान देता हू मैं जानता हू कि मेरी इस घोषणा से बहुतो को धक्का लगेगा परतु सौभाग्यवश इगलैंड मे ऐसे विचार वाले विद्वान तथा राजनीतिज्ञ हैं जिनका मेरे साथ मतैक्य है कि राजनैतिक हत्या खून नही है ।"

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अपने पत्र 'इडियन सोशियोलाजिस्ट' मे 'इङ्गलैंड से "भारतीय-हुतात्मा" शीर्षक लेख मे लिखा' धीगरा का वक्तव्य स्वतत्रता के लिए है । उन्होने अकेले ही बृटिश भूमि पर खडे हो कर समुद्री डाकू बृटेन के अत्याचार को ललकारा है एक विशाल राजनीतिक अनुभव के स्वामी अमरीकी मित्र ने ठीक ही कहा है— "भारत के इतिहास मे धींगरा सर्वाधिक विलक्षण व्यक्तियो मे से हैं ।"

इडिया हाऊस सोसायटी के बाहर ४ जुलाई रविवार को सदस्यो की बैठक हुई हत्या की प्रशसा मे वी० वी० एस० अय्यर, सावरकर, ज्ञानचन्द वर्मा, हैदररिजा और एस० एम० मास्टर के भाषण हुए। अय्यर ने कहा 'धींगरा ने महान गौरवपूर्ण कार्य

किया है। देश के शत्रु वायली के भूशायी शरीर पर धींगरा शांति पूर्वक गोलियां चलाते रहे।'

सावरकर धींगरा से २ जुलाई १६०६ को ब्रिक्सटन जेल मे मिले और कहा 'धींगरा मैं तुम्हारे दर्शन करने आया हूं तुम धन्य हो' धींगरा गद्गद हो गया। सावरकर ने पूछा मदन मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूं? धींगरा ने उत्तर दिया "यहा मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। एक आयना मिल जावे तो अच्छा हो। आइने मे जरा यह देख सकूंगा कि मैंने कपडे तो ठीक ढग से पहन रखे हैं" बस 'आइना ला दीजिए फिर मैं मौज मे हूं।' उसने सावरकर से अपनी यह इच्छा भी प्रकट की कि उसका वह वक्तव्य जिसे पुलिस ने उसकी जेब से निकाल लिया था और दबा दिया था किसी प्रकार प्रकाशित हो जावे।

जिन लोगो ने धींगरा को कैदी अवस्था मे देखा उनका कहना था कि "कैदी प्रशात सा है। ऐसा अक्षुब्ध मन तो स्थितप्रज्ञ या योगी ही प्राप्त कर सकता है" काम की आवश्यकता है। बातो की नही, धींगरा कहा करते थे। 'यदि हमारे महान कार्य मे विजय प्राप्त करनी है तो भारत मे कई हुतात्मा होने चाहिए।

विलियम कर्जन वायली को गोली मारते समय भी धींगरा तनिक भी अशात या अधीर नहीं हुआ। उसने उस समय भी अद्भूत प्रशात मन का परिचय दिया था। वायली तथा राजभक्त लालकाका पर गोली चलाने के उपरांत जब धींगरा ने रिवाल्वर फेंक दिया तो भीड उनके निकट आ गई। लोगो ने उनके हाथ बांधने का प्रयत्न किया इस पर धींगरा ने हसते हुए उपहास के रुप मे कहा 'अरे मुझे चश्मा तो ठीक तरह से रख लेने दीजिए तत्पश्चात हाथ बाधते रहियेगा।' उस कमरे मे एक डाक्टर भी उपस्थित था। उसने देखा जब प्राय. प्रत्येक उपस्थित व्यक्ति का दम फूल रहा था तब केवल धींगरा ही शात और अक्षुब्ध थे। उनका व्यवहार और आचरण ऐसा था कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

सावरकर की यह उत्कट इच्छा थी कि धींगरा का वह ऐतिहासिक वक्तव्य धींगरा को फासी लगने से पहले ही प्रकाशित हो जावे जिससे कि वह मृत्यु का अलिंगन करने के पूर्व यह सन्तोष लेकर जावे कि उसका वह वक्तव्य प्रकाशित हो गया। परन्तु उस ववतव्य का प्रकाशन कोई सरल कार्य नहीं था। सावरकर के सहयोगी ज्ञानचद वर्मा ने धींगरा के वक्तव्य की प्रतिया अमेरिका और आयरलैंड के पत्रो मे प्रकाशित होने के लिए भेज दी। परंतु इङ्गलैंड मे किसी समाचार पत्र को उस वक्तव्य को प्रकाशित करने के लिए राजी करना कठिन था। धींगरा को फासी लगने के केवल दो दिन शेष रह गए थे। सावरकर की उत्कट इच्छा थी कि फासी लगने के पूर्व उसका ववतव्य प्रकाशित हो जाना चाहिए। अस्तु उन्होंने यह कार्य अपने मित्र 'डेविड-गारनट' को सौंपा। 'गारनट' उस वक्तव्य को 'डेली न्यूज' के राबर्ट लाईन्ड के पास ले गया। राबर्ट ने उस वक्तव्य को अपने पत्र के रात्रि सस्करण मे छाप दिया। १६ अगस्त १६०६ को प्रात काल लदन मे जब धींगरा का वह क्रातिकारी वक्तव्य प्रकाशित हुआ तो मानो भूकम्प आ गया। बृटेन की पुलिस और गुप्तचर यही समझ बैठे थे कि वह वक्तव्य केवल उन के पास है परतु उन्होंने चकित होकर देखा कि "चुनौती" शीर्षक से वह वक्तव्य ससार भर मे प्रसारित हो गया। प्रत्येक देश के प्रमुख समाचार पत्रों ने उस वक्तव्य को प्रकाशित किया था। कुछ समय के उपरांत भारतीय क्रातिकारियो ने

मदनलाल धीगरा के उस क्रातिकारी ऐतिहासिक वक्तव्य को उसके चित्र के सहित छपवा कर प्रकाशित किया और भारत के प्रत्येक नगर मे उसको वितरित किया गया।

जब मदनलाल धीगरा ने १७ अगस्त १९०९ को वक्तव्य समाचार पत्र मे पढा तो वह आनन्दित हो आत्मविभोर हो उठा। १७ अगस्त १९०९ को प्रसन्न मन धीगरा ने मा भारती के लिए फासी के तख्ते पर चढ कर मृत्यु को स्वय वरण किया। मृत्यु के समय भी वह नितात शात था, और भारत माता के प्रति श्रद्धानवत था। मदन लाल धीगरा ने जिस उत्कट देशभक्त, साहस, और शौर्य का परिचय दिया वह भारत के क्रातिकारी इतिहास मे अभूतपूर्व था। धीगरा जैसे वीर देशभक्त मर कर भी अमर हो जाते हैं।

समस्त योरोपीय देशो के समाचार पत्रो मे मदनलाल धीगरा के इस साहस भरे कार्य की सराहना की गई। पत्रो ने पूरे पृष्ठ पर धीगरा का चित्र और उसका वक्तव्य प्रकाशित किया और प्रशसात्मक सम्पादकीय टिप्पणिया लिखी। आयरलैंड के समाचार पत्रो ने पूरे पृष्ठ पर मदनलाल धीगरा का चित्र देकर छापा "आयरलैंड मदनलाल धीगरा को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करता है जिसने अपने देश के लिए अपना वलिदान कर दिया" मदनलाल धीगरा के उस साहसिक कार्य ने तात्कालिक लेखको, विचारको और राजनीतिज्ञो को भी उसका प्रशसक बना दिया था। प्रसिद्ध लेखक ब्लट ने अपनी डायरियो मे धीगरा के सम्बध मे लिखा था कि किसी भी ईसाई वलिदानी ने अपने जजो का ऐसी निर्भीकता तथा शान के साथ सामना नही किया। आगे चल कर ब्लट ने लिखा कि भारत मे धीगरा की फासी का दिन सैकडो पीडियो तक शहादत के दिन की भाति मनाया जावेगा।

लायड-जार्ज ने चर्चिल से धीगरा की देशभक्ति और उद्दात मनोभावो की भूरि-भूरि प्रशसा की। चर्चिल की भी धीगरा के सम्वन्ध मे वहुत ऊची धारणा थी। उन्होने धीगरा का वक्तव्य कठस्थ कर लिया था। उसके अतिम शब्दो को उद्धृत करते हुए उन्होने लायड जार्ज से कहा— "राष्ट्र भक्ति के नाम पर जो भी ससार मे कहे गए हैं उनमे सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम यही शब्द हैं।" लायड जार्ज और चर्चिल दोनो ही वृटिश राजनीतिज्ञ धीगरा की प्लूटार्क के अमर वीरो से तुलना करते थे।

प्रसिद्ध क्रातिकारी लाला हरदयाल ने मैडम कामा द्वारा प्रकाशित 'वन्देमातरम्' पत्र मे धीगरा के सम्बध मे लिखा था "भविष्य मे जब भारत मे वृटिश साम्राज्य धूल और राख मे मिल जावेगी धीगरा के स्मारक भारत के प्रत्येक नगर के मैदानो मे सुशोभित होंगे जो हमारे भावी वच्चो को उस गौरवशाली अभिजात व्यक्ति के जीवन और मृत्यु को श्रद्धा के साथ याद करेंगे जिसने मातृभूमि के लिए सुदूर विदेश मे अपना आत्म-वलिदान किया था।"

आगे चल कर लाला हरदयाल ने "धीगरा की अमर स्मृति" शीर्षक उस लेख मे धीगरा के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए लिखा— "अमर धीगरा वे वीर थे जिनके उपास्य शब्दो तथा कृत्यो का हमे शताब्दियो तक सच्चे हृदयो से ध्यान करना चाहिए। धीगरा ने अपने अभियोग की प्रत्येक अवस्था मे प्राचीन काल के वीरो के समान आचरण किया है। उन्होने हमे उन मध्यकालीन राजपूतो और सिक्खो का स्मरण दिला दिया जो मृत्यु से नववधू के समान प्रेम करते थे।

इगलैंड समझता है कि उसने उन्हे मार डाला है वास्तविकता यह है कि वे सदैव जीवित रहेंगे, वे अमर है। उन्होने भारत मे अग्रेजो की प्रभुसत्ता पर घातक प्रहार किया है।"

इसी समय मैडम कामा ने वर्लिन से भारतीय क्रातिकारी विचारधारा को प्रसारित करने के लिए "वीर मदनलाल धीगरा के नाम पर 'मदन-तलवार' नामक पत्र निकालना आरम्भ किया। वन्देमातरम की भाति ही लाला हरदयाल मदन-तलवार मे भी क्रातिकारी विचारधारा को अपनी ओजस्वी भाषा मे धारा प्रवाह लिखते थे।"

मदनलाल धीगरा द्वारा कर्जन वायली की हत्या के सम्बध मे लिखते हुए 'टाइम्स' पत्र ने लिखा था 'दमन भारत को विनाश की ओर ढकेल रहा है' यदि इङ्गलैंड अब भी यह विश्वास करता है कि वह वहा मानवता के हित मे जमा हुआ है तो उसका यह भ्रम शीघ्र मिट जावेगा। भविष्य मे होने वाली राजनीतिक हत्याओ की सूची लम्बी होगी। परन्तु उसकी जिम्मेदारी उन लोगो की होगी जो भारत की स्वतन्त्रता के प्रयत्न को सहारा न देकर भारत को बलपूर्वक बृटेन की आधीनता में रखना चाहते हैं।

वीरवर मदनलाल धीगरा उस समय केवल बाईस वर्ष के थे जबकि उनको फासी हुई थी। सम्पूर्ण लम्बा जीवन उनके सामने पडा था परन्तु उन्होंने मातृभूमि की बलिदेवी पर अपनी आहुति देकर देश के लिए बलिदान होने की परम्परा मे एक ऐसा गौरवशाली अध्याय जोड दिया जिसका प्रकाश और सुरभि भारत की आने वाली पीढियो को सैकडो वर्षों तक अनुप्राणित करता रहेगा।

दुर्भाग्यवश इस देश मे स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरात स्वतन्त्रता के लिए क्रातिकारी देशभक्तो के लिए किये गए कार्यों की उपेक्षा करने की अशोभनीय प्रवृत्ति उत्पन्न हो गई है। किसी दिन इतिहास इस तथ्य को स्वीकार करेगा कि रानी लक्ष्मी बाई और तात्या टोपे से लेकर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस तक भारतीय बलिदानियो के क्रातिकारी कार्यों के परिणाम स्वरूप जो देश मे क्रातिकारी विचारधारा फैली जिसने अन्त मे भारतीय सेनाओ को भी प्रभावित कर दिया वह भी अग्रेजो को भारत छोडने के लिए विवश करने मे एक प्रमुख कारण था।

क्रातिकारियो के प्रति इस अशोभनीय उपेक्षा का ही यह परिणाम है कि देश वीर श्रेष्ठ मदनलाल धींगरा जैसे मातृभूमि की स्वतन्त्रता के बलिदान होने वाले बलिदानियो को भूल गया। प्रसिद्ध पाश्चात्य लेखक ब्लट ने जब धीगरा की शहादत के सम्बध मे लिखा था 'धीगरा की फासी का दिन भारत मे सैकडो पीढियो तक बलिदान दिवस की भाति मनाया जावेगा तब सम्भवतः वह नही जानता था कि भारतीय धीगरा को भूल जावेंगे।'

कृतघ्न भारतीयो ने वीर श्रेष्ठ धीगरा की स्मृति रक्षा का कोई प्रयत्न नही किया जिससे भारत के तरुण देश के लिए मरना सीखते। देश सर्वोपरि है, आवश्यकता पडने पर देश के लिए प्राण निछावर करने की प्रेरणा लेते। अवश्य ही भारतीय क्राति के इतिहास मे धीगरा के इस गौरवपूर्ण बलिदान की चर्चा हमे पढने को मिलती है। आज जो सत्ता मे है उनका यशोगान करने वाले लेखक धीगरा जैसे बलिदानी देशभक्त को भूल गए किसी ने उसके प्रेरणादायक जीवन चरित्र को नही लिखा,

उसका भारत मे कोई स्मारक स्थापित नही हुआ, लोकसभा में उसका चित्र नही लगाया गया। डाक तार विभाग ने उसका टिकट निकालने की आवश्यकता नहीं समझी। विद्यालयो मे पढाई जाने वाली पुस्तको मे उसके अमर बलिदान की पावन कथा भारत के बालको को नही पढाई गई। भारतीय जो सत्ता मे हैं उन्ही को अर्घ देते है। जिनकी हड्डी और मास पर देश की स्वतत्रता का यह भवन खडा हुआ है उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना जैसे हमने सीखा ही नही। हम भारतीय कृतघ्नता के गुण मे सर्वोपरि हैं। हमारे आचरण से स्वय कृतघ्नता को भी लज्जा आती होगी।

हर्ष और सन्तोष की बात है कि दीर्घ काल के उपरान्त अब पजाब के मुख्य मन्त्री ज्ञानी जैलसिह को उस महान क्रातिकारी देशभक्त धीगरा की याद आई। उनके गाव मे स्मारक का निर्माण किया गया उनकी भस्मि और अस्थियो को लन्दन से मगवाकर वहा रक्खा गया है। पजाब सरकार और उसके मुख्यमत्री इस सत्कार्य के लिए साधुवाद के पात्र हैं। क्या ही अच्छा हो कि धीगरा के अद्भुत आत्म बलिदान की पावन गाथा बच्चो की पाठ्य पुस्तको मे पढाई जावे जिनसे भारत की भावी पीढी देश के लिए अपने प्राणो की आहुति देने वाले वीर धीगरा के प्रेरणादायक जीवन से प्रेरणा ले सके।

अध्याय ४

लाला हरदयाल

दिल्ली के चीरखाने मुहल्ले के एक छोटे से मकान में १४ अक्टूबर १८८४ को श्री गौरीदयाल माथुर की पत्नी श्रीमती भोलारानी ने एक अत्यन्त प्रखर और विलक्षण बुद्धि तथा प्रतिभा सम्पन्न बालक को जन्म दिया। श्रीमती भोलारानी राम और कृष्ण की भक्त थी और रामायण का पाठ नियमित रूप से किया करती थीं अतएव बालक हरदयाल को परम्परागत हिन्दू संस्कृति के प्रथम एवं सर्वाधिक आवेग अपनी मातेश्वरी से प्राप्त हुए। जब वे केवल चार वर्ष के थे तब वे केम्ब्रिज मिशन स्कूल के प्राथमिक विभाग मे प्रविष्ट हुए। अध्यापकों ने आश्चर्य चकित होकर देखा कि वह बालक विलक्षण प्रतिभा का धनी है।

एक घटना उनकी प्रखर बुद्धि और विलक्षण मेधा को प्रगट करती है। जब कि वे पाचवी कक्षा के विद्यार्थी थे तब पडोस के मकान में एक रिश्तेदार लडका शिव नारायण नवी कक्षा मे पढता था। बालक हरदयाल मकान की छत पर बैठा हुआ तख्ती पर कलम से कुछ लिख रहा था। सामने छत पर शिवनारायण अग्रेजी मे ज्यामिति (ज्यामिटरी) का एक प्रमेय रट रहा था। बालक हरदयाल ने पूछा तुम एक ही चीज को बार-बार क्यो रट रहे हो? शिवनारायण ने हस कर व्यंग करते हुए कहा। अभी तुम बच्चे हो, यह ज्यामिति है बडे होने पर ही तुम इसको समझ सकोगे। बालक हरदयाल ने हस कर कहा—"यह भी तुमने एक ही कही मैं तुम्हे सुना सकता हू कि तुम क्या रट रहे थे" और उसके साथ ही ज्यामिति के उस प्रमेय को उसने अक्षरश दोहरा दिया। शिवनारायन आश्चर्य चकित हो गया उसका मुंह खुला का खुला रह गया मानो उसे काठ मार गया हो।

जब बालक हरदयाल छठी कक्षा मे था तब वह अग्रेजी का दैनिक पत्र 'ट्रिब्यून' और साप्ताहिक (हरविजर) के सम्पादकीय लेख पढने लगा। उसे सम्पादकीय लेख और अन्य लेख एक बार ही पढने पर याद हो जाते और वह उन्हें ज्यो का त्यो लिख डालता। उसके सहपाठी और शिक्षक बालक की विलक्षण मेधा और प्रखर बुद्धि से आश्चर्य चकित हो जाते। दिल्ली के विद्यार्थी वर्ग तथा शिक्षक वर्ग मे हरदयाल एक चर्चा का विषय बन गए। दिल्ली के बाहर भी शिक्षा जगत मे उनकी ख्याति पहुची परन्तु उनकी विशेष ख्याति गवर्नमेंट कालेज लाहौर मे प्रविष्ट होने पर हुई। जब लाहौर मे वे कालेज मे पढते थे तो कालेज के छात्र और प्रोफेसर उस असाधारण और विलक्षण मेधा तथा स्मरण शक्ति के धनी विद्यार्थी को जानने लगे थे। जहा कहीं वे जाते चारो और से उगलिया उठने लगती लोग कहते 'देखो वे हरदयाल जा रहे हैं' फोटो स्मृति के कारण वे चमत्कारी युवक माने जाते थे। उनके सहपाठी तथा शिक्षक उनकी अपूर्व मेधा और स्मरणशक्ति को देख कर आश्चर्य चकित हो जाते। जिस पुस्तक को हरदयाल जी एक बार पढ लेते वह अक्षरश: कण्ठस्थ हो जाती। कालेज के एक सहपाठी ने उनसे एक बार कहा—"कल हम आपसे आथेलो मे से कुछ सुनना चाहेंगे" उन्होंने रात्रि मे एक बार शेक्सपियर का वह नाटक पढ लिया। अगले दिन उसमे कहा गया "आथेलो के तीसरे अक का दूसरा दृश्य नीचे से ऊपर सुनाइए" वे तत्काल सुनाने लगे, कहीं तनिक सी भूल नही हुई। उनके सहपाठी तथा प्राध्यापक उनकी इस आश्चर्य जनक विलक्षण स्मरण शक्ति की बहुधा परीक्षा करते

रहते थे। एक अन्य अवसर पर उनसे कहा गया कि कवि टेनिसन के 'इन मेमोरायम' मे से कुछ सुनाना चाहते हैं। सायकाल उन्होने उस पुस्तक को देख लिया और अगले दिन सहपाठियो ने जिस भाग के लिए कहा उसको नीचे से ऊपर सुना दिया।

उनके शिक्षक तथा मित्र कहा करते थे कि प्रकृति ने हरदयाल को अनेक उपहार दिए उनमे से स्मरण शक्ति वह अलभ्य उपहार है जिसे हरदयाल को देने के पश्चात प्रकृति ने उसका साचा ही नष्ट कर दिया।

हरदयाल जब उन्नीस वर्ष के थे तभी समस्त भारत मे उनकी प्रसिद्धि और यश फैल गया था। उन्होने गवनमेट कालेज से पहले वर्ष अग्रेजी का और दूसरे वर्ष इतिहास का एम० ए० किया। उन्होने दोनो ही परीक्षाओ मे पजाब विश्वविद्यालय के कीर्तिमान को तोड कर नए कीर्तिमान स्थापित किये, जिस तक दशाब्दो तक कोई नही पहुच पाया। अन्त मे पजाब विश्वविद्यालय ने उसे अप्राप्य और असम्भव कह कर हटा दिया। उस कीर्तिमान (रेकार्ड) को हटाने का एक कारण हरदयालजी का नाम भी था क्योकि उस समय तक वे क्रातिकारी नेता बन चुके थे और अग्रेजो को यह सह्य नही था कि उनका नाम पजाब विश्वविद्यालय के कीर्तिमानो मे सर्वोपरि हो।

जब वे विद्यार्थी थे तो उनको पजाब विश्वविद्यालय का अत्यन्त प्रकाशवान नक्षत्र कहा जाता था। सेंसस्टीफेंस कालेज दिल्ली, गवर्नमेंट कालेज, दिल्ली और गवनमेट कालेज, लाहौर के प्राध्यापक उनको अत्यन्त स्नेह करते थे। उनको भारत सरकार का स्टेट स्कॉलरशिप इङ्गलैंड मे अध्ययन करने के लिए मिला। वे तीन वर्षो तक इङ्गलैंड के विश्वविद्यालयो मे अध्ययन कर सकते थे।

इङ्गलैंड जाने से पूर्व ही हरदयालजी का विवाह हो चुका था। जब वे ऑक्सफोर्ड पहुचे तो वहा का सत्र आरम्भ हो चुका था परन्तु उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर सेन्ट जान्स कालेज ने उन्हें प्रवेश दे दिया। वे आधुनिक इतिहास के ऑनर्स के लिए अध्ययन करने लगे।

ऑक्सफोर्ड मे शीघ्र ही हरदयाल जी की बहुमुखी प्रतिभा तथा विद्वता की धाक बैठ गई। ऑक्सफोर्ड के विद्यार्थी तथा आचार्य उनको विलक्षण प्रतिभा के धनी तथा असाधारण बुद्धि वैभव का स्वामी समझते थे। इतिहास के अतिरिक्त राजनीति, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र उनके विशेष विषय थे। जब भी वे किसी विषय पर निबध लिखते तभी उस विषय का प्रोफेसर यह कहता– 'इस विषय मे मैं और कुछ अधिक नहीं बतला सकता' वे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के सर्वोत्कृष्ट छात्र के रूप मे प्रसिद्ध हो गए। दीनबन्धु सी यफ एड्रूज जो उनसे ऑक्सफोर्ड मे मिले थे। उन्होने उनके सम्बन्ध मे लिखा है– 'उन्होने अपनी आवश्कताओ को अल्पतम कर लिया था, वे सादे से छोटे आवास मे रहते थे। वे स्वभाव से ही तपस्वी ऋषि के समान थे। अध्ययन मे भी उनका यही हाल था।' हरदयालजी के बुद्धि वैभव तथा विलक्षण स्मरण शक्ति की ख्याति शीघ्र ही ऑक्सफोर्ड के बाहर ब्रिटेन के बुद्धिजीवी वर्ग मे फैल गई, भारतीय विद्यार्थी उन्हें अत्यन्त प्रेम और आदर की दृष्टि से देखते थे।

उस समय ब्रिटेन मे जो भी भारतीय छात्र अध्ययन करने के लिए आते थे उनका लक्ष्य और आदर्श आई० सी० यस० स्वर्गसुख देने वाली सेवा की प्रतियोगिता मे बैठना होता था। जब वे उसमे असफल हो जाते तो या तो बैरिस्टर बन जाते अथवा किसी विश्वविद्यालय से कोई उपाधि लेकर भारत के कॉलेजो और विश्वविद्यालयो मे

प्रौफ़ेसर बनते थे। अरविन्द घोष भी आई० सी० एम० परीक्षा के लिए ही तैयारी कर रहे थे। घुड़सवारी की परीक्षा मे अनुत्तीर्ण हो जाने के कारण जब वे आ.ई सी एस मे असफल हो गए तो वे उपाधि लेकर बडौदा मे प्रौफ़ेसर बने। सभी जानते थे कि यदि हरदयालजी आई० सी० एस० प्रतियोगिता मे बैठें तो केवल वे प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान ही प्राप्त नही करते वरन् नया कीर्तिमान स्थापित करते। यही कारण था कि उनके प्रौफ़ेसर, सहपाठी मित्र तथा बन्धु बाधव सभी उनसे आई० सी० एस० की प्रतियोगिता मे बैठने को कहते पर वे हस कर कहते कि मैं सरकार की नौकरी करने के लिए उत्पन्न नही हुआ हूँ। उन्होने कहा कि यह मेरे सिद्धातो के विरुद्ध है। एक युवक मे उस समय ऐसी भावना होना आश्चर्यजनक, असाधारण और अपूर्व था। यह इस बात का प्रमाण है कि विद्यार्थी काल मे ही उनमे गहन देशभक्ति की भावना जागृत हो गई थी और वे मातृभूमि को स्वतन्त्र करने मे अपने जीवन को लगाने के सकल्प कर चुके थे।

छुट्टियो मे हरदयाल भारत इस अभिप्राय से आए कि अपनी पत्नी सुन्दरानी को आक्सफोर्ड ले जावें। परन्तु उन्होने इस बात की सूचना किसी को नही दी। उनके ससुर दीवान गोपालचन्द अपनी पुत्री को मेरठ ले जाना चाहते थे, परन्तु हरदयाल ने अपने मित्र खुदादाद के साथ सब बातो की व्यवस्था पहले ही कर रखी थी। वे सुन्दररानी को पुरुष वेश मे सिनेमा ले गए। वहा से उन्होने मेरठ की ओर प्रस्थान किया। जब वे लोग गाजियाबाद पहुचे तो हरदयाल ने सुन्दररानी को बम्बई की गाडी मे बिठा दिया, और स्वय भी डिब्बे मे चढ गए। सुन्दररानी के मायके के रिश्तेदार महावीर चन्द समझ गए वे हरदयाल डिब्बे से नीचे घसीट लाने के लिए चढना चाहते थे कि खुदादाद ने उनको कस कर पकड लिया। महावीरचन्द चिल्लाए 'यह क्या' हरदयाल ने हस कर उत्तर दिया 'प्रेम और युद्ध मे सब कुछ क्षम्य है' गाडी चल दी। जब सुन्दररानी के पिता को इस षडयन्त्र का पता चला तो उन्होने हरदयाल तथा सुन्दर रानी की खोज मे कई दल भेजे पुलिस को भी कहा कि वे उनको पकड ले पर सब व्यर्थ हुआ। हरदयाल बम्बई पहुच कर समुद्री जहाज से इङ्गलैंड चल दिए। लाहौर के दैनिक पत्रने पजाबी का शीर्षक दिया 'पति द्वारा पत्नी का अपहरण' अग्रेजी पत्रो ने हरदयाल जी के नैतिक साहस की बहुत प्रशसा की। एक ने लिखा कि हरदयाल केवल विद्वान और महान प्रतिभा के धनी ही नही है वे साहसी भी हैं।

यह वह समय था कि जब भारत मे क्राति की अग्नि सुलग रही थी और जो भारतीय विदेशो मे रह रहे थे वे भी क्राति के द्वारा भारत को स्वतन्त्र करने का स्वप्न देख रहे थे। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने लन्दन मे इडिया हाऊस की स्थापना की थी जो इङ्गलैंड मे क्रातिकारियो का मुख्य केन्द्र बन गया। विनायक दामोदर सावरकर इडिया हाऊस मे रहते थे और वहा जो भी भारतीय छात्र रहते थे उनमे क्राति और गहन राष्ट्रीयता की भावना भरते थे। हरदयाल जी बहुधा आक्सफोर्ड से लन्दन आते और सावरकर से मिलते थे। दोनो मे गहरी मित्रता हो गई और हरदयाल जी अभिनव भारत के सदस्य बन कर क्राति मे दीक्षित हो गए। वे भी उग्र राष्ट्रवादी बन गए। उस समय श्री गोखले लन्दन मे थे वे बहुत चाहते थे कि लाला हरदयाल उनके द्वारा स्थापित सर्वेन्ट्स आफ इडिया सोसायटी के सदस्य बन जावें। वे स्वय

हरदयाल जी से मिले और उनको उसका सदस्य बनाना चाहा लाला हरदयाल ने उन्हे उत्तर दिया कि उनकी अन्तरात्मा का मानना है कि ब्रिटिश सरकार की सहायता करने वाले लोग भारत के स्वतन्त्रता आदोलन को कभी सबल नही बना सकते ।

ऑक्सफोर्ड मे लाला हरदयाल ने अपनी पत्नी सुन्दररानी को राजनीति और अर्थशस्त्र की शिक्षा देना आरम्भ किया क्योकि वे उन्हे भारत मे महिलाओ मे प्रचार का कार्य करने के लिए तैयार कर रहे थे। वे उन्हे सेवा करने की कला भी सिखाने लगे। वे उन्हें सस्थाओ मे ले जाते और उनको कार्यकर्त्ताओ से मिलाते ।

उसी समय भारत सरकार ने भारत मे लाला लाजपतराय तथा सरदार अजीतसिह को गिरफ्तार कर लिया और उनको देश से निर्वासित कर दिया। लाला हरदयाल का मन रोष और क्षोभ से भर गया। उनके मन मे यह विचार उठा कि उसी सरकार की दी हुई छात्रवृत्ति से मैं पढ रहा हू जो देशभक्ति के साथ घोर अत्याचार करती है, उन्होने छात्रवृत्ति से त्याग पत्र देने का निश्चय किया वे भारत मन्त्री के कार्यालय मे गए और सचिव से कहा कि वे उस छात्रवृत्ति से त्याग पत्र दे रहे हैं। इस पर सचिव ने कारण पूछा तो हरदयाल जी चुप रहे। अग्रेज अधिकारी ने कहा कि– " कुछ गडबड मालूम होती है " इस पर हरदयाल जी को क्रोध आ गया 'ऐसा ही सही' कह कर चले गए। उन्होने अपने बडे भाई को दिल्ली मे लिखा कि लाला लाजपतराय और अजीतसिह की मिट्टी की मूर्तिया बना कर दीपावली पर बेचने का प्रबन्ध करना चाहिए।

जब हरदयाल जी ने भारत सरकार की छात्रवृत्ति को त्याग दिया तो श्यामजी कृष्ण वर्मा ने उन्हें तीन वर्षों के लिए एक हजार रुपये की छात्रवृत्ति दी। परन्तु हरदयालजी के मन मे एक द्वन्द और खडा हो गया वे सोचने लगे कि क्या मैं अपना समय और शक्ति भारत मे प्रचारक तैयार करने के कार्य को अर्पित करु या विश्वविद्यालय की पढाई मे लगाऊ। उन्होने अपने मित्र को लिखा " मैं सोच रहा हूँ कि अगला वर्ष क्रातिकारी आदोलन के इतिहास, भारतीय आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याओ और हमारे आदोलन के लिए जिन विषयो की आवश्यकता है उनको और योरोप मे स्वतन्त्रता के आदोलनो के कार्य को अवलोकन मे लगाऊ या ऑक्सफोर्ड की तैयारी मे लगाऊ। डिगरी मुझे शैक्षणिक आभूषण प्रतीक होती है। ऑक्सफोर्ड की डिग्री उस राजनीतिक ज्ञान की गारन्टी नही हो सकती जो एक महान आदोलन के प्रचारक मे होना चाहिए। यदि मैं अगला वर्ष ऑक्सफोर्ड की डिग्री लेने मे लगा दू तो यह इतने समय का नाश सिद्ध होगा क्योकि मुझे कही नौकरी तो करनी नही है। क्रातिकारी के जीवन का एक वर्ष बहुमूल्य समय है क्यो कि उसका जीवन अल्प और अनिश्चित होता है।" अतएव उन्होने निश्चय किया कि वे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से डिग्री भी नही लेंगे।

उनके प्रिंसिपल ने उनसे कहा कि आप भारत सरकार से रुपया नही लेना चाहते, न लें। आपका खर्च मैं अपनी जेब से दूगा डिग्री लेने तक तो ठहर जाना चाहिए। परन्तु हरदयाल जी ने ऑक्सफोर्ड छोड दिया। भारत के इतिहास मे यह पहला और अन्तिम उदाहरण था। हरदयाल जी भारत लौट कर विद्यार्थियो मे काम करने के इच्छुक थे। उसी समय उसकी पत्नी के भाई का विवाह था उनके

ससुर ने मार्ग व्यय भेज दिया और वे भारत लौट आए।

भारत पहुच कर वे सबसे पहले पूना मे लोकमान्य तिलक से मिले और उन्ही के पास ठहरे। लोकमान्य ने उन्हे सलाह दी कि आप अपना एक आश्रम बना कर उसमे नवयुवको को प्रशिक्षण दें जिसमे कि आप उत्तर भारत मे दक्षतापूर्वक क्रातिकारी केन्द्रो का जाल फैला सके। पूना से हरदयाल जी अपने घर दिल्ली गए और वहा से अपनी ससुराल पटियाला गए। पटियाला मे उन्होने अपनी पत्नी से राष्ट्रीय सन्यासी बनने की आज्ञा प्राप्त कर ली। सु दर रानी अपने पति के हृदय मे राष्ट्र सेवा की गहन भावना को जान गई थी अतएव उन्होने अपने पति को देश सेवा के कार्य मे अपने सम्पूर्ण जीवन को समर्पित कर देने की आज्ञा दे दी।

श्रीमती सु दर रानी की प्रथम सतान (जो अतिम सतान सिद्ध हुई) होने वाली थी। परतु भारतीय राष्ट्रवाद के उस मस्त घुम्मकड सन्यासी को अपनी पत्नी का मोह और आने वाली सतान का स्नेह और ममता नही रोक सकी। वह भारत मे क्राति का बिगुल बजाने और मातृभूमि की दासता के बन्धनो को काटने के लिए अपनी पत्नी से अतिम विदा लेकर चल पडा। उसके पश्चात उन्होने अपनी पत्नी को जीवन मे कभी नही देखा और उनकी पुत्री शाति को देखने का सौभाग्य उन्हे अपने जीवन मे कभी नही मिला क्योकि वह जब उत्पन्न हुई तो वे भारत से विदेश जा चुके थे। मानव जाति के इतिहास मे वैराग्य उत्पन्न होने पर तथा आत्म-बोध की खोज के लिए अपने गृह और परिवार को त्याग देने की घटनाए मिलती हैं पर मातृभूमि को स्वतत्र करने के लिए अपनी पत्नी और भावी सतान तथा सभी परियोजनो को त्याग कर राष्ट्रीय सन्यासी बनने के अधिक उदाहरण नही मिलते। तो सु दर रानी ने अश्रु भरे नेत्रो से उन्हे विदा दे दी। उसके उपरात हरदयालजी अपनी जीवन सगिनी को जीवन मे फिर कभी न देख सके और अपनी पुत्री के मुख को तो जीवन मे उन्होने एक बार भी नही देखा।

मातृभूमि के लिए त्याग की यह पराकाष्टा थी। हरदयाल जी जैसे विलक्षण प्रतिभा और प्रज्ञा के धनी व्यक्ति के लिए धन, वैभव, यश, पद, सत्ता, अधिकार सभी प्राप्त कर सकना अत्यत सरल था परतु उन्होने सब कुछ ठुकरा दिया। यही नही उन्होंने मातृभूमि के लिए अपनी पत्नी भावी सतान और परिजनो का भी त्याग कर दिया। वास्तव मे भारत की स्वतत्रता के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर देने वालो की लम्बी सूची मे हरदयाल जी का यह त्याग अपूर्व और अतुलनीय था। आज की पीढी जो कि हमारे राजनीतिज्ञो की सत्ता और स्वार्थ की अशोभनीय होड को देखने को अभ्यस्त हो गई हैं यह कल्पना भी नही कर सकती कि भारत की स्वतत्रता के लिए लाखो देशभक्तो ने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया था।

यदि हरदयाल जी चाहते तो दिल्ली मे आश्रम की स्थापना वे कर सकते थे क्योकि वहा के युवक उनकी पूजा करते थे, वृद्ध उनके समक्ष नत मस्तक होते थे और जनसाधारण उनको आदर की दृष्टि से देखता था। समाज का प्रत्येक वर्ग उनकी आराधना करता था क्योकि उनकी धारणा थी कि उन जैसा व्यक्ति ही देश को स्वतत्र बना सकता है पर वे दिल्ली नही ठहर सकते थे क्योकि उनकी स्नेहमयी मातेश्वरी भोलीरानी चाहती थी कि उनका पुत्र सामान्य जीवन व्यतीत करें हरदयाल अपनी माता को नही कह सकते थे अतएव वे दिल्ली से दूर रहना

चाहते थे ।

कई स्थानो पर घूमने के उपरात लाला लाजपतराय के निमत्रण पर वे लाहौर आए । लालाजी की इच्छा थी कि श्री हरदयाल लाहौर मे युवको को देश सेवा के लिए प्रशिक्षित करें और 'पजावी' दैनिक पत्र का सम्पादन करे । लाहौर मे उन्होंने अपना कार्य आरम्भ कर दिया । उन दिनो हरदयाल जी केवल धोती पहिनते थे और कधो पर गेरुआ रग का दुपट्टा ओढते थे । वे एक सयासी की भाति रहते थे । अब उन्होने अपना प्रशिक्षण और प्रचार का कार्य आरम्भ किया तो शीघ्र ही उनके आसपास बहुत से युवक इकट्ठे हो गए । उनके अनुयायी और शिष्य तो उनकी पूजा करते ही थे पर जो भी व्यक्ति उनके सम्पर्क मे आता वह उनके आश्चर्यजनक व्यक्तित्व, प्रकाड पाडित्य, अतुलनीय विद्वता और अभूतपूर्व मेधा से प्रभावित हो उनकी ओर आकर्षित हो जाता । उनमे चुम्बकीय शक्ति थी । शिक्षित और युवक तो उनकी पूजा करते ही थे पर साधारण व्यक्ति भी उनको अत्यत आदर की दृष्टि से देखते थे । जब वे निकलते तो दूकानदार अपनी दूकानो मे खडे होकर सर नवाते और उनकी ओर टकटकी लगा कर देखते । उन्होंने एक पुस्तकालय की स्थापना की और अपने अनुयायियो को राजनीति, अर्थशास्त्र, इतिहास समाजशास्त्र की प्रमाणिक पुस्तकें पढने को कहते । वे स्वय पजावी दैनिक पत्र का सम्पादन करते और माडर्न रिव्यू तथा इडियन रिव्यू मे नियमित रूप से लिखते । वे जब अपने शिष्यो को लिखवाने लगते तो लिखवाते ही चले जाते । पुस्तको के उद्धरण तथा पृष्ठ सख्या जबानी लिखाते । उद्धरणो का मूल पुस्तक से मिलान करना और यह देखना कि उनमे कोई भूल तो नही है लिखने वाले शिष्य का काम था । उनके शिष्य चटर्जी का कहना था कि कभी कोई भूल नही निकली ।

उनकी योजना यह थी कि अपने शिष्यो को प्रशिक्षित कर उनकी मडलिया बना कर सम्पूर्ण भारत मे भेज दी जावें और समस्त देश मे क्राति के पथ का प्रसार करें । जब उनके शिष्य अपने-अपने स्थानो पर क्रातिकारी दल स्थापित कर लें तो उन यूनिटो को मातृ सस्था के साथ सम्बद्ध कर लिया जावे । उस समय बगाल मे अरविंद, महाराष्ट्र मे लोकमान्य तिलक और पजाब मे लाला हरदयाल क्राति के लिए बलिदानी क्रातिकारियो को तैयार कर रहे थे । हरदयाल जी का विचार था कि जब समस्त भारत मे सशक्त क्रातिकारी सगठन खडा कर लिया जाये तो सघात किया जावे । हरदयाल जी के लेखो मे क्राति की चिनगारिया रहती । पाठको की दुनिया पर हरदयाल जी का ऐसा प्रभाव था कि जो उनके लेख को पढ लेता वह उनके द्वारा अग्रेजो पर लगाए गये आरोपो को सैकडो बरन हजारो लोगो तक पहुचाता । उत्तर भारत विशेषकर पजाब और सयुक्त-प्रात (तत्कालीन उत्तर प्रदेश) की सरकारें लालाजी के इस प्रचार से भयभीत हो गईं । हरदयाल जी की क्रातिकारी योजना, उनके बढते हुए प्रभाव, जनसाधारण मे बढती हुई उनकी लोकप्रियता, से सरकार सत्रस्त हो गई । वह उन्हें खतरनाक क्रातिकारी नेता के रूप में देखने लगी । भारत सरकार उनको गिरफ्तार कर लम्बे समय के लिए अडमन (कालापानी) मे निर्वासित करने के सम्बध मे विचार करने लगी । वायसराय की कार्यभारी कौसिल के एक भारतीय सदस्य को भारत सरकार की दुरभि सधि का पता चल गया । उन्होने गुप्त रूप मे लाला लाजपतराय को यह सन्देश भेजा " हरदयाल भारत सरकार के सबसे ऊंचे

अधिकारियो के दिमाग मे घूम रहे हैं। उनका बहुमूल्य जीवन बचाने के लिए आप उन्हें शीघ्र देश के बाहर भेज दें।" हरदयाल जी विदेश नही जाना चाहते थे, भारत मे रह कर ही स्थिति का मुकाबला करना चाहते थे। परन्तु लाला लाजपतराय तथा अन्य मित्रो ने उन्हे भारत से निकाल कर किसी अज्ञात स्थान पर रहने के लिए विवश कर दिया।

जब लाला लाजपतराय ने उन्हे शीघ्र ही देश के बाहर चले जाने के लिए विवश कर दिया, तब हरदयाल जी ने अपने दल का कार्य दिल्ली के मास्टर अमीरचद के सुपुर्द कर दिया। इसी बीच हरदयाल जी की गिरफ्तारी के वारट निकल गए। हरदयालजी उस समय बाहर गए हुए थे लाला लाजपतराय ने उन्हें बाध्य किया कि वे तत्काल भारत से चले जावें।

जब हरदयाल जी का देश से बाहर जाना निश्चत हो गया तो उन्होंने अपने शिष्यो और अनुयायियो से कहा— "समाचार पत्रो तथा व्यक्तिगत सम्पर्क के द्वारा जनमत सगठित करना, लोगो मे क्राति की भावना तथा उत्साह भरना और भारतीय रियासतो मे मिल जाना। सरकार को सैन्य शक्ति प्राय ग्रामीण क्षेत्र से प्राप्त होती है, पुलिस के सिपाही शहरो की गन्दी बस्ती से और प्रशासन की चालक शक्ति विश्वविद्यालयो से प्राप्त होती है। भारतीय रियासतें सरकार की आरक्षित शक्ति का काम करती हैं। सभी दिशाओ मे सरकार की शक्ति का तलोच्छेदन करना आवश्यक है। एक बार पैर जम गए तो क्रातिकारी शक्तिया स्वयमेव शक्ति और सवेग पकड लेगी। प्रत्यक्ष कार्यवाही के द्वारा शासक वर्ग के जो भी देशी तथा विदेशी सदस्य क्रातिकारी गतिविधि के लिए खतरनाक सिद्ध हो उनका निरसन कर दिया जाए। इससे जनता की भावना उद्दप्त होगी और क्रातिकारी दल को नए युवक मिलेंगे।"

जब हरदयाल जी लाहौर से विदा हुए तो उनके शिष्यो की आखो मे आंसू आ गए। मास्टर अमीरचन्द ने हरदयाल जी के क्रातिकारी दल को उनके शिष्यो को महाविप्लवी नायक रास बिहारी बोस को सौंप दिया।

हरदयाल जी भारत से लदन चले आए पर वे अधिक दिनो वहा नही रहे। कारण यह था कि मदनलाल धीगरा ने जब कर्जन वायली का वध कर दिया तो श्यामजी कृष्ण वर्मा ने इडिया हाऊस की इमारत बेच दी और इडिया हाऊस समाप्त हो गया। उस समय जो भी भारतीय क्रातिकारी योरोप मे थे उनसे श्यामजी कृष्ण वर्मा का मतभेद हो गया। अब भारतीय क्रातिकारियो का पेरिस केन्द्र बन गया था और मैडम कामा क्रातिकारियो की सर्वमान्य नेता थी, उन्होने सरदार सिंह राणा की सहायता से निष्ठावान और परिक्षित क्रातिकारियो की एक टोली बनाली थी। उन्होने सर्वोत्तम भारतीय राष्ट्रवादी तत्वो को सच्चे क्रातिकारी पत्र के आधीन एकत्रित और सगठित करने का निश्चय किया। उसके सम्पादन के लिए एक दृढ धारणा और ऊची साहित्यिक प्रतिभा वाला सम्पादक अपेक्षित था। दृष्टि हरदयाल जी पर गई और उन्होने हरदयाल जी को आमन्त्रित किया। हरदयाल जी ने सहर्ष उस उत्तरदायित्व को स्वीकार किया और वे लदन से पेरिस चले आए। सितम्बर १९०९ मे उन्होंने 'वन्देमातरम' प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया। उसका सम्पादन और मुद्रक जेनवा (स्वीटजरलैण्ड) से किया जाता था। आर्थिक दायित्व मैडम कामा का था।

'वन्देमातरम' के मुख पृष्ठ पर दो चित्र रहते थे। एक भारत के राष्ट्रीय ध्वज का, दूसरा भारत माता का जो म्यान मे तलवार निकाल रही होती। उसके चरणो मे भगवान गीता का श्लोक देवनागरी मे लिखा रहता—

अथ चेत्वमिम धर्म्यं सग्रामय न करिष्यसि।
तत स्वधर्मं कीर्ति च हित्वा पापमवाप्य ससि।

झण्डे पर तीन पट्टिया तीन रगो का प्रतिनिधित्व करती। पहली पट्टी पर आठ कमल रहते, दूसरी मे देवनागरी मे 'वन्देमातरम' लिखा रहता। तीसरी पट्टी पर सूर्य और चन्द्रमा बने रहते। झण्डे के नीचे लिखा रहता भारतीय सस्कृत का मासिक मुख पत्र उसके नीचे यह उद्धरण रहता— अत हे आनन्द अपने आप के लिए तुम ही दीप बनो। बाहर के किसी आश्रय की खोज मत करो। अपना निर्वाण परिश्रम से प्राप्त करो। (गौतम बुद्ध)

हरदयाल जी ने पहले ही अक मे स्वतत्रता प्राप्ति के लिए तीन अवस्थाओ की विगद व्याख्या की। प्रथम नैतिक तथा बौद्धिक तैयारी, द्वितीय युद्ध, युद्ध के पश्चात पुर्ननिमारण तथा सगठन। उन्होने इटली का उदाहरण देते हुए लिखा मैजनी के बाद गेरिबाल्डी, गेरिबाल्डी के बाद काबुर। यह सयोग की बात है कि रूस के क्रातिकारी लेखक मैक्सिम गोर्की ने अपने २० अक्टूबर १९१२ के पत्र मे श्यामजी कृष्ण वर्मा को भारत का मेजनी लिख कर सम्बोधित किया है वहा भारत मे सी० आई० डी० के अग्रेज डायरेक्टर सी० आर० क्लिवलैंड ने अपने नोटिस (१७ मार्च १९१४) मे हरदयालजी को भारत का गेरीबाल्डी बतलाया है। उसने लिखा 'यह सामान्य विचार पाया जाता है कि हरदयाल गेरिबाल्डी का काम करना चाहते है।"

वन्देमातरम् के पहले अक मे हरदयालजी ने धीगरा की पावन स्मृति को इन शब्दो मे दीप्तमान किया—

'अमर धीगरा वे वीर थे जिनके शब्दो और कृत्यो का हमे शताब्दियो तक सच्चे हृदय से ध्यान करना चाहिए। धीगरा ने अपने अभियोग की प्रत्येक अवस्था मे प्राचीनकाल के वीरो के समान आचरण किया है। उन्होने हमे उन मध्यकालीन राजपूतो और सिक्खो के इतिहास का स्मरण दिला दिया है जो मृत्यु मे वधू के समान प्रेम करते थे। इङ्गलैंड समझता है कि उसने उ हे मार डाला है। वास्तव मे वे सदा जीवित रहेगे। उन्होने भारत मे अग्रेजो की प्रमुसत्ता को घातक चोट पहुचाई है।'

'वन्देमातरम' के द्वारा हरदयाल जी क्राति की चिनगारिया बिखेरने लगे। उनके सम्पादकीय लेख इतने ओजस्वी और सार गर्भित होते कि शीघ्र ही वदेमातरम सर्वत्र बडे चाव से पढा जाने लगा और उसका सर्वत्रमान होने लगा। हरदयाल जी की रचनाओ को पढने के लिए ही लोग व देमातरम पढते उनके लेखो को पढने से ज्ञात होता था कि प्रकृति ने उनको बुद्धि वैभव प्रचुर मात्रा मे दिया है और उनकी लेखनी क्राति के स्फुलिंग छोडती थी। स्वाभाविक था कि सरकार उससे घबरा गई। भारत सरकार के सी० आई० डी० के निदेशक ने गृह विभाग के मत्री को लिखा कि वन्देमातरम प्रकट रूप मे लोगो को विद्रोह करने के लिए उत्तेजित करता है और उ हे परामर्श देता है कि यह कार्य सेना की राजभक्ति के तलोच्छेदन मे आरम्भ करना चाहिए। अतएव उसका यह सुझाव था कि भारत मत्री डच सरकार से

उसके लिए विरोध प्रकट करें।

अपने एक लेख मे हरदयाल जी ने लिखा " हमारे क्रांतिकारी आंदोलन का अंतिम बार ध्येय हमारे अत्याचारियो के विरुद्ध खुला युद्ध होगा। यह युद्ध तभी सफल हो सकता है जब हमारे साथ जन साधारण और सेना हो। किसी भी आंदोलन के लिए विश्वास और उत्साह का बहुत महत्व है इसलिए समस्या यह है कि सेना को हम अपनी ओर कर लें ? " अंत मे लेख मे था— नवयुवको को सेना मे भर्ती होने से रोकना आत्म-हत्या है। अब सघर्ष इस प्रकार चलना चाहिए— सभी नवयुवक विशेष कर शिक्षित प्रति वर्ष सेना मे भर्ती होंगे और प्रति वर्ष प्रशिक्षित आदमी ब्रिटिश सेना को छोड देंगे जिससे कि उनका स्थान नए रगरूट ले सकें।

परन्तु पेरिस मे हरदयाल जी को जितना सहयोग और आर्थिक सहायता की आवश्यकता और अपेक्षा थी वह नही मिला अतएव वे बड़े निराश हो गए। उधर वीर सावरकर के गिरफ्तार हो जाने से भी उनको गहरी निराशा हुई। हरदयाल जी ने मेडम कामा के साथ मिल कर फ्रासीसी समाजवादी नेता जे० जारविस की सहायता से सावरकर की मुक्ति के लिए आदोलन किया। हरदयाल जी तथा एम० पी० टी० आचार्य फ्रासीसी पत्र 'ता' (पेरिस) के सम्पादक से मिले और उससे कहा कि आप सावरकर के मामले मे रुचि लें परन्तु उसने ध्यान नही दिया परन्तु समाजवादी पत्र 'लालयु' मानती ने सावरकर के पक्ष मे लिखा। कोपिनहेगन अतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन ने सावरकर की मुक्ति की माग की। इसका परिणाम यह हुआ कि फ्रासीसी सरकार अतर्राष्ट्रीय न्ययालय मे इस प्रश्न को ले गई परन्तु परिणाम कुछ नही निकला। फ्रास मे अपेक्षित सहयोग और सहायता न मिलने के कारण तथा वीर सावरकर की गिरफ्तारी से हरदयाल जी थोडे निराश हो गए उधर उनके मन मे वैराग्य की भावना प्रबल हो गई। वे तपस्या करने के लिए सयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिण मे स्थिति वेस्टइंटीज के टापू फ्रास ला० मार्तीनीक टापू चले गए।

कुछ समय के उपरात भाई परमानन्द उनसे वहा मिलने गए और उन्होने हरदयाल जी को सयुक्त राज्य अमेरिका मे रह कर हिन्दू सस्कृत तथा भारतीय स्वत त्रता के लिए काम करने को कहा। अतएव हरदयाल जी सयुक्त राज्य चले आए। हरदयाल जी सानफ्रासिस को रह कर प्रचार कार्य करने लगे इसमे उनको आशातीत सफलता मिली। वे जहा भारतीय बडी सख्या मे थे वहा घूम-घूम कर भाषण देते। उनके भाषणो की समाचार पत्रो मे विपद चर्चा होती। उनके व्याख्यानो की अमेरिका मे धूम मच गई वे अमेरिका मे ब्रिटिश शासन के द्वारा भारत के शोषण का अत्यन्त प्रभावशाली चित्र उपस्थित करने लगे।

जब दिल्ली मे २३ दिसम्बर १९१२ को लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका गया तो हरदयाल जी का हृदय उल्लास से भर गया। उन्होंने १९१३ के प्रथम सप्ताह मे बम की सार्थकता के सम्बध मे युगातर 'सर्कुलर' नामक पुस्तक लिखी जिसे उन्होंने श्यामजी कृष्ण वर्मा को पेरिस भेजा कि वे उसे प्रकाशित कर भारत तथा ससार के अन्य देशो को भेजें। इस पुस्तिका से बृटिश सरकार घबरा गई। स्काटलैंड यार्ड के गुप्तचर योरोप के देशो की राजधानियो मे चक्कर लगाने लगे कि वह कहा छपी है। हम यहा उस क्रांतिकारी विद्रोही देवदूत का प्रसिद्ध युगातर 'सर्कुलर' का सक्षेत

देते हैं जिसने ब्रिटिश साम्राज्य को बुरी तरह हिला दिया था।

'युगान्तर सरक्युलर'

दिल्ली का बम

'२३ दिसम्बर १९१२ के बम तेरा स्वागत है। आशा तथा साहस के अग्रदूत, सोई हुई आत्माओ को पुनः तद्रा से जगाने वाले प्रबोधक तुम ठीक समय पर आए।'

'इस स्मरणीय दिन पर अत्याचारी के भूशायी शरीर और ध्वस्त हौदे का विचार कर हम प्रसन्न हो आनन्द क्यो मना रहे हैं हमारी आखो मे खुशी क्यो आ गए हैं ? क्योकि स्वतत्रता की विजली की इस कडक से हमारे युवा स्त्री पुरुष शिक्षा ग्रहण करेंगे।'

'देश के शासको ने देश के पूर्व शासको की नकल करते हुए अपनी प्रतिष्ठा और धाक को बढाना चाहा। अग्रेज मुगल वादशाहो का स्थान लेना चाहते थे। उन्होने सोचा कि अग्रेजो को भी अपने लिए शानदार महल वनाने चाहिए और अपने आप को मुगल सम्राटो की भाति ही तलवारो और प्रदर्शनो से घिरे रहना चाहिए जिससे सर्वसाधारण भारतीय के मन पर धाक पडे और प्रभाव रहे। यदि भारत पर राज्य करना है तो भारतीयो के दिलो पर अपना सिक्का जमाना आवश्यक है। लार्ड कर्जन के मस्तिष्क की यह उपज थी कि भारत मे ब्रिटिश साम्राज्य को तख्ते-ताऊस, कारचोवी की भूलो और सोने चादी के हौदो से सजे हाथियो और सुनहले छत्रो की सहायता से सुदृढ वनाना चाहिए। वे जनसाधारण को वहुचर्चित इतिहास प्रसिद्ध मुगल वादशाहो की शान शौकत और वैभव से चकित और भ्रमित कर देना चाहते थे जिससे कि क्रातिकारियो की वढती हुई शक्ति को रोका जा सके परतु अत्याचारी यह भूल गए कि जिन लोगो ने युगान्तर को अपने रक्त से लिखा था उनकी जाति मर नही गई थी।

परतु यह ब्रिटिश साम्राज्य दिल्ली के सिवाय अपनी खूनी शान के साथ और कहा खडा किया जा सकता था। यही कारण था कि ब्रिटिश साम्राज्य की स्थिरता और स्थायित्व को राजाओ और भारतीयो को दिखलाने के लिए अनेक साम्राज्यो को प्राचीन देश की राजधानी को अपनाने का निश्चय किया गया। यही कारण था कि सरकार ने कलकत्ते से अपना बोरिया वधना उठा कर दिल्ली जाने का निश्चय किया।

अत मे इङ्गलैंग के थके-मादे वादशाह को दरशनी हुडी के रूप मे १९११ की सर्दियो मे दिल्ली लाया गया जिससे कि भारतीयो के मन पर साम्राज्य की शान का प्रभाव पडे। इस महान दरवार मे जनता का रुपया भ्रष्ट राजाओ और रानियो पर नष्ट किया गया। उसका उद्देश्य यह प्रकट करना था कि साम्राज्य निर्माण का काम पूरा हो गया। इसके द्वारा समस्त ससार को सरकार यह वतलाना चाहती थी कि क्रातिकारी भावना पर विजय पाने के उपरात उसको शात कर दिया गया है। वार्धक्य और दौर्वल्य के कारण निर्वल वादशाह जर्ज दिल्ली के महल के छज्जे से चिल्लाया— 'देखो खुदीराम वोस के कार्य का निकाकरण कर दिया गया है' पर क्राति की भावना ने कुछ और ही ठान रखा था।

एक वर्ष वीत गया। निरकुश शासको का घमण्ड सतुष्ट न हुआ। वे हर बात मे मुगलो की नकल करना चाहते थे। भारत के नामवराम जैसे अन्यायी

आदमी के लिए मुगलों की शासन शौकत और ठाठ बाट के बिना दिल्ली में प्रवेश करना योग्य न था। कर्जन ने हाथी की सवारी की तो हार्डिंग क्यों न करे? हाथी के बिना ब्रिटिश साम्राज्य संगठित एवं सुरक्षित कैसे हो सकता है? इसलिए वायसराय का दिल्ली प्रवेश शाही होना चाहिए।

सामान्यजन युगान्तर की भावना खुदीराम कन्हाईलाल, धींगरा तथा कन्हारे के शब्द तथा कृत्य, वारीन और हेमचन्द्र की वीरता, अरविन्द तथा सावरकर के जादू भरे सन्देश भूल गए जो कभी मर नहीं सकते। सरकार भी भूल गई। चांदनी चौक के ऐतिहासिक बाजार में इस निर्णयक क्षण में, युगन्तर की भावना ने वज्र की वाणी में भारत के लोगों तथा संसार से कहा— 'मैं अभी जीवित हूँ। मेरे बच्चो यह मत भूलो कि मैं जीवित हूँ।'

'हम नहीं जानते कि यह महान मुक्तदाता कहा से आया यह तो उन अनेक बार दोहराई गई आहो तथा अभिलाषाओं के उत्तर में आशीर्वाद के रूप में आया। कायरो और दासो में इस अकेले ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत में मानव का मूलवंश अभी मरा नहीं है। अपनी वज्र वाणी द्वारा भारत भूमि पर उसने स्वतन्त्रता का विजय घोष दिया है भारत के लोगो, जहा अत्याचार होना है वहा मैं भी होता हूँ। बम अग्नि की जिव्हा है जो मेरे शब्दो का उच्चारण करता है।'

'मूर्ख और कायर ही बातें बनाते हैं और प्रश्न पूछते हैं जबकि ईमानदार नर-नारी उस मनुष्य को आशीर्वाद देते हैं जो अत्याचारी को धूल चाटने पर बाध्य करता है। बम के बिना दुनिया के लाखों गरीब गुनाम अपमानित होंगे जब कि अत्याचारी का मान होगा। अपरिहार्य साधन के रूप में बम जनतन्त्र की सेवा करता है। बम न हो तो गरीब कहा जाएंगे। शाश्वत दासत्व के नरक में शान और ठाठ-बाट का सम्मोहन बेडियो को पहले से भी अधिक कस देता है।

'ऐसे अवसरो पर बम ईश्वरीय कृपा सिद्ध होता है। जहा अत्याचार घोषणा करता है वहा स्वतन्त्रता को भी वैसा ही करना चाहिए। साम्राज्यवादी या शाही जुलूस पर कोई भी बम निरर्थक सही होता। यह जादू को तोडता है। यह शक्ति के उस सम्मोहन का प्रतिकार होता हैं जो लोगो के लिए पक्षाघात सिद्ध होता है। यह लाखो की आवाज है जिसे सभी समझते हैं।'

भारत में क्रांति के साथियो, तैयार हो जाओ, देश और विदेश में अपने प्रचार को संगठित करो। सेवा और बलिदान के नए व्रत लो। देखो बम ने अपना सन्देश सुना दिया है हिन्दुस्तान के नौजवान स्त्री-पुरुषो को इसका उत्तर देना चाहिए।'

वन्देमातरम्

—

युगन्तर सरक्युलर के अतिरिक्त शाबाश जैसे अत्याधिक राजद्रोही, भयानक क्रांतिकारी और अराजकतावादी पैम्फलेटो ने भी लन्दन और शिमला के सरकारी क्षेत्रों में खलबली मचा दी। जब सरकार हरदयालजी को गिरफ्तार करने के लिए उतावली हो गई। पर क्या करती विवश थी। पर उसने गुप्तचर उनके पीछे लगा दिए। वे जहा जाते गुप्तचरो से घिरे रहते। परन्तु हरदयाल इसकी चिन्ता किए बिना क्रांति का निरन्तर प्रचार करते रहे। भाई परमानन्द, सावरकर और सीडीशन कमेटी (१६१८)

रिपोर्ट का मत है कि जो क्रातिकारी आदोलन प्रथम महायुद्ध के पूर्व आरम्भ किया गया वह हरदयाल जी का काम था।

हरदयाल जी अब सयुक्त राज्य अमेरिका मे घूम कर वहा बसे हुए लाखो भारतीयो मे भारत की स्वतन्त्रता के लिए काति की आवश्यकता पर भाषण देने लगे और सशस्त्र क्राति का प्रचार करने लगे। अमेरिका मे बसे भारतीयो मे उन्होने भारतीय क्राति के लिए तीव्र उत्साह और आवेग उत्पन्न कर दिया। उन्हे कातिकारी कार्यों के लिए भारतीयो ने दिल खोल कर धन दिया। अब उन्होने पत्र प्रकाशित करने का विचार किया।

कलकत्ता मे वगाली क्रातिकारियो ने एक समय भूमिगत 'युगान्तर' पत्र प्रकाशित किया था। हरदयाल जी ने प्रकाशन के मुख्य स्थान का नाम युगान्तर आश्रम रखा और पत्र का नाम 'गदर' रखा। युगान्तर आश्रम मे हरदयाल जी, कर्मचारी वर्ग और कार्यकर्ताओ को इकट्ठा रहना पडता था। उन्हे वारी-वारी से भोजना वनाना, कमरो को झाडा वुहारना पडता था। सारा कार्य वे लोग स्वय करते थे। भारतीय जो खेती करते थे, आश्रमवासियो के लिए आटा दाल सब्जी तथा फलो की वोरिया भेज देते। प्रेस को भी हरदयालजी और उनके साथी कार्यकर्ता ही चलाते थे।

'गदर' एक नवम्बर १९१३ को निकला। हरदयाल जी के सम्पादकीय लेख क्रातिकारी विचारो से ओत-प्रोत होते उनकी लेखनी से क्राति की चिनगारिया निकलती। 'गदर' कोई साधारण पत्र न था। वह वम से भी अधिक भयानक विस्फोट था। भारत सरकार वहुत सावधान थी उसका भारत प्रवेश वर्जित था परन्तु फिर भी उसकी हजारो प्रतिया केवल विभिन्न नगरो और कस्वो मे ही नही पहुचती थी वरन् सैनिक छावनियो मे भी पहुचती थी। सीडीशन कमेटी [१९१८] रिपोर्ट ने 'गदर' के सम्बन्ध मे लिखा— 'हिंसा मे विश्वास रखने वाला यह पत्र व्रिटिश विरोधी था। इसका प्रत्येक वाक्य हत्या ओर विद्रोह का प्रचार करता और लोगो की भावनाओ को भडकाता था। भारतीयो को वह प्रेरित करता कि वह भारत इस उद्देश्य जावे कि वहा विद्रोह करना है। व्रिटिश सरकार को जैसे भी हो निकालना है और अग्रेजो की हत्या करनी है।'

गदर केवल भारत मे ही नही कनाडा, ईरान, सूडान अपन, मरक्को दक्षिण अफ्रीका, मैडागास्कर, पूर्व अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, ट्रिनीडाड, पाडिचेरी, श्याम, हागकाग, सिगापुर, फिलिपाइन्स जहा भी विदेशो मे भारतीय रहते वहा पहुचता और क्राति की भावना जागृत करता। लाला हरदयाल के प्रयत्नो से गदर पार्टी की स्थापना हुई और वह एक शक्तिशाली सगठन वन गया। उसकी शाखाए समस्त सयुक्तराज्य अमेरिका तथा अन्य देशो मे स्थापित हो गई। उसी समय प्रथम महायुद्ध आरम्भ हो गया। भारत मे सशस्त्र विद्रोह के लिए यह अत्यन्त अनुकूल अवसर था अतएव गदर पार्टी के नेता सयुक्त राज्य अमेरिका मे जर्मन राजनायिको से मिले।

११ दिसम्वर १९१३ को सेक्रोमेटो मे एक विशाल सभा युगान्तर आश्रम के आधीन हुई वह अत्यन्त महत्व की थी। उसमे सयुक्त राज्य अमेरिका मे प्रत्येक राज्य के भारतीयो के प्रतिनिधि और व्राजील तथा मनीला जैसे दूर स्थानो से भी भारतीय प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। उस सभा मे जरमन कौसिल भी आए। उस सभा मे हरदयालजी का अत्यन्त ओजस्वी और सारगर्भित व्याख्यान हुआ। सभी मन्त्र-मुग्ध होकर

क्राति के उस देवता के हृदय के गहन तल से निकले उद्‌गार सुन रहे थे। उनके भाषण ने जैसे उपस्थित भारतीयो मे नया उत्साह उत्पन्न कर दिया, उनमे जोश की लहर दौड गई वे सब अपने नेता के आदेशो का पालन करने को तैयार थे। तालियो और जयकारो से आकाश गूजने लगा। स्वतन्त्र होने का दृढ निश्चय से सभी के चेहरे दमक रहे थे। समस्त वातावरण अद्‌भुत जोश से कम्पायमान हो गया तभी हरदयाल जी के शिष्य युवक करतारसिंह गाने लगे—

"चलो देश नू युद्ध करन
एहो आखरी वचन फरमान हो गए।"

अग्रेजो को गुप्तचरो के द्वारा जो गदर पार्टी अमेरिका मे क्रांति के लिए प्रयत्न कर रही थी और जरमन सरकार से जो अस्त्र शस्त्रो की सहायता मिल रही थी तथा भारत मे रासबिहारी बोस जो सशस्त्र क्राति का आयोजन कर रहे थे इनकी सूचना मिल चुकी थी इसलिए वे बहुत चितित हो उठे थे। अतएव उन्होंने गदर पार्टी के सगठन मे अपने गुप्तचरो का प्रवेश कराने का प्रयत्न किया। जब हरदयाल जी को इसका पता चला तो उन्होने अपने सगठन के दो भाग कर दिये। प्रचार को उन्होने अपने पास रखा और क्रियाविधि खानखोजे के सुपुर्द कर दी। खानखोजे ने क्रियाविधि का प्रबन्ध अत्यधिक गोपनीय ढग से किया क्योकि भय था कि अग्रेजो के गुप्तचर घुसने का प्रयत्न करेंगे। सभी कार्यकर्ताओ को यह भी मालूम नही था कि क्रियाविधि भाग मे क्या हो रहा है

अग्रेज हरदयाल जी को किसी प्रकार कब्जे मे लेना चाहते थे। भारत मन्त्री ने वायसराय को सूचित किया कि हरदयाल को शायद निर्वासित नही किया जा सकता। इस कारण ब्रिटिश सरकार ने अमेरिका की सरकार पर दबाव डाला है कि वह हरदयाल को उसके हवाले कर दे।

२५ मार्च १९१४ की रात्रि को जैसे ही हरदयाल जी ने एक सभा मे अपना भाषण समाप्त किया अप्रवास इन्स्पेक्टर ने आगे बढ कर उन्हे गिरफ्तारी का वारन्ट दिया और गिरफ्तार कर लिया। परन्तु भारतीयो ने शीघ्र ही पाच सौ डालर की जमानत देकर उन्हे छुडा लिया और वे युगान्तर आश्रम आ गये। भारतीयो को यह भय हो गया कि कहीं अग्रेजो के दबाव मे सयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार हरदयाल जी को अग्रेजो के हवाले न कर दे। इस कारण सबो ने आग्रह किया कि वे सयुक्त राज्य अमेरिका छोड दे।

इसी बीच भारत मे रासबिहारी बोस ने पेशावर से लेकर कलकत्ता तक सभी सैनिक छावनियो से सम्पर्क स्थापित कर जो सशस्त्र क्राति की योजना बनाई थी सरकार को उसकी अपने भेदिये से पूर्व सूचना मिल जाने के कारण असफल हो गई। उधर कामागाटामारू जहाज में हजारो क्रातिकारी भारतीय भारत मे आए उन पर बजबज मे गोलिया चलाई गई और बहुत से हताहत हुए। अतएव सशस्त्र क्राति की योजना असफल हो गई।

हरदयाल अमेरिका से जेनेवा आ गए थे और वहा से बर्लिन आ गये तथा विदेश मन्त्रालय से उन्होंने अपना सम्बन्ध स्थापित कर लिया। इसके पश्चात १९१५ मे भारत के सम्बन्ध मे जर्मनी की सहायता से जो भी योजना बनी अथवा सैनिक कार्यवाही की गई उसमे मुख्यतया हरदयाल जी का हाथ

था। गदर के १८ अगस्त १९१४ के अंक में स्वतन्त्र सैनिको के लिए हरदयाल जी ने निम्नलिखित निर्देश छापे थे।

'क्राति के साहित्य का प्रचार करें, भारतीय सैनिको को इस बात के लिए उत्साहित करे कि वे प्रत्येक स्थान पर चोट करें।'

कुछ ही दिनो उपरान्त 'गदर' मे मोटे अक्षरो मे नीचे लिखा विज्ञापन निकाला गया 'आवश्यकता है भारत मे गदर मचाने के लिए वीर सैनिको की। वेतन-मृत्यु, इनाम शहादत, पेशन स्वतन्त्रता, युद्ध क्षेत्र-भारत।'

'गदर' भारत की कई भाषाओ मे छापा जाता था और गुप्त रूप से भिभिन्न प्राती मे सेना तथा साधारण जन मे बाटा जाता था।

'गदर' की योजना यह थी कि जबकि अग्रेज युद्ध मे फसे हैं भारत मे अग्रेजी फौजें नाम मात्र की हैं तब क्रातिकारियो को चोट करनी चाहिए। आक्रमण के पूर्व अग्रेज अफसरो को मार देने, पुन तार काट कर रेलवे लाइनो को नष्ट करने के उपरांत शस्त्रो और गोला बारूद स्थानीय क्रातिकारी केन्द्रो के हवाले किया जाना था तब पजाब मे सभी क्रातिकारी नेताओ को इकट्ठा होना था, और वहा से चल कर विभिन्न स्थानो पर एक वर्ष तक युद्ध करते रहना था।

परन्तु देश का दुर्भाग्य था कि सर सिकदर हयात खा के भाई डिप्टी सुपरिटेंडेंट पुलिस ने कातिकारियो मे अपने एक गुप्तचर कृपालसिह को घुसेड दिया। रासबिहारी ने जब कृपालसिह को देखा तो वे समझ गए कि वह पुलिस का गुप्तचर है उन्होंने उसको मार देने की आज्ञा दी। किन्तु उनके अनुयायियो ने उसका अन्त करने के स्थान पर उसे नजरबन्द कर दिया। रास बिहारी ने २१ फरवरी को विद्रोह आरम्भ करने की तारीख निश्चित कर दी थी जबकि सैनिको को छावनियो में विद्रोह करना था परन्तु उस नजरबन्द राष्ट्रद्रोही कृपालसिह ने यह सूचना पुलिस तक पहुचा दी। पुलिस ने यकायक अनेक स्थानो पर छापा मारा और धर पकड आरम्भ हो गई। सरकार ने तुरन्त सेनाओ को एक छावनी से दूसरी छावनी मे स्थानातर कर दिया। शास्त्रागारो पर से भारतीय पहरेदार हटा दिए गये केवल अग्रेज पहरेदार रखे गये। जिन देशी नरेशो की साम्राज्य भक्ति मे सन्देह था उनकी सेनाओ को भारत से युद्ध क्षेत्र मे भेज दिया गया। सशस्त्र काति की योजना असफल हो गई।

गदर पार्टी की योजना का विदेश और भारत दोनो ही स्थानो मे ब्रिटिश सरकार को पता चल गया। इसका परिणाम यह हुआ कि सरकार सतर्क हो गई और उसने क्रातिकारियो पर प्रहार किया। विदेशो मे गदर की योजना की सूचना जैकोस्लावाकिया के क्रातिकारियो ने ब्रिटिश सरकार को दी। बात यह थी कि सयुक्त राज्य अमेरिका मे सभी देशो के क्रातिकारियो का एक गुप्त सम्मेलन हुआ था। भारतीय क्रातिकारियो ने सरल स्वभाव से भारतीय सैनिको द्वारा युद्ध काल मे सशस्त्र विद्रोह कराने की योजना को बतला दिया। जैकोस्लावाकिया के क्रातिकारियो को ब्रिटेन और फ्रास की सरकार सहायता करती थी अस्तु उन्होने इस भारतीय गदर की योजना को ब्रिटिश सरकार तक पहुचा दिया। ब्रिटिश सरकार सतर्क हो गई और परिणाम स्वरूप क्राति का यह प्रयत्न असफल हो गया।

अब वे जरमनी आ गए थे। परन्तु जब जरमनी को युद्ध मे असफलता मिलने लगी, युद्ध की स्थिति जरमनी के विरुद्ध जाने लगी तो जरमन सरकार भी

बर्लिन कमेटी के प्रति उदासीन हो गई। अस्तु जो सहायता जरमन सरकार से मिलती थी बन्द हो गई। श्री हरदयाल के सामने आजीविका का प्रश्न उपस्थित हो गया। वे जरमनी मे व अन्य योरोपीय देशो मे भाषण देकर कुछ आय प्राप्त करते और अपना काम चलाते। जरमनी मे उनका जरमन सरकार से मतभेद हो गया। अतएव उन्होने स्विटजरलैंड जाना चाहा पर बहुत कुछ प्रयत्न करने पर भी उन्हे पासपोर्ट नही मिला। जरमन सरकार उन्हे जरमन विरोधी समझने लगी थी। १६१६ की गर्मियो से जरमन पुलिस ने उनके पत्रो को रोकना आरम्भ कर दिया। अतएव १६१६ से फरवरी १६१६ तक आत्म रक्षा के लिए उन्हे कपट से काम लेना पडा क्योकि जरमन सरकार की नौकरशाही उनके साथ शत्रुता का व्यवहार कर सकती थी। उन्होने जरमन अधिकारियो को समझाया कि उनका उत्पीड़न भ्रम के कारण हुआ है। बहुत प्रयत्न करने पर उन्हे स्वीडन जाने की आज्ञा मिली। स्वीडन तटस्थ राज्य था। हरदयाल जी स्वीडन पहुचे और वहा भी वे भाषण देकर अपनी आजीविका चलाते थे। योरोप की प्रत्येक भाषा मे धारा प्रवाह भाषण दे सकते थे अस्तु भारतीय सस्कृति पर भाषण देकर वे अपना निर्वाह करते थे।

१६२७ तक श्री हरदयाल जी इसी प्रकार भटकते रहे। १६२६ मे ब्रिटिश सरकार ने राजनीतिक शरणार्थियो के लिए राजक्षमा घोषित कर दी उसके फल स्वरूप श्री हरदयाल इङ्गलैंड लौट सके। २७ अक्टूबर १६२७ को वे लन्दन पहुँचे। लन्दन मे भी वे भाषण देकर अपना निर्वाह करते थे। फ्रास डेनमार्क यूनान के विश्वविद्यालय भी उनको भाषण देने के लिए बुलाते थे। इस प्रकार वे लन्दन मे अपना निर्वाह करते थे।

उन्होने लन्दन विश्वविद्यालय को बोधिसत्व डाक्ट्रिन (बोधिसत्व सिद्धात) पर शोधग्रन्थ (थीसिस) लिख कर दिया जिस पर उन्हे १६३६ मे विश्वविद्यालय ने पी० एच० डी० की उपाधि प्रदान की। उनके उस शोध ग्रथ की विद्वानो ने बहुत प्रशसा की।

उसके उपरात उन्होने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिंट्स फार सेल्फ कल्चर' लिखी। इस पुस्तक के प्रकाशित होने पर समस्त इङ्गलैंड मे उनकी विद्वत्ता की धूम मच गई। पत्र पत्रिकाए उनकी प्रशसा मे कॉलम के कॉलम लिखने लगीं वे। इङ्गलैंड मे विख्यात हो गये। मजदूर दल के नेता कर्नल वेजवुड तथा दीनबन्धु ऐंड्रूज ने इङ्गलैंड मे और सर तेजबहादुर सप्रू ने भारत मे यह प्रयत्न किया कि भारत सरकार श्री हरदयाल जी को भारत आने की आज्ञा प्रदान करे। बात यह थी कि सर तेजबहादुर सप्रू लन्दन मे हरदयाल जी से मिले थे और उनके प्रकाड पाडित्य और विद्वता की उनके मन पर गहरी छाप थी। उन्होने कौंसिल ऑफ स्टेट मे प्रश्न उठाया तो सरकार ने उत्तर दिया कि जब सर तेजबहादुर उनकी सिफारिश कर रहे हैं तो सरकार इस प्रश्न पर विचार करेगी। उनकी तीसरी पुस्तक ट्वेल्व (बारह पथ) अत्यन्त प्रसिद्ध और प्रशसित हुई। चर्चिल जैसे भारत विरोधी राजनीतिज्ञ भी हरदयाल जी के प्रकाड पाडित्य और प्रतिभा की प्रशसा किए बिना न रह सका।

ऊपर लिखी तीन पुस्तको के कारण हरदयाल जी की समस्त इगलैंड मे प्रसिद्धि हुई वहा के सभी पत्र पत्रिकाओ ने उनका यशगान किया तथा कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों की सिफारिश से प्रभावित होकर भारत सरकार ने हरदयालजी को भारत

आने की आज्ञा दे दी। परन्तु आज्ञा निकलने मे लगभग एक वर्ष लग गया। इस बीच हरदयाल जी लन्दन मे सयुक्त राज्य अमेरिका चले गए क्योकि उन्हे वहा कुछ व्याख्यान देने थे। भारत मे आने की आज्ञा का सरकारी पत्र उन्हे १६३८ के सितम्बर मास मे फिलेडेल्फिया मे मिला। सहसा उन्हे विश्वास नही हुआ। बात यह थी कि अग्रेज शासको के हाथो उन्होने इतना अत्याचार सहा था कि कुछ देर तक उन्हे उस सरकारी कागज पर विश्वास ही नही हुआ। उन्होने अपने एक प्रशसक को भारत मे लिखा था— "मुझे इस बात पर विश्वास नही था कि मुझे भारत लौटने की अनुमति दी जावेगी।" जब उन्हे भारत जाने की अनुज्ञा का सरकारी पत्र मिला तो सहसा उनके मुख से निकला 'भारत को जाने का द्वार खुल गया है।'

फिलेडेल्फिया से हरदयाल जी का एक पत्र दिसम्बर १६३८ मे प्राप्त हुआ कि भारत सरकार की अनुज्ञा उनको सयुक्त राज्य-अमेरिका मे मिली है परन्तु इससे पूर्व ही कई नगरो मे उनके व्याख्यानो का प्रबध किया जा चुका था। इस कारण तीन मास के बाद वे सयुक्त राज्य मे भारत को प्रस्थान करेंगे।

उनके भक्त और प्रशसक भारत मे उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने हरदयालजी के भारत आने के लिए किराए का प्रबध कर बैंक ड्राफ्ट लेकर फिलेडेल्फिया भेज दिया था। यकायक दिल्ली के एक दैनिक समाचार पत्र मे छपा "हरदयाल जी एक मास पूर्व ४ मार्च १६३६ को स्वर्ग सिधार गए। कहा जाता है कि उनका स्वर्गवास विचित्र ढग से हुआ। ३ मार्च १६ ६ की रात्रि को सोने से पूर्व वे बिल्कुल स्वस्थ थे। अगले दिन प्रात काल उन्हें बिस्तर पर निष्प्राण पाया गया। उनके मित्र ब्रुकस ने उनके सम्बन्ध मे लिखा कि उनकी हृदयगति बन्द हो जाने से फिलेडेल्फिया मे उनकी मृत्यु हो गई। परन्तु उनके बाल साथी तथा सहयोगी प्रसिद्ध क्रातिकारी श्री हनवत सहाय उनकी मृत्यु का कारण कुछ और ही बतलाते है। "योरोप के दूसरे महायुद्ध से पूर्व वे फिर किसी प्रकार अमेरिका पहुच गए। उनका निश्चय भारत आकर देश के अन्दर से देश को स्वतन्त्र करने का कार्य करना था। उन्होने अपना सदेश वाहक भेजा जिससे कि वे दिल्ली के पुराने साथियो की सम्मति प्राप्त कर सकें। परन्तु यह विश्वास किया जाता है कि यह सम्मति और किराया (जो उन्हें तुरत भेज दिया गया) पहुचने के पूर्व ही फिलेडेल्फिया मे जहा वे ठहरे हुए थे उनकी हत्या कर दी गई। डाक्टर मजूमदार की भी यही धारणा है कि वे हृदयगति के बद होने से नही मरे वरन उनकी हत्या की गई। श्री हरदयाल जी के क्रातिकारी साथियो, भारतीय मित्रो की यह दृढ धारणा और विश्वास है कि वे प्रकृतिक रूप से किसी बिमारी से नही मरे वरन उनकी हत्या कर दी गई।"

जो व्यक्ति जीवन भर भारत की स्वतत्रता के लिए युद्ध करता रहा, जिसने मा भारती की दासता की शृ खलाओ को काट कर उसे बन्धन मुक्त करने के लिए अपनी पत्नी अपनी पुत्री सपने परिवार और मातृभूमि को त्याग दिया, योरोप और अमेरिका की खाक छानता रहा वह भारतीय स्वातत्र युद्ध का अमर सेनानी था युद्धो का वीर योद्धा रोग से शैया पर नही शहादत के ही योग्य था। जब अदभुत मेधा और प्रतिभा का धनी वह वीर भारत आ कर भारत के अन्दर से देश की स्वतत्रता के लिए युद्ध करने की योजना बना रहा था तब किसी राष्ट्रद्रोही विदेशी शत्रु सरकार के एजेंट ने उनकी हत्या कर दी। श्री हरदयाल जी की मृत्यु अत्यत रहस्मय ढग से हुई

इसका प्रमाण तो यही है कि उनका मृत्यु का समाचार भारत मे उनकी-मृत्यु से सवा महीने उपरात पहुचा। ३ मार्च १९३९ को वे पूर्ण स्वस्थ थे उन्हे कोई शारीरिक शिकायत नही थी। यही कारण है कि अधिकाश व्यक्तियो का मत है कि उनकी हत्या की गई। इस प्रकार इस महान देशभक्त, विद्वान, विचारक, लेखक ओजस्वी भाषणकर्ता और क्रातिकारी, भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम के अमर सेनानी की विदेश मे मृत्यु हो गई। भारतमाता की गोद मे वह नही मर सका।

पर हम भारतीयो ने भारत के स्वतन्त्रता सग्राम के उस अमर सेनानी को सर्वथा भुला दिया। जिसने मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए जीवन भर तिल-तिल अपना खून जलाया, जो देश के लिए जिया और मरा, जिसने अपनी मातृभूमि की दासता की शृखलाओ को काटने के लिए अपने प्रियजनो को त्याग दिया उसको भारत भी सर्वथा भूल गए। भारत ने उनकी स्मृति रक्षा की कोई आवश्यकता नही समझी। आज की पीढी यह भी नही जानती कि कोई ऐसा देशभक्त भी था जो कि केवल देश के लिए ही जिया और मरा। हम भारतवासियो की कृतघ्नता को देख कर सम्भवत. कृतघ्नता को भी लज्जा आती होगी और वह लज्जा से अपना मुह छिपा लेती होगी।

अध्याय ५

महाविप्लवी नायक श्री रासबिहारी बोस

"I was a fighter, one fight more, The last and the best"
—Ras Behari Bose 25-4-1942

"मैं एक योद्धा रहा हू, एक युद्ध और अन्तिम और सर्वश्रेष्ठ"
—रास बिहारी बोस २५-४-१६४२

२५ मई १८८६ को भारत के महान क्रातिकारी और भारत की स्वतन्त्रता के युद्ध का अपने जीवन की अन्तिम श्वास तक सचालन और नेतृत्व करने वाले श्री रास बिहारी बोस का हुगली जिले के पलारा विघाती नामक स्थान पर अपने मामा के गृह मे जन्म हुआ। उनका पैतृक गृह बर्दवान जिले मे सुबालदाह नामक ग्राम था परन्तु रास बिहारी बोस के जन्म के समय उनकी माता अपने मातृ गृह आई हुई थी। रास बिहारी बोस के पिता श्री विनोद बिहारी बसु कुछ समय के उपरात सुबालदाह से चन्द्रनगर चले आए। जब श्री विनोद बिहारी अपने पैतृक ग्राम से हट कर चन्दरनगर आए उस समय बालक रासबिहारी चार या पाच पाच वर्ष का था। जब कि बालक रासबिहारी शिशु अवस्था मे ही था उसी समय उनकी माता क स्वर्गवास हो गया। बालक रासबिहारी बोस मातृ प्रेम से वचित हो गया। माता का प्रेम और वात्सल्य की शीतल और सुखद छाया मे बालक का लालन-पालन नही हुआ। भवितव्यता ने उस बालक के लिए आजन्म सघर्ष, विद्रोह, त्याग, तपस्या, बलिदान, अथक परिश्रम और कष्ट का जीवन निर्धारित किया था। अतएव नियति ने उसे शिशु अवस्था में ही मातृ सुख से वचित कर दिया। भगवान उस बालक से अपनी मातृभूमि को स्वतत्र करने के लिये आजीवन युद्ध करते रहने का कार्य लेना चाहते थे अतएव उसको माता के सुख से वचित कर शिशु अवस्था से ही कठोर जीवन व्यतीत करने का अभ्यस्त बना दिया। वास्तव मे वह बालक भारत की स्वतत्रता के लिए किए जाने वाली भावी सशस्त्र क्राति का सूत्रधार था।

रासबिहारी के बालपन के सम्बध मे अधिक कुछ ज्ञात नही है। परन्तु आरम्भ से ही बालक मे साहस और शौर्य के चिन्ह प्रगट होने लगे थे। जब वे पढते थे तो अपने एक साथी को लेकर अर्द्ध रात्रि को चन्दरनगर मे भागीरथी के पश्चिमी तट पर स्थित श्मशान घाट जाते और वहा से हड्डिया एकत्रित कर उनसे खेलते। नियति उस वीर बालक को मृत्यु के भय से मुक्त कर देना चाहती थी क्योंकि जो कार्य वह भावी जीवन मे करने जा रहा था उसमे पग-पग पर मृत्यु का सामना करना था। उस बालक को मानो उस महान कार्य के लिए स्वय प्रकृति ही प्रशिक्षित कर रही थी। यद्यपि बालक रासबिहारी अत्यन्त कुशाग्र-बुद्धि था परन्तु उसकी रुचि पाठ्य पुस्तको मे उतनी नही थी जितनी कि स्कूल के पाठ्यक्रम के बाहर उन पुस्तको को पढने मे थी जो कि युवको मे देश भक्ति की भावना उत्पन्न करती थी। वे पाठ्य पुस्तको के स्थान पर आनन्दमठ, 'पलाशीर युद्ध' (पलासी का युद्ध) तथा इसी प्रकार की राष्ट्रीय भावनाओ को जाग्रत करने वाली पुस्तको को पढत थे।

यह वह समय था कि जब श्री अरविन्दु देश मे क्रातिकारी सैनिक राष्ट्रवाद की भावना का प्रचार कर रहे थे। निरालम्ब स्वामी उपनाम जतीन्द्रनाथ बन्धोपाध्याय श्री अरविन्दु की इस क्रातिकारी सैनिक राष्ट्रवाद की भावना के बगाल मे सदेशवाहक

और मुख्य प्रचारक थे। जब वे चन्दरनगर में आये उस समय किशोर रासविहारी उनके सम्पर्क में आए और उनके अन्तर में भारत को सशस्त्र क्रांति के द्वारा स्वतंत्र करने की जो छिपी और सुप्त अग्नि थी उनके सम्पर्क में प्रज्ज्वलित हो गई।

रासविहारी उस समय केवल पन्द्रह वर्ष के थे परन्तु उनमें देश को सशस्त्र क्रांति के द्वारा स्वतन्त्र करने की तीव्र भावना जागृत हो गई। वे चारु चन्द्रराय द्वारा स्थापित 'सुहृदय सम्मेलन' संगठन में सम्मिलित हो गये। चारु चन्द्र राय ने देश में क्रांतिकारी कार्यों को करने के लिए वह संगठन खड़ा किया था। जबकि रासविहारी केवल पन्द्रह वर्ष के थे तभी उनके मस्तिष्क में यह बात घूम रही थी कि भारतीय सेना को सशस्त्र क्रांति के लिए तैयार किए बिना अंग्रेजों को भारत से निकालना कठिन होगा। इस उद्देश्य से उन्होंने पांडिचेरी स्थित भारतीय फ्रैंच सेना में भर्ती होने का प्रयत्न किया परन्तु उनका प्रयत्न असफल हुआ फ्रैंच सैनिक अधिकारियों ने उन्हें सेना में नहीं लिया। पर इससे वे निराश अथवा हतोत्साहित नहीं हुए। उनकी दृष्टि देशी राज्यों की ओर गई। उन्होंने सोचा कि किसी देशी राज्य की सेना में प्रवेश करके भारतीय देशी राज्यों की सेनाओं में राष्ट्रीय और क्रांतिकारी भावना जागृत करने का प्रयत्न करना चाहिए। इस उद्देश्य से एक देशी राज्य की सेना में प्रवेश पाने के उद्देश्य से वे घर से निकल गए चन्दरनगर से जब वे अपने गन्तव्य स्थान को जा रहे थे तो उनके पिता के मित्र की पकड़ में आ गए वे उन्हें वापस चन्दरनगर ले आए। परन्तु अब रासविहारी बोस क्रांति के पथिक बन चुके थे। उनके अभिभावकों के उन्हें उस पथ से विचलित करने के सभी प्रयत्न असफल हुए। वे फोर्ट विलियम कलकत्ता में क्लर्क हो गए और कुछ समय के उपरांत वे कसौली में सेना विभाग में नौकर हो गए। कलकत्ते में उनका क्रांतिकारी दल से घनिष्ट सम्बन्ध हो गया और आजन्म उन्होंने देश को स्वतन्त्र करने के लिए अपना जीवन अर्पण करने की दीक्षा ले ली।

कलकत्ते में रासविहारी युगान्तर क्रांतिकारी दल के सक्रिय सदस्य बन गए। वास्तव में जतीन बनर्जी ने कलकत्ते में युगान्तर क्रांतिकारी दल को संगठित किया। रासविहारी चन्दरनगर में ही उनके प्रभाव में आ चुके थे अस्तु वे युगांतर क्रांतिकारी दल के सदस्य बन गए। जब दल के केन्द्र मानिकतल्ला गार्डन का पुलिस को पता चल गया। उसने वहां छापा मार कर दल के कुछ सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया तो दल के सदस्यों ने रासविहारी को उत्तर भारत में दल का कार्य करने के लिए भेज दिया। दल के नेताओं को भय था कि रासविहारी यदि कलकत्ते में रहे तो वे गिरफ्तार हो जावेंगे। कारण यह था कि उस तलाशी में रासविहारी बोस के दो पत्र मिले थे। साथ ही वे उत्तर भारत में भी क्रांतिकारी दल को अधिक सक्रिय करना चाहते थे। जतीन बनर्जी ने पंजाब में क्रांतिकारी युवकों को आकर्षित किया था जिन्हें बाद में लाला हरदयाल ने संगठित किया था और उन्हें आजन्म देश सेवा की दीक्षा दी थी। अस्तु इस बात की आवश्यकता थी कि लाला हरदयाल के भारत से बाहर चले जाने के उपरान्त कोई उनका संगठन करे। इसी उद्देश्य से युगान्तर दल के नेताओं ने रासविहारी बोस को उत्तर भारत भेज दिया। शशि भूषण राय चौधरी देहरादून में श्री पी सन टैगोर के बालकों के ट्यूटर (शिक्षक) थे। जब युगान्तर दल के नेताओं ने निश्चय किया कि रासविहारी बंगाल छोड़ कर उत्तर भारत जावें तो शशि भूषण राय चौधरी ने अपनी नौकरी से त्याग पत्र दे दिया और अपने स्थान पर रासविहारी

रखवा दिया। कुछ समय के उपरांत रासबिहारी ने फारैस्ट रिसर्च इस्टिटयूट के कार्यालय मे नौकरी कर ली और उत्तर भारत मे क्रातिकारी दल का सगठन करने लगे।

यह हम पहले ही कह आए हैं कि पजाब मे लाला हरदयाल ने युवको का एक क्रातिकारी सगठन खडा किया था और वे जन समुदाय मे अपने लेखो तथा भाषणो से क्रातिकारी विचार धारा का प्रचार कर रहे थे। भारत सरकार लाला हरदयाल के पजाब के शिक्षित युवको पर बढते हुए प्रभाव से भयभीत हो उठी और उसने कैद कर कालापानी भेजने का निश्चिय कर लिया। वायसराय की कार्यकारणी कौंसिल के एक भारतीय सदस्य को भारत सरकार की इस दुरभि सधि का पता चल गया। उसने लाला लाजपतराय को गुप्त रूप से यह सन्देश भेजा– "लाला हरदयाल सबसे ऊचे अधिकारियो के मस्तिष्क मे घूम रहे हैं। उनका बहुमूल्य जीवन बचाने के लिए आप उन्हे देश से बाहर भेज दें।" यद्यपि लाला हरदयाल उस स्थित का सामना करना चाहते थे पर लाला लाजपत राय ने उन्हे विवश कर दिया कि वे बाहर चले जावें। विवश होकर लाला हरदयाल को विदेश जाना पडा और उन्होने अपने दल का कार्य मास्टर अमीरचन्द के सुपुर्द कर दिया। लाला हरदयाल के शिष्यो मे चटर्जी मुख्य थे वे मास्टर अमीरचन्द तथा उनके अभिन्न मित्र लाला हनुवन्त सहाय के परामर्श से दल का कार्य करने लगे। चटर्जी तीन वर्ष पूर्व अपने भतीजे के विवाह के सम्बन्ध मे देहरादून गए थे। तब वे रासबिहारी बोस से मिले। चटर्जी को रासबिहारी बोस से पता चला था कि बगाल मे एक क्रातिकारी सस्था है जिसकी समस्त बगाल मे शाखायें हैं और जो युवको को सशस्त्र क्राति के लिए भर्ती कर उनको दीक्षा देती है। पर उस समय रासबिहारी बोस ने चटर्जी को अपने सम्बन्ध मे कुछ नही बतलाया।

चटर्जी मास्टर अमीरचन्द के परामर्श से पजाब मे क्रातिकारी दल का सगठन कर रहे थे। उनका सरदार अजीतसिंह और सूफी अम्बा प्रसाद से भी सम्पर्क स्थापित हो गया था। चटर्जी ने सशस्त्र क्राति की एक योजना तैयार की थी और उसे एक कापी पर लिख लिया था। सरदार अजीतसिंह और सूफी अम्बा प्रसाद उनको ले गए। उन्होने उसे पढ कर 'भग-सियाल' के सम्पादक बाके दयाल को पढने को दे दी पुलिस ने उनके कार्यालय पर छापा मारा तो वह कापी सरकार के हाथ पहुच गई। उसका परिणाम यह हुआ कि सभी के विरुद्ध गिरफ्तारी के वारट जारी हो गए। सरदार अजीत सिंह तथा सूफी अम्बा प्रसाद देश छोड कर ईरान चले गए। चटर्जी ने पजाब के दल का कार्य रासबिहारी को सौंप दिया। उन्होने दल के सभी मित्रो तथा समर्थको की सूची बना कर रासबिहारी के हाथ मे दे दी और वे लन्दन चले गए और वहा क्रातिकारी कार्य करने लगे। इस प्रकार रासबिहारी पजाब के क्रातिकारी दल के सचालक बन गए।

यद्यपि रासबिहारी अब उत्तर भारत मे कार्य कर रहे थे परन्तु उनका बगाल के क्रातिकारी दल युगातर से सम्बन्ध बना हुआ था। बगाल के क्रातिकारी दल युगातर से उनका सबध चदरनगर के दल के द्वारा था। चदरनगर के श्री क्षीश घोष और श्री मनीन्द्र नायक के द्वारा विशेष रूप से उनका युगातर दल से सम्पर्क स्थापित था। कहने का तात्पर्य यह है कि युगांतर दल से उनका निकट का सम्बध था। मनीन्द्र नायक दल के बम निर्माण करने के विशेषज्ञ थे। नायक श्री रासबिहारी की सभी गुप्त सूचनाए

श्रमजीवी समवाय के अमरेन्द्र नाथ चटर्जी तथा अतुल घोष को पहुचा देते थे जो युगातर दल के प्रमुख व्यक्ति थे। वे कभी-कभी बगाल जाते और वहा श्री अमरेन्द्र नाथ चटर्जी, जतीन्द्र नाथ मुखर्जी, क्षीम चन्द्र घोष, अमृतलाल हजारा, अतुल गगोली तथा अन्य प्रमुख क्रातिकारियो मे भारत वर्ष मे सशस्त्र विद्रोह की योजना पर विचार करते। उनका श्री अरविन्दु से भी सम्पर्क स्थापित हो चुका था। श्री अरविन्दु के द्वा ा उनको महाराष्ट्र मे क्रातिकारी गतिविधियो का परिचय था। उदयपुर के ठाकुर साहब ने पूना स्थित सेनाओ को विद्रोह के लिए तैयार कर लिया था इसका उन्हे ज्ञान था। उत्तर भारत मे उन्होने क्रातिकारियो का एक ससक्त सगठन खडा कर दिया। मास्टर अमीर चन्द, भाई बाल मुकुन्द, अवध विहारी, हनुमन्त सहाय, रामशरण दास, शचीन सान्याल, पिंगले, करतार सिंह सराबा जैसे उद्भट क्रातिकारी उनके विश्वास पात्र और सहाय थे राजस्थान मे भी उन्होने अपना एक दल स्थापित कर लिया था। खरवा के राव गोपाल सिंह, श्री केशरी सिंह बारहट, अर्जुनलाल सेठी तथा ब्यावर के दामोदर दास राठी से उनका सम्पर्क स्थापित हो गया था और उनके द्वारा क्रातिकारी युवको का एक सगठन खडा हो गया था उसमे प्रताप सिंह बारहट, जोरावर सिंह बारहट, श्री छोटेलाल जैन लाहरी आदि मुख्य थे। १९११ या १९१२ मे जब श्री रासबिहारी बोस बगाल गए थे तो वे श्री अमरेन्द्र नाथ चटर्जी से उनकी दूकान "श्रमजीवी-समवाय" पर मिले। वहा उनको बसन्त कुमार विश्वास मिला, उनसे वे बहुत प्रभावित हुए और उसको उत्तर भारत मे क्रातिकारी कार्य करने के लिए अपने साथ ले आए।

आरम्भ से ही रासबिहारी बोस की मान्यता थी कि भारतीय सेनाओ मे राष्ट्रीय भावना उत्पन्न करके देश मे सशस्त्र विद्रोह खडा करना चाहिए परन्तु उसके लिये उपयुक्त अवसर तथा तैयारी की आवश्यकता थी। यही कारण है कि उस समय पेशावर से लेकर बरमा तक उत्तर भारत की सभी सैनिक छावनियो मे क्रातिकारियो ने सम्पर्क स्थापित कर रखा था। उन्होने कई छावनियो मे सशस्त्र विद्रोह के लिए भारतीय सेनाओ को तैयार कर लिया था। रासबिहारी केवल आतरिक विद्रोह को ही पर्याप्त नही समझते थे वे बाहर से भी सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे थे। वे जानते थे कि जब तक ब्रटिश सत्ता पर देश के अन्दर से और बाहर से एक साथ आक्रमण नही किया तब तक शक्तिशाली ब्रटिश शक्ति को धराशायी नही किया जा सकता। अतएव वे पेशावर से बरमा तक भारतीय सैनिक छावनियो मे ही सक्रिय नही थे। सभी छावनियो मे उन्होने अपने विश्वसनीय कार्यकर्ताओ को बिठा दिया था। राजस्थान मे राव गोपाल सिंह खरवा, केशरी सिंह बारहठ व भूपसिंह (विजय सिंह पथिक) प्रताप सिंह बारहट के द्वारा सशस्त्र विद्रोह की तैयारिया की थी। उनके अत्यन्त विश्वास प्राप्त साथी भाई बाल मुकुन्द जोधपुर के राजकुमार के शिक्षक बन कर जोधपुर मे जम गए थे।

इसके अतिरिक्त उन्होने विदेशो मे रहने वाले भारतीय क्रातिकारियो से भी सम्पर्क स्थापित कर लिया। जापान, दक्षिणी पूर्व एशिया, अफगानिस्तान, ईरान, टर्की, फ्रास, जरमनी सयुक्त राज्य अमेरिका के भारतीय क्रातिकारियो से भी उनका सम्पर्क था। उन क्रातिकारियो के द्वारा उन देशो की सरकारो से भी क्रातिकारियो का सम्बन्ध स्थापित हो गया था जो बृटेन के शत्रु थे और भारत से सहानुभूति रखते थे। इस प्रकार रासबिहारी बोस देश के अन्दर और बाहर विप्लव की तैयारी मे जुटे हुए थे।

वाह्य रूप से कोई यह कल्पना भी नही कर सकता था कि फोरेस्ट रिसर्च इस्टिटयूट का हेड क्लर्क भारत व्यापी सशस्त्र विद्रोह का सूत्रधार है। यही नही सरकार को उन पर सन्देह न हो इस दृष्टि मे उन्होने देहरादून मे वहा के पुलिस सुपरिटेंडैंट वर्मन से भी सम्पर्क स्थापित कर लिया था और पुलिस को सूचना देने वाले के रूप मे कार्य करते थे। अतएव पुलिस को स्वप्न मे भी ध्यान नही हुआ कि वे भारतव्यापी विप्लव के आयोजक हैं।

यह वह समय था कि जब वगभग आदोलन के कारण समस्त भारत मे अग्रेजो के विरुद्ध क्षोभ और रोष फैला हुआ था। विदेशी वस्तुओ का वहिष्कार तथा स्वदेशी आदोलन वहुत वलवान था और समस्त देश मे विशेषकर वगाल मे क्राति की भावना वलवती हो उठी थी। सयुक्त राज्य अमेरिका मे गदर पार्टी का सगठन हो चुका था और हजारो पजाबी क्रातिकारी युवक अमेरिका से भारत सशस्त्र क्राति मे भाग लेने वापस आ चुके थे। यद्यपि उनमे से कुछ कोमागाटा मारू हत्याकाड मे वज-वज मे मारे गए और गिरफ्तार हो गए थे। इस कारण पजाव मे क्राति की अग्नि धधक रही थी। वृटिश सरकार इस भारत व्यापी क्षोभ, रोष और अशान्ति से भयभीत हो उठी।

अतएव भारतीय जन मानस को शात करने के लिए तथा वृटिश शासन के प्रति भक्ति की भावना को सुदृढ करने के उद्देश्य से वृटिश कूटनीतिज्ञ वृटिश सम्राट को भारत लाए इतिहास चर्चित मुगल दरवार की शान शौकत को भी मात करने वाला वाल भव्य दरवार किया भारत के सभी देशी नरेश अपनी शान शौकत के साथ उसमे सम्मिलित हुए। उस ऐतिहासिक दरवार मे सम्राट ने वग भग को रद्द करने तथा प्राचीन इन्द्र प्रस्थ को पुन भारत की राजधानी वनाने की घोषणा की। उस भव्य आयोजन का भारत के जन मानस पर अनुकूल प्रभाव पडा था अतएव वृटिश कूटनीतिज्ञो ने राजधानी के कलकत्ते से दिल्ली स्थानानरित होने पर उससे भी अधिक शानदार जुलूस और दरवार करने की योजना वनाई। वे चाहते थे कि समारोह ऐसा भव्य हो कि भारतीय आश्चर्य चकित हो जावें उन पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पडे कि वृटिश सत्ता और शक्ति अजेय है उसे कोई पराभूत नही कर सकता।

इधर क्रातिकारी दल इस अग्रेजो की भक्ति भावना को नष्ट कर इसे मनोवैज्ञानिक प्रभाव को समाप्त करने का उपाय सोच रहे थे। मास्टर अमीरचन्द का कहना था कि यदि हम वृटिश सम्राट के प्रतिनिधि वायसराय को भारत के प्रत्येक भाग से आए लाखो भारतीयो के सामने सेना से घिरे हुए मार सकें तो वृटिश सत्ता और प्रभाव को भारत मे ही नही ससार मे घातक धक्का लगेगा और भारतीयो मे साहस उत्पन्न होगा। अतएव महाविप्लवी नायक रासविहारी ने लार्ड हार्डिग पर वम फेंकने की योजना वनाई।

२३ दिसम्बर १९१२ को जब लार्ड हार्डिग का वह शानदार जुलूस निकल रहा था। वायसराय वायसरीन के साथ एक विशालकाय हाथी पर सोने चादी के हौदे मे वैठे थे वलरामपुर का जमादार महावीरसिंह सोने का छत्र लगाए हुए बैठा था। भारत के सभी राजे महाराजे वासयराय के पीछे चल रहे थे। सेनाए कूच कर रही थी और वैंड मोहक ध्वनि वजा रहे थे तो चादनी चौक मे एक भयकर धडाका हुआ। लार्ड हार्डिग पर वम फेंका गया। हौदे का पिछला भाग ध्वस्त हो गया। जमादार महावीर

सिह मर कर लटक गया। लार्ड हार्डिंग भयानक रूप मे जख्मी हो गए बेहोश होकर हौदे मे लुढक गए।

रासविहारी बोस ने लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की योजना बना कर भारत मे ही नही ससार मे राजनीतिक भूकम्प उत्पन्न कर दिया। प्रथम बार ससार को यह ज्ञात हुआ कि भारतीय वृटिश राज्य और शासन को दैवी वरदान नही मानते जैसा कि अग्रेजो ने पृथ्वी भर मे प्रचार कर रखा था। भारतीयो ने भी चकित होकर देखा कि अग्रेजी सत्ता और शक्ति को चुनौती दी जा सकती है। लार्ड हार्डिंग पर बम फेंके जाने से वृटिश शक्ति का सूर्य तेज हीन हो गया। वृटिश शक्ति अजेय है उसको चुनौती नही दी जा सकती वह मनोवैज्ञानिक हीन भावना नष्ट हो गई। जो राजनीतिक चैतन्य सैकडो राजनीतिक प्रस्तावो, राजनीतिक सम्मेलनो, राजनीतिक नेताओ के अगणित भाषणो और लेखो द्वारा पचास वर्षो मे उत्पन्न नहीं किया जा सका वह लार्ड हार्डिंग पर एक बम फेंकने से उत्पन्न हुआ। आज भी यह निश्चय पूर्वक कहना कठिन है कि बम स्वय रासविहारी बोस ने फेंका या बसन्त विश्वास अथवा जोरावर सिह बारहट ने फेंका परन्तु उसमे तनिक भी सन्देह नही है कि सम्पूर्ण योजना रासविहारी के मस्तिष्क की उपज थी। बम चन्दर नगर मे मनीन्द्र नायक ने बनाये और अमर चन्द ने वे दस बम बसन्त विश्वास के द्वारा रासविहारी बोस के पास भेजे।

वृटिश सरकार को बम काड से ऐसा गहरा आघात लगा कि वह बौखला उठी। आकाश पाताल एक कर दिया परन्तु बम फेंकने वाले की वह परछाई भी नही पकड सकी। परन्तु सन्देह मे दिल्ली और उत्तर भारत के बहुत से क्रातिकारी पकड लिए गये। आपत्तिजनक क्रातिकारी साहित्य, विस्फोटक पदार्थ जिनके पास मिला उन्हे पकड लिया गया। भारत सरकार ने एक लाख रुपये का इनाम घोषित किया। देशी नरेशो ने अपनी सम्राट भक्ति प्रदर्शित करने के लिए बम फेंकने वाले को पकडाने वाले को लाखो रुपयो के पारितोषिको की घोषणा की परन्तु सब व्यर्थ हुआ बम फेंकने वाला ऐसा लोप हुआ कि भारत सरकार के गुप्तचर विभाग तथा स्काटलैंड यार्ड के गुप्तचरो के समस्त प्रयत्न निष्फल हो गए।

रासविहारी विलक्षण बुद्धि और चतुरता के धनी थे। लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने के उपरात वे देहली से निकल गए। भाई परमानन्द ने लाहौर के 'हिन्दू' मे अपने लेख मे लिखा था कि "साहसी रासविहारी लार्ड हार्डिंग पर बम फेंक कर दिल्ली से निकल गए और उसी दिन सायकाल को देहरादून मे लार्ड हार्डिंग के प्रति सहानुभूति प्रकट करने के लिये एक सभा की उसके सभापति के पद से बोलते हुए उन्होने लार्ड हार्डिंग पर बम फेंके जाने की कठोर आलोचना और निन्दा की।"

दो वर्षो के उपरात सरकार को यह पता चला कि लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने का षडयन्त्र रासविहारी के उर्वर मस्तिष्क की उपज थी। एक राजनीतिक डकैती के सम्बन्ध मे पुलिस ने कलकत्ते के राजा बाजार मोहल्ले मे स्थित शशाक मोहन हजारा (जिनका दूसरा नाम अमृत हजारा भी था) के मकान की तलाशी ली। उस तलाशी मे लार्ड हार्डिंग पर जो बम फेंका गया था उसके जैसे बम के खोल मिले और कुछ कागज पत्र मिले। उनमे दीनानाथ का नाम था। दीनानाथ को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। दीनानाथ मुखबिर बन गया। वह यह तो न बतला सका कि बम किसने फेंका था पर उसने यह बतला दिया कि इस षडयन्त्र के जनक रासविहारी

थे और उसमे कौन-कौन सम्मिलत थे। मास्टर अमीरचन्द का पोस्य पुत्र सुलतानचन्द भी सरकारी गवाह बन गया। देहली षडयन्त्र अभियोग चला। अभियोग नीचे लिखे १४ व्यक्तियो पर चला था।

श्री रामविहारी बोस (वे फरार थे) दीनानथ सुलतान चन्द, मास्टर वमीर चन्द, अवध बिहारी, भाई बाल मुकन्द वसन्त कुमार विश्वास, बलराज, छोटेलाल जैन, लाला हनुवन्त सहाय, चरणदास, मन्नूलाल, रघुवर शर्मा, रामलाल और खुशीराम। रासविहारी फरार थे, दीनानाय और सुलतान चन्द सरकारी गवाह बन गए ईस कारण छोड दिए गए। मास्टर अमीरचन्द, अवघ विहारी, भाई बाल मुकन्द और वसन्त विश्वाल को प्राण दण्ड दिया गया तथा लाला हनुवन्त सहाय और बलराज को आजीवन कारावास का दण्ड मिला शेष छोड दिए गए।

जब सरकार को यह पता चला कि वास्तव मे लर्ड हार्डिग पर फेंकने का षडयन्त्र रासविहारी बोस का था तो देहरादून की पुलिस आश्चर्य चकित रह गई। वहा के पुलिस अधिकारी उन्हे अपना सूचना देने वाला अनुचर समझते थे। उन्होंने देहरादून के उच्च पुलिस अधिकारियो से अपना सम्पर्क स्थापित कर लिया था। डिप्टी सुपरिटेडेंट सुशील घोष के तो वे सूचना वाले गुप्तचर अनुचर की भाति काम करते थे इस कारण उन पर किसी को सन्देह नही हो सकता था। केन्द्रीय गुप्तचर विभाग के शीर्ष अधिकारी 'डेनहेम', क्लविलैंड तथा पैट्री भी यह जानते थे कि वे सुशील घोष के सूचना देने वाले गुप्तचर अनुचर है। यही कारण था कि जब शशाक मोहन हजारा के राजा बाजार के मकान की तलाशी मे जो कागज पत्र मिले और उसमे रासविहारी बोस का नाम आया तो पुलिस यकायक विश्वास नही कर सकी उसने यही समझा कि यह अन्य कोई व्यक्ति है पर दीनानाथ के वक्तव्य से जब यह निश्चित हो गया कि देहरादून के रासविहारी बोस ही सारे षडयन्त्र के आविषकर्त्ता है तो सुशील घोष कठिनाई मे फस गए उनसे रासविहारी बोस से उनके परस्पर सम्बन्ध मे पूछ ताछ और जाच पडताल की गई। रासविहारी ने पुलिस का ऐसा विश्वास प्राप्त कर लिया था कि तत्कालीन पुलिस के सर्वोच्च अधिकार डेनहेम ने उन्हे चन्दरनगर के क्रातिकारी दल के भेद लेने के लिए नियुक्त किया था। अवश्य ही रासविहारी मे क्रातिकारी कार्य करने की अपूर्व प्रतिभा और विलक्षण बुद्धि थी।

रासविहारी इतने चतुर और भेष बदलने मे इतने दक्ष थे कि पुलिस उनके पीछे थी उनके सिर पर भारी ईनाम था परन्तु वे बम काड के बाद भी दो वर्ष तक उत्तर भारत मे रहे सशस्त्र विद्रोह का सगठन करते रहे परन्तु पुलिस उनको पकड न सकी।

न्यायाधीश हैरिसन ने श्री रासबिहारी बोस के सम्बन्ध मे नीचे लिखे शब्द कहे थे "रासविहारी को साधारणतया जितना चतुर समझा जाता था उससे वे कही चतुर थे— स्पष्ट है कि वे अत्यन्त मेधावी और विलक्षण बुद्धि के व्यक्ति है।' न्यायाधीश हैरिसन ने रासविहारी बोस के सम्बन्ध मे अपना मत निम्नलिखित आधार पर बताया था।

सरकारी अधिकारी सेन ने अपनी जिरह मे यह बताने का प्रयत्न किया कि रासविहारी पुलिस गुप्तचर थे। उसका कारण यह था कि पूरनसिंह (जिसे

पाच सौ मासिक वेतन मिलता था) का कहना था कि रासविहारी उनसे एक पुलिस मैन की तरह अभद्र प्रश्न पूछता रहा। दूसरे जब वायसराय देहरादून विश्राम करने (बम काड के बाद) आए तो रास विहारी के पास वायसराय के शिविर मे जाने के लिए पुलिस पास था (सम्भवत वायसराय को देहली मे न मार सकने पर उन्हें देहरादून मे मारना चाहता था) देहरादून के डिप्टी सुपरिंटेंडेंट सुशील चन्द्र घोष का कहना था कि वायसराय के शिविर मे जाने के लिए उन्हें भी पास नही दिया गया था। इनके अतिरिक्त सुशील चन्द्र घोष का कहना था कि देहरादून मे वायसराय के प्रवास के समय जो भी बगाली देहरादून मे आए उन सब की सूचना रासविहारी पुलिस को देते थे तथा सभी सम्भ्रान्त बगाली उनके सम्पर्क मे थे। रासविहारी ने जे० एम० चटर्जी को लाला हरदयाल के सर्वश्रेष्ठ क्रांतिकारी शिष्यो को उन्हे सुपुर्द करने पर बाधित कर दिया। रास विहारी ने चटर्जी से कहा कि यदि वे लाला हरदयाल के सभी क्रांतिकारी शिष्यो को उनके सुपुर्द नही कर देते तो वह बार-बार उन्हे तग करेगा। रास विहारी बोस को देहरादून मे वे सभी अधिकार और सुविधायें प्राप्त थी जो एक पुलिस अधिकारी को प्राप्त होती हैं। रासविहारी ने चरनदास से जिस प्रकार जिरह की वह ठीक उसी प्रकार की थी कि जैसी एक सादे वस्त्रो मे एक पुलिस अधिकारी किसी से करता। यही सब कारण थे कि हैरिसन ने रासविहारी बोस को विलक्षण चातुर्य का धनी बतलाया था।

भेष बदल कर पुलिस को धोखा देने मे रासविहारी सिद्धहस्त थे। कई बार ऐसे अवसर आए कि जब वे पुलिस को धोखा देकर निकल गए। जबकि रासविहारी के पकडने के लिए भारी पारितोषिक की घोषणा की गई और उनके चित्र बडे-बडे पोस्टरो मे सभी स्टेशनो, बाजारो सार्वजनिक स्थानो पर प्रत्येक नगर में चिपका दिए गये तो उस समय रासविहारी मेरठ मे चटर्जी के पास थे। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि उनको पकडने के लिए विज्ञापन निकाला गया है और उसमे उनका चित्र दिया गया है तो वे एक पजाबी का भेष धारण कर स्टेशन गए और उस पोस्टर मे जिसमे साईकिल के साथ उनका चित्र था, स्वय जा कर देखा। शीघ्र ही वे मेरठ से चले गए। उनके चले जाने के कई दिन बाद पुलिस चटर्जी के मकान पर आई और पूछा कि क्या रासविहारी बोस यहा थे ? चटर्जी मन ही मन खूब हसे।

इसी प्रकार जब वे बनारस मे शचीन्द्र सान्याल के साथ डाक्टर काली प्रसन्न सान्याल के मकान पर बमो की जाच कर रहे थे तो एक बम यकायक फट गया और उनकी टाग मे गहरा घाव हो गया। शचीन्द्र सान्याल के साधारण चोट आई। डाक्टर सान्याल ने उनको एक पृथक मकान मे रख दिया और उनका उपचार करने लगे। उनकी छोटी लडकी रूपागिनी रासविहारी की सेवा श्रूषा करती थी। उन्ही दिनो डाक्टर सान्याल ने दशाश्वमेध घाट पर रासविहारी बोस के पकडवाने के लिये विज्ञप्ति देखी और उसमे उनका चित्र भी था तो तुरन्त ही रासविहारी बोस को उस स्थान से (बगाली टोला) हटा कर हरिशचन्द्र घाट ले जाया गया। प्रश्न यह था कि उनको ले कैसे जाया जावे। रास विहारी ने सुझाव दिया कि उन्हे मृत शव की भाति टिकटी बना कर ले जाया जावे। अस्तु उन्हे मृत शव की भांति लिटा कर ले जाया गया किसी को तनिक भी सन्देह नही हुआ।

एक बार कलकत्ते मे वादुर बागान जहा रासविहारी के सहयोगी श्री नलनी किशोर गुहा तथा अन्य मित्र रहते थे ढाका से मगाए गए रिवाल्वरो की जाच कर रहे थे। यकायक एक रिवाल्वर का घोड़ा दब गया उसमे कारतूस भरे थे और उनका हाथ जख्मी हो गया। रिवाल्वर की गोली चलने से जो धडाका हुआ उससे पुलिस के वहा पहुचने का भय था। रासविहारी ने अपने हाथ की चोट तथा पीडा की परवाह किए विना अपना भेष वदला और प्रातुल गगोली के साथ निकल कर अपर सरक्यूलर रोड चले गए और वहा से चन्दर नगर को प्रस्थान किया।

उनकी विलक्षण मेधा और भयकर विपत्ति के समय भी विलक्षण सावधानी और धैर्य के गुण ने उन्हे पुलिस के हाथ मे पडने से वचाया और वे पुलिस को मूर्ख वना कर निकल गए। एक वार चन्दर नगर मे पुलिस को यह पता लग गया कि वे एक मकान मे हैं पुलिस ने उस मकान को चारो ओर से घेर लिया। निकलने का कोई मार्ग नहीं था परन्तु रासविहारी घवडाए नही और न उन्होने धैर्य खोया। उस समय उनके मकान के शौचालय की सफाई करने के लिए मेहतर आया हुआ था। उन्होने भेष वदला मेहतर के कपडे स्वय पहिन लिए और मैले का टोकरा सिर पर रख कर तथा झाड़ पजा हाथ मे लेकर पुलिस के सामने से निकल गए। किसी को सन्देह तक न हुआ कि रासविहारी निकल कर जा रहे हैं।

रासविहारी, उनको गिरफ्तार करने के लिए जो सरकार ने विज्ञप्ति निकाली थी उसकी तनिक भी चिंता किए विना उत्तर भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक घूम घूम कर सशस्त्र विद्रोह की तैयारिया कर रहे थे। उन्होने अपने सहयोगी कार्यकर्त्ताओ के द्वारा सभी छावनियो में भारतीय सैनिको से सम्पर्क स्थापित कर लिया था। उधर गदर पार्टी के हजारो की सख्या मे क्रातिकारी कनाडा और सयुक्त राज्य अमेरिका से सिक्ख और पजावी सशस्त्र विद्रोह मे भाग लेने तथा देश को अग्रेजो की दासता से मुक्त कराने के लिए देश मे आ चुके थे। यद्यपि कोमागाटू मारू जहाज के काड मे थोड़े से व्यक्ति गिरफ्तार हो गए थे और कुछ मारे भी गए थे परन्तु हजारो की सख्या मे गदर दल के क्रातिकारी पजाव मे पहुच गए थे। वगाल मे प्रसिद्ध क्रातिकारी जतीन्द्र नाथ मुखर्जी के नेतृत्व मे वगाल के क्रातिकारियो ने सशस्त्र क्राति की पूरी तैयारी कर ली थी जदु गोपाल उनके मुख्य सहायक थे। शचीन्द्र सान्याल ने उत्तर प्रदेश की सैनिक छावनियो से सम्पर्क स्थापित कर लिया था। करतार सिंह सरावा और पिंगले पजाव का सगठन कर रहे। खरवा के राव गोपालसिंह, भूपसिंह (विजय सिंह पथिक) तथा प्रतापसिंह वारहट राजस्थान मे सशस्त्र विद्रोह का सगठन कर रहे थे। भाई वाल मकुन्द जोधपुर के राजकुमारो के शिक्षक के पद पर थे परन्तु वे भी सशस्त्र विद्रोह की तैयारिया कर रहे थे। अवध विहारी उत्तर प्रदेश और विहार मे सक्रिय थे। रासविहारी ने समस्त उत्तर प्रदेश मे सशस्त्र क्राति का सगठन कर लिया था। विदेश मे जो भी भारतीय क्रातिकारी थे वे भी सक्रिय थे। मैडम कामा, राणा, लाला हरदयाल, तारकनाथ दास, वरकतउल्ला, राजा महेन्द्र प्रताप आदि भारत मे सशस्त्र क्राति के कार्य कर रहे थे।

रासविहारी वोस का विदेशो मे जो भी भारतीय क्रातिकारी थे उनसे सम्पर्क था और उनके द्वारा उनका जरमन सरकार से भी सम्वन्ध स्थापित हो गया था। प्रथम महायुद्ध के पूर्व वृटेन और जरमनी के सम्वध शत्रुता के हो गए थे। भारतीय क्रातिकारी

यह जान गए थे कि शीघ्र ही वृटेन और जरमनी मे युद्ध होने वाला है अतएव वे उस अवसर का लाभ उठा कर भारत मे सशस्त्र विद्रोह खडा करना चाहते थे। उन्होने जरमन सरकार की सक्रिय सहानुभूति प्राप्त कर ली थी। रासविहारी का जरमन सरकार से भी सम्पर्क स्थापित हो गया था। प्रथम महायुद्ध के आरम्भ होने के कुछ महीने पूर्व जवलपुर से थोडी दूर "मदन महल" (एक प्राचीन महल) मे रासविहारी वोस जरमन प्रतिनिधि से मिले थे और सशस्त्र विद्रोह की सम्पूर्ण व्यूह रचना तैयार करली गई थी। जरमनी अस्त्र शस्त्र, गोली वारूद तथा विशेषज्ञ और सैनिक अधिकारी पहुचायेगा यह तय हो गया था। उधर विदेशो मे जो भारतीय क्रातिकारी थे उन्होने वर्लिन कमेटी वनाली थी और जरमन सरकार से भारत मे सशस्त्र विद्रोह कराने के लिए सहायता देने के लिए सधि करली थी परन्तु भारतीय क्रातिकारियो से एक भयकर भूल हुई। जब उन्होंने वर्लिन कमेटी वना कर जरमनी के विदेशी विभाग से भारत मे सशस्त्र विद्रोह मे सहायता देने की सधि करली तभी सयुक्त राज्य अमेरिका मे जो उस समय तटस्थ राष्ट्र था सभी उन देशो के क्रातिकारियो का एक सम्मेलन हुआ जो अपने देशो को स्वतन्त्र करना चाहते थे।

उस क्रातिकारियो के सम्मेलन मे जैकोस्लावाकिया के भी क्रातिकारी सम्मिलित हुए थे। जैकोस्लावाकिया के क्रातिकारी वृटेन के विदेशी विभाग से सहायता पाते थे। भारतीय क्रातिकारियो ने वहां जरमनी से हुई सधि का व्यौरा वतला दिया। वे आदर्श-वादी थे उन्होने यह नही सोचा कि अन्य देशो के क्रातिकारी विश्वासघात करेंगे परन्तु जैकोस्लावाकिया के क्रातिकारियो ने भारत जरमन षडयन्त्र की वृटेन के विदेशी विभाग को सूचना दे दी। उसी का परिणाम यह हुआ कि जब जरमनी ने अस्त्र शस्त्रो से भरे जहाज तथा सैनिक विशेषज्ञ भारत के तटो पर उतरने के लिए भेजे तो वृटिश नौ सेना ने उन्हे समुद्र मे ही पकड लिया। जेकोस्लावाकिया के क्रातिकारियो के विश्वासघात के कारण जरमनी की सहायता भारतीय क्रातिकारियो को नही मिल सकी।

प्रथम विश्व युद्ध आरम्भ हो गया। रासविहारी और अधिक सक्रिय हो गए। उन्होंने देख लिया कि मातृ भूमि को स्वतन्त्र करने का यह स्वर्ण अवसर है। भारत सरकार ने भारतीय सेनाओ को योरोप तथा मध्यपूर्व मे युद्ध करने भेज दिया। भारत मे केवल उस समय ३०,००० हजार सेना थी वह भी अधिकाश भारतीय सैनिक थे जिसमे से वहुत वडी सख्या मे क्रातिकारियो के सम्पर्क मे आ चुके थे। रासविहारी ने रावलपिंडी से ढाका तक सभी उत्तर भारत की सैनिक छावनियो मे अपने कार्यकर्त्ता सन्देशवाहक भेज रखे थे। दक्षिण मे जवलपुर तक जो भी छावनिया थीं उनसे उनका सम्पर्क था उनके क्रातिकारी कार्यकर्त्ता वहा सक्रिय थे। वरमा और सिंगापुर की सुदूर छावनियो में भी रासविहारी के क्रातिकारी सन्देशवाहक पहुच चुके थे।

सशस्त्र विद्रोह की योजना यह थी कि जरमनी से अस्त्र-शस्त्र पूर्व मे पहुचने पर वगाल मे विद्रोह आरम्भ होगा तथा अन्य क्रातिकारी वलोचिस्तान के कवीलो के साथ सभी प्रात मे विद्रोह खडा कर देंगे। कावुल की ओर से महेन्द्र प्रताप वरकतउल्ला इत्यादि भारतीय क्रातिकारी आक्रमण करेंगे। रासविहारी लाहौर से स्वय भारत मे सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व करेंगे। शचीन्द्र सान्याल वनारस मे रहेगे, पिंगले मेरठ को सम्हालेंगे, करतार सिंह सरावा पजाव मे विद्रोह का सचालन करेंगे। खरवा राव गोपाल सिंह राजस्थान मे नसीरावाद छावनी पर अधिकार कर लेंगे और नलनी मुखर्जी

जबलपुर पर अधिकार कर लेंगे। अस्तु रासविहारी ने सशस्त्र विद्रोह की पूरी व्यवस्था जमा ली और दिसम्बर १६१४ मे वे शचीन्द्र सान्याल, करतार सिंह सरावा, पिंगले तथा पण्डित परमानन्द झासी के साथ लाहौर आए और अपने विश्वास पात्र क्रातिकारी सहयोगी रामसरन दास के यहा ठहरे। यह निश्चय हुआ कि रासविहारी एक पृथक मकान किराए पर लेकर वहा से विद्रोह का सचालन करेंगे। किन्तु मकान किराये पर लेने का प्रश्न उठा तो एक वडी कठिन समस्या खडी हो गई। भारत सरकार ने गदर पार्टी के हजारो क्रातिकारियो के पजाब मे आने के उपरात क्रातिकारियो के अधिक सक्रिय हो जाने के कारण इस आशय का आदेश पजाव सरकार से निकलवा दिया था कि कोई भी वाहर का व्यक्ति जिसके साथ उसका परिवार न हो यदि मकान किराए पर लेना चाहे तो पहले उसे स्थानीय पुलिस को अपने सम्वध मे पूरी जानकारी देनी होगी अपनी पहचान करवानी होगी और पुलिस जव उसको प्रमाण पत्र दे तभी वह मकान किराये पर ले सकता था। रासविहारी तथा सभी क्रातिकारी किंकर्तव्य विमूढ हो गए और उनमे गहरी निराशा छा गई। पर रामसरन दास की साहसी और देशभक्त पत्नी ने उस निराशाजनक परिस्थिति को सम्हाल लिया। उन्होने कहा कि मैं वोस वावू के साथ पत्नी के रूप मे जितने समय तक आवश्यकता होगी, रहूगी उस दशा मे पुलिस म जाने की आवश्यकता नही होगी। अस्तु रास विहारी वोस के लिए एक मकान किराये पर ले लिया गया और रामसरन दास की पत्नी उनकी पत्नी वन कर उनके साथ रही। लेखक सोचता है कि उन क्रातिकारियो मे चरित्र की कैसी दृष्टि होगी परस्पर एक दूसरे पर कितना अटूट विश्वास होगा और मातृभूमि को स्वतत्र करने के लिए कैसी गहरी चाह होगी कि वे उनके लिए सव कुछ करने को तैयार रहते थे। उनके इस उज्ज्वल चरित्र दुर्लभ गहन देश भक्ति को देखकर उनके प्रति श्रद्धा से मस्तक झुक जाता है। अस्तु रासविहारी के लिए एक मकान ले लिया गया। रामसरनदास की पत्नी रासविहारी के साथ उनकी पत्नि की तरह रहने लगी और वह मकान विप्लव गुप्त मत्रणा स्थान वन गया। रास विहारी उस मकान मे फरवरी के अन्त तक रहे। सशस्त्र विद्रोह की सम्पूर्ण तैयारियां करली गई। फरवरी के आरम्भ मे उन्होने सभी केन्द्रो के प्रमुख और उत्तरदायी क्रान्तिकारियो से परामर्श करके २१ फरवरी १६१५ को सम्पूर्ण भारत मे एक साथ विद्रोह खडा करने की तारीख निश्चित कर दी। यह सूचना सभी उत्तर भारत की सैनिक छावनियो मे भेजदी गई। काशी मे शचीन्द्र सान्याल को भी सूचित कर दिया गया। पजाव मे भारत के राष्ट्रीय ध्वज वहुत वडी सख्या मे तैयार कर लिए गए। उसमे हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख तथा भारत की अन्य जातियो के चिन्ह स्वरूप चार रग रक्खे गये। युद्ध का घोषणा पत्र तैयार कर लिया गया। स्वतत्र भारत सरकार की मुहर तैयार करली गई। विभिन्न केन्द्रो मे क्रान्तिकारियो के लिए वरदियां मिलवा ली गई। सभी केन्द्रो मे अस्त्र-शस्त्र इकट्ठे किए गए। सभी स्थानो मे जहा विद्रोह होने वाला था मोटरो, मोटर लारियो तथा अन्य सवारियो की सूची वना ली गई। विभिन्न केन्द्रो मे रसद इकट्ठी की गई। रेलवे लाइन तथा तार काटने के औजार इकट्ठे कर लिए गये। सव तैयारी कर लेने के उपरात भारत के सभी क्रातिकारी उत्साह और आशा के साथ २१ फरवरी की प्रतीक्षा करने लगे। ऐसा प्रतीत होता था कि लाहौर से सकेत मिलते ही समस्त भारत मे विद्रोह का ज्वालामुखी फूट पडेगा और उस सशस्त्र क्राति मे वृटिश साम्राज्य भस्म

हो जावेगा। भारत माता स्वतंत्र हो जावेगी। योजना यह थी कि अंग्रेज अधिकारियो को कैद कर लिया जावे, शस्त्रागारो पर अधिकार कर लिया जावे और विभिन्न क्षेत्रो को पूर्व निश्चित व्यक्तियो के नियंत्रण मे रख दिया जावे, वे क्रातिकारियो और उन भारतीय सैनिको की सहायता से जो विद्रोह में क्रातिकारियो का साथ दे उनकी रक्षा करें।

परन्तु भारत को अभी अधिक वर्षों तक परतंत्र रहना था सरकार को इस सशस्त्र विद्रोह का पता लग गया। पुलिस को यह तो पता था कि क्रातिकारी दल बहुत सक्रिय है। उनकी क्या योजना है यह पता लगाने के लिए उन्होने कृपालसिंह को भेजा। कृपालसिंह का एक सम्बन्धी सेवा मे नौकर था और क्रातिकारी दल में प्रवेश पा गया। बात यह थी कि करतारसिंह सरावा आदि पंजाब के क्रातिकारी अत्यन्त वीर और साहसी थे परन्तु गुप्त रूप से षडयंत्र करने का उन्हे अनुभव नही था। कृपालसिंह ने फरवरी के आरम्भ मे ही प्रवेश किया था जबकि क्राति की तैयारियां जोरो पर थी क्रातिकारियो को उस पर शीघ्र ही सदेह हो गया। उस पर दृष्टि रक्खी गई तो ज्ञात हुआ कि व पुलिस अधिकारियो के पास एक निश्चित समय पर जाया करता था। रास बिहारी को जब यह ज्ञात हुआ तो उन्होने उसे मार देने का आदेश दिया करतार सिंह आदि ने सोचा कि २१ फरवरी के चार-पाच दिन ही शेष हैं उसको मार देने से पुलिस को सदेह हो जावेगा अतएव उन्होने उसको मारा नही केवल नजरबन्द कर दिया। रास बिहारी ने विप्लव की तारीख को २१ फरवरी से बदल कर १९ फरवरी कर दिया। सभी केन्द्रो मे तारीख के बदलने की सूचना भेजी गई। कुछ स्थानो पर सूचना नही पहुची। जो व्यक्ति लाहौर की छावनी मे सूचना देने गया था उसको कृपाल सिंह पुलिस का आदमी है यह ज्ञात नही था। उसने कृपालसिंह के सामन ही रास बिहारी से आकर कहा कि वह छावनी मे १९ फरवरी की सूचना दे आया। जब अन्य सभी लोग भोजन करने चले गये तो कृपालसिंह अपने चौकीदार को धोखा देकर बाहर निकला। उसने देखा कि पुलिस का भेदिया साइकिल पर सवार होकर उसी की खोज मे आ रहा है। उसने उसके द्वारा १९ तारीख की सूचना भी पुलिस को भिजवादी। यह घटना १८ फरवरी की थी।

१९ फरवरी के प्रात काल ही पुलिस ने उन मकानो पर छापा मारा जहा क्रातिकारी थे। अधिकाश प्रमुख क्रातिकारी पकड लिए गए पर रास बिहारी बोस, करतार सिंह सरावा और पिंगले हाथ नही आये। करतार सिंह सराबा और पिंगले बाद को गिरफ्तार हुए। १९ फरवरी की सूचना भारत के सभी केन्द्रो मे और छावनियो मे नही पहुच सकी थी अतएव पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार मे जो ग्रामीण क्रातिकारी थे निश्चित स्थानो पर एकत्रित नही हो सके। उधर सरकार ने सभी शस्त्रागारो पर भारतीय पहरेदारो को बदल कर उनके स्थान पर अंग्रेज सैनिक नियुक्त कर दिये। सेनाओ का स्थानान्तर कर दिया गया। जिन पर सदेह था उन सैनिक अधिकारियो और सैनिको को कैद कर लिया गया या नजर बन्द कर दिया गया। इन सब कारणो से सैनिक भयभीत हो गए और विद्रोह की योजना असफल हो गई। १८५७ के प्रथम स्वातंत्र्य युद्ध के पश्चात यह प्रथम अवसर था कि इतने विशाल और व्यापक सशस्त्र विद्रोह का आयोजन किया गया। पर देश का यह दुर्भाग्य था कि वह असफल हो गया।

पुलिस अत्यन्त सावधानी से जिन स्थानो पर क्रातिकारियो के रहने का उन्हे सदेह था तलाशी लेने लगी। लाहौर के प्रत्येक मुहल्ले मे घर पकड होने लगी। रास बिहारी अत्यन्त निराश और दुखी हो उठे। उनका सारा परिश्रम और प्रयत्न व्यर्थ हो गया था। पुलिस उनको पकडने के लिए ऐडी से चोटी का प्रयत्न कर रही थी समस्त लाहौर की नाके बन्दी कर ली गई थी क्योकि पुलिस को यह ज्ञात था कि रासबिहारी लाहौर मे ही हैं। पहले तो रास बिहारी ने मुसलमान वेष मे काबुल जाने का निश्चय किया कलमा पढना सीख लिया पर बाद को विचार बदल दिया और विनायक राव कापले के साथ काशी जाने वाली गाडी मे सवार हो गए। वे वेष बदलने मे इतने कुशल और दक्ष थे कि जिस डिब्बे मे वे बैठे थे उसी मे ही एक सी. आई. डी अधिकारी भी बैठा था परन्तु वह उनको पहचान नही सका। आगे की स्टेशन पर वे उस डिब्बे से उतर गए।

काशी आने पर भी रास बिहारी शाति से नही बैठे। शचीन्द्र ने वहा क्राति-कारियो का एक अच्छा दल बना लिया था। रासबिहारी अब पजाब, सयुक्त प्रान्त (उत्तर प्रदेश) बिहार और बगाल तथा राजस्थान मे क्रातिकारियो का सगठन कर पुन सशस्त्र विद्रोह के आयोजन में लग गये। उन्होने शचीन्द्र सान्याल को तथा प्रताप सिंह बारहट को पजाब और देहली की स्थिति का अध्ययन करने तथा वध के बचे हुए क्रातिकारियो का पुन सगठन करने के लिए भेजा। सान्याल ने बिहार मे भी एक सगठन खडा कर लिया था। सान्याल और प्रताप सिंह देहली और पजाब के क्राति-कारी दल को पुनः सगठित कर पाये थे कि सान्याल बीमार पड गए। सान्याल पर सयुक्त प्रान्त मे वारट था इस कारण वे प्रताप सिंह बारहट को लेकर कलकत्ते के समीप एक गाव मे विप्लव समिति के केन्द्र मे आये। प्रतापसिंह बारहट शचीन्द्र सान्याल को वहां पहुचा कर राजस्थान चले गए।

पुलिस को यह खबर मिल गई थी कि रासबिहारी बोस काशी मे हैं। पुलिस ने चन्दर नगर, देहरादून आदि स्थानो से उन सभी गुप्तचरो को काशी बुला लिया था जो रासबिहारी को पहचानते थे। पर वे रासबिहारी को न पकड सके। रासबिहारी बराबर स्थान बदलते रहते तथा अन्य क्रातिकारियो को भी बचाते रहते। उस समय क्रातिकारी दल के पास धन की बहुत कमी हो गई थी। यद्यपि सशस्त्र विद्रोह की योजना सफल हो चुकी थी पजाब के क्रातिकारियो मे से अधिकाश गिरफ्तार हो चुके थे तथा कुछ देश छोड कर विदेशो मे चले गए थे परन्तु फिर भी क्रातिकारियो का उत्साह कम नही पडता था वे नए क्रातिकारी भर्ती कर रहे थे परन्तु धन की कमी के कारण सगठन करने मे बडी अडचन आ रही थी। रासबिहारी इससे दुखी थे। उनमे देश की स्वतत्रता के लिए जो अग्नि धधक रही थी वह बडी तीव्र थी। उन्होने शचीन्द्र सान्याल तथा अन्य क्रातिकारियो के सामने बडी गम्भीरता और दृढ आग्रह के साथ यह प्रस्ताव रक्खा था कि सरकार मुझे ही समस्त क्रातिकारी कार्य का सूत्रधार सम-झती है पुलिस सारा प्रयत्न मुझे पकडने के लिए कर रही है। अस्तु अन्ततोगत्वा मैं गिर-फ्तार हो जाऊगा। तो ऐसा क्यो न किया जावे कि तुम लोग मुझे पकडवा दो और पारितोषिक स्वरूप जो बडी धन राशि मिले उससे क्रातिकारी दल का काम चलाओ। पर किसी ने भी उनकी इस बात को स्वीकार नही किया।

पुलिस बड़ी सतर्कता से अपने जाल को फैला रही थी। जब शचीन्द्र सान्याल

कलकत्ते के पास के गाव के विप्लव समिति के केन्द्र मे ज्वर ग्रस्त थे तब बगाल के क्रातिकारी दल के नेता नगेन्द्रनाथ दत्त उपनाम गिरजा बाबू और सान्याल ने यह तय किया कि राम बिहारी को अब भारत से निकल जाना चाहिए क्योंकि उनका अधिक दिनो तक बच सकना कठिन है। रासबिहारी देश छोडना नही चाहते थे परन्तु उनके स्नेहियो ने उन्हें भारत छोडने पर विवश कर दिया यह भी निश्चित हुआ कि विदेश जाकर वे जरमनी से सम्पर्क, स्थापित कर क्रातिकारियो के लिए बडी राशि में अस्त्र शस्त्र भेजें।

जब रास बिहारी ने यह निश्चय कर लिया कि उन्हें भारत छोडना है तो उन्होने जापान जाने का निश्चय किया क्योंकि उनकी मान्यता थी कि वे वहां से एशियाई देशो की स्वतत्रता का आन्दोलन खडा करेंगे। इस कार्य के लिए जापान ही उपयुक्त था। अतएव उन्होने जापान जाने का निश्चय किया।

परन्तु जापान जाया कैसे जावे पासपोर्ट की समस्या थी। पासपोर्ट पर फोटो लगाना पडता था। साथ ही पुलिस बडी सतर्कता से उनको खोज रही थी। जब भी पुलिस उनके समीप पहुचती वे पुलिस की आखो मे धूल झोक कर निकल जाते। जब उन्होने यह निश्चय कर लिया कि उन्हें जापान जाना है तो वे काशी से निकले और बगाल की ओर चले। जब वे बगाल जा रहे थे तो वे किसी कार्यवश दिन मे अजीमगज स्टेशन पर उतरे वहा के सूचना पट पर सरकारी घोषणा पढी। सरकार ने उन्हें पकडवाने वाले को विपुल धनराशि तथा जागीर देने की घोषणा निकाली थी। वे उसी स्टेशन पर उतर गए। उन्होने गगा को पार किया और प्रातःकाल पलासी पहुचे। वह बगाल के लैफ्टीनैंट गवरनर का शिविर लगा हुआ था वे दिन भर उस शिविर मे रहे कोई उन्हें पहचान न सका। दूसरे दिन वे नवद्वीप पहुच गए। वे बगाल तो पहुच गए परन्तु प्रश्न यह था कि पासपोर्ट किस प्रकार लिया जावे। उसी समय गुरुदेव श्री रविन्द्रनाथ टैगोर के जापान जाने का समाचार प्रकाशित हुआ। रास बिहारी ने अनुकूल अवसर देखा। रविन्द्रनाथ के अग्रिम सदेश वाहक के रूप मे राजा पी. एन. टैगोर के नाम से भेष बदल कर फोटो खिचवा कर पासपोर्ट ले लिया। नवद्वीप मे शचीन्द्र सान्याल, गिरजा बाबू, प्रतापसिंह बारहट को उनके पीछे क्रातिकारी दल को किस प्रकार सगठित किया जावे इसके सम्बध मे उन्होने आवश्यक बाते बतलाई और जापान जाने की तैयारी की।

अन्त मे वह ऐतिहासिक दिवस आ गया जिस दिन उस महान देश भक्त भारत माता की स्वतत्रता का वीर योद्धा अपनी स्वर्णिम मातृ भूमि को सदा के लिए छोड़ कर जापान चला गया। १२ मई १९१५ को "सानुकी मारू" जापानी समुद्री जहाज से किदरपुर डाक की १२ नम्बर की जैट्टी से सौ युद्धो के उस वीर योद्धा ने अपनी मातृ भूमि को अन्तिम प्रणाम किया और सदैव के लिए चला गया। फिर अपने जीवन मे उन्हें अपनी प्रिय मातृभूमि के दर्शन नही हुए। उनके प्रिय साथी शचीन्द्र सान्याल और गिरजा बाबू ने उनको अश्रु पूरित नेत्रो से विदाई दी। वे रासबिहारी के साथ एक बग्घी मे नीमतोला घाट स्ट्रीट से बन्दरगाह तक आए थे। शचीन्द्र सान्याल उनके देश त्याग से अत्यन्त कातर और उदास थे। रासबिहारी ने उन्हें यह कह कर सात्वना दी कि मैं विदेश इस लिए जा रहा हूँ कि वहा से बडी मात्रा मे अस्त्र शस्त्र लाऊगा और उनसे अपने क्रातिकारी युवको और युवतियो को सशस्त्र करूगा

फिर देखेंगे कि अग्रेज यहा कैसे रहते है ।

यद्यपि उस समय तो रासविहारी वोस अग्रेजो के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह और भारत की स्वतत्रता का युद्ध आरम्भ करने मे सफल नही हुए परन्तु सत्ताईस वर्षों के उपरान्त उनके वे शब्द सत्य सिद्ध हुए । जबकि इडियन इन्डिपैंडैंस लीग के अध्यक्ष के रूप मे उन्होंने १८ दिसम्बर १९४२ मे जापान से वृटेन के विरूद्ध युद्ध की घोषणा की ।

रासविहारी बोव (जापान) जून १९१५ मे पहुचे । वहा से वे टोकियो होते हुए शघाई गए । शघाई से उन्होने दो जहाजो मे भर कर वहुत वडी राशि मे अस्त्र-शस्त्र भारत के क्रातिकारियो के लिए भेजे किन्तु किसी देश द्रोही ने इसकी सूचना वृटिश सरकार को दे दी और उन दोनो जहाजो को वृटिश सरकार ने समुद्र मे ही अपने अविकार मे ले लिया इस विश्वासघात के रहस्य को यदि वी. धीरेन्द्रनाथ सेन और हेरम्वालाल गुप्त आज जीवित होते तो केवल वे ही उसका रहस्योद्घाटन कर सकते थे । परन्तु वे आज जीवित नही है इस घटना के लम्वे समय के उपरात उन दोनो की मैक्सिको मे मृत्यु हो गई ।

शघाई से अस्त्र शस्त्रो से भरे जहाज भेज कर रासविहारी टोकियो वापस आ गए और टोकियो पहुचने के उपरात वे तीसरे दिन श्री यस. के मजूमदार से मिले । उन्होंने जापानी सैनिक विद्रोह के नेता डाक्टर ओखावा से भी सम्पर्क स्थापित किया । उस समय एक अन्य भारतीय क्रातिकारी हेरम्वालाल गुप्ता जापान मे अमेरिका से भारतीय क्रातिकारियो का सगठन करने आए थे । लाला लाजपतराय भी उन दिनो जापान आए हुए थे। यह तीनो मिले और उन्होने निश्चय किया कि वृटिश साम्राज्यवादी शासन के विरुद्ध और भारतीय स्वतत्रता आन्दोलन के पक्ष मे जापान मे, प्रचार किया जावे । इस निश्चय के अनुसार उन्होंने 'क्योटो' नगर मे २७ नवम्वर १९१५ को सार्वजनिक सभा की और भारत मे वृटिश साम्राज्यवाद के दमन और शोषण की घोर निन्दा की । उस महती सभा मे प्रथम वार जापानियो ने वृटिश साम्राज्यवाद के द्वारा भारत मे किये जाने वाले घोर दमन और शोषण की कहानी सुनी । टोकियो के वृटिश दूतावास मे हडकम्प हो गया । जापान के सभी प्रमुख पत्रो ने वडे-वडे शीर्षको मे उस वृटिश विरोधी सभा की कार्यवाही को तथा उन तीनो के भाषणो को प्रकाशित कीया । उससे वृटिश दूतावास अत्यन्त कुपित हुआ और वह यह राजा पो यन टगोर कौन व्यक्त है गुप्तचरो के द्वारा वृटिश दूतावास को यह पता चल गया कि पी यन टगोर अन्य कोई नही प्रसिद्ध क्रातिकारी नेता रासविहारी वोस है जिनको पकडने के लिए भारत सरकार व्यग्र थी ।

यह ज्ञात होते ही कि महाविप्लवी नायक रासविहारी वोस राजा. पी. यन. टगोर के छद्म नाम से जापान आ गए । वृटिश दूतावास ने तुरन्त ही जापान सरकार पर दबाव डाला कि वह रास बिहारी वोस, लाला लाजपत राय, और हेरम्वालाल गुप्त के विरुद्ध प्रत्यर्पण की आज्ञा निकाल दी । लाला लाजपत राय नवम्वर १९१ के अन्त मे अमेरिका चले गए उसके कुछ ही दिनो के उपरात रासबिहारी वोस तथा हेरम्वालाल गुप्त को पुलिस ने बुलाया और पाच दिनो के अन्दर जापान से चले जाने की आज्ञा दे दी । स्थिति अत्यन्त भयावह हो गई । वृटिश दूतावास ने जासूस लगा रखे थे । जापान से निकलने का अर्थ यह था, कि वे वृटिश पुलिस के हाथो मे पड़ जाते । वृटिश

दूतावास ने जहा एक ओर जापान सरकार पर यह दवाव डाला कि वह उन दोनों को उनके सुपुर्द करदे या कम से कम उनको जापान से निकल जाने की आज्ञा दे दे वहा दूसरी ओर उनको अपहरण करने या मरवा देने के लिए आदमी लगा दिए। जहाँ प्रथम महायुद्ध मे जापान और चीन वृटेन के मित्र राष्ट्र थे वहा की जनता भी भारतीय क्रातिकारियो के प्रति सहानुभूति थी। चीन के राष्ट्रीय नेता डाक्टर सनयात सेन तथा जापान के ब्लैक ड्रैगन सोसायटी के सर्वोच्च नेता तोयामा भारतीय क्रातिकारियो से पूरी सहानुभूति रखते थे। जब जापान सरकार ने उन दोनो को जापान से चले जाने की आज्ञा निकाल दी तो जापानी जनता ने इस आज्ञा का विरोध किया और कतिपय प्रगतिशील व्यक्तियो ने उनको छिपा लिया। वे रात दिन छिपे रहते थे। हैरम्बालाल गुप्त एक रात्रि को निकल गए और वर्फ मे ढके प्रदेश को पार कर वे एक ऐसे स्थान पर पहुच गए जहा से वे अपना नाम वताये विना जहाज पर चढ कर मैक्सिको चले गए और वहा से सयुक्त राज्य अमेरिका चले गए। हैरम्बालाल गुप्त मैक्सिन दूतावास की सहायता से जापान से निकल जाने मे सफल हो गए अब अकेले रासविहारी जापान मे रह गए।

तोयामा जापान के सर्वोच्च आदरित राष्ट्रीय नेता थे। वे भारत की स्वतत्रता के आन्दोलन के पक्षपाती थे उनकी मान्यता था कि एशिया महाद्वीप मे वृटिश साम्राज्य की शक्ति और विस्तार भारत पर आधारित है। भारत की विशाल जन शक्ति और साधनो के वल पर ही वृटिश साम्राज्य शक्तिशाली है और वह एशियाई राष्ट्रा को पदाक्रात कर रहा है। जापान का यदि कभी वृटेन से सघर्ष हुआ तो भारत की विशाल जन शक्ति और साधनो का जापान के विरुद्ध उपयोग होगा। अतएव भारत की स्वतत्रता जापान और एशियायी देशो के हित मे ह। यही कारण था कि तोयाम ने रासविहारी वोस की जापानी सरकार से रक्षा की। कुछ दिनो तो रासविहारी को उन्होने जापान सम्राट के (लार्ड मैम्बरलेन) महलो की व्यवस्था अधिकारी के यहा छिपाये रक्खा फिर वह उन्हे अपने यहा ले आए। जव पुलिस उनके मकान पर भी दृष्टि रखने लगी तो उन्होने रासविहारी वोस को अपने एक अनुयायी श्री सोभा के यहा छिपा दिया। तोयाम के मकान से समुराई (जापानी) के वेष मे रासविहारी वोस श्री सोभा के यहा आ गए। यह २८ नवम्बर १९१५ की वात थी चार महीने तक वे श्री सोभा के यहा छिपे रहे। जापान की पुलिस वृटिश दूतावास के दवाव के कारण रासविहारी वोस की गिरफ्तार करने के लिए आकाश पाताल एक कर रही थी। परन्तु एक ऐसी घटना हुई कि जापान का जनमत वृटेन के विरुद्ध उठ खडा हुआ। वृटेन के युद्ध पोत ने एक जापानी समुद्री जहाज पर आक्रमण कर दिया जो हागकाग को जा रहा था और ६ यात्रियो का अपहरण कर लिया। इस घटना से जापान मे वृटेन का जनमत अत्यन्त क्षुब्ध हो उठा और जापानी सरकार ने रासविहारी वोस पर देश निकाले की आज्ञा वापस ले ली।

यद्यपि रासविहारी वोस पर से जापान से निकल जाने की आज्ञा उठाली गई थी पर फिर भी उनका जीवन खतरे से खाली नही था क्योकि वृटिश दूतावास ने उनको मार देने अथवा उनका अपहरण कर लेने के लिए वडी सख्या म गुप्तचर नियुक्त कर रखे थे। रासविहारी वोस भारतीय थे वे किसी को वहा नही जानते थे अतएव उनका अकेला रहना खतरे से खाली नही था। इसलिए श्री तोयाम ने श्री सोभा तथा

श्रीमती सोभा से अपनी पुत्री तोशिको का विवाह श्री वोस से कर देने के लिए कहा। तोयामा ने गुप्त रीति से स्वय रासविहारी का तोषिको से विवाह कर दिया। रासविहारी का तोशिका के साथ जुलाई १९१८ में विवाह हुआ। फिर भी रासविहारी वोस को वडी सावधानी से सतर्कता पूर्वक अपने को छिपाये हुए अपनी प्रिय पत्नी के साथ रहना पडता था क्योंकि वृटिश दूतावास के गुप्तचरो से उनको खतरा था। आठ वर्षो मे उन्हे सत्रह वार अपने रहने के स्थान को वृटिश दूतावास के गुप्तचरो के खतरे के कारण वदलना पडा। आठ वर्षो के उपरात जव उनको जापान की नागरिकता २ जुलाई १९२३ को मिल गई तब जाकर कही यह सकट मिटा। तव जाकर रास विहारी वोस अपनी प्रिय पत्नी के साथ खुले रूप मे एक अलग मकान लेकर रह सके। पर आठ लम्वे वर्षो तक अपने प्रिय पति की रक्षा करने उनको अंग्रेजो के दुप्ट गुप्तचरो से जो कि उनका अपहरण करना या उनको मार देना चाहते थे उनके पहुच के वाहर रखने मे श्रीमती तोशिको वोस का स्वास्थ्य जर्जर हो गया। उनके मन पर जो अपने पति के निरन्तर खतरे की गहन चिन्ता थी और आठ वर्षो मे एक स्थान को छोड कर दूसरे स्थान पर गोपनीय ढग से भागने का सत्रह वार से अधिक जो खतरनाक और कप्ट दायक अभियान था उसने श्रीमती तोशिको वोस को थका दिया। एक पुत्र और एक पुत्री को छोड कर वे ३ मार्च १९२५ को स्वर्गवासिनी हो गई। उस वीर और साहसी रमणी ने अपने पति की सुरक्षा के लिए अपना वलिदान कर दिया। धन्य हो देवी एक भारतीय महान क्रातिकारी के जीवन की रक्षा के लिए जो तुमने अपूर्व वलिदान किया उसको याद कर प्रत्येक देश भक्त भारतीय तुम्हारे प्रति श्रद्धा से मस्तक झुकायेगा।

श्रीमती सोभा ने रासविहारी से कहा कि उन छोटे वालको का वे पालन-पोषण कर लेंगी वे दूसरा विवाह करलें श्री रासविहारी ने उत्तर दिया "मा तोशिको सदैव मेरे साथ है मैं उसके स्थान पर अन्य किसी को लाने की स्वप्न मे भी कल्पना नही कर सकता।"

तोशिको केवल उनकी धर्मपत्नी ही नही थी वरन वह उनके क्रातिकारी कार्यों भारत की स्वतत्रता के आन्दोलन मे उनकी सहायक और मित्र थी। अपनी प्रिय पत्नी की मृत्यु से रासविहारी को गहरा आघात लगा। परन्तु श्री रासविहारी वोस ने तो अपना सम्पूर्ण जीवन ही मातृभूमि की वलि दे दी। और वे अधिक वेग से भारत की स्वतत्रता के आन्दोलन को तेजवान वनाने में जुट गए। विदेशो मे भारतीय स्वतत्रता आन्दोलन के लिए सहायता और सहानुभूति प्राप्त करने के उद्देश्य से उन्होने दो पत्रिकाए निकाली एक अग्रेजी मे और दूसरी जापानी मे प्रकाशित होती थी। वे जापान तथा अन्य देशो के प्रमुख समाचार पत्रो के द्वारा निरन्तर वृटेन विरोधी और भारत के पक्ष मे धुआधार प्रचार करते थे और जो भी एशियाई राप्ट्रो के क्रातिकारी नेता थे उनसे सम्पर्क स्थापित कर वृटिश सरकार के विरुद्ध एशियाई सगठन खडा करने का प्रयत्न करते थे। चीन के राप्ट्रीय नेता श्री सन्यात सेन से उनकी गहरी मित्रता थी उनके सहयोग से वे एशियायी देशो को सगठित कर वृटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध खडा कर देने का प्रयत्न करने लगे। श्री रासविहारी ने ही डाक्टर सनयात सेन को चीन वापस जाकर चीन मे राप्ट्रीय जागरण का कार्य करने की प्रेरणा दी और मार्ग व्यय के लिए २०,००० फ्रेंक दिए। उनकी लेखनी वृटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध सतत अग्नि

वर्षा करती। उन्होंने भारत के सम्बन्ध में सोलह पुस्तकें लिखी और भारत में बृटिश शासन के शोषण और दमन का चित्र एशियाई देशों के सामने रखा। भारतीय स्वतंत्रता को वे एशियाई राष्ट्रों की स्वतन्त्रता का आधार स्तम्भ मानते थे। भारत की स्वतन्त्रता में वे मानव जाति का कल्याण देखते थे। उनका यह प्रसिद्ध वाक्य "The Indian Freedom is necessary absolutely for the peace of the world and happiness of mankind" Ras Behari Bose. "संसार की शान्ति और मानव जाति के सुख के लिए भारत की स्वतन्त्रता नितान्त आवश्यक है—" रास बिहारी। वे भाषण देते रेडियो से बृटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध पददलित राष्ट्रों को संगठित हो उठ खड़ा होने के लिए आवाहन करते। वे जापान में तथा एशियाई देशों में जहां भी भारतीय बसे थे जलियां वाला बाग दिवस और भारत का स्वतन्त्रता दिवस मनाते थे। उन्होंने १९२४ में जापान में इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की स्थापना की।

अगस्त १९२६ में नागा साकी में एशियाई देशों के राष्ट्र कर्मियों का सम्मेलन कराने में उन्होंने प्रमुख भाग लिया। उस पैन एशियन ऐसोशियेशन के एशियाई सम्मेलन में चीन, भारत, अफगानिस्तान, फिली पाइन्स, वियतनाम और जापान आदि देशों के १४२ प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। उस सम्मेलन में पश्चिमी साम्राज्यवाद के विरुद्ध एशियाई देशों को संगठित करने का प्रयत्न किया गया। उस सम्मेलन की प्रेरक शक्ति रासबिहारी बोस थे। उन्होंने ही सम्मेलन को साम्राज्यवाद के विरुद्ध एक प्रबल संगठन खड़ा करने की प्रेरणा दी। पैन एशियन ऐसोशियशन के वे ही स्थापना करने वाले थे। १९३७ में श्री रासबिहारी बोस जापान में स्थापित इंडियन इंडिपेंडेंस लीग (भारतीय स्वातंत्र्य संघ) के द्वारा पूर्व में भी भारत की स्वतन्त्रता के लिए कार्य करने लगे। बरमा, थाईलैंड, मलाया, चीन, पूर्वी द्वीप समूह जापान जहां भी भारतीय बसे हुए थे उनको संगठित करने का प्रयत्न किया और इन सभी देशों में बसे हुए भारतीयों से सम्पर्क स्थापित करते और उन्हें भारत की स्वतन्त्रता के लिए कार्य करने की प्रेरणा और मार्ग दर्शन देते थे।

जब रासबिहारी भूमि गत थे बृटिश गुप्तचरों से उनकी रक्षा करने का श्रेय मुख्यतः उनकी पत्नी को था। बृटिश सरकार उनके पीछे थी वह उनका अपहरण करवाना या मरवा देना चाहती थी। भारत सरकार ने भी अपने गुप्तचरों को जापान भेजा हुआ था। "भारत सरकार ने एक अत्यन्त कुशल उच्च पुलिस अधिकारी को रासबिहारी का पता लगाने जापान भेजा था। उस पुलिस अधिकारी ने श्री रासबिहारी के सम्बन्ध में जो रिपोर्ट भारत सरकार के पास भेजी उसका सारांश यह था कि श्री रासबिहारी भूमिगत हैं। जुलाई के अन्तिम दिनों में श्री रासबिहारी टोकियो से बिलकुल लापता हो गए क्योंकि बृटिश अधिकारियों और गुप्तचरों को उनके छिपने का स्थान ज्ञात हो गया था। बृटिश गुप्तचरों ने जापान की पुलिस की सहायता से अत्यन्त कुशलता पूर्वक छान बीन करके पता लगा लिया कि जापान के पूर्वीय समुद्र तट पर स्थित 'कस्तूरा' नगर के समीप 'ओकित्सू' गांव में श्री रासबिहारी टोकियो से भाग कर जा छिपे हैं। बोस को जैसे ही यह ज्ञात हुआ कि गुप्तचरों को उनका पता चल गया है वे 'ओकित्सू' से तुरन्त भाग कर टोकियो आ गए और सम्राट के महलों और सम्राट गृह के महाअधीक्षक के विशाल आहाते में कहीं छिपे हैं। जो थोड़े उनके पत्र हाथ लगे हैं कि वे अमेरिका में भारतीय षडयन्त्रकारियों के प्रमुख 'नरेन भट्टाचार्य से,

पूर्वीय देशो मे भारतीय क्रातिकारियो से, और भारत मे भारतीय क्रातिकारियो से सम्पर्क स्थापित किए हुए है और वे भारतीय क्रातिकारियो का नेतृत्व करते हैं। उनके महत्व और लोकप्रियता मे तनिक भी कमी नही हुई है। वे आज भी भारतीय क्रातिकारियो के सर्वमान्य नेता है। तारकनाथदास जब जापान मे थे तो बोस से उनका सम्पर्क था और वे श्री रासबिहारी बोस को अपना नेता मानते थे। उन दोनो ने बृटिश जहाजो को डुबोने की एक योजना बनाई थी। बोस ने जापान मे जबकि वे भूमिगत थे तो अपना नाम 'हयाची इचरो' रख लिया था और तारक नाथ दास उस नाम से अवगत थे।"

रास बिहारी मे भेष बदलने की ऐसी विलक्षण दक्षता थी कि बृटिश गुप्तचर उन्हे कभी पकड न सके। इसके अतिरिक्त भाषा सीखने की उनको प्रतिभा इतनी अद्भुत थी कि जब वे 'आइ जो सोभा' तथा उनकी पत्नी के मकान के तहखाने मे चार महीने छिपे रहे तो उन चार महीनो मे उन्होने बिना किसी की सहायता के जापानी जैसी क्लिष्ट भाषा सीख ली वे उसमे धारा प्रवाह बोल और लिख सकते थे।

उनकी राजनीतिक गतिविधिया अब तेज हो गई थी, 'न्यू एशिया' 'एशियन रिव्यू' तो वे निकालते ही थे वे सभी महत्वपूर्ण जापानी पत्रो तथा पत्रिकाओ मे लेख लिखते कई महत्वपूर्ण पत्रो के तो सम्पादकीय लेख भी वे लिखा करते थे। अब श्री रासबिहारी का नाम जापान मे एशियाई राष्ट्रवाद के जन्म दाता के रूप मे श्रद्धा और आदर से लिया जाने लगा उनके द्वारा पश्चिमीय साम्राज्यवाद के विरुद्ध एशियाई राष्ट्रो को सगठित करने से वहा राष्ट्रीय चैतन्य उत्पन्न हुआ जापान तथा एशिया के राष्ट्र कर्मी उन्हे अत्यन्त श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखने लगे एशियाई राष्ट्रीय नेता के रूप मे उनको सर्वत्र देखा जाने लगा। जापान के युवक उनके प्रति इतने अधिक श्रद्धालु हो गए कि उन्होंने उनको "सैन्सी" कहना आरम्भ कर दिया। जापान मे सैन्सी' का अर्थ 'महान गुरु' है। जापान के युवक श्री रासबिहारी बोस को इसी नाम से पुकारते थे। रासबिहारी को जापान के सैनिक भी अत्यन्त आदर और श्रद्धा से देखते थे। उन पर उनका गहरा प्रभाव था।

उनकी मान्यता थी कि जब तक कि जापान की जनता और सरकार को भारत तथा एशिया के राष्ट्रो की समस्याओ से अवगत नही कराया जावेगा और भारत तथा एशिया के अन्य परतंत्र राष्ट्रो के स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रति सहानुभूति प्राप्त नहीं करली जावेगी तब तक अनुकूल अवसर आने पर जापान की सहायता उपलब्ध नही हो सकेगी। प्रथम महायुद्ध के अनुभव ने उन्हे यह बतला दिया था। उस समय जापान एशिया के देशो की स्वतन्त्रता के आन्दोलन से सर्वथा उदासीन रहा था।

१९३३ मे मचूरिया की घटना के कारण लीग ऑफ नेशस मे जापान के विरुद्ध निन्दात्मक प्रस्ताव पारित हुआ। जापान ने लीग ऑफ नेशस की सदस्यता त्याग दी और जापान मे बृटिश विरोधी भावना अत्यन्त तीव्र हो उठी क्योकि बृटेन ही उस प्रस्ताव को पारित कराने मे अगुआ था। श्री रासबिहारी बोस ने उस बृटेन विरोधी भावना का पूरा लाभ उठाया उन्होने समस्त जापान का दौरा किया और जापानियो से कहा कि परतत्र भारत बृटेन की शक्ति का आधार है अतएव एशिया मे बृटेन की शक्ति और प्रभाव को कम करने के लिए भारत की स्वतन्त्रता आवश्यक है।

बृटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध एशियाई राष्ट्रो के सगठन अधिक तेजवान बनाने

के लिए श्री रासबिहारी बोस ने २८ अक्टोबर १९३७ को एशियाई युवक सम्मेलन बुलाया और पश्चिमीय साम्राज्यवाद के विरुद्ध एक प्रभावशाली और सबल मोर्चा स्थापित कर दिया।

दूरदर्शी रासबिहारी बोस ने यह देख लिया कि अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच पर घटनायें तेजी से घट रही हैं भावी युद्ध मे जापान और बृटेन का संघर्ष होगा। भारत को सशस्त्र विद्रोह के द्वारा स्वतंत्र करने का वह अलभ्य अनुकूल अवसर होगा। अतएव वे दक्षिण पूर्व एशिया के सभी देशो मे रहने वाले भारतीयो का संगठन कर लेना चाहते थे इसी उद्देश्य से उन्होने इंडियन इंडिपैंडैंस लीग की सभी दक्षिण पूर्वी एशिया मे शाखाये स्थापित की। वे स्वयं वहा गए तथा श्री डी यस. पांडे तथा श्री देवनाथदास को उन देशो मे भारतीयो मे सम्पर्क स्थापित करने तथा इंडियन इंडिपैंडैंस लीग की शाखायें स्थापित करने के लिए भेजा।

३ सितम्बर १९३९ को द्वतीय महायुद्ध आरम्भ हो गया इंडियन इंडिपैंडैंस लीग की एक कौंसिल बनाई गई। रासबिहारी उसके अध्यक्ष थे और देवनाथदास तथा आनन्द मोहन सहाय उसके सदस्य थे। रासबिहारी ने श्री देवनाथ दास को थाईलैंड तथा इंडोचीन के विभिन्न भागो (हनोई, हैफांग, बुई, कम्बोडिया, सुवर्न भूमि (लैंगस) मे भारतीयो मे सम्पर्क स्थापित करने के लिए भेजा। श्री रासबिहारी बोस ने प्राणलाल कपाडिया को पत्र देकर भारत भेजा। वे रासबिहारी की ओर से महात्मा गांधी पंडित जवाहरलाल नेहरू, मौलाना आजाद, राजेंद्र बाबू तथा शरतचन्द्र बोस से मिले। नेताजी से मिलना नही हुआ क्योकि वे उस समय जेल मे थे। रासबिहारी बोस ने भारत मे महात्मा गांधी तथा अन्य राष्ट्रीय नेताओ को लिखा तथा कपाडिया के द्वारा कहलाया कि शीघ्र ही दक्षिण पूर्व मे युद्ध छिडेगा। जापान का बृटेन से युद्ध होगा। भारत की स्वतंत्रता प्राप्त करने का यह दैवी वरदान सिद्ध होगा। जापान की हमे सहायता मिल जावेगी। देश के अन्दर कांग्रेस तथा दक्षिण पूर्व एशिया मे इंडियन इंडिपैंडैंस लीग के नेतृत्व मे भारतीय संघर्ष करे तो भारत स्वतंत्र हो जावेगा। परन्तु कांग्रेस के नेता तब तक कुछ निश्चय नही कर सके थे। वे जापान के साथ मिलकर बृटेन के विरुद्ध कोई कार्यवाही नही कर करना चाहते थे महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू का मत था कि इस समय कोई आन्दोलन करके बृटेन की कठिनाइयो को बढाना नही चाहिए नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का इसी प्रश्न पर कांग्रेस से मतभेद हुआ था त्रिपुरी कांग्रेस मे उन्होने भविष्यवाणी की थी कि ६ महीने मे विश्व युद्ध होगा हमे बृटेन को चुनौती देकर संघर्ष के लिए तैयारी करनी चाहिए परन्तु कांग्रेस ने उनके सुझाव को स्वीकार नही किया था और उन्हे कांग्रेस से हटना पडा था। भारतीय नेताओ ने रासबिहारी बोस के प्रस्ताव को स्वीकार कर दिया।

उधर से निराश होने पर रासबिहारी बोस की दृष्टि सुभाषचन्द्र बोस की ओर गई। जब वे आमरण अनशन करके जेल से छूट गए और एकांतवास मे भारत से विदेश जाने की तैयारी कर रहे थे तब रासबिहारी बोस ने उन्हे जापान लाने की योजना बनाई। उन्होने जापान की स्थल, नभ और समुद्री सेना के सर्वोच्च अधिकारियो से मिल कर सुभाषचन्द्र बोस को जापान लाने की सारी व्यवस्था करली। छद्म वेश मे उन्होने गुप्त रूप से देवनाथ दास को एक जापानी समुद्री जहाज मे अवयाव भेजा। अवयाव मे जब देवनाथ दास उतर गए तो भारत मे जापानी कौंसल जनरल से सम्पर्क

स्थापित कर यह निश्चय किया गया कि वह सुभाषचन्द्र वोस को एक जापानी स्टीमर मे ग्रक्याव तक पहुचा दे। योजना यह थी कि ग्रक्याव पर जापानी एयरलइन्स सुभाष जी को टोकियो पहुचा देगी। उस समय तक यद्यपि वृटेन और जापान मे खिचाव था परन्तु जापान वृटेन से युद्ध रत नही था इस कारण जापान और वृटेन के दौत्य सम्बध पूर्ववत थे। ग्रक्याव पर हवाई जहाज से सुभाषचन्द्र को टोकियो लाने की पूर्ण व्यवस्था थी परन्तु कलकत्ते मे जापान का कौंसल जनरल ग्रंतिम क्षण पर हिचकिचा गया। उस महान क्रातिकारी की यह वह योजना सफल हो जाती और नेताजी सुभाषचन्द्र जापान से युद्ध छिडने के पूर्व ही जापान पहुच जाते तो भारत का इतिहास ही दूसरा होता परन्तु यह होना नही था।

८ दिसम्वर १९४१ दक्षिण एशिया मे युद्ध छिड गया। तुरन्त ही रासविहारी ने अपने नाम से एक छोटी पुस्तिका प्रकाशित की और लाखो की सख्या मे उसको जापानी सेनाओ मे बटवाया उसमे जापानी सैनिको को बतलाया गया था कि वे भार-तीयो और विशेष कर भारतीय स्त्रियो के साथ कैसा व्यवहार करें। रासविहारी वोस का जापान के सैनिको पर ऐसा प्रभाव था कि उन्होने उनके कहने के अनुसार भारतीयो के साथ दुर्व्यवहार नही किया और किसी भी भारतीय महिला के साथ अभद्र व्यवहार नहीं किया।

रासविहारी वोस ने तुरन्त ही एक भारतीय सेवा दल का निर्माण किया जिसके कमाडर देवनाथ दास और अध्यक्ष स्वामी सत्यानन्द पुरी थे। वह सेवा दल मलाया, सिंगापुर, वरमा जहा-जहा जापानी सेनाए कूच करती थी उनके साथ कूच करता था। इन प्रदेशो मे लाखो भारतीय रहते थे। यह सेवादल भारतीयो के जीवन और धन सम्पत्ति की सुरक्षा करता था। इस सेवादल ने भारतीयो की अद्भुत सेवा की उसके फल स्वरूप समस्त दक्षिण पूर्वीय एशिया मे रासविहारी के नेतृत्व मे इडिया इडिपैंडेंस लीग मे गहरा विश्वास उत्पन्न हो गया।

जव ८ दिसम्वर १९४१ को जापान ने मित्र राष्ट्रो के विरुद्ध युद्ध घोषणा करदी तो रासविहारी सचेत हो गए थे वे जान गए थे कि भारत को स्वतत्र करने का समय आ गया है। उन्होने तुरन्त घोषणा की कि इडियन इडिपैंडेंस लीग का लक्ष्य भारत से वृटिश शासन को उखाड फेंकना और जिन प्रदेशो पर जापान का अधिकार हो जावे वहा वसे हुए भारतीयो की सेवा और उनकी सुरक्षा का प्रबन्ध करना है।

वहुत शीघ्र ही ११ दिसम्बर १९४१ को 'कोटा वारु' मे भारतीय क्रातिकारी राजनीतिक नेताओ तथा वृटिश भारतीय सेना के कतिपय सैनिक अधिकारियो का ऐतिहासिक मिलन हुआ और आजादहिंद सेना (आइ एन ए) का सर्व प्रथम गठन हुआ। सिंगापूर का १५ फरवरी १९४२ को पतन हो गया।

श्री रासविहारी वोस ने यद्यपि जापानी सैनिको से भारतीयो के साथ सद-व्यवहार करने की अपील निकाली थी परन्तु वे जानते थे कि केवल अपील निकलाना यथेष्ट नही है। वे जापानी सेना के सर्वोच्च सेनापति फील्ड मार्शल सुगीयामा से मिले और उनसे प्रार्थना की कि वे आज्ञा प्रचारित करदें कि विजित प्रदेशो मे भारतीयो को शत्रु न माना जावे। फील्ड मार्शल सुगीयामा ने रासविहारी वोस की इस प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा कि भारत व्रिटिश साम्राज्य का एक अग है जिससे

जापान युद्ध कर रहा हैं अतएव भारतीयों को शत्रु माना जायेगा। तब रासविहारी युद्ध मंत्री से मिले और उन्हें यह आज्ञा निकालने के लिए तैयार कर लिया।

जब जापान की सेनाओं ने थाईलैंड (श्याम) पर अधिकार कर लिया तो स्वामी सत्यानन्द पुरी ने वैंगकाक में इंडियन इंडिपैंडैंस लीग स्थापित की। तद उपरांत लीग के प्रतिनिधि जापानी सेना के साथ जाते और भारतीयों के हितों की रक्षा करने के अतिरिक्त इंडियन इंडिपैंडैंस लीग की स्थानीय भारतीयों के नेतृत्व में शाखायें, स्थापित करते। क्रमश मलाया के सभी राज्यों, फिलीपाइन द्वीप समूह, थाईलैंड, डच ईस्ट इन्डीज, फ्रैंच इन्डोचीन, शघाई, वरमा, कोरिया और मंचूरिया में भी इन्डियन इन्डिपैंडैंस लीग की शाखायें स्थापित हो गई जो रासविहारी वोस के नेतृत्व में काम करने लगी।

श्री रासविहारी वोस जापान के प्रधानमंत्री श्री तोजो से मिले और जापान सरकार को यह घोषणा करने के लिए तैयार कर लिया कि जापान सरकार भारत को स्वतंत्र करने के लिए गए भारतीय स्वातंत्र्य युद्ध की सहायता करेगी १६ फरवरी १६४२ को प्रधान मंत्री श्री तोजो ने जापान की राष्ट्रीय सभा में इस आशय की घोषणा करदी।

इसके उपरांत रासविहारी वोस ने भारत की स्वतंत्रता के युद्ध को अधिक वलशाली तथा तेजवान बनाने के लिए तथा भारतीयों का सुदृढ संगठन करने के लिए पूर्वीय एशिया में वसे हुए प्रमुख भारतीय देश भक्तों और क्रांतिकारियों का २८ मार्च से ३० मार्च १६४२ तक तोकियो में एक सम्मेलन बुलाया। उस सम्मेलन में नीचे लिखा निश्चय किया गया।

"भारत पर आक्रमण भारत की राष्ट्रीय सेना भारतीय सेनापति की आधीनता में करेगी। वह जापान से केवल उतनी ही सैनिक सहायता लेगी जो कि इन्डियन इन्डिपैंडैंस लीग की कार्यकारी परिषद् आवश्यक समझेगी और उसके लिए वह जापान सरकार से प्रार्थना करेगी। स्वतंत्र भारत का भावी विधान केवल मात्र भारत के प्रतिनिधियों द्वारा बनाया जावेगा। उक्त सम्मेलन में यह भी निश्चय किया कि १६४२ के जून मास में वैंगकाक में एक वडा और अधिक प्रतिनिधि भारतीयों का सम्मेलन बुलाया जावे।

रासविहारी वोस ने अत्यन्त उपयुक्त समय पर तोकियो में भारतीयों का वह ऐतिहासिक सम्मेलन बुलाया जिसमे इन्डियन इन्डिपैंडैंस लीग का नवीन गठन किया गया, भारत के स्वतंत्र होने की घोषणा की गई और भारत को स्वतंत्र करने का कार्य-क्रम भी तैयार किया गया।

जहा इस ऐतिहासिक सम्मेलन में पूर्वीय एशिया में रहने वाले सभी भारतीयों के प्रतिनिधि-उपस्थित थे वहा भारत की स्वतंत्रता के लिए अथक परिश्रम करने वाले क्रांतिकारी स्वामी सत्यानन्दपुरी, तथा उनके क्रांतिकारी वीर साथी ज्ञानी प्रीतमसिंह, कैप्टेन अकरम खा और नीलकंठ अय्यर उस सम्मेलन में नहीं थे। वे वैंगकाक से तोकियो सम्मेलन में भाग लेने के लिए आ रहे थे कि उनका विमान दुर्घटना ग्रस्त हो गया और वे चारों भारत माता के वीर सपूत मातृ भूमि की स्वतंत्रता के लिए वलिदान हो गए। महाविप्लवी नायक-रासविहारी वोस ने उन वीर क्रांतिकारी देश भक्तों के त्याग और वलिदान की प्रशंसा करते हुए कहा हमें इस महान शोक की छाया में उन

दिवगत देश भक्तो की स्मृति मे प्रण करना चाहिए कि हम मृत्यु पर्यन्त मातृ भूमि की स्वतत्रता के लिए जूझते रहेगे।

इस सम्मेलन के निर्णय के अनुसार २१ जून १९४२ को बैंगकाक मे एक वृहद भारतीय सम्मेलन हुआ। उसमे उन सभी प्रदेशो से भारतीय प्रतिनिधि वडी सख्या मे आए थे जिन्हे जापानी सेनाओ ने वृटेन की दासता से मुक्त कर दिया था। आजाद-हिंद सेना का भी एक प्रतिनिधि मडल उम सम्मेलन मे सेना का प्रतिनिधित्व कराने के लिए सम्मिलित हुआ था।

बैंगकाक सम्मेलन मे इन्डियन इडिपैंडैंस लीग का विधान स्वीकार किया गया। आजाद हिंद सेना उसकी सेना थी। इस सम्मेलन ने लीग की एक कार्यकारी परिपद वना दी जो कि लीग के कार्य का सचालन करे और स्वतत्रता के युद्ध का निर्देशन करे। महाविप्लवी नायक रामविहारी वोस उसके अध्यक्ष चुने गए। उसमे दो सदस्य आजाद हिन्द सेना के रक्खे गए। (जनरल मोहनसिह और कर्नल यन. स. गिल) और दो गैर सैनिक सदस्य रक्खे गए। श्री राघवन व श्री ... ...

बैंगकाक सम्मेलन के अवसर पर नेताजी सुभापचन्द्र वोस ने जरमनी से रेडियो सदेश भेजा था कि वे शीघ्र ही भारत की स्वतत्रता के युद्ध मे भाग लेने लिए सुदूर पूर्व की ओर आवेंगे।

बैंगकाक सम्मेलन से जव प्रतिनिधि अपने-अपने स्थानो पर गए और उन्होने सम्मेलन के निश्चय को भारतीयो को वतलाया तो पूर्वीय एशिया मे वसे हुए भारतीयो मे आश्चर्यजनक उत्साह उत्पन्न हो गया और भारतीय युवक वहुत वडी सख्या मे आजाद हिंद सेना मे प्रवेश पाने के लिए उत्सुक हो उठे। महाविप्लवी नायक रासविहारी वोस ने समस्त पूर्वीय एशिया का दौरा कर भारतीयो को देश की स्वतत्रता के इस निर्णायिक युद्ध मे अपना सर्वस्व निछावर कर देने की प्रेरणा दी।

श्री रासविहारी वोस केवल इन्डियन इन्डिपैंडैंस लीग तथा आजाद हिंद सेना को सगठित करके ही सतुष्ट नही हो गए। उन्होने भारतीयो का आकाशवाणी के द्वारा देश मे विद्रोह खडा कर देने के लिए आवाहन किया। वे भारतीयो के नाम सदेश प्रसारित करते उन्होने महात्मा जी तथा भारत के अन्य सभी नेताओ (नेहरू, पटेल, राजेन्द्र वावू, सीमान्त गाधो, राजगोपालाचार्य आदि) से अपील की कि वे सव मिलकर फिर चाहे वे किसी भी आदर्श को स्वीकार करते हो देश के शत्रु वृटिश शासन के विरुद्ध उठ खडे हो। भारत मे जव स्वतत्रता का युद्ध छिडेगा तो इन्डियन इन्डिपैंडैंस लीग वाहर से युद्ध करेगी और उनकी सहायता करेगी।

जवकि महाविप्लवी नायक रासविहारी वोस देश को स्वतत्र करने के लिए व्यूह रचना कर रहे थे अपने थके हुए जर्जर शरीर को देश की स्वतत्रता के युद्ध का सचालन करके रात दिन विना विश्राम किये और अधिक थका रहे थे। तभी दुर्भाग्यवश जनरल मोहनसिह और रासविहारी वोस मे तीव्र मतभेद उत्पन्न हो गया। वास्तव मे जनरल मोहनसिह इडियन इन्डिपैंडैंस लीग के अधीन रहना नही चाहते थे वे इस प्रकार आचरण करते थे कि मानो आजाद हिंद सेना स्वतत्र सगठन हो और वे उसके सर्वोच्च सेनापति हो। वैगकाक सम्मेलन मे जो प्रस्ताव पारित किये गए थे उसमे जापान सरकार से कुछ स्पष्टीकरण मागा गया था। जापान सरकार का जो उत्तर आया वह वहुत स्पष्ट और सतोप जनक नही था। रासविहारी जानते थे कि जापान सरकार से

किस तरह अपनी बात स्वीकर कराना, परन्तु मोहनसिंह अड गए। जब मतभेद अधिक तीव्र हो गया तो रासबिहारी ने मोहन सिंह को अपदस्थ कर दिया। मोहनसिंह ने आजाद हिंद सेना का विघटन कर दिया। उस समय स्थिति अत्यन्त बिगड गई थी। इण्डियन इन्डिपेंडेंस लीग की कार्यकारी परिषद के सदस्यो ने त्याग पत्र दे दिया। परस्पर सदेह और अविश्वास का वातावरण गहन होता गया।

जनरल मोहनसिंह और उनके कतिपय साथियो ने उस महान क्रातिकारी जिसने देश के लिए अपना सर्वस्व निछावर कर दिया उसकी देश भक्ति पर भी संदेह किया। परन्तु मातृ भूमि की स्वतत्रता के लिए प्रतिक्षण जीवित रहने वाले उस महान देश भक्त ने इसकी तनिक भी चिन्ता नही की। उसने कठोरता पूर्वक अपने अधिकार का उपयोग किया। कार्यकारी परिषद के सभी सदस्यो ने त्याग पत्र दे दिया अस्तु उसने सर्वाधिकार अपने मे निहित कर लिया। जनरल मोहनसिंह को केवल अपदस्थ ही नही किया वरन उनको नजर वन्द कर दिया उनके साथ कर्नल यन एम गिल को भी गिरफ्तार कर लिया। वह आजाद हिंद सेना को विघटन से वचाना चाहते थे।

इसके उपरात उन्होने मेजर जनरल जे के भोसले, ए. सी चटर्जी, लोकनाथन जमन कियानी और शाहनवाज की सहायता से आजाद हिंद सेना का पुनर्गठन किया। इस प्रकार आजाद हिन्द सेना विघटन मे वच गई। लीग का प्रधान कार्यालय बैंगकाक से सिंगापुर लाया गया।

महाविप्लवी नायक रासविहारी वोस वहुत पहले से प्रयत्न कर रहे थे कि नेताजी सुभाषचन्द्र वोस जरमनी से जापान आकर भारत की स्वतन्त्रता के उस युद्ध मे सहयोग दें उन्होने जापान सरकार से नेताजी को जापान लाने की व्यवस्था करने का आग्रह किया। आरम्भ मे जापान सरकार असमजस मे पड गई। उनके सामने यह प्रश्न खड़ा हो गया कि नेताजी सुभाषचन्द्र वोस के आने पर वरिष्ठता का प्रश्न उठ खडा होगा। परन्तु रासविहारी के विशेष आग्रह पर तथा स्वय नेताजी की जापान आने की तीव्र इच्छा को देख कर जापान सरकार ने जरमन सरकार मे वात कर नेता जी को जापान लाने की व्यवस्था की।

एप्रिल १६४३ में रासविहारी वोस अपने प्रधान कार्यालय सिंगापुर से तोकियो गए। १३ जून को नेताजी सुभाषचन्द्र वोस तोकियो पहुचे। समस्त सुदूर पूर्व के भारतीयो का एक प्रतिनिध सम्मेलन ४ जुलाई १६४३ को सिंगापुर मे बुलाया गया। रासविहारी वोस नेताजी के साथ ३ जुलाई १६४३ को सिंगापुर पहुचे।

श्री रासविहारी वोस तथा नेताजी सुभाषचन्द्र वोस भारतीय स्वातत्र युद्ध के उन दोनो महान सेना नायको ने सिंगापुर के सिटी हाल के सामने भारत की राष्ट्रीय सेना का एक साथ निरीक्षण किया उसके उपरात वह ऐतिहासिक सम्मेलन आरम्भ हुआ।

सुदूर पूर्व के सभी देशो मे रहने वाले भारतीय स्त्री पुरुषो का विशाल जनसमूह एकत्रित था। उस विशाल जन समूह के सामने भारत की स्वतन्त्रता के लिए जीवन पर्यन्त सघर्ष करने वाले दोनो महान क्रातिकारी नेता खडे थे।

श्री रासविहारी वोस ने आवेग और भावना से भरे शब्दो मे नेताजी सुभाषचन्द्र का उस जन समूह को इन शब्दो में परिचय दिया।

"मित्रों और भारत की स्वतंत्रता के युद्ध में मेरे साथियों आप मुझसे अब पूछ सकते है कि मैंने भारतीय स्वतत्रता के लिए क्या कार्य किया। मैं आपके लिए क्या उपहार लाया हू। फिर उन्होने नेताजी की ओर सकेत करके कहा।" मै आपके लिए यह उपहार लाया हूं। सुभाषचन्द्र बोस का आपको, भारत वासियो और आपको परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। भारत की तरुणाई मे जो कुछ सर्व श्रेष्ठ अनुकरणीय साहसिकता है और सबसे अधिक गतिशीलता है वे उसके प्रतीक हैं।

भारत मे जो कुछ सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम है वे उसका प्रतिनिधित्व करते हैं।

मित्रो और भारत की स्वतत्रता के युद्ध मे मेरे साथियो आज आपकी उपस्थिति मे मैं अपने पद को छोडता हूं और श्री सुभाषचन्द्र बोस को पूर्व एशिया की इन्डिपेंडेंस लीग का अध्यक्ष मनोनीत करता हूं।

उपस्थित जन-समूह स्तब्ध था ऐसा आत्म त्याग और निस्पृहता तो इस भौतिक वादी युग मे सुनी और देखी नही गई थी। सत्ता और अधिकार के लिए सत्ता धारी राजनीतिक नेता कौनसे जघन्य कार्य नही करते। सत्ता प्राप्त करने के लिए हत्या कुचक्र, देशद्रोह, विश्वासघात जैसे भयकर कुकर्म करने मे भी राजनेता नही चूकते। स्वतत्र भारत मे आज जो सत्ता के लिए अशोभनीय आपाधापी देखने को मिलती है वह उसका ज्वलन्त उदाहरण है। पर उस समय लोगो ने देखा कि जीवन पर्यन्त तिल–तिल कर देश की स्वतत्रता के लिए अपने को मिटा देने वाला वह महान क्रातिकारी तनिक भी विचलित हुए बिना सत्ता को दूसरे को सौप कर प्रसन्न हैं। वह दृश्य देव दुर्लभ था इतिहास मे ऐसे उदाहरण अधिक नही है। महाविप्लवी रासविहारी बोस का यह कृत्य उनकी गहन देश भक्ति और महान उच्च व्यक्तित्व का परिचायक है।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने उस महान उत्तरदायित्व को स्वीकार करते हुए महाविप्लवी नायक रासविहारी के प्रति अपनी गहन श्रद्धा व्यक्त करते हुए अपने भाषण मे कहा "पिछले महायुद्ध के समय भारत की स्वतत्रता के लिए अपने प्राणो को जोखिम में डालकर उन्होने जो अद्भुत कार्य किये वे हमारी स्मृति में ही ताजे नही है बृटिश साम्राज्यवाद के कागजो और फाइलो मे भी ताजे हैं।"

रासविहारी बोस को नेताजी ने उन्हें आजाद हिंद सरकार का मुख्य परामर्श दाता नियुक्त किया जिसे रासविहारी ने संघर्ष स्वीकार किया।

कुछ समय के उपरात सौ युद्धो का वह अजेय योद्धा गम्भीर रूप से बीमार हो गया। रासविहारी मधुमेह के रोगी थे। उनका शरीर निर्बल हो गया था उनकी प्रिय पत्नी तोशिको और शत्रु द्वारा जापानी जहाज के डुबो दिये जाने के कारण उनके प्रिय पुत्र मशोहिदे के स्वर्गवास से उन्हे गहरा आघात लगा था और पिछले वर्षों में इन्डियन इडिपेंडेंस लीग तथा भारतीय राष्ट्रीय सेना के सगठन कार्य मे स्वास्थ्य की तनिक भी चिन्ता न कर अत्यन्त कठिन परिश्रम करने के कारण वह महान क्रातिकारी देशभक्त सौ युद्धो का अजय वीर योद्धा जिसने निरन्तर तीस वर्ष से अधिक मातृभूमि की स्वतत्रता के लिए अपने को मिटा दिया था जनवरी १९४५ मे गम्भीर रूप से बीमार पडा और चिकित्सा के लिए तोकियो ले जाया गया।

उनकी बीमारी के दिनो मे जापान के सम्राट ने दोहरी किरणो वाले उगते सूर्य के द्वितीय आर्डर के जापान के अत्यन्त उच्च राष्ट्रीय सम्मान से उन्हे विभूषित

किया। सम्राट का प्रतिनिधि उस पदक को लेकर हास्पिटल मे स्वय रासविहारी को उसमे विभूषित करने गया। एक विदेशी को सम्राट ने और उनके द्वारा समस्त जापान राष्ट्र ने उस महान देशभक्त और महान क्रातिकारी का अभिवादन किया। जापान ने उन्हे सर्वोच्च सम्मान दिया।

जीवन के अन्तिम क्षण तक उनकी यही अभिलाषा थी कि भारत स्वतत्र हो। जीवन के संध्याकाल मे वहुधा वे अपनी इच्छा व्यक्त करते थे कि मैं भारत को स्वतत्र देखकर मरना चाहता हूँ। स्वतत्र भारत मे मैं अपनी जीवन लीला को समाप्त करू जिससे मातृभूमि की पावन भूमि मे मेरी मृत्यु हो।

२१ जनवरी १६४५ को वह महान कातिकारी देशभक्त अपने हृदय में यह इच्छा लिए हुए कि दूसरे जन्म मे वह अपनी जन्म भूमि, वचपन की क्रीड़ा भूमि और यौवन की सग्राम भूमि भारत के दर्शन करेगा– चिरनिद्रा मे सो गया। उसका पार्थिव शरीर भारत माता की मिट्टी मे नही जापान मे भस्मसात हुआ।

जापान मे उनको जो श्रद्धा और आदर मिला वह इसी वात से प्रगट होता है कि उनके शव को अन्तिम सस्कार के लिए ले जाने के लिये जापान के सम्राट ने उस वाहन को भेजा जिसमे सम्राटो के शव ले जाये जाते थे।

उनके निधन पर उनकी महान सेवाओ का उल्लेख करते हुए नेताजी ने कहा था वे सुदूर पूर्व मे भारतीय स्वतत्रता आन्दोलन के जनक थे। उन्होने इन्डियन इन्डिपैंडैंस लीग और भारत की राष्ट्रीय सेना का निर्माण करके भारत की जो महान सेवा की है वह चिरस्मरणीय रहेगी। जव उनकी वीमारी के दिनो मे नेताजी उन्हे देखने गए तो उनको एक मात्र चिन्ता भारत की स्वतंत्रता की थी। वे असीम आशावादी थे इम्फाल का प्रथम आक्रमण विफल हो चुका था, परन्तु रासविहारी निराश नहीं थे उन्होने नेताजी को विश्वास दिलाया कि उनका प्रयत्न सफल होगा भारत अवश्य आजाद होगा। २१ फरवरी १६४५ को जव उस महान देशभक्त का तोकियो मे अतिम सस्कार हुआ तो नेताजी ने इन्डियन इन्डिपैंडैंस लीग की सुदूर पूर्व की सभी शाखाओ के भारतीयो को सामूहिक सभाए करने का आदेश दिया। २५ फरवरी को आजाद हिंद सरकार के मंत्रिमडल की वैठक रासविहारी के निधन पर शोक प्रकट करने के लिए हुई और सर्व सम्मत मे "आर्डर आव तेगे आजाद हिन्द" जो कि उस सरकार का सर्वोच्च सम्मान था सर्व प्रथम रासविहारी वोस को मातृ भूमि के लिए की गई उनकी सेवा के उपलक्ष मे मृत्युपरान्त दिया गया। मत्रिमंडल ने यह भी निश्चय किया कि तोकियो सैनिक अकादमी से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले सर्वश्रेष्ठ भारतीय केडेट को रासविहारी पदक दिया जाय। उस महान देशभक्त के लिए उन भारतीयो ने जो उस समय वृटिश साम्राज्यवाद से जूझ रहे थे जिनका जीवन प्रतिपल सकट मे था उन्होंने उस वीर देशभक्त के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित की परन्तु स्वतत्र भारत की सरकार ने उस महान देशभक्त और भारत की स्वतत्रता के लिए अनवरत सघर्ष करने वाले वीर सेनानी के प्रति किसी प्रकार की श्रद्धा या सम्मान व्यक्त करने की आवश्यकता नही समझी।

स्वतत्र भारत में सरकार द्वारा उनकी स्मृति को चिरस्थायी करने के लिए कोई राष्ट्रीय स्मारक नही वताया गयालोकसभा की दीर्घा मे उनका चित्र नहीं लगाया गया देहली मे उस स्थान पर जहा उन्होंने लार्ड हार्डिंग पर वम फेंक कर शक्तिशाली वृटिश साम्राज्य

को ललकारा था और चुनौती दी थी कोई स्तूप या शिला लेख नही लगाया गया। तार डाक विभाग ने उनका डाक टिकिट नही निकाला। रासविहारी बोस की एक मात्र जीवित संतान श्रीमती हिगूची को भारत सरकार ने उनके पिता की मातृभूमि मे आमन्त्रित कर सम्मानित नही किया। हम भारतीयो की इस चरम सीमा की कृतघ्नता को देख कर स्वय कृतघ्नता ने लज्जा अनुभव की होगी। हम भारतीय जो आज सत्ता मे हैं उनका यशोगान करते नही थकते पर उन देश भक्तों को याद रखने का भार उठाना भी पसद नही करते कि जिन्होने अपने को देश की स्वतत्रता के लिए कण-कण कर गला दिया और जिनकी हड्डियों पर भारत की स्वतत्रता का यह भवन खडा है। कृतघ्नता के गुण मे हम ससार मे वेजोड हैं। सर्वोपरि हैं।

अपने संघर्ष के दर्शन के मूल तत्व को व्यक्त करते हुए उस महान क्रातिकारी ने २५ अप्रेल १९४२ को कहा था—

"मैं एक योद्धा हू एक युद्ध और
अन्तिम और सर्वोत्तम।"

"I was a fighter. one fight more, the last and the best"—Ras Behari Bose.

परिशिष्ट—१

पजाव के कुख्यात गवरन माइकेल ओडायर ने रासविहारी वोस के सशस्त्र विद्रोह के सम्बन्ध मे अपनी पुस्तक "इन्डिया ऐज आई न्यू इट" मे लिखा है।

"इस संकट की स्थिति मे १९१२–१३ मे देहली और लाहौर षडयत्रो का संगठनकर्ता पजाव मे आया और विद्रोह का नेतृत्व अपने हाथो मे लिया। वह अपने साथ एक चतुर और साहसी मराठा ब्राह्मण वी जी पिंगले को अपने मुख्य सहायक के रूप मे साथ लाया। वह सिक्ख क्रातिकारियो के साथ अमेरिका से भारत आया था यह दो इस महान षडयत्र के सूत्रधार थे।

१९ फरवरी के प्रात. काल हमे अपने गुप्तचरो से ज्ञात हुआ कि रासविहारी और पिंगले ने अपने मुख्य कार्यालय को लाहौर स्थांतरित कर लिया है और उन्हे सदेह हो गया है कि उनकी योजना का सरकार को पता चल गया है इस कारण उन्होने २१ फरवरी के स्थान पर १९ फरवरी की रात्रि को विद्रोह आरम्भ करने का निश्चय किया है। उन्होने सभी स्थानो को और छावनियो मे अपने सदेश वाहक इस परिवर्तन की सूचना देने के लिए भेजे हैं। तव हमे कार्यवाही करनी पडी।

चार पृथक इमारतो मे विद्रोहियो के मुख्य कार्यालयों पर पुलिस ने छापा मारा। पुलिस के छापे का नेतृत्व वहादुर और साहसी पुलिस अफसर लियाकत हयात खा और वल यल टामकिन्स ने किया। तेरह अत्यन्त खतरनाक क्रातिकारी पकडे गए। उनके साथ विद्रोह के लिए आवश्यक सामग्री भी वडी मात्रा मे मिली, अस्त्र, शस्त्र, वम, वम वनाने का सामान क्रातिकारी साहित्य और चार विद्रोहियो के झडे मिले। उनमे एक झडा मैंने ले लिया जिसे मैं स्मृति चिन्ह के रूप मे अपने पास रक्खे हू। दुर्भाग्यवश रासविहारी और पिंगले हाथ नही आए।

दोनो भाग गए। कुछ सप्ताहो के उपरात पिंगले मेरठ मे वारहवी कैवेलरी (अश्वारोही सेना) छावनी मे पकडा गया। वह अपने साथ वगाल से वम लाया था जो कि विशेषज्ञो की राय मे एक रैजीमेंट को नष्ट कर देने के लिए पर्याप्त थे।

रासविहारी बोस ने सशस्त्र विद्रोह का सगठन और व्यवस्था काफी विशाल स्तर पर की थी। अग्रेज सैनिक भारत मे बहुत थोडी सख्या मे थे वे प्रथम महायुद्ध मे योरोप के रणक्षेत्र मे चले गए थे भारतीय सेनाए भी सख्या मे बहुत कम थीं उसमे से बहुत सी छावनियो के भारतीय सैनिक विद्रोह मे साथ देने के लिए तैयार थे कि यदि पुलिस को उस विद्रोह की पूर्व सूचना न मिल जाती तो भारत प्रथम महायुद्ध के समय ही स्वतन्त्र हो गया होता पर वह होना नही था।

परिशिष्ट—२

रासविहारी बोस प्रचार और प्रकाशन के महत्व को जानते थे। यही कारण था कि उन्होंने दो पत्र निकाले नवीन एशिया (न्यू एशिया) व एशिया रिव्यू। वे जापान के प्रमुख पत्रो मे भारत तथा एशिया के पराधीन देशो के सम्बन्ध मे लिखते रहते थे और कतिपय पत्रो के सम्पादकीय लेख भी वे लिखते थे। इसके अतिरिक्त उन्होने भारत के सम्बन्ध मे जापानी मे अनेक पुस्तकें लिखी उनमे से कुछ के शीर्षक निम्नलिखित हैं।

१. एशिया की क्रांति का सिंहावलोकन (१९२९) २. भारत (१९३०) ३. उत्पीडित भारत (१९३३) ४ भारतीयो की कहानिया (१९३५) ५. भारत मे क्राति (१९३६), ६ तरूण एशिया की विजय, ७ भारत का रुदन (१९३८), ८ भगवत गीता (१९४०), ९ भारत का इतिहास (१९४२), १० दासता की शृंखलाओ मे जकडा भारत, ११. स्वतत्र भारत, १२ स्वतत्रता के लिए सघर्ष (१९४१) रामायण (१९४२), १३. भारतीयो का भारत, (१९४३), १४. अन्तिम गान (टैगोर की शेमेर कविता (१९४३) और १५ बोस की अपील (१९४४)।

क्या ही अच्छा हो कि भारत का शिक्षा मत्रालय श्री रासविहारी बोस की ऊपर लिखी पुस्तको का अग्रेजी और हिन्दी तथा बगला मे अनुवाद कराकर प्रकाशित करे। एक विद्वान जापान मे भेजा जावे जो वहा के समाचार पत्रो तथा श्री रासविहारी बोस के पत्रो की फाइलो मे से उनके लेख ढूढ निकाले और उनको पुस्तकाकार प्रकाशित किया जावे। उन्होने जो भारतीय राजनयिक नेताओ और भारतीयो के नाम अपने भाषण आकाशवाणी से प्रसारित किये उनका सकलन किया जावे। और उन्हे प्रकाशित किया जावे। यदि भारत सरकार का मत्रालय यह न करे तो कोई साहस प्रकाशक अथवा कलकत्ता विश्व विद्यालय इस कार्य को अपने हाथ मे ले। परन्तु लेखक को विश्वास नही है कि हम भारतीय जो सत्ताधारी निम्नकोटि के व्यक्तियो का यशोगान करने उनकी विरुदावली लिखने और उनकी पूजा अर्चना करने के अभ्यस्त हैं वे इस ओर ध्यान देंगे।

अध्याय ६

ज्योतीन्द्रनाथ मुखर्जी

(जतीन बाघा)

भारत सरकार के गोपनीय अभिलेख के अनुसार भारत मे सबसे अधिक खतरनाक क्रातिकारी ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी का जन्म आठ दिसम्बर १८८८ को उनके मामा वसन्त कुमार चटर्जी के गृह नदिया जिले के काया नामक गाव मे हुआ था। उनका वालपन अपने मामा के यहा व्यतीत हुआ। वालक पन मे ज्योतीन्द्र नाथ मे एक तेजस्वी वालक के सभी गुण विद्यमान थे। सभी उनके आकर्षक व्यक्तित्व से प्रभावित होते थे। ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी के शैशव काल मे ही उनके पिताश्री का स्वर्गवास हो गया अतएव उनका लालन पालन उनकी ममतामयी मातुश्री द्वारा हुआ। उनकी माता ने उनसे वालपन मे ही उनमे देशभक्ति और निर्भयता कूट-कूट कर भर दी थी। वालक पन से ही ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी को खेलने तथा व्यायाम मे अधिक रुचि थी। वे अपने विद्यार्थी जीवन मे केवल एक अत्यन्त कुशल और प्रतिभावान खिलाड़ी, कुशल तैराक, अदभुत कुशलता के धनी घुडसवार क्रीडा विशेषज्ञ ही नही रहे वरन वे एक निष्ठावान समाज सेवक और रोगियो की सेवा श्रूषा करने मे अत्यन्त रुचि लेने वाले कार्यकर्ता सिद्ध हुए। वालक पन मे ही उन्होने एक अत्यन्त क्रुद्ध घोडे को जो सड़क पर अपने भयकर आवेग से लोगो को आतकित कर रहा था वाल पकड कर वश मे करके सभी को अ श्चर्य चकित कर दिया था।

१८९८ मे उन्होने कृष्णानगर ए वी. स्कूल से प्रवेशिका (ऐन्ट्रेंस) परीक्षा उत्तीर्ण की और वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए कलकत्ता आए। उन्होने कलकत्ता के सेंट्रल कालेज मे प्रवेश ले लिया। युवक ज्योतीन्द्र नाथ के हृदय मे देशभक्ति की उद्दाम गहन भावना हिलोरें मार रही थी। वे साधारण विद्यार्थियो की भाति केवल कालेज कक्षा के अध्ययन मात्र से सतुष्ट होने वाले नही थे। शीघ्र ही वे कलकत्ते मे उन व्यक्तियो के सम्पर्क मे आए जो भारत मे क्रातिकारी आन्दोलन के प्रेरणा स्रोत थे।

१९०३ मे युवक ज्योतीन्द्र नाथ के जीवन मे एक स्मरणीय घटना घटी जिसने उनके जीवन को क्रातिकारी दिशा मे मोड़ दिया। कलकत्ता मे श्यामपुकुर स्ट्रीट मे श्री जोगेन्द्र नाथ विद्याभूषण के मकान पर उनका श्री अरिविन्द्र घोष तथा जतीन्द्र नाथ बनर्जी (जो बाद को स्वामी निरालम्व के नाम से प्रसिद्ध हुए) से परिचय हुआ। वगाल मे क्रातिकारी आन्दोलन के म त्र द्रष्टा श्री अरिविन्दु थे उन्होने ही वगाल मे क्रातिकारी भावना अकुरित की थी और जतीन्द्र नाथ वनर्जी ने वगाल तथा उत्तर भारत मे क्रातिकारी आन्दोलन का संगठन किया था। भारत के क्रातिकारी आन्दोलन के जनक उन महान क्रातिकारियो ने ज्योतीन्द्रनाथ मुखर्जी को देश को स्वतंत्र करने के लिए विप्लवी आन्दोलन मे दीक्षित कर दिया।

जहा ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी श्री अरविन्दु और जतीन्द्र नाथ वनर्जी से प्रभावित हुए थे वहा अध्यात्मिक दृष्टि से वे अपने अध्यात्मिक गुरु श्री भोलानाथ गिरि महाराज से भी बहुत अधिक प्रभावित थे। श्री भोलानाथ ने केवल उन्हे अध्यात्मिक दीक्षा ही नही दी वरन उन्हे मातृभूमि की सेवा मे अपने जीवन को अर्पण करने की प्रेरणा भी दी। ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी को स्वामी विवेकानन्द और माता शारदा देवी

के चरणो मे बैठने तथा उनसे प्रेरणा प्राप्त करने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ था। कलकत्ते मे ही उनका परिचय भारत की स्वतत्रता के लिए अथक श्रम करने वाली स्वतत्रता की देवी भगनी निवेदिता से हुआ। शीघ्र ही वे उनके प्रति आकर्षित हो गए और उनके साथ समाज सेवा का कार्य करने लगे। कलकत्ते मे ज्योतीन्द्र नाथ ने प्रसिद्ध पहलवान खेत्र चरन गोहो से मल्ल विद्या की शिक्षा ली।

क्रातिकारी राष्ट्रवाद के उद्बोधक श्री अरविन्दु और क्रातिकारी आन्दोलन के उत्तर भारत मे सगठन कर्ता जतीन्द्रनाथ बनर्जी से क्रातिकारी आन्दोलन मे दीक्षित होकर, अपने अध्यात्म गुरु श्री भोलानाथ गिरी महाराज तथा स्वतत्रता की देवी भगनी निवेदिता से प्रेरणा पाकर युवक ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी ने भारत माता की दासता की श्रृखलाओ को काट कर उसे दासता की यातना से मुक्त करके स्वतत्र बनाने का सकल्प ले लिया और अपने समस्त जीवन को भारत माता के चरणो मे अर्पित कर दिया। जिस महान जोखिम भरे कार्य करने का ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी ने सकल्प लिया था उसके लिए उन्होने आवश्यक अध्यात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक तैयारी की थी।

१९०० मे ज्योतीन्द्रनाथ ने कालेज शिक्षा समाप्त कर कुछ समय व्यवसायिक सस्थानो मे स्टैनो का काम किया और ११ अगस्त १९०३ को वे बगाल सचिवालय मे स्टैनो नियुक्त हुए। ११ मई १९०४ को वे बगाल सरकार के रक्ति सचिव के स्टैनो नियुक्त कर दिए गए। १९०७ मे उन्हे किसी विशेष सरकारी कार्य से दार्जलिंग भेजा गया। दार्जलिंग मे उन्होने बगाल के क्रातिकारी सगठन अनुशीलन समिति की शाखा बाधव समिति के नाम से स्थापित की। दार्जलिंग से ही उन्होने सक्रिय रूप से क्राति-कारी आन्दोलन मे भाग लेना आरम्भ कर दिया।

उस समय भारत मे अग्रेज लोग अपने को शासक जाति का होने के कारण भारतीयो को अत्यन्त हीन दृष्टि से देखते थे और उनका अपमान करना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते थे। जब कोई अग्रेज किसी भारतीय के साथ दुर्व्यवहार या अभद्र व्यवहार करता तो पुलिस या न्यायालय भी उसकी कोई सुनवाई नही करता था। एप्रिल १९०८ मे सिलीगुरी रेलवे स्टेशन पर ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी का दो अग्रेज सैनिक अधिकारियो कैप्टेन मरफी और लैफ्टीनैंट सोमर विली से झगडा हो गया। ज्योतीन्द्र नाथ ने दोनो गोरे सैनिक अधिकारियो की अच्छी तरह पिटाई कर दी। एकाकी ज्योतीन्द्रनाथ ने दो गोरे सैनिक अधिकारियो को उनकी उद्दडता और भारतीयो के प्रति उनके अभद्र व्यवहार का, उनकी पिटाई करके उन्हे ऐसा कठोर दण्ड दिया कि सभी दर्शक उनके शारीरिक बल को देख कर आश्चर्य चकित हो गए और समस्त बगाल मे उनका नाम प्रसिद्ध हो गया। दोनो गोरे सैनिक अधिकारियो ने उन पर दार्जलिंग मे मैजिस्ट्रेट की अदालत मे अभियोग चलाया परन्तु कुछ समय के उपरात उन दोनो ने अपना अभियोग वापस ले लिया। सम्भवत वे गोरे सैनिक अधिकारी उस अपमान और लज्जा से बचना चाहते थे कि जो उन्हे अभियोग चलने पर उठानी पडती कि एक एकाकी भारतीय ने दो गोरे सैनिक अधिकारियो भूलुटित कर दिया। फिर भी मैजिस्ट्रेट ने ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी को परामर्श दिया कि भविष्य मे वे उचित व्यवहार करें। ज्योतीन्द्र नाथ ने मैजिस्ट्रेट से स्पष्ट शब्दो मे कहा कि वे स्वय की सुरक्षा तथा अपने देश वासियो के अधिकारो की रक्षा के लिए भविष्य मे आवश्यकता

पडने पर गोरो के साथ वैसी ही कार्यवाही नही करेगे इसका कोई आश्वासन नही दे सकते। इसके उपरात जून १९०८ मे उनका कलकत्ता स्थानान्तरण हो गया।

कलकत्ता आकर उन्होने भारत को सशस्त्र विद्रोह के द्वारा स्वतत्र करने के उद्देश्य मे देशभक्त युवको को क्रातिकारी सगठन मे सगठित करने का कार्य आरम्भ कर दिया। उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण शीघ्र ही (१९०८-१९०९) उनके आस पास देशभक्त क्रातिकारी युवको का एक दल एकत्रित हो गया। बलदेव राय, जनान मित्र, ज्योतिश मजूमदार (चडी) अमरेश काजीलाल सुरेशचन्द्र मजूमदार (जिन्होने बाद को आनन्द बाजार पत्रिका निकाली) देवी प्रसाद राय खुरो) सतीश सरकार चारू घोष, नलनी गोपाल सेन, फणीन्द्र नाथ राय क्षितिश चन्द्र सान्याल, नलनी कान्ता कार और अतुल कृष्ण घोष मुख्य थे।

बगाल के युवक ज्योतीन्द्र नाथ को एक वीर स्वाभिमानी युवक नेता के रूप मे देखने लगे था इसका कारण यह था कि १९०६ मे नदिया जिले मे अपने गाव काया के जगल मे एकाकी ज्योतीन्द्र नाथ ने एक भयकर सिह को केवल कटार से युद्ध करके मार दिया था। उनके उस वीरोचित तथा निर्भयता पूर्ण कार्य से तथा दो गोरे अग्रेज सैनिक अधिकारियो का मान मर्दन करने के कारण वे बगाल के युवको के प्रिय नेता बन गए थे। सिह से युद्ध करने मे वे बहुत घायल हो गए थे। डाक्टर सुरेश प्रसाद सर्वाधिकारी ने उनकी सुश्रुषा की थी। स्वस्थ होने पर ज्योतीन्द्रनाथ ने उस सिह की खाल तथा वह कटार जिससे उन्होने सिह से युद्ध किया था उन्होने कृतज्ञता सूचक डाक्टर सर्वाधिकारी को भेंट कर दी थी। उनके इस वीरोचित कार्य से वे जतीन बाघा के नाम से प्रसिद्ध हो गए।

कलकत्ता पहुच कर ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी ने अपने दल के युवको को क्रातिकारी कार्य तथा समाज सेवा का प्रशिक्षण देना आरम्भ कर दिया। उनका उद्देश्य यह था कि क्रातिकारी दल के क्रातिकारी सदस्य गावो मे फैल जावेंगे और जन साधारण मे राष्ट्रीय क्रातिकारी भावना का प्रसार करेंगे। ज्योतीन्द्र नाथ का विश्वास था कि गुरिल्ला युद्ध के द्वारा ही बृटिश सरकार को अपदस्थ किया जा सकता है परन्तु वे यह भी जानते थे कि छापामार युद्ध तभी प्रभावकारी और सफल हो सकता है कि जब जन साधारण मे देश भक्ति की भावना जागृत हो और वे राष्ट्रीय क्रातिकारी आन्दोलन मे प्रविष्ट हो। इसी उद्देश्य से उन्होने "आत्मोन्नति समिति" के नेता विपिन बिहारी गागुली से सहयोग स्थापित किया और युवको के लिए एक सम्मिलित मेस स्थापित किया जहा युवक छात्र रहते तथा भोजन करते थे। ज्योतीन्द्र नाथ उस मैस को क्रातिकारी विचारो को प्रसारित करने तथा क्रातिकारी कार्य का सचालन करने का केन्द्र बनाना चाहते थे।

जब ज्योतीन्द्र नाथ बगाल के युवकों को क्रातिकारी आन्दोलन के लिए सगठित कर रहे थे तभी सरकार ने मानिक तल्ला गार्डन हाऊस के क्रातिकारी सगठन के केन्द्र पर प्रहार किया। क्रातिकारी आन्दोलन के सभी नेता गिरफ्तार हो गए। उन पर अभियोग चलाए गए और उनमे से अधिकाश को आजीवन काला पानी तथा लम्बे कारावास का दण्ड दिया गया। उस घटना से बगाल का क्रातिकारी आन्दोलन नेतृत्व हीन हो गया। श्री अरविन्दु भी गिरफ्तार हो गए परन्तु उन पर षडयत्र का अभियोग सिद्ध नही हो सका पर वे पाडीचेरी चले गए और उसके उपरान्त क्रातिकारी आन्दोलन

से उनका सम्वन्ध समाप्त हो गया।

ज्योतीन्द्र नाथ का मुख्य लक्ष्य देश मे देशभक्त क्रातिकारी युवको की सेना वना कर उनको छापामार युद्ध का प्रशिक्षण देकर छापामार युद्ध के द्वारा अग्रेजो को देश के वाहर निकालना था परन्तु यदि आवश्यकता हो तो वे राजनीतिक डकैतियों और अधिकारियो की हत्या को नैतिक दृष्टि से अवाच्छनीय नही मानते थे। वे वृटिश साम्राज्य जैसे शक्तिशाली शत्रु से सघर्ष करने मे वे सामान्य परिस्थितियो मे वरती जाने वाली नैतिकता को अपने विचारो पर प्रभावित नही होने देते थे। हिंसा और अहिंसा के प्रश्न पर वे श्री अरविन्दु के अनुयायी थे महात्मा गाधी के अनुयायी नही थे।

२६ नवम्वर १६०८ को ज्योतीन्द्र नाथ ने श्री मनमथ नाथ भौमिक जतीन राय, विनोय राय आदि को साथ लेकर नदिया जिले मे रायता नामक स्थान पर डाका डाला और जो कुछ आभूपण आदि उन्होने लूटे, उन्हे वी. सरकार की आभूपणो की दूकान पर वेच दिए। इसके अतिरिक्त पुलिस सुपरिटेंडेंट पुलिस (गुप्तचर) शमशुल आलम की हत्या मे भी उनका महत्वपूर्ण योग था। यही नहीं कि उन्होंने शमशुल आलम को हत्या का नैतिक समर्थन किया वरन उन्होने अपने शिष्य सतीश सरकार की सहायता से वीरेन नाथ दत्त गुप्ता द्वारा उसकी हत्या करवा दी। वीरेन नाथ दत्त गुप्ता कलकत्ता अनुशीलन समिति का उत्साही तरुण सदस्य था। शमशुल आलम से क्रातिकारी वहुत अधिक क्रुद्ध थे क्योकि वह क्रातिकारियो को दडित करवाने तथा यातना दिलवाने मे अत्यन्त गहरी रुचि लेता था। परन्तु तत्कालीन कारण यह था कि वह एक क्रातिकारी की खोज मे एक मकान की तलाशी लेने गया तो उस गृह की महिलाओ को उसने अपशब्द कहे और उनका अपमान किया।

शमशुल आलम की हत्या से अधिकारी आतकित और अत्यन्त भयभीत हो गए। उनकी मान्यता थी कि पिछले दिनो शमशुल आलम के अतिरिक्त पुलिस इस्पैक्टर नदलाल वनर्जी तथा अलीपुर वम अभियोग मे सरकारी वकील को आवश्यक निर्देशन देने वाले पब्लिक प्रासीक्यूटर आशुतोष विश्वास की हत्याओ और कई डकैतियो के पीछे ज्योतीन्द्र नाथ का हाथ था। अस्तु उन्होने २७ जनवरी १६१० के प्रात काल गिरफ्तार कर लिया उनके विरुद्ध हत्या सम्वन्धी कोई प्रमाण न मिलने के कारण ३० जनवरी १६०८ को रिहा कर दिये गए परन्तु रिहा होते ही उन्हे तुरन्त पुन. गिरफ्तार कर लिया गया। उनके साथ सुरेशचन्द्र मजूमदार, ललित कुमार चटर्जी तथा निवारन चन्द्र मजूमदार को गिरफ्तार करके पुलिस ने हावडा भेज दिया और उन पर डकैती डालने का अभियोग चलाया गया। कुछ दिनो के पश्चात पुलिस ने पुन ज्योतीन्द्र नाथ को अलीपुर सेंट्रल जेल भेज दिया (६ फरवरी १६१०)। पुलिस चाहती थी कि ज्योतीन्द्र नाथ पर शमशुल आलम की हत्या का अभियोग चलाया जावे। उन्होंने वीरेन नाथ दत्त गुप्ता के साथ एक घृणित चाल चली। एक समाचार पत्र मे शमशुल आलम की हत्या के सम्वन्ध मे वीरेन के कृत्य की घोर निन्दा की गई थी। उन्होंने वह समाचार पत्र वीरेन को पढने को दिया और कहा कि तुम्हारे कृत्य की सभी निन्दा करते हैं। आवेश मे वीरेन कह गया कि अन्य व्यक्ति क्या कहते हैं मुझे इसकी तनिक भी चिन्ता नही है मैं अपने नेता ज्योतीन्द्र नाथ की इच्छा को सर्वोपरि मानता हूं। वीरेन के वक्तव्य का आधार लेकर पुलिस ने पुन. ज्योतीन्द्र नाथ को शमशुल आलम

की हत्या के अभियोग मे फसाने का प्रयत्न किया। परन्तु ज्योतीन्द्र नाथ के वकील के आपत्ति करने पर २० फरवरी को अभियोग की सुनवाई नही हो सकी और दूसरे दिन वीरेन को फासी हो गई। पुन ज्योतीन्द्र नाथ को हावड़ा षडयत्र अभियोग मे गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर डकैतिया डालने का अभियोग चलाया गया परन्तु २१ फरवरी १९११ को ज्योतीन्द्र नाथ मुक्त हो गए।

यद्यपि हावडा अभियोग मे ज्योतीन्द्र नाथ मुक्त हो गए परन्तु सरकार ने उनको राजकीय सेवा से मुक्त कर दिया। अपने निर्वाह के लिए उन्होने ठेकेदारी करना आरम्भ करदी। ठेकेदारी उनके लिए केवल जीवन निर्वाह का साधन मात्र थी उनकी सारी शक्ति क्रातिकारी कार्यों मे लगती थी। अभियोग से छुट्टी पाकर उन्होंने अपने क्रांतिकारी सहयोगियो और अनुयायियो को पुन एकत्रित कर सगठित करने का भागीरथ प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया। उस समय तक ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी का यश बंगाल के क्रांतिकारियो मे फैल गया था। वे सभी उनके प्रशसक बन गए थे। नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य (एम एन राय) हावड़ा अभियोग में जेल जीवन मे उनके साथ रह कर उनके भक्त और प्रशसक बन चुके थे और उन्होने उन्हे अपना नेता स्वीकार कर लिया था। चिंगरी पोटा के फानी चक्रवर्ती ने क्रांतिकारियो को ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी के व्यक्तित्व व उनकी प्रतिभा के विषय मे बतलाया और उन्हे उनका प्रशसक बना दिया था। १९१२ में कुशतिया के बिनोय राय के मकान पर प्रमुख क्रातिकारी ज्योतीन्द्र से मिले। उस सम्मेलन मे बिनोय राय, जतीन राय, गोपेनराय, शतीष सान्याल, नलनीकातकर, मन्मतनाथ भौमिक, नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य (एम एन राय) उनके निकट सहयोगी और मित्र हरी कुमार चक्रवर्ती उपस्थित थे सभो ने उनको अपना नेता स्वीकार किया। नलनीकान्तकर तथा अतुल कृष्ण घोष पहले (१९०९) से ही उनके प्रशसक थे। जदुगोपाल मुखर्जी का यद्यपि ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी से १९१३-१४ में प्रत्यक्ष सम्पक हुआ परन्तु नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य से उनकी प्रशसा सुन कर वे उनके भक्त बन चुके थे। इस प्रकार १९१२ तक ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी बगाल के क्रांतिकारियो के सर्व मान्य नेता बन गए।

१९१३ मे वर्दवान और मिदनापुर जिलो मे भयकर बाढ आई समस्त प्रदेश जल मग्न हो गया। ज्योतीन्द्र नाथ के नेतृत्व मे क्रातिकारी युवको ने बाढ पीडितो का सहायता कार्य किया उसमे क्रातिकारियो को दो बडे लाभ हुए एक तो वे ग्रामीण जनता के सम्पर्क मे आए। दूसरा बडा लाभ यह हुआ कि विभिन्न क्रातिकारी दलो के देशभक्त युवक वर्दवान और मिदनापुर जिलो मे जब सेवा कार्य के लिए आए तो वे एक दूसरे के अधिक निकट आए और उन्होने एक दूसरे को समीप से देखा यहा ही सर्वप्रथम जदुगोपाल मुखर्जी का ज्योतीन्द्र नाथ से सम्पर्क हुआ।

जब बाढ सहायता कार्य के समाप्त होने पर क्रातिकारी युवक कलकत्ता तथा अपने-अपने स्थानों को वापस लौटे तो यह विचार उत्पन्न हुआ कि विभिन्न छोटे बडे क्रातिकारी दलो को एक सूत्र मे बधकर एक शक्तिशाली क्रातिकारी सगठन बना लेना चाहिए। उस समय बारीसाल दल अधिक सक्रिय और शक्तिशाली था। मार्च १९१५ मे ज्योतीन्द्रनाथ कलकत्ते की शकर घोष लेन मे एक मेस की छत पर बारीसाल दल के नेताओ से मिले। उस सम्मेलन मे नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य, जदुगोपाल मुखर्जी, अतुल कृष्ण घोष, नरेन घोष चौधरी, जोगेन बसु, और मनोरजन गुप्ता तथा अन्य प्रमुख क्रातीकारी

उपस्थित थे। नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य ने इस बात पर विशेष बल दिया कि जरमन सरकार की सहायता से जो सशस्त्र विद्रोह का आयोजन किया जा रहा है उसकी सफलता के लिए सब क्रांतिकारी दलों को एक सूत्र में बंधकर संगठित हो जाना चाहिए। यद्यपि उस समय दोनों दलों का कोई औपचारिक मिलन नहीं हुआ परन्तु दोनों दलों ने ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी के नेतृत्व में कार्य करना स्वीकार कर लिया। ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी अब जुगान्तर दल के सर्वोच्च नेता बन गए। ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी के दल का विपिन बिहारी गंगुली के दल आत्मोन्नति समिति से पहले ही निकट का सम्बन्ध था प्रथम महायुद्ध के समय जो देश में सशस्त्र विप्लव की तैयारियां की जा रही थी उसके कारण वे एक दूसरे के और भी अधिक निकट आ गए। बारीसाल क्रांतिकारी दल का १९१४ में ही आत्मोन्नति समिति से समझौता हो गया था कि वे दोनों मिलकर क्रांतिकारी कार्यवाही करेंगे। अस्तु ज्योतीन्द्र नाथ, बारीसाल तथा आत्मोन्नति समिति तीनों ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी को अपना नेता स्वीकार करते थे। २६ अगस्त १९१४ को रोडा कम्पनी के पिस्तौलों के सन्दूक की चोरी में तीनों दलों का सक्रिय सहयोग था। इसी समय पूरन दास का मदारीपुर दल भी ज्योतीन्द्र नाथ के निकट आ गया। जब सरकार ने मदारीपुर षडयन्त्र अभियोग को जो कि मदारीपुर दल के मुख्य क्रांतिकारियों पर उनके द्वारा अनेक डकैतियां डालने के सम्बन्ध में चलाया गया था प्रमाण के अभाव में वापस ले लिया तो पूरन दास के कतिपय अनन्य भक्त और अनुयायी चित्तप्रिय राय चौधरी, मनोरंजन सेन गुप्त, निरेनदास गुप्त राधाचरण प्रामाणिक और पालित पावन घोष भी ज्योतीन्द्र नाथ के साथ आ गए। ज्योतीन्द्र नाथ के नेतृत्व में अब सभी क्रांतिकारी दल संगठित हो गए थे, केवल ढका अनुशीलन समिति और चन्दर नगर क्रांतिकारी दल पृथक थे। परन्तु अमरेन्द्र नाथ चटर्जी के माध्यम से श्रमजीवी समवाय के द्वारा उनका भी ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी से सम्बन्ध स्थापित हो गया। श्रमजीवी समवाय बंगाल के सभी क्रांतिकारियों के मिलने का गुप्त स्थान था। अमरेन्द्र नाथ चटर्जी का चन्दर नगर दल के शिरीशचन्द्र घोष, मोतीलाल राय, और नरेन्द्र नाथ बनर्जी से घनिष्ट सम्बन्ध था साथ ही वे ढाका अनुशीलन समिति के अमृतलाल हजारा, तथा प्रतुल चन्द्र गंगुली से भी बहुत निकट थे। श्रमजीवी समवाय का सतीश सेन गुप्ता के द्वारा आत्मोन्नति समिति से भी घनिष्ट सम्बन्ध था। आरम्भ से ही ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी की अमरेन्द्र नाथ से घनिष्ट मित्रता थी और वे बहुधा श्रमजीवी समवाय में जाया करते श्रमजीवी समवाय में ही महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस का ज्योतीन्द्र नाथ से सम्पर्क स्थापित हुआ था।

अमरेन्द्र नाथ, ज्योतीन्द्र नाथ और रासबिहारी बोस दक्षिणेश्वर में पंचवटी में मिले और यह निश्चय हुआ कि भारतीय सेनाओं में विद्रोह की भावना उत्पन्न करके विद्रोह किया जावे। यह भी निश्चय हुआ कि ज्योतीन्द्र नाथ बंगाल में विद्रोह का नेतृत्व करें और वे स्वयं (एप्रिल १९१४) वाराणसी उत्तर भारत के क्रांतिकारियों को संगठित करने के लिए चले गए। दो बार ज्योतीन्द्र नाथ वाराणसी जाकर उत्तर भारत के क्रांतिकारी संगठनों की स्थिति से परिचित हो गए थे। एक बार—दिसम्बर-जनवरी १९१३–१४ में पहली बार वे स्वयं रासबिहारी बोस के साथ गए थे और उन्होंने सारी परिस्थिति का अवलोकन किया था। दूसरी बार जनवरी १९१५ में पुनः वाराणसी गए थे।

जब अगस्त १९१४ मे प्रथम महायुद्ध छिड गया तो भारतीय क्रातिकारियो ने दुगने उत्साह से भारत मे विप्लव कराने की योजना को कार्यान्वित करने का प्रयत्न किया। वह भारत के लिए अत्यन्त अनुकूल समय था। ब्रिटेन जीवन मरण के युद्ध मे जूझ रहा था। भारत की अधिकाश गोरी सेनाए योरोप के रणक्षेत्र मे लड़ने गई थी और भारतीय सेनाए भी मध्यपूर्व के युद्ध मे फसी हुई थी भारत मे बहुत थोड़ी सेनायें रह गई थी। उधर भारतीय क्रातिकारियो ने वर्लिन कमेटी के द्वारा जरमन सरकार से सम्बध स्थापित कर लिया था। जरमन सरकार ने अस्त्र–शस्त्र तथा आर्थिक सहायता देना स्वीकार कर लिया था। परन्तु दुर्भाग्यवश देशद्रोहियो के विश्वासघात के कारण महाविप्लवी नायक रासविहारी वोस द्वारा पेशावर से वगाल तक आयोजित विप्लवी की योजना असफल हो गई (फरवरी १९१५)। रासविहारी वोस की विप्लवी योजना असफल हो जाने पर ज्योतीन्द्र नाथ ने दूसरे विप्लवी की योजना तैयार की। उनका मानना था कि भारत एकाकी ब्रिटिश शासन को भारत से उखाड़ फेंकने मे सफल नही होगा अतएव विदेशी सहायता को वे आवश्यक मानते थे। जरमनी वृटेन का घोर शत्रु था इस कारण उन्होने जरमन सरकार से सहायता लेने का निश्चय किया। जरमन सरकार युद्ध छिड़ने के पूर्व ही भारत मे ब्रिटिश विरोधी भावना से अवगत थी और युद्ध छिडने पर उसका लाभ उठाना चाहती थी। प्रथम महायुद्ध के छिडने पर जो भारतीय क्रातिकारी योरोप तथा अमेरिका मे थे वे वर्लिन पहुचे और उन्होने प्रसिद्ध वर्लिन कमेटी की स्थापना की (सितम्बर १९१४) जिसने जरमन सरकार से अस्त्र–शस्त्र तथा धन की सहायता के लिए एक समझौता कर लिया। वाद को वर्लिन कमेटी का नाम वदल कर इडियन इडिपैंडैस कमेटी (भारतीय स्वतत्रता समिति) कर दिया गया। योजना यह थी कि भारत के अन्दर सशस्त्र विद्रोह हो और भारत की पश्चिमी और पूर्वीय सीमा पर वाहर से आक्रमण किया जावे। मार्च १९१५ मे वर्लिन कमेटी के सदस्य जितेन्द्र नाथ लाहरी वर्लिन से जब भारत आए तो उन्होने सूचना दी कि जरमनी ने अस्त्र शस्त्रो से लदे जहाज भारत भेजे हैं। साथ ही उन्होने वीरेन चट्टोपाध्याय का यह सदेश भी दिया कि भारतीय क्रातिकारियो को वटाविया स्थित जरमन कौंसल के पास अपना दूत भेज कर उनसे सम्पर्क स्थापित करना चाहिए। अमरेन्द्र नाथ के मकान पर प्रमुख क्रातिकारी नेताओ की एक गुप्त सभा हुई जिसमे ज्योतीन्द्र नाथ, अमरेन्द्र नाथ, हरिकुमार चक्रवर्ती अतुल कृष्ण घोष आदि उपस्थित थे। जव जितेन्द्र नाथ लाहिरी ने वर्लिन कमेटी का सदेश सुनाया तो सबो ने नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य को अपना दूत वना कर वटाविया भेजने का निश्चय किया। नरेन्द्र नाथ उस सभा मे उपस्थित नही थे। श्री जदुगोपाल मुखर्जी का कहना है कि जितेन्द्र नाथ लाहरी ने सर्वप्रथम वर्लिन कमेटी का सदेश उन्हे वतलाया और जदुगोपाल मुखर्जी ने ज्योतीन्द्र नाथ को जो कि फरार अवस्था मे खिदरपुर मे छिपे हुए थे उनको वर्लिन कमेटी का सदेश सुनाया।

वर्लिन कमेटी का सदेश मिलने पर उत्तर पाडा मे गगा के किनारे राम घाट पर अर्द्धरात्रि को एक गुप्त वैठक हुई जिसमे, ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी के अतिरिक्त उत्तरपाडा के अमरेन्द्र नाथ चटर्जी, चन्द्र नगर के मोतीलाल राय, मिरणिचन्द्र घोष अतुल कृष्ण घोष, मक्खन लाल सेन और विपिन विहारी गगुली सम्मिलित हुए। इस गुप्त वैठक मे विद्रोह खड़ा करने के पूर्व यथेष्ट अस्त्र शस्त्र तथा धन एकत्रित करने के

प्रश्न पर विचार किया गया। तथा बैंगकाक, बटाविया और शघाई के जरमन कौंसिलो से शीघ्र सम्पर्क स्थापित करने का निश्चय किया गया। ज्योतीन्द्र नाथ ने इस कार्य के लिए धन प्राप्त करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया और फरार क्रांतिकारियो को सुरक्षित स्थान पर छिपा कर रखने का कार्य अमरेन्द्र नाथ चटर्जी को सौंपा गया। जदुगोपाल मुखर्जी की आधीनता मे क्रांतिकारियो ने एक विभाग विदेशो से सम्पर्क स्थापित करने के लिए स्थापित किया था जदुगोपाल मुखर्जी ने आत्माराम के द्वारा बैंगकाक से और नरेन भट्टाचार्य के द्वारा बटाविया से सम्पर्क स्थापित कर लिया। श्याम का केन्द्र बहुत सक्रिय था। श्याम के केन्द्र का बगाल के क्रांतिकारियो से भोलानाथ चटर्जी के द्वारा सम्पर्क स्थापित था।

ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी ने एक सप्ताह मे एक लाख रुपये प्राप्त करने के लिए राजनीतिक डकैतियो का आश्रम लिया। फलस्वरूप गार्डन रुचि और वेलीघाटा की डकैतिया डाली गई १२ फरवरी १९१५ को ज्योतीन्द्र नाथ की आज्ञा से नरेन भट्टाचार्य ने ज्योतीन्द्र नाथ के अनुयायियो को साथ लेकर मेसर्स बर्ड कम्पनी के अठारह हजार रुपये लूट लिए। २२ फरवरी १९१५ को रात्रि के ९ ३० बजे ज्योतीन्द्र नाथ के अनुयायियो ने फणीन्द्र नाथ चक्रवर्ती के नेतृत्व मे वेलीघाटा के एक चावल के व्यापारी की मोटर पर डाका डाला और २२ हजार रुपए उठा लिए। ड्राइवर मारा गया और खजाची घायल हो गया। ३० अप्रिल १९१५ को क्रांतिकारियो ने नदिया जिले के प्रागपुर मे डाका डाला। परन्तु लौटते समय पुलिस से मुठभेड हो गई जिसमे सुशील सेन मारा गया।

गार्डन रचि तथा वेलीघाटा की डकैतियो के कारण पुलिस बहुत चौकन्नी हो गई थी। उन्हे ज्योतीन्द्र नाथ पर सदेह था। ज्योतीन्द्र नाथ ही वास्तव मे इन डकैतियो के सूत्रधार थे। १७ नवम्बर १९१५ को कार्नवालिस स्ट्रीट की एक दूकान पर डाका डाला गया और १५ दिनो के बाद २ दिसम्बर १९१५ को कारपोरेशन स्ट्रीट मे एक डाका डाला गया जिसमे २५ हजार रुपए मिले। यह सारी डकैतियां मोटर टैक्सी के द्वारा डाली गई थी। पुलिस बहुत सतर्क हो गई थी और ज्योतीन्द्रनाथ मुखर्जी को किसी प्रकार गिरफ्तार करने के लिए आकाश पाताल एक कर रही थी। ज्योतीन्द्र नाथ उस समय पथुरिया घाटा स्ट्रीट के एक मकान मे छिप कर सारी क्रांतिकारी कार्यवाहियो का निर्देशन कर रहे थे। पुलिस का भेदिया निरोध हलदर २४ फरवरी १९१५ को प्रातःकाल मकान मे घुस आया और उसने ज्योतीन्द्र नाथ को देख लिया। उसने कहा "अच्छा ज्योतीन्द्र नाथ तो तुम यहां हो। उसकी आवाज सुनते ही नरेन भट्टाचार्य विपिन गगुली और अन्य क्रांतिकारी जो कि ज्योतीन्द्र नाथ के साथ थे बाहर निकल आए। जैसे ही निरोद हलधर ने वहां से जाने के लिए पीठ फेरी एक गोली उसकी रीढ़ को छेदती हुई निकल गई और वह पृथ्वी पर गिर पडा। उसको मरा समझ कर तीन युवक तो साइकिलो पर सवार होकर और शेष अपना सामान लेकर पैदल निकल गए।

पुलिस तुरन्त वहा पहुंची और निरोद को अस्पताल ले गई निरोद यद्यपि गम्भीर रूप मे घायल हो गया था परन्तु होश मे था। उसने बयान दिया कि ज्योतीन्द्र यहा था और उसीने मुझको गोली मारी थी। २६ फरवरी १९१५ को दो बजे मध्याह्न उपरांत निरोद हलदर की मृत्यु हो गई।

ज्योतीन्द्र नाथ और उनके साथी कुछ दिनो तक कलकत्ते मे ही रहे। पुलिस का कहना था कि उन दिनो मे कलकत्ते मे जो अत्यन्त साहसिक क्रातिकारी कार्य हुए थे वे उनके ही कृत्य थे। परन्तु अब ज्योतीन्द्र नाथ के लिए कलकत्ते मे अधिक समय तक ठहरना खतरे से खाली नही था। क्रातिकारी चहते थे कि उनके नेता ज्योतीन्द्र नाथ को छिप कर रहने के लिए कोई निरापद स्थान खोज निकाला जावे। परन्तु ज्योतीन्द्र नाथ उस समय तक कलकत्ते से हटने के लिए तैयार नही थे जब तक कि उनके साथियो विपिन गगुली चित्तप्रिय आदि के लिए छिप कर रहने के लिए कोई निरापद स्थान न ढूढ लिया जावे।

मार्च १६१५ मे ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी, चित्तप्रिय, विपिन गगुली आदि बगनान चले गए। बगनान हाई स्कूल के मुख्य अध्यापक अतुल सेन ने उन्हें अस्थाई आश्रय दिया। उधर नलनी कान्तकार और नरेन भट्टाचार्य ने उडीसा के मयूरभज राज्य मे कासीपादा नामक स्थान ज्योतीन्द्र नाथ तथा उनके साथियो के छिपने के लिए मतीन्द्र नाथ चक्रवर्ती की सहायता से ढूंढ निकाला। वहा स्थान ठीक करके नरेन भट्टाचार्य कलकत्ता वापस आए और नलनीकार ने वहा एक झोपडा ज्योतीन्द्र नाथ तथा उनके सायियो के लिए तैयार करवा लिया नरेन भट्टाचार्य ज्योतीन्द्र नाथ चित्तप्रिय तथा बालासोर के यूनीवर्सल ऐम्पोरियम के सैलेश्वर बोस को लेकर कासी-पादा पहुच गए।

भारत मे सशस्त्र विद्रोह का जो आयोजन ज्योतीन्द्र नाथ कर रहे थे उसके लिए आवश्यक था कि वे कलकत्ते से अपने साथियो से सम्पर्क बनाए रख सकें तथा जरमनी से जो अस्त्र शस्त्र आने वाले थे उसकी उचित व्यवस्था कर सकें। अस्तु वे सुदूर प्रदेश मे नही जा सकते थे यही कारण था कि कासीपादा के वन आच्छादित स्थान को उन्होने अपने छिपने के लिए चुना था।

यह हम पहले ही लिख चुके हैं कि ज्योतीन्द्र नाथ ने नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य (एम. एन राय) को बटाविया मे जरमन कौंसल से सम्पर्क स्थापित करने धन तथा अस्त्र शस्त्र भिजवाने के लिए बटाविया भेजने का निर्णय किया था। अतएव नरेन्द्रनाथ कासीपादा मे ज्योतीन्द्र नाथ से मिलकर और आवश्यक निर्देशन प्राप्त कर अप्रैल १६१५ मे बटाविया चले गए। नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य (एम. एन. राय) ने अपना नाम सी ए. मार्टिन रख लिया तथा योरोपियन वेशभूषा में वे भारत से बटाविया गए। बटाविया मे वे जरमन कौसल से मिले उसके द्वारा उनका सम्पर्क थियोडर हैलफैरिच से हुआ वह बटाविया मे व्यापार करता था। उसने नरेन्द्र नाथ को बतलाया कि भारतीय क्रातिकारियो के लिए यथेष्ट राशि मे अस्त्र शस्त्र तथा कारतूस कराची भेजे गए हैं। नरेन्द्र नाथ ने श्याम, जावा तथा पूर्वीय देशो के अन्य भारतीय क्रातिकारियो से भी सम्पर्क स्थापित कर लिया। श्याम के प्रसिद्ध क्रातिकारी जो कि गदर पार्टी के सक्रिय कार्यकर्त्ता थे उनसे नरेन्द्र नाथ को बहुत सहायता मिली।

सी. ए मार्टिन (नरेन्द्र नाथ) और आत्माराम ने जून और अगस्त १६१५ के महीनों मे बहुत सा जरमन धन भारतीय क्रातिकारियो को भेजा। बटाविया और बैंगकाक से जो पत्र तथा तार आदि भेज़े जाते थे वे श्रमजीवी समवाय, हैरिसन रोड कलकत्ता, यस बी. मुकर्जी सोभा स्टोन एण्ड लाइम कम्पनी, हैरी एण्ड सस के पते पर आते थे। हैरी एण्ड सस हरी कुमार चक्रवर्ती की दूकान थी। हरी कुमार चक्रवर्ती

ज्योतीन्द्र नाथ का विश्वसनीय अनुयायी और नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य का अभिन्न मित्र था। हरीकुमार चतुर्वेदी ने बालासोर में यूनीवर्सल ऐम्पोरियम के नाम से एक साइकिलों की दूकान खोल दी जिसका संचालन शैलेश्वर बोस करते थे। वास्तव में यह दूकान क्रांतिकारियों का गुप्त केन्द्र था जिसके द्वारा ज्योतीन्द्र नाथ कलकत्ते के क्रांतिकारियों से अपना सम्बंध स्थापित किए हुए थे।

उस समय भारतीय क्रांतिकारियों को यह समाचार मिल गया था कि जरमनी ने भारतीय क्रांतिकारियों के लिए दो जहाजों में अस्त्र शस्त्र भेजने की व्यवस्था की है। इस समाचार से ज्योतीन्द्र नाथ और उनके साथियों का उत्साह बहुत बढ़ गया था। वे जरमनी द्वारा भेजे गये अस्त्र शस्त्रों की तीव्रता से प्रतीक्षा कर रहे थे।

वाशिंगटन में जरमन दूतावास के सैनिक सहचारी (मिलीटरी अटैची) फ्राज वान पेपन के आदेश से न्यू यार्क स्थित क्रुप एजेंसी के हैन्स टस्चर ने जनवरी १९१५ में बहुत बड़ी मात्रा में अस्त्र–शस्त्र तथा स्फोटास्त्र (आमर्स तथा ऐम्यूनिशन) खरीदे दिखाने के लिए वे दस ट्रक भर कर अस्त्र शस्त्र तथा स्फोटास्त्र मैक्सिको के बन्दरगाह को भेजे गए पर वास्तव में वे भारत को भेजे गए थे।

बात यह थी कि बर्लिन कमेटी से जब जरमनी के विदेश मंत्रालय की संधि हो गई तो जरमन विदेशी कार्यालय ने वाशिंगटन स्थित अपने दूतावास को अस्त्र शस्त्र और स्फोटास्त्र भेजने तथा बटाविया स्थित अपने दूतों को भारतीय क्रांतिकारियों को आर्थिक सहायता के आदेश दे दिये थे।

अमेरिकन दूतावास ने जो बहुत बड़ी राशि में अस्त्र शस्त्र तथा स्फोटास्त्र अमेरिका में खरीदे उनको कैलीफोर्निया के बन्दरगाह सैन डियागो पर "ऐनी लारसेन" जहाज पर लाद दिया गया। "ऐनी लारसन" सैन डियागो से ६ मार्च १९१५ को चला। मेडीशन कमेटी रिपोर्ट के अनुसार "ऐनी लारसन" जहाज पर तीस हजार राइफलें और प्रत्येक राइफल के लिए चार सौ राऊंड स्फोटास्त्र (ऐम्यूनिशन) तथा दो लाख रुपये थे।

योजना यह थी कि 'ऐनी लारसन' पहले मैक्सिको में दूर सोकोरो द्वीप जावेगा। वह वहां मैवेरिक जहाज की प्रतीक्षा करेगा। मैवरिक जहाज पर सारा सामान लाद दिया जावेगा। मैवरिक उसको भारत ले जावेगा ऐनी लारसन सोकोरो द्वीप के तट पर तीन सप्ताह तक प्रतीक्षा करता रहा उसके पास पेय जल तथा खाद्य सामग्री समाप्त हो गई। अस्तु ऐनी लारसन घूमता रहा और एक महीने के उपरान्त वाशिंगटन के होक्यूयम बन्दरगाह पर पहुंचा जहां संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार ने उसे जब्त कर लिया। उसको रहस्यमय जहाज के नाम से सम्बोधित किया गया।

इसी समय १६ मार्च १९१५ को सान फ्रांसिसको की स्टैंडर्ड आयल कम्पनी के एक पुराने तेल वाहक जहाज मैवेरिक को जरमनी ने खरीद लिया। सैन फ्रांसिसको के जरमन कौंसल ने उसकी मरम्मत करवाई। २३ अप्रैल १९१५ को मैवरिक जहाज लास ऐंजिल्स के समीप सैन पैड्रो से चला उस जहाज पर छद्म वेष में एक जरमन इंजिनियर तथा खान सामा के वेष में पांच भारतीय थे। वे अपने को ईरानी बतलाते थे। जरमन इंजिनियर अपने को स्वीडिश इंजिनियर घोषित करता था। योजना यह थी कि सभी राइफिलें और मशीनगन तेल की टंकी में रखकर उसमे तेल भर

दिया जावे और स्फोटास्त्र (ऐम्यूनिशन) खाली टकी मे रख दिया जावे। यदि मार्ग में शत्रु के जहाज उसको रोकें तो उसको डुवो दिया जावे। मैंवरिक को पहले सोकारो द्वीप जाना था वहा ऐनी लारसन जहाज से अस्त्र शस्त्र तथा स्फोटास्त्र लेकर अनजेर, जावा जाना था। अनजेर पर उसे एक छोटी नौका मिलने वाली थी जिस पर सकेत चिन्ह का झडा फहराता होगा। वह छोटी नाव जैसा मैंवरिक जहाज के कप्तान को आदेश दे उसे उसके अनुसार करना था। यदि अनजेर पर वह नौका न मिले तो जहाज को वैंगकाक जाना था जहा एक जरमन पायलट एक छोटी नौका से जहाज पर आवेगा और जहाज तथा उसके माल को अपने अधिकार मे ले लेगा इसी आशय की सूचनाए वटाविया, मनीला और होनो लूलू भेजदी गई।

परन्तु जव मैंवरिक जहाज सोकोरो द्वीप पहुचा तो उसे ज्ञात हुआ ऐनी लार-सन जहाज उसकी प्रतीक्षा करने के उपरात चला गया। एक महीने मैंवरिक इस आशा से प्रतीक्षा करता रहा कि ऐनी लारसन उसे मिल जावे। ऐनी लारसन के मिलने पर मैंवरिक हवाई द्वीप के हिलो वदरगाह की ओर चला और १४ जून १९१५ को वहा पहुचा। वहा पहुचने पर उसको एक जरमन जहाज के कप्टेन से आदेश मिला कि वह हवाई द्वीप के दक्षिण पश्चिम मे जानसन द्वीप को चला जावे और वहा ऐनी लारसन की प्रतीक्षा करे। परन्तु इस षडयंत्र का समाचार स्थानीय पत्रो मे प्रकाशित हो गया अतएव मैंवरिक को आदेश हुआ कि वह जावा के अनजेर वन्दरगाह चला जावे। मैंवरिक २० जुलाई १९१५ को जावा पहुचा और वटाविया के वन्दरगाह तडजाग प्रिओले वन्दरगाह के वाहर दूर पर कुछ समय तक खडा रहा। डच अधिकारियो को सदेह हो गया और उन्होंने डच युद्धपोत के द्वारा उसको अपने अधिकार मे ले लिया।

योजना यह थी कि मैंवेरिक जहाज सु दरवन मे स्थित हुगली के मुहाने पर रायमगल स्थान पर अस्त्र शस्त्र उतारेगा। ज्योतीन्द्र मुकर्जी ने जहा पुलिस की दृष्टि से अपने को वचाने के लिए काप्तीपादा गाव मे आश्रय लिया था वहा वह जरमनी से आने वाले अस्त्र शस्त्रो की भी प्रतीक्षा कर रहा था। ज्योतीन्द्र के पास यह सूचना पहुच चुकी थी कि जरमनी ने 'मैंवेरिक' तथा 'हैनरी' जहाजो मे अस्त्र शस्त्र भेजे हैं। ज्योतीन्द्र ने यह तय किया कि सु दर् वन के राय मगल नामक स्थान मे दोनो जहाजो के अस्त्र शस्त्र उतार कर पूर्व निश्चित स्थानो मे छिपा दिये जावें। इस कार्य के लिए उन्होने वहा के एक देशभक्त जमीदार नूर नगर के जतीन राय को क्रातिकारी दल का सदस्य वना लिया था। उस जमीदार ने अस्त्र शस्त्र जहाजो पर से उतार कर रात्रि मे उसे गन्तव्य स्थान पर पहुचा देने की सारी तैयारिया कर ली थी। वहुत सी लालटैनें तथा भरोसे के आदमी उसने इकट्ठे कर लिए थे क्योंकि रात्रि मे ही अस्त्र शस्त्र जहाजो से उतारे जा सकते थे। परन्तु देश को अभी परतत्र रहना था। जैको स्लावाकिया के क्रातिकारियो के विश्वास घात के कारण व्रिटिश सरकार को यह पता लग गया कि जरमनी भारतीयो को अस्त्र शस्त्र तथा धन की सहायता दे रहा है। व्रिटिश सरकार को इस वात का भी पता चल गया किन स्त्रोतो से भारतीय क्रातिकारियो के पास धन पहुँचता है और दो जहाज अस्त्र शस्त्र लेकर भारत जा रहे है। वात यह थी कि उस समय तक सयुक्त राज्य अमेरिका तटस्थ राष्ट्र था वह महायुद्ध मे सम्मिलित नही हुआ था। अस्तु सभी परतत्र देशो के क्रातिकारियो का जो कि अपने देश को स्वतत्र करना चाहते थे उनका एक सम्मेलन अमेरिका मे हुआ।

जेकोस्लावाकिया भी आस्ट्रिया साम्राज्य की दासता से मुक्ति पाने का प्रयत्न कर रहा था। जेकोस्लावा किया के क्रातिकारियो को फ्रैंच तथा ब्रिटिश सरकार मे बहुत अधिक आर्थिक सहायता मिलती थी। उस अन्तर्राष्ट्रीय क्रातिकारियो के सम्मेलन मे भारतीय क्रातिकारियो ने जेकोस्लाविया के क्रातिकारियो को यह बतला दिया कि जरमन सरकार से हमारी सधि हो गई है। जब ब्रिटेन महायुद्ध मे फसा है हम जरमन सहायता से भारत मे सशस्त्र विद्रोह के द्वारा ब्रिटिश शासन को उखाड फेंकेंगे। जेकोस्लावाकिया के क्रातिकारियो ने भारतीय क्रातिकारियो के साथ विश्वासघात किया और यह भेद फ्रैंच राजदूत को बतला दिया। फ्रैंच सरकार ने यह सूचना ब्रिटिश सरकार को दे दी। भारत मे धर पकड आरम्भ हो गई ब्रिटिश सरकार ने धन आने के समस्त स्रोतो को बन्द कर दिया और अस्त्र शस्त्र ले जाने वाले उन दोनो जहाजो को भारत नही पहुँचने दिया। अमेरिका तथा पूर्व के देशो मे जो भारतीय क्रातिकारी थे या तो उन्हें पकड लिया गया अथवा उनको वहा से जरमनी तथा तटस्थ राष्ट्रो को जाना पडा।

यह तो हम पहले ही कह आए हैं कि 'ऐनी लारसन' जहाज का मेवेरिक जहाज से सम्पर्क नही हो सका। वह जून के अन्त मे संयुक्त राज्य अमेरिका लौट गया और उसके अस्त्र शस्त्र संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार ने जब्त कर लिए। मेवेरिक जहाज को जावा मे डच सरकार ने अपने अधिकार मे ले लिया। 'हैनरी' जहाज मैनिला से पार हो गया उसमे अस्त्र शस्त्र तथा स्फोटास्त्र थे वह शघाई पहुंचा। उन दिनो शघाई पर लगभग ब्रिटेन तथा फास का अधिकार स्थापित हो गया था इस कारण उनके लिए 'हैनरी' को अपने कब्जे मे ले लेना सरल था। उसके अस्त्र शस्त्र शंघाई पर उतार लिए गए और उसे सेलेबीज की ओर जाने दिया गया। जेकोस्लावा किया के क्रातिकारियो द्वारा वाशिंगटन के राजदूत को भारतीय क्रातिकारियो की योजना का सारा भेद बतला देने का परिणाम यह हुआ कि भारत सरकार भी चौकन्नी हो गई। हटिया, राय मगल और बालासोर जहा इन जहाजो के अस्त्र शस्त्र उतरने थे वहां भी सरकार सतर्क थी। भारत सरकार ने गंगा के मुहाने मे बहुत अधिक पुलिस नियुक्त करदी थी और पूर्वी तट पर नौआखाली चटगाव से उडीसा तक के सभी समुद्री स्थानो पर जहा कि जहाज अस्त्र शस्त्र उतार सकते थे पुलिस सतर्क थी।

विद्रोह की योजना:—

जब बटाविया स्थित जरमन कौंसल मे यह तय हो गया कि रायमगल पर अस्त्र शस्त्र उतारे जावेंगे तो आत्माराम ने बैंगकाक से १३ जून को बी. के. राय को और १७ जून को भोलानाथ चटर्जी को निम्न आशय के तार दिए। (१) माल भेज दिया गया है दस पद्रह दिन मे पहुंच जावेगा। (२) हाथीदात और चदन की लकडी रवाना करदी गई दस दिन मे पहुच जावेगी।

यह तार पाकर क्रातिकारी अस्त्र शस्त्रो को ज्योतीन्द्र नाथ के निर्देशन के अनुसार पूर्व निर्धारित स्थानों पर पहुचाने की व्यवस्था मे लग गए। नरेन भट्टाचार्य भी अस्त्र शस्त्र भिजवाने की व्यवस्था करके जून १९१५ मे कलकत्ता लौट आए जिससे कि वे भी सशस्त्र विद्रोह मे भाग ले सकें और व्यक्तिगत रूप से क्रातिकारियो को जरमनी से कितनी और किस प्रकार की सहायता मिलेगी यह सदेश दे सकें। गदर दल के आत्माराम ने बैंगकाक के एक वकील कुमुद नाथ मुखर्जी को सदेश देने और थैली

देने के लिए कलकत्ता भेजा। वह ३ जुलाई १६१५ को कलकत्ता पहुंचे सभी क्राति-कारी नेताओ से मिल कर तथा थैली भेंट करके २४ जुलाई १६१५ को कलकत्ते से बटाविया होते वैंगकाक वापस लौट गए। वे अपने साथ "थ्योडोर हैलफेरिच" बटा-विया के जरमन कौसल के लिए भारतीय क्रातिकारियो का यह सदेश भी लेते गए कि भारतीय क्रातिकारियो को अस्त्र शस्त्रो, स्फोटको तथा सैनिक प्रशिक्षण देने वाले सैनिक विशेषज्ञो की और आवश्यकता है।

भारतीय क्रातिकारियो की योजना गुरिल्ला युद्ध (छापा मार युद्ध) आरम्भ करने की थी। मोटे रूप मे सशस्त्र विद्रोह की रूप रेखा नीचे लिखे अनुसार थी।

(१) सशस्त्र विद्रोह बालासोर के गावो से आरम्भ किया जाना था वहा देश की स्वतत्रता की घोषणा करके तिरगा ध्वज फहराया जाने वाला था।

(२) बालासोर के गावो से आरम्भ होकर वि ोह बगाल की खाडी के तट की ओर फैलता और उसका लक्ष्य चादीपुर गाव की सैनिक बैरिको पर आक्रमण करना होता।

(३) इसके उपरात विद्रोहियो का लक्ष्य चक्रधरपुर के शस्त्रगार को लूटना था। उस उद्देश्य से चक्रधरपुर मे एक दूकान खोल दी गई थी। उसका सचालन भोलानाथ चटर्जी कर रहे थे। जदगोपाल उसका निर्देशन करते थे।

(४) सिंघभूमि जिले के "कोलो" (आदि वासी जाति) को विद्रोह करने के लिए उकसा कर विद्रोह मिदनापुर और वीर भूमि जिलो मे फैलता। वहा सतीश चक्रवर्ती को अजय नदी का पुल उडा देने के लिए नि ुक्त कर दिया गया था।

(५) उसके उपरात बगाल नागपुर रेलवे को उडा देने का कार्यक्रम था। स्वय ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी रेल को उडाने वाले थे।

(६) अन्त मे फोर्ट विलियम पर आक्रमण होता और भारतीय स्वतत्रता का तीन रगो वाला ध्वज उस पर फहराया जाता।

खिदरपुर मे इस विद्रोह की तैयारी करने के लिए एक केन्द्र खोला गया था। खिदरपुर स्कूल के अध्यापक दुर्गाचरन बोस और आशुतोष घोष उसके सचालक थे। उस केन्द्र मे रोशनी से सकेत देने, झडी से सकेत देने, तार देने सकेत भाषा बनाने, आदि का प्रशिक्षण दिया जाता था। हजारो की सख्या मे तिरगे झडे और खाकी वर्दिया तैयार की गई थी। रेलवे के पुलो को उडाने के लिए डायनै माइट इकट्ठा कर लिया गया था।

सैडिशन कमेटी रिपोर्ट मे इस सम्बन्ध मे लिखा है कि क्रातिकारियो का मानना था कि बगाल मे जितनी सेना है उसको पराजित करने के लिए उनके पास आव-श्यकता से अधिक सैनिक शक्ति है। उन्हे केवल भय था कि बगाल के बाहर से सेना न आ जावे। इसी उद्देश्य से उन्होने बगाल मे आने वाली मुख्य तीन रेलो को नष्ट कर देने का निश्चय किया था। ज्योतीन्द्र नाथ बालासोर से मदरास रेलवे को ठप्प करने वाले थे। भोलानाथ चटर्जी बगाल नागपुर रेलवे को नष्ट करने के लिए चक्रधर-पुर भेजे गए थे। सतीश चक्रवर्ती अजय जाकर ईस्ट इडिया रेलवे के पुल को उडाने वाले थे। नरेन्द्र चौधरी और फणीन्द्र चक्रवर्ती को हटिया जाने का आदेश था जहा कि विद्रोहियो की सेना इकट्ठी होने वाली थी। विद्रोहियो की वह सेना पहले पूर्वीय बगाल के जिलो पर अधिकार करती और फिर कलकत्ते की ओर बढती। कलकत्ते मे विद्रोही

दल नरेन भट्टाचार्य और विपिन गागुली के नेतृत्व मे पहले कलकत्ते के तथा उसके आस पास के शस्त्रागारो पर अधिकार करता और फिर फोर्ट विलियम पर अधिकार कर लेता और फिर कलकत्ता पर अधिकार करता (पृष्ठ ८२–८३ सेडशिन कमेटी रिपोर्ट)।

ज्योतीन्द्र नाथ का कहना था कि फोर्ट विलियम ब्रिटिश सत्ता का प्रतीक है इस कारण उस पर अधिकार हो जाने से समस्त देश पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ेगा और देश मे विद्रोह की ज्वाला भभक उठेगी। यही कारण था कि वे फोर्ट विलियम को लेने पर वहुत वल देते थे।

यह हम पहले ही लिख चुके हैं कि जैकोस्लावाकिया के क्रातिकारियो के विश्वासघात के कारण विद्रोह की सारी योजना असफल हो गई। श्रमजीवी समवाय, हैरी एण्ड सन्स आदि विद्रोही केन्द्रो पर छापे मारे गए। वहुत से क्रातिकारी गिरफ्तार हो गए।

७ अगस्त १९१५ को कलकत्ते मे, जव पुलिस ने कलकत्ते की हैरी एण्ड सन्स की दूकान पर छापा मारा तो उन्हे ज्योतीन्द्र नाथ मुखर्जी के काप्तीपादा मे होने के सकेत मिले और वालासोर मे यूनीवर्सस ऐम्पोरियम का पता चला। अस्तु पुलिस अधिकारी वालासोर के कलक्टर के साथ काप्तीपादा (६ सितम्वर १९१५ को) गए। काप्तीपादा जागीरदार के दीवान से मिले। ६ सितम्वर १९१५ को एक स्थानीय व्यक्ति ने ज्योतीन्द्र नाथ को सूचित किया कि काप्तीपादा के डाक वगले मे रात्रि को ठहरने के लिए हाथियो पर चढकर पुलिस आई है। ज्योतीन्द्र नाथ समझ गए कि पुलिस उनको गिरफ्तार करने के लिए ही काप्तीपादा आई है। अस्तु उसी रात्रि को चित्तप्रिय और मनोरजन को साथ लेकर वे तलदिहा की ओर चल पड़े उन्होंने काप्तीपादा के मकान को छोड दिया। प्रात.काल जब पुलिस ने उनके मकान की तलाशी ली तो वहा कोई नही था। जाने से पूर्व ज्योतीन्द्र नाथ ने सव पत्र इत्यादि नष्ट कर दिए थे उस मकान के आगन मे एक पेड था जिस पर गोलियो के निशान थे। उससे यह प्रतीत होता था कि निशाना लगाने का अभ्यास किया गया था। जव ज्योतीन्द्र नाथ को पता चला कि काप्तीपादा मे पुलिस आ गई तो वे अन्तिम युद्ध के लिए तैयार हो गए। उन्होंने निश्चय कर लिया था कि यदि आवश्यकता पडी तो वे शत्रुओ से युद्ध करते हुए वीर गति को प्राप्त करेंगे।

ज्योतीन्द्र नाथ और उनके साथी अपने जीवन के प्रति कितने निर्मोही और उदासीन थे—यह एक घटना से पता चलता है जव ज्योतीन्द्र नाथ और चित्तप्रिय काप्तीपादा चले आए तो कुछ दिनो के पश्चात नरेन और मनोरजन भी वहां पहुच गए। गाव के उन्मुक्त वातावरण मे वे खेल रहे थे। मनोरजन के हाथ मे एक मौसर पिस्तौल था। उसने व्यग में नरेन की ओर पिस्तौल तान कर पूछा कि क्या तुम्हें मृत्यु से तनिक भी भय नही लगता। नरेन ने उत्तर दिया कि तुम परीक्षा करके देखलो मुझे मृत्यु मे तनिक भी भय नही लगता आखिर हमे मरना है। मनोरजन का विश्वास था कि पिस्तौल मे गोली नही है अस्तु उसने हसी मे घोडा दवा दिया। पिस्तौल मे गोली भरी थी वह जाकर नरेन की टाग मे लगी। परन्तु नरेन तनिक भी विचलित नही हुआ। उन देशभक्त क्रातिकारियो ने अपना जीवन मातृ भूमि की वलिवेदी पर अर्पित कर दिया था फिर उन्हे जीवन से मोह क्यो होता। चिकित्सा की वहा कोई व्यवस्था नही थी। कुनैन की गोलियो को पीस कर उसके पाऊडर को घाव मे भर

दिया। कलकत्ता से जब डाक्टर ने आकर परीक्षा की तो ज्ञात हुआ कि गोली मांस मे से होकर निकल गई हड्डी मे चोट नही आई। कुछ समय के उपरात नरेन का घाव ठीक हो गया।

जैकोस्लावाकिया के क्रातिकारियो के विश्वास घात के फलस्वरूप जब भारत सरकार को जरमनी द्वारा भारतीय क्रातिकारियो को सहायता देने की सूचना मिल गई तो भारत सरकार को यह भी पता चल गया कि बटाविय और बैंगकाक के जरमन कौसल के द्वारा भारतीय क्रातिकारियो को सहायता प्राप्त होती है और कलकत्ता की हैरी एण्ड सन्स तथा बालासोर मे उसकी शाखा यूनीवर्सल ऐम्पोरियल वास्तव मे क्रातिकारियो के सम्पर्क केन्द्र हैं अस्तु पुलिस उन पर दृष्टि रख रही थी।

काप्तीपादा मे अपने आश्रय स्थान के अतिरिक्त ज्योतीन्द्र नाथ ने तलदिहा मे एक दूसरा केन्द्र स्थापित कर दिया था जो काप्तीपादा से ६ मील की दूरी पर था। नरेन और ज्योतिश चन्द्र पाल वहा भेजे गए। वे वहा खेती करने और दूकान खोलने के लिए भेजे गए थे जिससे कि वे ग्रामीण जनता मे कार्य कर सकें। पुलिस से मुठभेड होने के ६ दिन पूर्व ही तलादिहा का केन्द्र खोला गया था।

यूनीवर्सल ऐम्पोरियम की ५ सितम्बर १९१५ को तलाशी हुई। पुलिस ने शैलेश्वर और उनके साथी को गिरफ्तार कर लिया। उनको कठोर यातनायें देने पर भी उन्होने कुछ नही बतलाया। निराश होकर पुलिस अधिकारी जब वहा से चलने वाले थे तब उन्हे एक कागज का टुकडा फर्श पर पडा मिल गया जिसमे काप्तीपादा का उल्लेख था। उस कागज के टुकडे से काप्तीपादा का उन्हें पता चल गया। बालासोर के जिलाधीश, ने तुरन्त एक सैनिक टुकडी लेकर तथा कलकत्ता से आए उच्च पुलिस अधिकारियो डैनहम और बर्ड को साथ लेकर, वे हाथियो पर सवार होकर काप्तीपादा आए। इतने अधिक अधिकारियो के साथ सेना की टुकडी होने के कारण गाव मे हडकम्प मच गया। गाव के लोग ज्योतीन्द्र नाथ को अत्यन्त श्रद्धा से देखते थे वे उन्हे महात्मा कहते थे यही कारण था कि उनमे से एक ने दौड कर ज्योतीन्द्र नाथ को पुलिस तथा सेना के काप्तीपादा आने की सूचना दे दी।

यदि ज्योन्तीन्द्र नाथ चाहते तो वहा से तुरन्त ही चल कर रात्रि मे पुलिस की पहुच के बाहर हो जाते परन्तु ज्योतीन्द्र नाथ अपने साथियो को खतरे मे छोड कर अपनी सुरक्षा का स्वप्न मे भी ध्यान नही कर सकते थे। अस्तु सब कागज पत्रो को नष्ट करके ज्योतीन्द्र नाथ, चित्तप्रिय और मनोरजन को साथ लेकर तलादिहा मे नरेन और ज्योतीश पाल को साथ लेने के लिए तलदिहा की ओर चल दिए। इसमे कई घटो का समय नष्ट हो गया।

रात्रि पड जाने से जिला मजिस्ट्रेट ने प्रात काल होने की प्रतीक्षा की और प्रात होते ही ज्योतीन्द्र नाथ के आश्रय स्थल की तलाश की। लक्ष्य भेद के लिए पेड पर बहुत ऊचाई पर रक्खे गए तख्तो में तथा कच्ची दीवार मे गोलियो के चिन्ह थे कुछ गोलिया और बारूद भी प्राप्त हुई परन्तु वहा कोई क्रातिकारी नही था। पुलिस को पूछताछ से यह ज्ञात हो गया कि उनके कुछ साथी तलदिहा मे रहते हैं।

उधर ज्योतीन्द्र नाथ तलदिहा से नरेन और ज्योतिश पाल को लेकर बालासोर रेलवे स्टेशन की ओर गए। वे हरिपुर अरिया गाव पहुचे जो बालासोर रेलवे स्टेशन से बहुत दूर नही था, परन्तु वहा जाकर उन्हें सदेह हो गया कि बालासोर

रेलवे स्टेशन पर खतरा है।

अस्तु वे पीछे लौट गए और जगल को छोड कर खुले मैदान मे आ गए। वे यह खोज रहे थे कि वच कर निकल जाने का क्या कोई दूसरा रास्ता हो सकता है।

जव कासीपादा मे क्रातिकारी नही मिले तो मैजिस्ट्रेट ने मयूरभंज राज्य की पुलिस को यह आदेश दे दिये कि वे कातिकारियो की खोज जारी रक्खें और वह स्वय वालासोर लौट गया। उसने सभी रास्ते जो वालासोर को जाते थे रुकवा दिए उन पर पहरा लगा दिया गया। क्योकि मैजिस्ट्रेट का विचार था कि क्रातिकारी वालासोर रेलवे स्टेशन पहुँचने का प्रयत्न करेगे। मैजिस्ट्रेट ने जिले के प्रत्येक पुलिस मैन को आदेश दे दिये कि वह जो भी अजनवी व्यक्ति दिखलाई पडे उस पर दृष्टि रक्खें। साथ ही उसने सारे प्रदेश मे यह समाचार प्रसारित करवा दिया कि कुछ वंगाली डाकू जो जरमनी के ऐजेंट हैं उस प्रदेश मे घूम रहे हैं। जो उनकी सूचना पुलिस को देगा उसको पारितोपिक दिया जावेगा।

एक दूकानदार जिसकी वालासोर मे दूकान थी जहा वह प्रतिदिन जाता था जव आठ सितम्वर को वालासोर से घर (गाव) को लौट रहा था तव उसने नाव घाट पर एक पुलिस मैन को नाव के मल्लाह से यह कहते सुना कि जो भी वाहर का आदमी उधर आवे उस पर दृष्टि रक्खे और यदि कोई वाहरी आदमी दिखलाई दे तो उसकी पुलिस को सूचना दे दे। गाव मे लौटने पर उसने अपने भाई जो किसान था उससे यह वात कही और कहा कि वह भी ध्यान रक्खे।

६ सितम्वर वृहस्पतिवार को प्रातःकाल ६ वजे जवकि वह किसान अपनी नाव को नदी के किनारे खूटे मे वाध रहा था तो दूसरे किनारे पर पाच अजनवी लोग दिखाई पडे। उन्होने उसे आवाज दी कि हम लोग सरकारी आदमी हैं और नदी के पार जाना चाहते हैं। उसने यह कह कर उन्हे ले जाने से मना कर दिया कि उसकी नाव सरकारी नही है और इतनी छोटी है कि यदि वह इतने आदमियो को उसमे सवार करले तो वह वोझ मे डुव जावेगी। तव उन अजनवियो ने यह प्रस्ताव किया कि वह उनके कपडो और झोला को पार पहुंचा दे। वे स्वय तैर कर नदी पार कर लेंगे। वह आदमी उनके कपडे और झोले भी ले जाने को तैयार नही हुआ। उसने सुझाव दिया कि थोडी ही दूर पर चार नावें हैं वह उनमे से किसी एक से नदी पार कर सकते हैं। इस पर ज्योतीन्द्र नाथ और उनके साथी वताए हुए स्थान पर गए और नाव द्वारा उन्होने नदी पार की। उस समय उस किसान के मन मे अपने भाई की कही हुई वात का ध्यान आया और यह देखने के लिए कि वे कौन लोग हैं वह भी उस स्थान पर चला गया जहा वे लोग दूसरे किनारे पर उतरे थे। नदी के तट पर उतर कर वे अजाने लोग जगल की तरफ चल दिए। तव उस आदमी ने चिल्ला कर कहा कि उधर कोई सडक नहीं है। उस पर वे अजनवी उस आदमी की ओर मुडे। तव तक उनके आस पास मे भीड जमा हो गई। उनमे से एक व्यक्ति ने उनसे पूछा कि वे कौन हैं। जव उसे कोई संतोष जनक उत्तर नही मिला तो उसको सदेह हो गया।

उसने आसपास के लोगो से कहा कि एक आदमी जाकर दफेदार को सूचना दे आवे वह तथा उसके अन्य साथी उन लोगो पर तव तक निगाह रक्खेंगे। वह अजनवी कुछ दूर तक नदी के किनारे चलते रहे फिर वे वाघ की सडक पर जो कि नदी के समानान्तर जा रही थी उस पर आ गए। क्योंकि अजनवी यह तय नहीं कर पा रहे

थे कि-किस रास्ते जाया जावे अस्तु उसी आदमी ने उनसे पूछा कि वे कहा जाना चाहते हैं वह उन्हे रास्ता दिखला देगा। उन अजनवी लोगो ने कहा कि वे रेल की (लाइन) पटरी पर जाना चाहते हैं इस पर उस आदमी ने उनसे कहा कि वे बाध की सडक पर उत्तर पश्चिम की ओर चले जावे। अतएव वे अजनबी उस सडक पर कुछ दूर तक गए पर कुछ मिनटो के उपरात वे गोविन्दपुर गाव के पास आराम करने के लिए बैठ गए। जब वे आराम कर रहे थे तो वह आदमी और अधिक गाव वालो को बुलाने के लिए वहा से खिसक गया। जब वह वापस लौटा तो उसने देखा कि वे अजनवी आगे जा रहे हैं। दफेदार के भाई ने दौड कर उनका रास्ता रोक लिया और उनसे उसके साथ थाने को चलने के लिए कहा। उन्होने उसे धक्का देकर हटा दिया। जब दुबारा उसने उन्हे रोकना चाहा तो उन्होने पिस्तौलें निकाल ली और उस भीड को जो तब तक बढ गई थी डराने के लिए हवा मे फायर किए। भीड उनसे कुछ दूर हो गई पर वह उनका पीछा बराबर कर रही थी। इस प्रकार वे अजनबी लोग ११ बजे दुमुदा गाव पहुच गए।

जब गाव वालो ने देखा कि उनकी गोली से किसी को कोई हानि नही पहुची तो उन्होने उन अजनवियो को घेरना और उनके पास पहुचने का प्रयत्न किया। जब वह व्यक्ति उनसे पच्चीस कदम पर पहुच गया तो उन्होने गोली चलाई। मनोरजन के पिस्तौल की गोली राजू महती के लगी और वह गिर गया। इस पर चार व्यक्तियो को छोड कर सभी गाव वाले भाग गए। दफेदार का भाई और अन्य तीन बालासोर पुलिस और मैजिस्ट्रेट को सूचना देने के लिए चल दिए। बालासोर उस स्थान से आठ मील था। ज्योतीन्द्र नाथ और उनके साथी कुछ दूर चलने के उपरात बैठ गए और उन्होने थोडा जलपान किया। गाव वाले उनके पीछे थे उन्होने अब बाघ की सडक को छोड दिया और पूर्व की ओर चलने लगे।

सडक पार करके एक छोटी नदी मिली उसको उन्होने चलकर पार किया। उन्होने नदी पार करते समय अपने कपड़ो और रिवालवरो को अपने सर पर बांध लिया था। वे एक एक करके नदी को पार कर रहे थे। बीच बीच मे कभी कभी भीड को दूर रखने के लिए गोली चलाते जाते थे। उसके उपरात वे चसखड नामक गाव की ओर बढने लगे। एक धान के खेत मे एक पुराने तालाब के बाध पर एक ऊची बाभी पर (चीटियो द्वारा बनाया गया मिट्टी का ऊचा ढेर जिस पर झाडिया उगी हुई थी) खडे हो गए। वे उस स्थान से समस्त प्रदेश को देख सकते थे परतु झाडियो के कारण उनको कोई नही देख सकता था।

उसी समय बालासोर से आने वाले पुलिस और सेना दल बूढा बालग नदी के किनारे पहुच गया। मैजिस्ट्रेट ने पुलिस को दो दलो मे बाट दिया था। एक दल मयूरभज की सडक से खेतो मे होता हुआ बढा और दूसरा मिदनापुर सडक से चला। दोनो दल उस स्थान पर आकर मिल गए जहा थानेदार ने एक सफेद झडा गाड दिया था। थानेदार दफेदार के साथ पहले ही वध पहुच चुका था।

मैजिस्ट्रेट ने ३०३ स्पोटिंग राइफिल से गोली इस उद्देश्य से चलाई कि क्रातिकारी जान जाय कि पुलिस के पास लम्बी मार वाली राइफिलें हैं और आत्म समर्पण कर दें क्रातिकारियो ने भी गोली का जवाब गोली से दिया और लगभग बीस मिनट तक दोनो ओर से गोलिया चलती रही पुलिस दल मे कुछ लोग हताहत हो गए।

वीस मिनट के उपरात गोली चलना वंद हो गई और दो व्यक्ति हाथ ऊचा उठा कर खडे हो गए। मैजिस्ट्रेट ने गोली चलना रुकवादी। पुलिस दल सतर्कता पूर्वक सावधानी से आगे वढा और क्रातिकारियो के पास पहुचा तो ज्ञात हुआ कि एक व्यक्ति मर चुका था और दो घायल हो गए थे। मैजिस्ट्रेट ने शेष को गिरफ्तार कर लिया और मृतक तथा घायलो के साथ उन्हे वालासोर ले आया। मृत शव को शव लय मे भेज दिया गया घायलो को हास्पिटल भेज दिया गया और जो गिरफ्तार किए थे उ हे हिरासत मे भेज दिया गया।

चित्त प्रिय राय चौधरी घटना स्थल पर ही मर गए, ज्योतीन्द्र नाथ वहुत अधिक घायल हो गए थे उ हे ९ सितम्वर को ८ ३० वजे रात्रि को हास्पिटल मे भर्ती कर दिया गया। उनके पेट तथा वाये हाथ मे गहरे घाव थे उनका वाया हाथ क्षत विक्षत हो गया था। ज्योतिश पाल के एक गोली पीठ की वाई तरफ लगी और छाती से होकर निकल गई। ज्योतीन्द्र नाथ तथा ज्योतिश पाल को हास्पिटल ले जाया गया निरेन और मनोरजन को कारागार भेज दिया गया। ज्योतीन्द्र का आपरेशन किया गया और पट्टी वाध दी गई। परन्तु ज्योतीन्द्र नाथ ने पट्टी को फाड दिया और टाको को तोड दिया। पुन रक्त वहने लगा और दूसरे दिन प्रात काल पाच वजे उस वीर की मृत्यु हो गई। अपनी मृत्यु को स्वय निमत्रित कर वीर ज्योतीन्द्र नाथ ने अपनी वहिन की इच्छा पूरी कर दी। हावडा पडयत्र अभियोग के समय उनकी वहिन ने ज्योतीन्द्र को लिखा था : "मैं दूसरी वार शेर को पिजडे मे वन्द हुआ न देखू ।"

ज्योतीप चन्द्र पाल का घाव ठीक हो गया उन्हें २२ सितम्वर को जेल भेज दिया गया। ज्योतिप चन्द्र पाल, मनोरजन सेन गुप्त, और विरेन्द्र दास गुप्त पर १ अक्टोवर १९१५ की वारीसाल मे विशेप अदालत मे अभियोग चलाया गया। १६ अक्टोवर को मनोरजन और निरेन को प्राण दण्ड तथा ज्योतिप चन्द्र पाल को चौदह वर्षों के लिए काले पानी की सजा हुई। मनोरजन और निरेन को २२ नवम्वर १९१५ को वालासोर जेल मे फासी दे दी गई।

दस नवम्वर १९१५ को वालासोर हास्पिटल मे ज्योतीन्द्र नाथ की मृत्यु हुई। इस प्रकार उस महान क्रातिकारी का अन्त हो गया। ज्योतीन्द्र नाथ केवल एक साहसी वीर क्रातिकारी नेता ही नही थे उनमे सगठन करने और अपने अनुयायियो को सर्वोच्च वलिदान करने की प्रेरणा देने की अपूर्व और अदभुत क्षमता थी। सभी क्रातिकारी उन्हें अपना सर्वोच्च नेता और मार्ग दर्शक मानते थे। उन्होने एक शक्तिशाली क्रातिकारी सगठन खडा किया था और सशस्त्र क्राति की भूमिका तैयार की थी। महाविप्लवी नायक रासविहारी वोस भी उनसे वहुत प्रभावित थे और उनका आदर करते थे। नरेन भट्टाचार्य (एम एन राय) उनसे वहुत अधिक प्रभावित थे और उनके द्वारा ही क्रातिकारी दल मे दीक्षित थे।

जव ज्योतीन्द्र नाथ वालासोर हास्पिटल मे घायल होकर पडे थे तव कलकत्ता के वरिष्ठ योरोपियन पुलिस आफिसर टेगार्ट और डेनहम ने उनके साहस और शौर्य से प्रभावित होकर उनसे अत्यन्त आदर के साथ कहा "मुखर्जी मैं आपके लिए क्या कर सकता हू ?" वे मुस्कराये और वोले "धन्यवाद" "सव समाप्त हो चुका है। अन्तिम विदा।" केन्द्रीय गुप्तचर विभाग के अधिकारी डेनहम ने ज्योतीन्द्र नाथ से हुए युद्ध की

जो विस्तृत रिपोर्ट भेजी थी उसमे उसने ज्योतीन्द्र नाथ के सम्बध मे लिखा था "ज्योतीन्द्र नाथ बगाली क्रातिकारियो मे सबसे अधिक साहसी, वीर और खतरनाक क्रातिकारी थे जब तक उनकी गोलिया समाप्त नही हो गई वे बराबर युद्ध करते रहे।"

ज्योतीन्द्र नाथ केवल साहसी और वीर ही नही थे। वे अत्यन्त उदार हृदय स्नेहशील और उच्च कोटि के नैतिक तथा आध्यात्मिक व्यक्त भी थे। जो भी उनके सम्पर्क मे आता उनका बन जाता था। अपने समय के क्रातिकारियो के वे सर्वमान्य नेता थे।

जब भारत मे अग्रेजी राज्य शासन का चरम सीमा का आतक छाया हुआ था। सर्व साधारण व्यक्ति देश की स्वतत्रता के सम्बन्ध मे चर्चा करने मे भी भयभीत होता था तब इन क्रातिकारियो ने सर पर कफन बाध कर ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी थी। यह उन्ही क्रातिकारियो के आत्म बलिदान का परिणाम है कि भारत वासियो मे स्वतत्रता प्राप्त करने की उत्कट भावना जीवित रही वह मरी नही। इन क्रातिकारी वीर बलिदानियो के बलिदान के फलस्वरूप देश मे देश भक्ति की तीव्र भावना उत्पन्न हुई, उसकी नीव पर ही स्वतत्रता आन्दोलन का विशाल भवन खडा किया जा सका।

परन्तु आज की पीढी उन देश भक्त क्रातिकारियो को भूल गई जिन्होने अपने प्राणो को भेट चढा कर देश मे स्वतत्रता प्राप्ति की चाह जीवित रक्खी। ज्योतीन्द्रनाथ जैसे महान देश भक्त बलिदानी का आज कोई नाम भी नही जानता। उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने का कोई प्रयत्न नही किया गया। उनके शौर्य और बलिदान की गाथा किसी लेखक या कवि ने नही गाई। उनका कोई स्मारक नही बना उनका चित्र लोकसभा की दीर्घा मे नही लगाया गया। डाक विभाग ने उनके चित्रो के टिकिट निकालने की भी आवश्यक्ता नही समझी। सत्ता की आपा धापी मे हमारे राजनीतिज्ञ उन क्रातिकारियो को तो भूल ही गए जिनकी हड्डियो पर स्वतत्रता का भवन खडा हो सका। सर्व साधारण भारतीय भी उन्हें भूल गए। हमारे इस लज्जाजनक आचरण और व्यवहार को देख कर स्वय कृतघ्नता भी लज्जित होती होगी।

"शहीदो की चिताओ पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालो का यही बाकी निशा होगा॥"

के गायक के शब्दो मे यदि हमने देश भक्त बलिदानियो की प्रेरणादायक स्मृति को स्थायी बनाकर देश में गहन देश भक्ति की परम्परा स्थापित की होती तो देश की आज जैसी निराशामय और दयनीय स्थिति है, वैसी नही होती।

अध्याय ७

सरदारसिंह राव राणा

भारत को ब्रिटिश दासता से मुक्त करने के लिए जिन भारतीय देश भक्तो और क्रातिकारियो ने आजन्म स्वदेश से निर्वासित रहकर भारत के बाहर और देश के अन्दर भारत को स्वतत्र करने के लिए भागीरथ प्रयत्न किया और मातृभूमि के लिए त्याग और बलिदान की पावन परम्परा स्थापित की उनमे सरदारसिंह जी राव जी राणा का नाम विशेष उल्लेखनीय है। परन्तु स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात हम कृतघ्न भारतीयो ने उन महान देश भक्त बलिदानियो को विस्मृत कर दिया। हमने भारत की तरुण पीढी को उनके त्याग और बलिदान की पावन और प्रेरणादायक गाथा नही सुनाई जिससे प्रेरणा लेकर स्वतत्रता प्राप्ति के उपरात जन्म लेने वाली पीढी भी देश के लिए त्याग करने का पाठ पढती। उसी का यह परिणाम है कि आज भारत मे देश के लिए त्याग करने की भावना कु ठित हो गई है और हमारी तरुणाई उन वीर बलिदानी क्रातिकारियो का नाम भी नही जानती जिनके मास और हड्डियो पर भारत की स्वतत्रता का यह भवन खडा हो सका है। तो यदि आज का शिक्षित युवक उस महान देश भक्त क्रातिकारी सरदार सिंह राव राणा का नाम नही जानते तो कोई आश्चर्य की बात नही है। हमारे इतिहसकारो और आज जो सत्ता मे हैं उनकी विरुदावलि के गायको ने भी उन देश भक्त क्रातिकारियो की नितांत उपेक्षा की जिन्होंने अपने प्राणो को देख कर देश मे स्वतत्र होने की भावना को जीवित रक्खा—मरने न ी दिया।

सरदार सिंह जी रावजी राणा का जन्म ईसवी सन १८७० मे भूतपूर्व लिम्बडी राज्य काठियावाड सौराष्ट्र मे हुआ। उनका जन्म स्थान लिम्बडी के समीप 'कन्थारिया' ग्राम है। सरदारसिंह जी ने लिम्बडी राजवश मे जन्म लिया था। राजवश वालो को जागीर दी जाने की प्रथा उस समय देशी राज्यो मे प्रचलित थी और उन्ही वशो से यदि आवश्यकता होती तो महाराजा किसी को गोद लेकर उसे सिंहासन का उत्तराधिकारी घोषित करता था। सरदार सिंह राजघराने मे उत्पन्न होने के कारण बालपन मे वैभव और विलास के वातावरण मे पाले गए। उनके वश को देश भक्ति उत्तराधिकार मे मिली थी। उनके वशजो को राणा की उपाधि इसलिए दी गई थी कि जब प्रात स्मरणीय महाराणा प्रताप मेवाड की स्वतत्रता के लिए सम्राट अकबर जैसे शक्तिशाली सम्राट से बीस लम्बे वर्षो तक युद्ध कर रहे थे तो सरदार सिंह राव राणा के पूर्वजो ने अन्त तक महाराणा प्रताप के साथ रह कर मेवाड की स्वतत्रता के लिए युद्ध किया था। उनकी निष्ठा, देश भक्ति और वीरता के उपलक्ष्य मे उनको राणा की उपाधि दी गई थी।

सरदारसिंह जी की प्रारम्भिक शिक्षा उनके गांव मे ही हुई इसके पश्चात कुछ समय तक उन्होने धारगपुरा के स्कूल मे शिक्षा प्राप्त की। धारगपुरा से वे राजकोट आए और राजकोट हाई स्कूल मे प्रवेश लेकर मैट्रिक परीक्षा के लिए अध्ययन करने लगे। १८९१ मे राणा ने राजकोट हाई स्कूल से मैट्रिक परीक्षा पास की और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए बम्बई के प्रसिद्ध एलिफिस्टन कालेज मे प्रविष्ट हो गए। जब वे राजकोट मे अध्ययन कर रहे थे तो वे उस समारोह मे सम्मिलित हुए थे जो महात्मा गांधी के शिक्षा प्राप्त करने के लिए इङ्गलैंड जाने के समय राजकोट मे हुआ था। राणा ने अपने एक पत्र में उस समारोह मे एक दर्शक की भाति सम्मिलित होने

का गर्व के साथ उल्लेख किया है। सम्भवतं. तभी से उनके अन्तर मे यह भावना दृढ हो गई थी कि वे भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने विलायत जावेंगे।

एलिफिन्स्टन कालेज मे उन्हें स्वच्छद तथा नया वातावरण मिला। वे स्वभाव से ही चेतनाशील और क्रियाशील थे अस्तु उन्होने कालेज की विभिन्न प्रवृत्तियो मे भाग लेना, समाचार पत्र पढना, तथा देश की समस्याओ तथा राजनीति का अध्ययन करना आरम्भ कर दिया। उस समय साधरण परिवारो के युवको के लिए भी यह असा-धारण बात थी। एक राजघराने के युवक के लिए देश की राजनीति मे रुचि लेने की तो कल्पना ही नही की जा सकती थी और वह उनके लिए खतरनाक भी थी।

जब वे कालेज मे अध्ययन कर रहे थे तभी १८९५ मे पूना मे काग्रेस का अधिवेशन हुआ। काग्रेस अधिवेशन के लिए जब स्वय सेवको का दल सगठित किया गया तो उन्होने उसमे अपना नाम दे दिया। उन दिनो सभी शिक्षित सभ्रात व्यक्ति अग्रेजी वेश भूषा धारण करते थे पर राणा काठियावाडी वेश भूषा मे रहते थे। काग्रेस के स्वय सेवक दल को सगठित करने वाले उनके व्यक्तित्व और वेश भूषा से इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होने राणा को काग्रेस अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र नाथ बनर्जी की निजी सेवा मे रख दिया। श्री राणा की क्रियाशीलता, कर्तव्य भावना और देश भक्ति के उद्दात विचारो से श्री सुरेन्द्र नाथ बनर्जी इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होने अपने हस्ताक्षरो सहित अपना एक चित्र तथा अपने अध्यक्षीय भाषण की एक प्रति उन्हें (काग्रेस अधिवेशन मे पढे जाने से पूर्व) दी थी। पूना काग्रेस अधिवेशन मे पहली बार श्री राणा ने लोकमान्य तिलक का भाषण सुना। युवक हृदय पर लोकमान्य तिलक के ओजस्वी भाषण का ऐसा गहरा प्रभाव पडा कि वे लोकमान्य तिलक के प्रशसक और क्रातिकारी- विचारधारा के बन गए।

बम्बई के एलिफिन्स्टन कालेज से १८९७ मे राणा ने बी ए की परीक्षा उत्तीर्ण की और २३ अप्रेल १८९८ को उन्होने कानून की शिक्षा प्राप्त करने के लिए लदन को प्रस्थान किया। उन दिनो भारत मे प्रत्येक ऊचे घराने के युवक की यह महत्वाकाक्षा रहती थी कि वह लदन से बार एट ला हो कर आवे क्योकि वही लोग भारत मे शीर्ष प्रशासनिक पदो पर नियुक्त किए जाते थे। श्री राणा ने लदन के विधि महाविद्यालय (ला कालेज) मे १० मई १८९८ को प्रवेश लिया। यह सयोग की बात थी कि १० मई १८९८ को भारत की प्रथम सशस्त्र राज्य क्रांति (१८५७ के विद्रोह) की ४१ वी वर्ष गाठ थी। नियति सम्भवत. राणा को भारत के क्रातिकारी आदोलन के लिए तैयार कर रही थी।

लदन मे राणा ने अन्य भारतीय विद्यार्थियो की भाति अग्रेजी वेश भूषा को धारण करना स्वीकार नही किया। वे काठियावाडी वेश भूषा मे ही रहते थे। उनका कहना था कि उनको भारत मे ब्रिटिश शासन के प्रति घृणा की भावना तथा स्वदेशा-भिमान को व्यक्त करने का यही उपाय सूझा था इस कारण साथियो और मित्रो के आग्रह करने पर भी उन्होने अग्रेजी वेश भूषा को धारण करना स्वीकार नही किया। इसका परिणाम यह हुआ कि वे भारतीयो मे चर्चा का विषय बन गए और उनका श्यामजी कृष्ण वर्मा से सम्पर्क स्थापित हो गया जो एक वर्ष पूर्व लदन आ गए थे। श्यामजी कृष्ण वर्मा क्रातिकारी विचार धारा के थे। जब रैण्ड की हत्या हुई और लोकमान्य तिलक को ६ वर्ष के लिए अडमन मे कारावास का दण्ड दिया गया और

श्यामजी कृष्ण वर्मा पर भी सरकार का सदेह हो गया तो श्यामजी कृष्ण वर्मा ने भारत मे रहना निरापद नही समझा और वे लदन चले आए। श्यामजी कृष्ण वर्मा ऐसे क्रातिकारी भारतीयो का एक सगठन खड़ा करना चाहते थे जो भारत को स्वाधीन बनाने के लिए अपन जीवन अर्पण करें। राणा के अन्तर मे भी यह भावना तीव्र वेग से प्रवाहित हो रही थी अस्तु वे दोनो ही अनन्य घनिष्ट मित्र बन गए।

सर्व प्रथम दोनो दादा भाई नौरोजी की अध्यक्षता मे स्थापित इडियन एसोशियेशन मे कार्य करने लगे। इडियन ऐसोशियेशन भारतीयो को कुछ राजनीतिक अधिकार दिए जाने के लिए इङ्गलैंड मे वैधानिक आन्दोलन करती रहती थी। भला श्यामजी कृष्ण वर्मा तथा सरदार सिह रावजी राणा को यह भीख मागने की नीति कैसे स्वीकार हो सकती थी। शीघ्र ही उनका दादा भाई नौरोजी से इस प्रश्न पर मतभेद हो गया और उन्होने इन्डियन ऐसोशियेशन से त्याग पत्र दे दिया। अब वे एक पृथक क्रातिकारी सगठन खडा करने के प्रयत्न मे लग गए।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने "इन्डियन सोश्योलाजिस्ट" क्रातिकारी पत्र निकालना शुरु किया जो सशस्त्र विद्रोह का समर्थक था। गुप्त रूप से वह भारत मे पहुचता था। इस कार्य मे राणा उनके प्रमुख सहयोगी और सहायक थे। क्रातिकारी सगठन को मूर्त रूप देने के लिए श्यामजी कृष्ण वर्मा ने "होमरूल सोसाइटी" की स्थापना की। स्वय श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा उसके अध्यक्ष और राणा उसके उपाध्यक्ष थे।

श्यामजी कृष्ण वर्मा तथा सरदारसिह राव राणा चाहते थे कि ब्रिटेन मे जो भी भारतीय युवक विद्याध्ययन के लिए आते हैं उनसे सम्पर्क स्थापित कर उनको क्रातिकारी सगठन मे दीक्षित किया जावे। इसी उद्देश्य से श्यामजी कृष्ण वर्मा ने लदन मे एक मकान खरीद लिया जो "इन्डिया हाऊस" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यहा भारतीय विद्यार्थी एकत्रित होते थे और देश की समस्याओं की चर्चा करते थे। क्रमश इडिया हाऊस लदन मे भारतीय क्रातिकारियो का मुख्य केन्द्र बन गया और ब्रिटेन का गुप्तचर विभाग उस पर दृष्टि रखने लगा।

जुलाई १६०० मे पैरिस मे एक विशाल ऐतिहासिक प्रदर्शनी हुई। उसमे भारत के व्यापारी भी आये थे। राणा उस प्रदर्शनी को देखने पेरिस गए वहा उनकी बम्बई के एक प्रसिद्ध जौहरी से जान पहचान हो गई जो मोतियो की दूकान लेकर आया था और पेरिस को केन्द्र बना कर योरोपीय देशो मे मोतियो का व्यापार करना चाहता था। उसने राणा से कहा कि वे उसकी फर्म मे उसके साझीदार बन जावें। यद्यपि राणा का व्यापार करने का कोई विचार नही था परन्तु क्रातिकारी सगठन की धन की आवश्यकता के विचार से तथा जौहरी के आग्रह से उन्होने उसका भागीदार बनना स्वीकार कर लिया। आगे चलकर इस व्यापार से होने वाले लाभ से राणा ने भारतीय क्रातिकारियो को बहुत आर्थिक सहायता दी और अनेक क्रातिकारी योजनाओं का सम्पूर्ण व्यय स्वय वहन किया।

भारत मे सशस्त्र राज्य क्राति के लिए यह आवश्यक था कि क्रातिकारियो को सैनिक शिक्षा दी जावे तथा अस्त्र शस्त्र की व्यवस्था की जावे। इसी उद्देश से राणा ने रुसी क्रातिकारियो से सम्पर्क स्थापित कर लिया। लोकमान्य तिलक तथा श्री अरविन्द राणा के इस सबध को जानते थे। उन दोनो ने श्री मदन जादव जो भारतीय सेना मे उच्च पद पर कार्य कर चुके थे को "पेरिस स्कूल आफ वार" मे सैनिक

शिक्षण के लिए राणा के पास भेजा। परन्तु पैरिस स्कूल आफ वार मे किसी दूतावास की सिफारिश पर ही प्रवेश दिया जा सकता था। राणा ने जरमन तथा रूसी दूतावासो से मदन जादव को पेरिस स्कूल आफ वार मे प्रवेश दिलाने को कहा परन्तु कुछ कठिनाइयो के कारण जरमन तथा रूसी दूतावासो ने सिफारिश करना उचित नही समझा। परन्तु रूसी दूतावास ने राणा को यह सकेत दे दिया कि स्विटजरलैंड मे सैनिक स्कूल मे प्रवेश मिल सकता है। राणा ने मदन जादव को बर्न भेजकर वहा के सैनिक स्कूल मे उन्हे प्रवेश दिला दिया।

उसी समय हेमचन्द्र दास (कानूनगो) बगाली क्रातिकारी युवक जो मिदनापुर के निवासी थे। बम बनाने का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए लदन से पैरिस पहुचे। श्री राणा ने उनको अपने घर मे आश्रय दिया। रूसी क्रातिकारियो से सम्पर्क स्थापित कर एक रूसी बम बनाने के विशेषज्ञ की व्यवस्था की, अपने घर मे ही बम बनाने के लिए प्रयोगशाला स्थापित की, और बम बनाने के प्रशिक्षण की व्यवस्था करदी। कुछ दिनो के उपरात सेनापति बापट और अब्बास भी बम बनाने का प्रशिक्षण प्राप्त करने वालो मे सम्मिलित हो गये स्वय राणा ने भी बम बनाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। यही नही उन्होने रूसी विशेषज्ञ द्वारा लिखी हुई बम बनाने की विधि की पुस्तक का रूसी से अग्रेजी मे अनुवाद कराया और उसकी प्रतिया भारतीय क्राति-कारियो को भिजवाई। बम बनाने के प्रशिक्षण कार्य आदि मे जो भी व्यय हुआ उसको श्री राणा ने वहन किया।

इधर उनके परिवार वालो ने उनका विवाह सम्बन्ध पक्का कर दिया अस्तु परिवार वालो के आग्रह पर वे भारत चले आए पर ६ सप्ताह मे ही विवाह हो जाने के उपरांत वापस इगलैंड चले गए। भारत मे वे यहा के क्रातिकारियो से मिले और देश की राजनीतिक स्थिति का सूक्ष्म अध्ययन किया। यह देख कर वे सतुष्ट हुए कि वे तथा श्यामजी कृष्ण वर्मा जिस स्वातत्र युद्ध के लिए विदेश मे बैठ कर प्रयत्न कर रहे हैं वह सार्थक हो रहा है देश मे सशस्त्र क्राति के लिए तैयारी हो रही है। देश दासता के जुए को अपने कधो पर से उतार कर फेंकने के लिए तैयारी कर रहा है। सन ईसवी १९०५ मे वे भारत आए थे।

जब वे भारत से इगलैंड वापस लौटे तब उन्हे ज्ञात हुआ कि श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा ने कुछ ऐसे भारतीय विद्यार्थियो को जो इस बात की शपथ लेंगे कि अध्ययन समाप्त करने के पश्चात भारत लौट कर राजकीय सेवा नही करेंगे अथवा सरकार के द्वारा दिये जाने वाले खिताबो को स्वीकार नही करेगे। वरन आजन्म देश सेवा करेंगे। श्यामजी कृष्ण वर्मा का यह विचार श्री राणा को बहुत पसद आया और उन्होने भी श्री शिवाजी, महाराणा प्रताप और एक मुस्लिम शासक के नाम पर तीन छात्र वृत्तिया देने की घोषणा की। श्यामजी कृष्ण वर्मा तथा श्री राणा के द्वारा छात्र वृत्तिया देने के परिणाम स्वरूप ही लाला हरदयाल ने भारत सरकार की छात्र वृत्ति को त्याग दिया और वीर सावरकर तथा सेनापति बापट ने श्री राणा द्वारा दी गई छात्र वृत्ति को लेकर इगलैंड मे अध्ययन करना तथा भारतीय स्वाधीनता सग्राम को तीव्र बनाने का कार्य आरम्भ किया।

१९०८ मे अमर शहीद कन्हाईलाल दत्त के शव का कलकत्ता मे जब वह शानदार भव्य जलूस निकला जैसा जुलूस महानगरी कलकत्ता मे किसी भी शव के

सम्मान मे नही निकला था और उसकी भस्मि को असख्य व्यक्ति सोने चादी तथा साधारण डिब्बियो मे भर कर ले गए तो भारतीय क्रातिकारियो ने कन्हाईलाल दत्त के शव की थोडी सी भस्मि इगलैंड मे भारतीय क्रातिकारियो को भी भेज दी। भारतीय क्रातिकारियो ने लदन के इडिया हाऊस मे शहीद की भस्मि का स्वागत करने के लिए एक जलसा करने का निश्चय किया। परन्तु प्रश्न यह था कि उस जलसे का सभापतित्व कौन करे। श्यामजी कृष्ण वर्मा तथा अन्य सभी क्रातिकारियो को भय था कि जो भी उस जलसे का सभापतित्व करेगा उसको गिरफ्तार कर लिया जावेगा। श्री राणा ने उस जलसे का सभापतित्व करने के लिए अपने को प्रस्तुत किया। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने उन्हे बहुत मना किया क्योकि वे नहीं चाहते थे कि राणा जेल चले जावें पर श्री राणा ने अपने मित्र के आग्रह को भी ठुकरा कर उस जलसे का सभापतित्व किया। उस जलसे मे जितने भी भारतीय उपस्थित थे उन सबो ने कन्हाई लाल दत्त की भस्मि का मस्तक पर टीका लगा कर शपथ ली कि वे भारत से ब्रिटिश शासन को समाप्त करके ही रहेगे।

इस समारोह के कारण लदन के राजनीतिक क्षेत्र मे सनसनी फैल गई। सरकार चौकन्नी हो गई और इडिया हाऊस पर ब्रिटेन के गुप्तचर विभाग की वक्र दृष्टि हो गई। ब्रिटेन के गुप्तचर विभाग की इडिया हाऊस पर इतनी कठोर निगरानी थी कि वहा रहकर गुप्त रूप से कोई राजनीतिक कार्य कर सकना सम्भव नही रहा। उधर श्री राणा ने कानून की पढाई भी समाप्त करली थी अस्तु वे लदन छोड कर पेरिस चले आए।

पेरिस मे उनका परिचय मैडम कामा से हुआ और वे दोनो ही क्रातिकारी कार्यों मे एक दूसरे की सहायता करने लगे। जब महान क्रानिकारी मैडम कामा स्टटगार्ट (जरमनी) मे अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन मे भारत की प्रतिनिधि के रूप मे भाग लेने गई तो सरदार सिह राव राणा भी उनके साथ उस सम्मेलन मे भाग लेने गए थे। ब्रिटिश प्रतिनिधियो के विरोध करने पर भी मैडम कामा तथा श्री राणा के उद्योग से सम्मेलन ने भारत की पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। उसी ऐतिहासिक सम्मेलन मे भाषण देते हुए मैडम कामा ने भारत के राष्ट्रीय ध्वज को फहराया था।

यह हम पहले ही कह चुके है कि हेमचन्द्र दास कानूनगो श्री राणा के पास रह कर बम बनाने का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे तो श्री राणा ने बम बनाने की विधि को विस्तार से विवेचना करने वाली एक महत्वपूर्ण पुस्तक जिसको पोलिश और रूसी क्रातिकारियो ने तैयार किया था उसका अग्रेजी मे अनुवाद करवाया और उस अनुवाद की कई प्रतिया करवाई तथा भारत भिजवाई। इस पुस्तक की एक प्रति पुलिस को मानिकतल्ला गार्डन मे स्थित क्रातिकारियो के केन्द्र मे मिली थी। जिसकी भारतीय क्रातिकारी बहुत सी लिखित प्रतिया बना रहे थे। जिसमे भारत मे प्रत्येक केन्द्र मे वह बम बनाने की पुस्तक पहुच सके। पुस्तक की दूसरी प्रति नासिक मे जब गणेश सावरकर के मकान की तलाशी हुई तो वहा मिली और पुस्तक की तीसरी प्रति लाहौर मे भाई परमानन्द के एक बक्स मे मिली। ब्रिटिश कोलाम्बिया मे विक्टोरिया मे हुए षडयंत्र की जब जाच पडताल हुई तो ज्ञात हुआ कि उस बम की पुस्तक की एक प्रति पेरिस से जनवरी १६१४ मे हरनामसिह साहरी के नाम भेजी गई थी। बम-

की इस प्रसिद्ध पुस्तक की प्रतियो को श्री राणा ने ही भारत तथा अन्य देशो मे भारतीय क्रांतिकारियो को भेजा था ।

पेरिस मे वे जो मोती का व्यापार करते थे उसका मुख्य उद्देश्य स्वय अपने लिए धन अर्जित करना नही था वरन देश मे राजनीतिक चैतन्य उदय हो, भारतीयो मे देश भक्ति की भावना जागृत हो और सशस्त्र क्राति की तैयारी के लिए जो कार्य किया जा रहा था उसके लिए अर्थ की व्यवस्था करने के लिए करते थे। यही कारण था कि वे देशभक्त राजनीतिक कार्यकर्त्ताओ तथा क्रातिकारियो पर बहुत अधिक धन व्यय करते थे। उन्होने जो ऊपर वर्णित तीन छात्र वृत्तिया दी थी उनका उद्देश्य यह था कि राष्ट्रीय भावना वाले देशभक्त भारतीय युवक भी स्वतत्र राष्ट्रो मे जाकर स्वतत्रता क्या है इसका अनुभव प्राप्त करें और उसमे उनकी देशभक्ति गहन हो। जब मैडम कामा ने 'वन्दे मातरम' 'मदन तलवार' तथा 'इडियन फ्रीडम' पत्र निकाले तो सरदार सिह राव राणा ही उनके प्रमुख सहयोगी और सहायक थे। श्री राणा के अथक परिश्रम तथा आर्थिक सहायता के परिणाम स्वरूप ही यह पत्र प्रकाशित हो सके और लोक-प्रिय हुए ।

यही नही श्री राणा भारतीय क्रातिकारियो को विदेश से अस्त्र शस्त्र भेजने की व्यवस्था भी करते थे। वे विभिन्न उपायो से भारतीय क्रानिकारियो के पास रिवाल्वर और पिस्तौल आदि भिजवाते रहते थे। जिस पिस्तौल मे नासिक के मैजि-स्ट्रेट जैकसन की १९०९ मे कन्हारे ने हत्या की और १९११ मे तिनेवली के मैजिस्ट्रेट की हत्या की गई वे दोनो पिस्तौल उन्ही बीस स्वचालित ब्राऊनिंग पिस्तौलो मे से थे जिन्हे १९०९ मे श्री राणा ने इडिया हाऊस के रसोइए चतुर्भुज अमीन के द्वारा लदन मे वीर सावरकर के पास भेजे थे। श्री राणा ने एक बक्स के गुप्त तले मे उन बीस ब्राऊनिंग पिस्तौलो को छिपाकर, चतुर्भुज अमीन को उस बक्स को वीर सावरकर को देने के लिए कहा था। सावरकर ने उस बक्स को चतुर्भुज अमीन के साथ भारत भेजा। बाद को जब चतुर्भुज अमीन गिरफ्तार हुआ और पुलिस द्वारा घोर और क्रूरता पूर्ण यातनाए दिए जाने पर मुखबिर बन गया तो उसने यह बयान दिया था कि वह उस बक्स को जिसमे पिस्तौल थे पेरिस मे श्री राणा के मकान से बम्बई लाया था। मदनलाल धीगरा ने कर्नल वायली को जिस रिवाल्वर से मारा था वह भी श्री राणा ने ही सावरकर के पास भेजा था।

मैडम कामा ने देखा कि श्री राणा और सावरकर उनके दोनो सहयोगी फस जावेंगे तो क्रांतिकारी आदोलन को गहरा धक्का लगेगा। अस्तु उस वीर साहसी महिला ने एक अप्रत्याशित आत्म बलिदान का साहसिक कार्य किया। वे पेरिस मे ब्रिटिश काउसिल के कार्यालय मे गई और इस आशय का लिखित बयान दे दिया कि यद्यपि यह सही है कि पिस्तौलो का बाक्स श्री राणा के मकान मे था परन्तु श्री राणा और श्री सावरकर को इसके सम्बन्ध मे कुछ भी ज्ञात नही था अस्तु वे दोनो निर्दोष है। उन पिस्तोलो को इकठ्ठा करने के लिए मैं उत्तरदायी हू मैंने ही उन्हें बाक्स में रक्खा और चतुर्भुज अमीन के साथ मैंने ही उन्हें बम्बई भेजा था। अतएव अकेली मैं ही पिस्तौलो के सम्बन्ध मे सारे कार्यों के लिए उत्तरदायी हू। मैं अकेली दोषी हूं।

उस समय क्योकि वीर सावरकर को फ्रास की भूमि पर पकडने के कारण

ब्रिटेन अन्तर्राष्ट्रीय उलझनो मे फसा हुआ था अस्तु ब्रिटिश सरकार मैडम कामा के बयान पर कार्यवाही करके और अधिक उलझनो मे फसना नही चाहती थी अस्तु सरकार ने उनके बयान पर कोई भी कार्यवाही नही की। परन्तु यह घटना मैडम कामा के साहस, शौर्य और साथियो के लिए आत्म बलिदान की उत्कट भावना पर सुन्दर प्रकाश डालती है।

श्री राणा केवल अस्त्र शस्त्र ही भारत के क्रातिकारियो को नही भिजवाते थे वे भारत मे गुप्त रूप से क्रातिकारी साहित्य भी भेजते थे। उनका घर भारतीय क्रातिकारियो के लिए खुला हुआ था। श्री सावरकर, सेनापति बापट, हेमचन्द्रदास, अब्बास, लाला हरदयाल बहुत दिनो तक उनके आश्रय मे रहे थे। जब सावरकर को इगलैंड मे गिरफ्तार कर भारत लाया जा रहा था और वीर सावरकर ने समुद्र मे कूद कर फ्रास की भूमि पर पहुंचने की योजना बनाई थी तो श्री राणा एक मोटर मे मैडम कामा तथा श्यामजी कृष्ण वर्मा के साथ उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे कि जैसे ही वीर सावरकर फ्रास की भूमि पर पैर रक्खे उन्हे वे ले जावें। परन्तु वीर सावरकर उस स्थान पर न पहुच कर दूसरे स्थान पर पहुचे और ब्रिटिश सैनिक जो उनका पीछा कर रहे थे उन्होने उन्हे गिरफ्तार कर लिया। उसके उपरात मैडमकामा तथा श्री राणा ने उन्हे छुडाने का बहुत प्रयत्न किया। अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय मे अभियोग चला परन्तु वे सफल नही हुए और वीर सावरकर को भारत सरकार को सौंप दिया गया।

श्री राणा को भारत सरकार तथा ब्रिटिश सरकार अत्यन्त खतरनाक क्राति-कारी और ब्रिटिश शासन का घोर शत्रु मानती थी। रालेट कमेटी ने भी अपनी रिपोर्ट में विप्लवकारी कार्यो का भारत मे श्रीगणेश करने वालो मे उनको प्रथम स्थान दिया है। वे भारतीय क्रातिकारियो की प्रथम पीढी के प्रमुख व्यक्तियो मे से एक थे। अतएव ब्रिटिश सरकार ने प्रथम महायुद्ध के पूर्व कई बार फ्रास की सरकार पर यह दबाव डाला कि वे राणा तथा मैडम कामा को फ्रास से निर्वासित कर भारत सरकार के सुपुर्द करदें पर उस समय फ्रेंच सरकार ने ब्रिटेन की प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया था।

श्री राणा के क्रातिकारी कार्यो का परिणाम यह हुआ कि भारत सरकार ने उन्हें विद्रोही घोषित कर दिया। काठियावाड के पोलीटिकल एजेंट के द्वारा भारत सरकार के विदेशी विभाग ने उनके माता पिता तथा उनके अन्य राजवंश के सम्बन्धियो को यह आदेश दिया कि वे उनसे पत्र व्यवहार भी नही कर सकेंगे।

इन्ही दिनो ब्रिटेन के बादशाह पाचवे जार्ज पेरिस आए श्री श्यामजी कृष्ण को जैसे ही सम्राट के आगमन का समाचार मिला वे पेरिस से जैनेवा चले गए। उन्होने श्री राणा को भी पेरिस छोड देने का परामर्श दिया परन्तु श्री राणा ने पेरिस नही छोडा। उसका परिणाम यह हुआ कि जब तक पाचवे जार्ज पेरिस मे रहे श्री राणा को पुलिस की कडी निगरानी मे रहना पडा।

सन १९१४ मे जब प्रथम महायुद्ध प्रारम्भ हुआ तो मैडम कामा और श्री राणा फ्रास स्थित भारतीय सेनाओ से सम्पर्क स्थापित कर भारतीय सैनिको को ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने की प्रेरणा देने लगे। उन्होने कई लेख लिखे कि यह भारत का युद्ध नही है उन्हे ब्रिटिश साम्राज्यवाद को मजबूत बनाने के लिए अपना

वलिदान नही देना चाहिए। मैडम कामा और श्री राणा मार्सेलीज के समीप भारतीय सैनिक शिविर मे जाकर भारतीय सैनिको से सम्पर्क स्थापित करते थे। जव जरमनी ने फ्रास पर आक्रमण कर दिया और भारतीय सेनाए फ्रास की रक्षा के लिए पेरिस मे आई तव ब्रिटिश सरकार ने फ्रास सरकार से माग की कि मैडम कामा और सरदार सिंह रावजी राणा को गिरफ्तार करके उनके सुपुर्द कर दिया जावे। फ्रास उस समय अपने मित्र राष्ट्र की उपेक्षा नही कर सकता था। अस्तु फ्रास सरकार ने ६ सितम्बर १९१४ को श्री राणा को गिरफ्तार कर वोरोडेक्स जेल भेज दिया। श्री राणा की इस गिरफ्तारी का फ्रास की "मानव अधिकार सरक्षक समिति" तथा फ्रास के एक चैम्बर ने जिसके श्री राणा सदस्य थे विरोध किया। उस विरोध का परिणाम यह हुआ कि ७ जनवरी १९१५ को उन्हे जेल से छोड दिया गया पर उनको परिवार सहित (उनकी जरमन पत्नी और पुत्र रणजीत) फ्रास के उपनिवेशन मार्टिनिक्यू द्वीप मे नजरवन्द कर दिया गया। उस द्वीप के अस्वस्थकर जलवायु तथा नजरवन्दी मे शारीरिक और मानसिक कष्टों के कारण १९ वर्ष का पुत्र रणजीत जो पहले ही रोगी था उसका स्वास्थ्य तेजी से गिर गया और थोडे समय के उपरात २७ जनवरी १९१५ को उसकी मृत्यु हो गई। श्री राणा की जरमन पत्नी भी उस टापू के अस्वस्थ जलवायु और पुत्र शोक को सहन नही कर सकी। उनका स्वास्थ्य भी तेजी से गिरता गया और उनकी भी वहा मृत्यु हो गई।

मातृभूमि के लिए अपनी प्रिय जीवन सगिनी और पुत्र का वलिदान देकर पाच लम्वे वर्षो तक कारागार मे रहकर जव युद्ध समाप्त हुआ तो श्री राणा कारागार से मुक्त हुए और १९२० मे उस टापू से पेरिस आए। उस समय श्री विट्ठल भाई पटेल और मौलाना मुहम्मद अली पैरिस मे ही थे। जव उन्हें ज्ञात हुआ कि श्री राणा पैरिस आ रहे हैं तो वे स्टेशन पर उनके स्वागत के लिए पहुचे। उन दोनो नेताओ से ही श्री राणा को प्रथम वार ज्ञात हुआ कि महात्मा गाधी के नेतृत्व मे भारत मे स्वतत्रता का आन्दोलन सवल हुआ है और राष्ट्रीय भावना तेजवान वनी है।

जव वे टापू से पेरिस आए तो वे नितान्त एकाकी थे उनका लाभदायक व्यापार नष्ट हो चुका था और उनका परिवार भी नष्ट हो चुका था। परन्तु उस साहसी देशभक्त ने निराशा को अपने जीवन को निष्क्रिय नही करने दिया। पेरिस मे आते ही उन्होने अपने व्यापार तथा राजनीति के सूत्रो को फिर सम्हाला और वे पुनः सक्रिय हो गए। जव वे पेरिस आए तो उनकी अभिन्न मित्र भारतीय क्रातिकारियो की सर्वमान्य नेता मैडम कामा भी मुक्त कर दी गई थी। उनकी आयु अधिक हो चुकी थी और युद्ध काल मे पेरिस से दूर एक गाव मे दीर्घकालीन नजरवन्दी ने उनके स्वास्थ्य को जर्जर कर दिया था। जीवन का दीप वुझने वाला था और वे मातृभूमि की पावन गोद मे अनन्त विश्राम करने के लिए लालायित थी। श्री राणा ने उन्हें शीघ्र से शीघ्र भारत जाने की प्रेरणा दी और उनको भेजने की व्यवस्था मे दौड धूप की। वहुत प्रयत्न करने पर भारत सरकार ने मैडम कामा को भारत आने की आज्ञा दे दी।

मदनलाल धीगरा के वलिदान के उपरांत श्यामजी कृष्ण वर्मा पेरिस मे एकाकी पड़ गए थे। मैडम कामा और श्री राणा का उनसे मतभेद हो गया था अन्य सभी भारतीय क्रातिकारा मैडम कामा के नेतृत्व मे कार्य कर रहे थे। तभी

मैडम कामा ने श्री राणा के सहयोग मे वन्दे मातरम तथा मदन तलवार पत्र निकालना आरम्भ किया था। उधर ब्रिटिश सरकार की क्रूर दृष्टि तो उन पर थी ही। ब्रिटेन के समाचार पत्र उनके विरुद्ध विष वमन कर रहे थे। उनकी माग थी कि श्यामजी कृष्ण वर्मा को फ्रैंच सरकार से माग कर उन पर ब्रिटिश सम्राट के विरुद्ध विद्रोह भड़काने का अभियोग चलाया जावे। अतएव श्याम कृष्ण वर्मा प्रथम महायुद्ध से बहुत पहले ही पेरिस से जेनेवा चले गए थे।

जब ३१ मार्च १९३० को श्यामजी कृष्ण वर्मा का जेनेवा मे स्वर्गवास हुआ और काशी विद्यापीठ तथा "आज" पत्र के सस्थापक प्रसिद्ध देशभक्त शिव प्रसाद गुप्त जो उनकी मृत्यु के समय उनके पास थे–ने श्री राणा को उनकी मृत्यु का समाचार भेजा तो अपने पुराने मित्र के निधन पर अपने मतभेदो को भुलाकर जिनके कारण पिछले बीस वर्षों से उनके पारस्परिक सम्बन्धो मे खिचाव था, वे दौड़कर जेनेवा पहुचे और श्यामजी कृष्ण वर्मा की पत्नी श्रीमती भानुमती वर्मा के साथ केवल सहानुभूति ही प्रदर्शित नही की वरन उनकी सम्पत्ति तथा विशाल पुस्तकालय की उचित व्यवस्था की। महीनो जेनेवा मे श्रीमती भानुमती वर्मा के पास रहकर उनकी इच्छा के अनुसार उन्होने पेरिस विश्वविद्यालय को बीस लाख फ्रैंक भारतीय छात्रो को छात्रवृत्ति देने के लिए दान देने की व्यवस्था की। श्याम जी कृष्ण वर्मा के नाम से जेनेवा विश्वविद्यालय को दस हजार फ्रैंक समाज शास्त्र विषय पर शोध ग्रन्थो को प्रकाशित करने के लिए दिए गए। दस हजार फ्रैंक जेनेवा हास्पिटल को दान दिए गये तथा श्यामजी कृष्ण वर्मा के अत्यन्त मूल्यवान सस्कृत और ओरियन्टल पुस्तकालय को "इन्स्टीट्यूट डी सिविलिजेशन इन्डियने सोरबोन" को भेंट कर दिया गया।

श्रीमती भानुमती वर्मा की इच्छानुसार श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा की सम्पत्ति तथा विभिन्न सस्थाओ को दान देने की उचित व्यवस्था कर वे पेरिस लौट आए।

पेरिस मे श्री राणा का गृह योरोप मे आने वाले सभी भारतीयो के लिए सदैव खुला रहता था। उनका आतिथ्य प्रसिद्ध था। गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर, पजाब केशरी लाला लाजपत राय, विट्ठल भाई पटेल, सेनापति बापट, इन्द्र लाल यागनिक, लाला हरदयाल, वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, भाई परमानन्द आदि अनेक प्रसिद्ध भारतीय नेता उनके अतिथि रह चुके थे और उनके आतिथ्य की प्रशसा करते थे।

जब गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर पेरिस आए और उनके सम्मान में दिए गए भोज मे उन्होंने शान्ति निकेतन के पुस्तकालय के लिए पुस्तको की अपील की तो श्री राणा ने अपने निजी पुस्तकालय को अपने स्वर्गीय पुत्र "रणजीत" के नाम पर शांति निकेतन को भेंट कर दिया।

लाला लाजपत राय तो जब भी पेरिस आते थे तब श्री राणा के पास ही ठहरते थे। उनके अतिरिक्त डाक्टर अंसारी, हकीम अजमल खा, पडित मोतीलाल नेहरू, श्रीमती सरोजनी नायडू तथा नेताजी सुभाषचन्द्र बोस भी उनके मित्र थे और जब भी वे योरोप की यात्रा पर आते थे तो उनसे अवश्य ही मिलते थे।

श्री राणा इसी प्रकार जब निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहे थे, द्वितीय महायुद्ध आरम्भ हो गया। जब युद्ध आरम्भ हुआ उस समय श्री राणा विशी मे अपने कुछ पुराने फ्रासीसी मित्रो के साथ थे। युद्ध आरम्भ होते ही उन्होने पेरिस लौटना चाहा किन्तु जरमन सरकार ने उन्हे गिरफ्तार कर नजरबन्द कर दिया।

अप्रेल १९४१ में जब नेता जी सुभाषचन्द्र बोस जरमनी पहुंचे और उन्हें ज्ञात हुआ कि जरमन सरकार ने श्री राणा को नजरबन्द कर लिया है तो उन्होने जरमन सरकार के इस कार्य की भर्त्सना की और कडा विरोध किया। जरमन सरकार ने नेताजी की माग पर श्री राणा को मुक्त कर दिया और नेताजी श्री राणा से स्वय मिलने गए। जरमनी की नजरबन्दी से मुक्त होकर श्री राणा पेरिस वापस लौट आए। अब वे वृद्ध हो गए थे परन्तु उनका मातृभूमि की स्वतत्रता के लिए कार्य करने का उत्साह पूर्ववत था। फ्रांस मे जो भी भारतीय थे उनका उन्होंने एक सगठन सगठन बनाया और २६ जनवरी को भारत का स्वाधीनता दिवस तथा १३ अप्रेल को जलियावाला दिवस उनके नेतृत्व मे धूमधाम से मनाया जाता था। सन १९४५ मे फ्रास पर जब मित्र राष्ट्रो का पुन अधिकार स्थापित हो गया तो इन्डियन सिक्यूरिटी पुलिस ने उन उत्सवो को मनाए जाने के आरोप मे श्री राणा को बहुत तग किया विशेषत. गुप्तचर विभाग के एक सिक्ख अधिकारी ने तो श्री राणा को बहुत कष्ट पहुचाया और यातनाए दी। उस वृद्धावस्था मे मातृभूमि की स्वतत्रता के लिए कार्य करने के उपलक्ष मे जो भी यातनाए श्री राणा को दी गई उन्होने सहन की, पर वे झुके नही।

जब १५ अगस्त, १९४७ को भारत स्वतत्रत हुआ तो श्री राणा की प्रसन्नता का ठिकाना नही रहा। उनके जीवन का ध्येय और स्वप्न उस दिन पूरा हो गया। यद्यपि वे उस समय तक बहुत वृद्ध हो चुके थे परन्तु जिस व्यक्ति ने १८९८ से १९४७ तक पचास लम्बे वर्षों तक भारत की स्वतत्रता के लिए सघर्ष किया था उस स्वतत्रता के वीर क्रातिकारी की स्वतत्र भारत के दर्शन करने की इच्छा बलवती हो उठना स्वाभाविक ही था। अस्तु श्री राणा श्रीमती डेनियल लेवी के साथ ६ दिसम्बर १९४७ को भारत आए। भारत आकर वे सर्व प्रथम राष्ट्रपिता महात्मा गाधी से मिलने गए उसके उपरात वे सभी प्रमुख नेताओ से मिले। राजनेताओ से मिलने के उपरान्त वे अपने सम्बन्धियो से मिलने सौराष्ट्र गए। सौराष्ट्र के राजाओ ने श्री राणा का सामूहिक स्वागत किया। उस भव्य समारोह मे पुरानी स्मृतिया उभर आई और प्रसन्नता से भावातिरेक होकर उनके नेत्रो मे अश्रुकण झलकने लगे। श्री राणा भारत में तीन चार महीने रहकर २३ अप्रेल १९४८ को वापस पेरिस चले गए। उन्हें साम्प्रदायिक दगो और विशेषकर गाधीजी की हत्या से गहन वेदना हुई। पेरिस पहुंच कर भी जीवन के अन्त समय तक उनको देश की ही चिन्ता रही। पैरिस से जो भी उनके पत्र आते थे उनमे यही भावना व्यक्त होती थी कि राष्ट्र का निर्माण करने के लिए अभी त्याग और तपस्या की आवश्यकता है। प्रत्येक भारतीय को देश सेवा का व्रत लेना चाहिए तभी भारत राष्ट्र उन्नत होगा।

अस्सी वर्ष की आयु मे वह वृद्ध देश भक्त जिसने मातृभूमि को स्वतत्र बनाने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन ही अर्पित कर दिया था, १९४९ को दिसम्बर मास मे पेरिस मे चिरनिद्रा मे सो गया। अत्यन्त लज्जा की बात है कि भारत में उस वीर देशभक्त क्रातिकारी के निधन का समाचार भी किसी समाचार पत्र ने प्रकाशित करने की आवश्यकता नही समझी। भारत के स्वतत्र हो जाने के उपरात हमारे राजनीतिज्ञो में सत्ता प्राप्त करने के लिए अशोभनीय प्रवृत्ति उत्पन्न हो गई। उस होड में

किसी को भी श्री सरदार सिंह राव जी राणा जैसे सच्चे देशभक्त क्रांतिकारी जिसने स्वदेश के लिए सर्वस्व बलिदान कर दिया, को याद करने का अवकाश नहीं मिला। किसी ने उनकी जीवन गाथा नही लिखी उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने का कोई प्रयत्न नही हुआ। हम भारतीयो की इस चरम सीमा की कृतघ्नता को देखकर स्वयं कृतघ्नता भी लज्जित होती होगी।

अध्याय ८
केशरी सिंह बारहट

यह उन दिनो की वात है जब कि भारतीयो को दासता अखरने लग गई थी, और देशभक्त क्रातिकारी युवक सशस्त्र विद्रोह के द्वारा भारत को अग्रेजो की दासता से मुक्त करने का प्रयत्न कर रहे थे। महाविप्लवी नायक श्री रासविहारी बोस के नेतृत्व मे समस्त उत्तर भारत मे सैनिक विद्रोह की तैयारियां की जा रही थी। बगाल बिहार, पजाब, महाराष्ट्र तथा अन्य भागो मे क्रातिकारी सगठन अत्यन्त सक्रिय हो उठे थे, और आने वाली सशस्त्र क्राति की तैयारिया कर रहे थे। उस समय राजस्थान मे भी सशस्त्र क्राति करने के लिए एक क्रातिकारी सगठन खडा हुआ। इस सगठन को राजस्थान मे खडा करने वालो मे ठाकुर केशरी सिंह बारहट तथा खरवा के राव गोपाल सिंह थे। श्री अर्जुनलाल सेठी और व्यावर के देशभक्त व्यवसायी सेठ दामोदर दास राठी उनके सहायक थे। वारहट केशरी सिंह तथा रावगोपाल सिंह का सम्बन्ध वगाल के क्रातिकारी सगठन से था और वे महाविप्लवी नायक रासविहारी वोस के निर्देशन मे राजस्थान मे सशस्त्र क्राति का आयोजन कर रहे थे। बारहठ केशरी सिंह ने तो अपने समस्त परिवार को ही देश की स्वतत्रता के इस बलिदान यज्ञ मे आहुति दे दी थी। क्रातिकारियो के रोमाचकारी इतिहास मे बारहट परिवार का जो गौरव पूर्ण भाग रहा है उसको बहुत कम लोग जानते हैं। उनके आत्म बलिदान की अमर कहानी अभी तक विस्मृत के गर्भ मे छिपी थी। हम भारतीयो ने क्रातिकारी देशभक्तो की जैसी लज्जाजक उपेक्षा की है उसे देखकर स्वय कृतघ्नता भी लज्जित होती होगी। जहा हम सत्तारूढ राजनीतिज्ञो का यशोगान करते नही थकते वहा हमने उन पागल देशभक्तो को जो अपने सर मे कफन बाध कर मा भारती की दासता की शृखलाओ को काटने के लिए अपने प्राणो की आहुति देते थे उनकी नितान्त उपेक्षा की और वारहट परिवार के अतुलनीय त्याग और बलिदान को तो विलकुल ही भुला दिया। आज उसी क्रातिकारी वारहट परिवार के प्रेरणा श्रोत ठाकुर केशरी सिंह की जीवन गाथा को पाठको के समक्ष उपस्थित करने का सौभाग्य लेखक को मिला है।

तत्कालीन राजपूताने मे मेवाड से सटा हुआ शहपुरा नामक एक छोटा सा राज्य था जिस पर सिसोदिया राजपूतो का राज्य था। इस छोटे से राज्य की राजधानी शाहपुरा मे लगभग दो कोस की दूरी पर 'देवपुरा' जिसे वारहट जी का खेडा भी कहते हैं नामक गाव था। प्राचीन काल मे यह गाव प्रसिद्ध चारण जाति के सौदा वारहट गोत्र को शाहपुरा नरेशो ने जागीर मे दे रखा था। वारहट वश चारण जाति मे अत्यन्त प्रसिद्ध और गौरवशाली था। इसी वश मे श्री कृष्ण सिंह वारहट का जन्म हुआ जिन्होने राजस्थान मे चतुर राजनीतिज्ञ और प्रमुख नरेशो के परामर्शदाता के रूप मे अत्यन्त ख्याति अर्जित की। उन्ही वारहट कृष्ण सिंह के प्रथम पुत्र केशरी सिंह का जन्म मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष ६ सम्वत १९२९ को अपने पैतृक ग्राम देवपुरा उपनाम वारहट जी का खेडा मे हुआ था। एक मास के उपरांत ही माता का स्वर्गवास हो गया। शिशुकेशरी सिंह वारहट का पालन पोषण ममतामयी मातामही ने किया।

शाहपुरा दरवार ने श्री कृष्ण सिंह को अपने वकील के रूप मे उदयपुर मे नियुक्त किया था। वे मेवाड सरकार तथा मेवाड रैजीडैट के द्वारा भारत सरकार से शाहपुरा राज्य का प्रतिनिधित्व करते थे। शाहपुरा वकील के पद पर कार्य करते हुए कृष्ण सिंह जी तत्कालीन महाराणा सज्जनसिंह के सम्पर्क मे आए। महाराणा उनकी

विद्वता और राजनीतिक चातुर्य से अत्यन्त प्रभावित हुए और उन्होने उन्हें अपना परामर्श दाता बना लिया। पिता के उदयपुर रहने के कारण बालक केशरीसिंह की शिक्षा दीक्षा उदयपुर मे ही हुई। उदयपुर के राजकीय हाई स्कूल मे सस्कृत के अध्ययन की उचित व्यवस्था नही थी अतएव पिता ने काशी के प्रसिद्ध सस्कृतज्ञ प० गोपीनाथ जी को बुलाकर बालक किशोरसिंह को सस्कृत पढाने के लिए रखा। श्री कृष्ण सिंह बारहट केवल ऊचे दर्जे के विद्वान और राजनीतिज्ञ ही नही थे वे स्वाभिमानी देशभक्त भी थे। उन्ही की प्रेरणा से मेवाड के महाराणा ने श्यामजी कृष्ण वर्मा जैसे उद्भट विद्वान राजनीतिज्ञ और क्रातिकारी को उदयपुर राज्य का प्रधान मत्री नियुक्त किया था।

महाराणा सज्जन सिंह की मृत्यु के उपरात महाराणा फतह सिंह राज्य के सिंहासन पर बैठे। कृष्ण सिंह जी महाराणा फतहसिंह के भी अत्यत विश्वास प्राप्त परामर्शदाता बने रहे। उस समय तक भारत सरकार के वैदेशिक विभाग को श्यामजी कृष्ण वर्मा तथा बारहट कृष्ण सिंह के सम्बन्ध मे कुछ सदेह हो गया अस्तु विदेशी विभाग ने महाराणा फतहसिंह पर यह दवाव डाला कि वे बारहट कृष्ण सिंह को अपने पास से हटा दें। जब जोधपुर के महाराणा जसवन्त सिंह को यह ज्ञात हुआ कि वैदेशिक विभाग के दवाव के कारण वे उदयपुर से हट रहे हैं तो वे उन्हें जोधपुर ले गए। परन्तु महाराणा फतहसिंह का बारहट कृष्ण सिंह पर इतना गहरा विश्वास था कि उन्होने उनके पुत्र युवक केशरी सिंह को उनके स्थान पर नियुक्त कर अपने पास रख लिया। आरम्भ मे महाराणा ने और स्वय केशरी सिंह ने किसी पर यह रहस्य प्रगट नही किया कि वे अपने पिता के स्थान पर महाराणा के परामर्शदाता का कार्य करते हैं। वे महाराणा फतहसिंह से रात्रि को बारह बजे के समय गुप्त रूप मे मिलते थे।

युवक केशरी सिंह का विवाह सम्वत १९४७ में कोटा राज्य मे कोटड़ी के कविराज देवीदान जी की बहिन माणिक कुवर मे हुआ था अतएव वे कभी-कभी अपनी ससुराल जाया करते थे। महाराणा फतह सिंह की पुत्री का विवाह कोटा नरेश उम्मेदसिंह मे हुआ था। अस्तु जब वे कोटा जाते तो कोटा दरबार मे भी उपस्थित होते थे। कोटा महाराव के अभिभावक गुरु मास्टर शिवप्रसाद जी युवक महाराणा के पास किसी ऐसे तेजस्वी चरित्रवान और योग्य व्यक्ति को रखना चाहते थे जो कि युवा महाराजा को गलत रास्ते जाने से रोक सके और उन व्यक्तियो के प्रभाव से बचा सके जो उन्हें कुमार्ग पर ले जाना चाहते थे। उधर विदेशी विभाग में तथा कृष्ण सिंह के विरोधियो ने केशरीसिंह बारहट के विरुद्ध भी षडयत्र करना आरम्भ कर दिया। महाराणा फतहसिंह को केशरी सिंह जी ने परामर्श दिया कि महाराणा श्यामजी कृष्ण वर्मा को जो जूनागढ चले गए थे और स्थानीय कुचक्र के कारण उन्होने जूनागढ के प्रधान मंत्री के पद को त्यागना पड़ा था पुन. उदयपुर मे नियुक्त करलें और उन्हें कोटा जाने दें। महाराणा ने भारत के विदेशी विभाग की अनिच्छा होते हुए भी श्यामजी कृष्ण वर्मा की उदयपुर के प्रधान मत्री के पद पर नियुक्ति कर दी और श्यामजी कृष्ण वर्मा के परामर्श से श्री केशरी सिंह बारहट को कोटा महाराव के पास भेज दिया। इस प्रकार केशरी सिंह जी महाराव कोटा की सेवा मे आ गए।

ठाकुर केशरी सिंह बारहट मे देशभक्ति स्वाभिमान और शौर्य जन्म जात था। वे देश पर विदेशियो का आधिपत्य देख कर अत्यन्त दुखी थे। देश दासता की शृखलाओ

से जकड़ा था और भारतवासी निश्चेष्ट और निष्क्रिय होकर बैठे थे। यही नही समाज का सभ्रांत वर्ग विदेशी प्रभुओ के गुणगान करते नहीं थकता था। यह देख कर उनके अन्तर को गहन पीडा होती थी। ठाकुर केशरी सिंह बारहट ने एक अत्यन्त उच्च और आदरणीय चारण वंश मे जन्म लिया था जिसका राजपूताने के राजपूत नरेशों से घनिष्ट सम्बन्ध था। उनके पिताश्री उदयपुर तथा जोधपुर के नरेशो के विश्वास पात्र तथा परामर्शदाता थे। युवक केशरी सिंह देश की उन सब शक्तियो से सम्बन्ध स्थापित करना चाहते थे कि जो देश को स्वतंत्र करने का प्रयत्न कर रही थी। अतएव उन्होने महा विप्लवी नायक श्री रासबिहारी बोस से सम्बन्ध स्थापित किया जो देश मे सैनिक विद्रोह कराने की योजना बना रहे थे। खरवा के ठाकुर गोपाल सिंह जी राष्ट्रवर का भी रासबिहारी बोस से सम्बन्ध स्थापित हो चुका था। ठाकुर केशरीसिंह तथा खरवा के ठाकुर गोपाल सिंह जी राष्ट्रवर ने राजस्थान मे क्रांति और विप्लव कराने के लिए एक सगठन 'वीर भारत सभा' के नाम से स्थापित कर लिया था और अनेक राजपूत नरेशो और जागीरदारो का समर्थन और सहयोग प्राप्त कर लिया था। उनको ब्यावर के सेठ दामोदर स्वरूप राठी और अर्जुनलाल सेठी की सहायता और सहयोग आरम्भ से ही था।

ठाकुर केशरी सिंह की मान्यता थी कि बिना देश मे सशस्त्र क्रांति हुए देश स्वतंत्र नहीं हो सकता। यही कारण था कि उन्होने राजपूताने मे सशस्त्र सैनिक क्रांति की योजना बनाई और राजपूत नरेशो को भी देश की स्वतंत्रता के लिए अपनी आहुति देने के लिए प्रोत्साहित किया। खरवा ठाकुर श्री गोपालसिंह राष्ट्रवर का भी राजपूत नरेशो में बहुत मान था वे और ठाकुर केशरी सिंह बारहट क्रांतिकारियो और राजपूत नरेशो के बीच एक विश्वसनीय कडी थे। ईडर तथा जोधपुर के शासक कर्नल-सर प्रताप, बीकानेर के महाराजा श्री गगासिंह का वीर भारत सभा से सम्पर्क था। उदयपुर के महाराणा फतहसिंह और कोटा के महाराव उम्मेद सिंह की सशस्त्र क्रांति की योजना से छिपी सहानुभूति थी। जोधपुर, उदयपुर तथा बीकानेर के जागीरदारो पर ठाकुर केशरी सिंह का बहुत अधिक प्रभाव था। वे उनमे देशभक्ति की भावना जागृति करने लगे और राजपूत तथा चारण जाति के युवको को आने वाली सशस्त्र क्रांति के लिए तैयार करने लगे।

ठाकुर केशरी सिंह यह भली भांति जानते थे कि केवल तत्कालीन राजपूताने मे सशस्त्र क्रांति करने से कोई लाभ नही होगा सम्पूर्ण देश मे एक साथ अनुकूल अवसर पर सशस्त्र क्रांति भडक उठे तभी वह सफल हो सकेगी। अतएव उन्होने देश मे जो भी क्रांतिकारी सगठन थे उनसे अपना सम्बन्ध स्थापित कर लिया। इसी उद्देश्य से उन्होने मराठी बगला, गुजराती तथा भारत की अन्य प्रांतीय भाषाओ का अध्ययन किया जिससे कि वे विभिन्न प्रांतो के क्रांतिकारियो से सम्पर्क स्थापित कर सकें और देश के विभिन्न भागो मे देश को स्वतंत्र करने के लिए क्या प्रयत्न हो रहे हैं उनसे अवगत हो सके।

१९०३ मे जब कि ठाकुर केशरी सिंह बारहट केवल ३१ वर्ष के थे तब उन्होने अपने पिता श्री कृष्णसिंह बारहट से गृह कार्यभार मे मुक्त होकर अपना सम्पूर्ण जीवन देश सेवा मे लगा देने की लिखित आज्ञा मागी थी। इसी से उनके अन्तर मे देश सेवा की जो उत्कट अभिलाषा थी, देश की दासता से जो उनका अन्तर पीड़ित था उसका

अनुमान लगाया जा सकता है। उन्होने केवल महाविप्लवी नायक रासबिहारी वोस से ही सम्बन्ध स्थापित नही किया वरन 'अभिनव भारत समिति' क्रातिकारी सगठन से भी अपना सम्पर्क स्थापित कर लिया और राजपूताने मे उसकी शाखा की स्थापना करवाई। उन्होने 'अभिनव भारत समिति' की शाखा का अमीरचन्द और वृजमोहन माथुर को संचालक बनाया। अपने सहकर्मी और सहयोगियो ठाकुर गोपाल सिंह खरवा, सेठ दामोदर दास राठी, तथा श्री अर्जुनलाल सेठी के सहयोग मे उन्होंने तत्कालीन राजपूताने मे एक सवल क्रातिकारी सगठन खडा कर दिया था और केवल अपने को ही नही अपने समस्त परिवार को ही देश की स्वतत्रता के इस यज्ञ मे झोक दिया था।

ठाकुर केशरी सिंह वारहट, तथा खरवा ठाकुर श्री गोपाल सिंह राष्ट्रवर और श्री अर्जुनलाल सेठी का श्यामजी कृष्ण वर्मा, लोकमान्य वाल गगाधर तिलक तथा श्री अरविन्द से भी घनिष्ट सम्बन्ध था और वे उनके द्वारा प्रभावित थे। क्रातिकारी भावना उनको उन तीनो से ही मिली थी राव गोपाल सिंह खरवा स्वय कलकत्ता गए थे और उन्होने वगाल के क्रातिकारियो से सम्बन्ध स्थापित किया था।

१९११ मे ठाकुर केशरी सिंह वारहट ने क्राति दल मे वडी सख्या मे देश भक्ति की भावना वाले युवको को भर्ती किया और उन्हे दिल्ली मे मास्टर अमीर चन्द अवध बिहारी तथा वालमुकन्द के पास क्रातिकारी कार्यो का प्रशिक्षण लेने के लिए भेज दिया। उनमे श्री केशरी सिंह के भाई जोरावर सिंह वारहट पुत्र प्रताप सिंह वारहट और जामाता ईश्वरदान आसिया भी थे। जब मास्टर अमीरचन्द ने महाविप्लवी नायक श्री रासविहारी वोस से उनका परिचय कराया तो सहसा उन्होने कहा भारत वर्ष मे एक मात्र ठाकुर केशरी सिंह बारहट ही ऐसे क्रातिकारी देशभक्त हैं, जिन्होने केवल स्वय को ही नही अपने भाई, पुत्र और जमाता को भी मातृभूमि की स्वतत्रता के वलिदान यज्ञ मे आहुति के रूप मे झोक दिया है।

डाक्टर आर० सी० मजूमदार ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिस्ट्री आफ दी फ्रीडम मूवमेट इन इन्डिया' के भाग २ पृष्ठ ३१३ पर राजस्थान मे क्रातिकारी सगठन के सम्बन्ध मे लिखा है—

"राजस्थान मे भी वगाल के नमूने का क्रातिकारी सगठन वग भग के वाद शीघ्र ही खडा हो गया। उन्नीसवी शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षो मे उस सगठन के मुख्य सचालक राष्ट्रीय विचारो विशेषकर सामाजिक तथा शिक्षा सम्बन्धी सुधारो का प्रचार करते थे। उस क्रातिकारी सगठन को खडा करने का श्रेय तीन व्यक्तियो को था वे थे अर्जुनलाल सेठी, वारहट केशरी सिंह और खरवा के राव गोपाल सिंह। जैसा कि अन्य क्रातिकारियो के साथ हुआ उन्होंने अपनी देश सेवा का कार्य सुधारक के रूप मे आरम्भ किया और अन्त क्रातिकारी के रूप मे किया। यह परिवर्तन मुख्यत. श्यामजी कृष्ण वर्मा, लोकमान्य तिलक, और श्री अरविन्द के प्रभाव के कारण हुआ था। उन तीनो महान क्रातिकारी नेताओ का इन तीनो पर गहरा प्रभाव पडा था, क्योकि वे लोग उनके घनिष्ट सम्पर्क मे आए थे। राव गोपाल सिंह ने कलकत्ता जाकर वगाल के क्रातिकारियो से भी सम्बन्ध स्थापित किया था।

अर्जुनलाल सेठी का श्री रासबिहारी वोस के प्रमुख सहायक तथा वालमुकुन्द से घनिष्ट सम्बन्ध था। किरण दत्त नामक क्रातिकारी अध्यापक उनको एक दूसरे से

मिलने और उनका सम्पर्क स्थापित करने वाली कडी का काम करता था।

क्रमशः यह क्रातिकारी सगठन राजस्थान के विभिन्न भागो मे फैल गया। वृटिश भारत से भागे हुए क्रातिकारियो के लिए राजस्थान एक सुरक्षित आश्रम स्थल बन गया शचीन्द्र सान्याल के सगठन के दो सदस्य बनारस से खरवा बमो का निर्माण करने के लिए भेजे गए। दो अन्य बगाली क्रातिकारियो को १६०८ से १६११ के बीच कुचामन के ठाकुर ने आश्रय दिया था।

१६११ तक इस क्रातिकारी सगठन मे बड़ी सख्या मे युवक सम्मिलित हो गए और उनमे से कुछ को मास्टर अमीर चन्द्र, अवध विहारी और वालमुकन्द के पास क्रातिकारी प्रशिक्षण लेने के लिए भेजा गया। उन तरुण क्रातिकारियो मे सबसे प्रसिद्ध ठाकुर केशरी सिंह के पुत्र प्रताप सिंह बारहट थे जिन्होने श्री रासविहारी बोस के द्वारा नियोजित अनेक षडयत्रो मे अत्यन्त महत्वपूर्ण भाग लिया। वे एक शहीद की मौत मरे और उन्होने भयकर यातनाओ के सम्मुख अदम्य साहस और अद्भुत कष्ट सहिष्णुता का परिचय दिया।

इस क्रातिकारी दल ने जून १६१२ मे जोधपुर के महन्त की हत्या कर दी। इस कार्य की व्यवस्था बारहट केशरी सिंह ने की थी। महन्त की हत्या का उद्देश्य क्रातिकारी कार्यों के लिए धन प्राप्त करना था। उस साधू (महन्त) को झूठे बहाने से कोटा लाया गया और दूध मे विष देकर मार दिया गया।

चेतावनी का चूंगटया

जबकि ठाकुर केशरी सिंह बारहट राजस्थान मे क्रातिकारी दल का सगठन कर रहे थे और सशस्त्र विद्रोह की तैयारिया कर रहे थे उसी समय एक ऐसी घटना घटी कि जिससे उनको अत्यन्त क्षोभ हुआ। उनका स्वाभिमान और शौर्य जाग पडा और उन्होंने अपने आश्रयदाता और सरक्षक महाराणा फतेहसिह को चेतावनी दी। यह घटना उस क्रातिकारी देशभक्त के साहस और निर्भयता का सुदर उदाहरण है।

यह उन दिनो की बात है जबकि भारत का शासन सूत्र लार्ड कर्जन जैसे मेधावी, साम्राज्यवादी, भारतीय राष्ट्रवाद के घोर शत्रु और शक्ति शाली लार्ड वायसराय कर्जन के हाथ मे था। लार्ड कर्जन भारत मे राष्ट्रीयता की भावना को ही समाप्त कर देना चाहता था। वृटिश साम्राज्य की शक्ति अपरिमित है, उसकी प्रतिस्पर्द्धा मे ससार की कोई शक्ति नही ठहर सकती और भारतीयो के हित मे यही है कि वे वृटिश सरकार की छत्र छाया मे दासता का जीवन व्यतीत करते रहे यह उसकी मान्यता थी। वह अपनी इस मान्यता को मूर्त रूप देना चाहता था। इसके अतिरिक्त वह स्वय शाही शान शौकत और वैभव का जीवन पसद करता था। सम्राट के प्रतिनिधि की तरह नही वरन वह सम्राट की भाति ही आचरण करता और यह कामना करता था कि भारतीय उसकी सम्राट की तरह ही पूजा अर्चना करें।

यही कारण था कि चतुर लार्ड कर्जन ने ऐडवर्ड सातवें के सिहासनारूढ होने के दिन देहली मे अत्यन्त वैभवपूर्ण भव्य समारोह मनाने की योजना बनाई। योजना यह थी कि उस दिन भारत मे जितने भी राजे महाराजे थे वे सब अपने सामन्तो और अंगरक्षको तथा राज्य चिन्हो और लवाजमेके साथ सजे हुए हाथियो तथा अश्वो पर सम्राट के प्रतिनिधि अर्थात लार्ड कर्जन के जुलूस मे उसके हाथी के पीछे चलें। समस्त दिल्ली सजाई जावे, सेनाए तथा सैनिक बैंड आगे चलें। जुलूस ऐसा भव्य हो कि

भारतीयो के जनमानस पर ब्रिटिश सम्राज्य की महान शक्ति का आभास अंकित हो जावे। जुलूस के अतिरिक्त लार्ड कर्जन ने एक विशाल दरबार का भी आयोजन किया था जिसमे भारत के सभी देशी नरेश सम्राट के प्रतिनिधि को नजराना भेट कर ब्रिटिश सम्राट के प्रति अपनी भक्ति का प्रदर्शन करें। दरबार ऐसा वैभवपूर्ण और शानदार हो कि मुगल सम्राटो का इतिहास चर्चित वैभव भी फीका पड जावे।

सभी देशी नरेशो को फरमान भेज दिए गए कि वे सम्राट के प्रतिनिधि के जुलूस और दरबार मे अपने पूरे राजसी ठाट बाट से सम्मिलित हो। उस समय लार्ड कर्जन ने स्वय सभी चालीस बडे देशी राज्यो का दौरा किया कि जिससे वह महाराजो पर वांछित प्रभाव डाल सके।

जहा भारत के अन्य राज्यो के नरेशो ने इस निमंत्रण का अत्यन्त उत्साह के साथ स्वागत किया, वे शाही जलूस और दरबार मे सम्मिलित होने की तैयारिया करने लगे वहा मेवाड के स्वाभिमानी महाराणा फतह सिह को देहली दरबार मे जाना सम्मान सूचक नही लगा वरन उन्हे मानसिक क्षोभ हुआ। मेवाड के महाराणा की ओर से अनेक प्रकार की अडचनें, शकाए और अपनी प्रतिष्ठा के प्रश्न खडे किए गए। धूर्त लार्ड कर्जन जानता था कि स्वाभिमानी महाराणा को दबाया नही जा सकता अतएव उसने अत्यन्त विनम्र शब्दो मे महाराणा को लिखा कि आप ब्रिटिश सम्राट के परम हितैषी है। उनके सिंहासन रोहण के उत्सव मे आपके सम्मिलित होने से भारत मे सम्राट के प्रति आस्था दृढ होगी। आपकी प्रतिष्ठा और सम्मान का भारत सरकार पूरा ध्यान रखेगी। लार्ड कर्जन की यह युक्ति सफल हो गई सरल स्वभाव के महाराणा फतहसिंह ने दिल्ली दरबार मे सम्मिलित होना स्वीकार लिया।

ठाकुर केशरी सिंह बारहट को जब ज्ञात हुआ कि महाराणा फतहसिंह देहली दरबार मे सम्मिलित होने जा रहे है तो उनका हृदय विषाद और क्षोभ से भर गया। महाराणा के इस निर्णय से उनका अन्तर क्षुब्ध हो उठा, उन्होने महाराणा के कोप की चिन्ता न कर उन्हे चेतावनी देना अपना कर्त्तव्य समझा। उन्होने डिंगल भाषा मे चेतावनी के तेरह सोरठे लिखे और उन्हे महाराणा साहब के पास भेज दिए।

उस समय तक महाराणा की स्पेशल उदयपुर से दिल्ली की ओर प्रस्थान कर चुकी थी। जब स्पेशल ट्रेन चित्तौडगढ से आगे बढी तब ट्रेन मे ही वे सोरठे महाराणा फतहसिंह के हाथ मे दिए गए और उनकी आज्ञा से पढ कर सुनाए गए।

उन सोरठो को सुनकर महाराणा का मुखमंडल रक्तवर्ण हो गया, उनका क्षत्रित्व जाग उठा, बोले "यदि यह सोरठे उदयपुर मे मिल जाते तो हम वहां से प्रस्थान ही नहीं करते। पर! बीच मे लौट जाना उचित नहीं होगा। दिल्ली पहुच कर देखा जायेगा।

इतिहास साक्षी है कि बारहट केशरी सिंह के उन सोरठो का महाराणा के हृदय पर ऐसा गहरा प्रभाव हुआ कि वे अपनी स्पेशल ट्रेन से उतरे ही नहीं, न जुलूस मे सम्मिलित हुए, और न दरबार मे शामिल हुए। लार्ड कर्जन के सदेश की तनिक भी परवाह किए बिना अपनी स्पेशल ट्रेन को उदयपुर लौटने की आज्ञा दे दी। ठाकुर केशरी सिंह बारहट ने लार्ड कर्जन को परास्त कर दिया।

प्यारे राम साधु की हत्या

[illegible] ने जिस जोधपुर मे महन्त की हत्या का उल्लेख किया है

उसका नाम प्यारे राम साधु था, वह अत्यन्त धनी था क्योंकि उसका जोधपुर के राजघराने से घनिष्ट सम्बन्ध था। जब ठाकुर केशरी सिंह अपने पिता की मृत्यु के समय जोधपुर गए तो उन्हे वहा कुछ समय रुकना पड़ा। वहा उन्हे ज्ञात हुआ कि प्यारे राम महन्त राजघराने मे दुराचरण फैला रहा है। उन्होने वहा के लोगो को बहुत धिक्कारा और कहा कि धिक्कार है तुम्हारे जीवन को जो तुम अपने राजघराने मे इस कलक स्वरूप दुराचारी को सहन करते हो। साथ ही, क्योंकि वह महन्त बहुत धनी था अस्तु उसके पास जो धन था वह क्रातिकारी कार्यों के लिए प्राप्त हो सकता था। अतएव शान्तभानु लाहरी उस प्यारे राम महन्त को बद्रीनाथ की यात्रा के बहाने कोटा ले आया और वहा राजपूत छात्रावास मे ठहराया। ग्रीष्मावकाश मे छात्रावास बन्द था उसकी चाबी ठाकुर केशरीसिंह बारहट के पास थी। कोटा के राजपूत छात्रावास मे आने के बाद उसका पता नही चला कि उसका क्या हुआ। अनुमान किया जाता है कि उसकी हत्या कर दी गई।

इधर बृटिश सरकार के गुप्तचर विभाग को ठाकुर केशरी सिंह बारहट पर सदेह हो गया था क्योंकि उन्होने सेनाओ के राजपूत अधिकारियो तथा सैनिको से घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित कर लिया था। उन्होने राजस्थान और मध्य भारत के अनेक स्थानो पर राजपूत तथा चारण छात्रावास स्थापित कर युवको मे सशस्त्र क्राति की भावना जागृति कर दी थी। यही नही उन्होने कई नरेशो और अनेक जागीरदारो को भी देश की स्वतत्रता के महान यज्ञ मे सम्मिलित होने के लिए तैयार कर लिया था। योजना यह थी कि समस्त देश मे एक साथ सैनिक क्राति हो और सारे अग्रेज अधिकारियो को गिरफ्तार कर लिया जावे। कौन किस क्षेत्र मे शाति तथा व्यवस्था का प्रबन्ध करेगा यह भी तय हो गया था। बृटिश सरकार चौकन्नी थी, ठाकुर केशरी सिंह बारहट श्री अर्जुनलाल सेठी तथा खरवा के राव गोपाल सिंह की गतिविधियो को गुप्तचर विभाग ध्यान पूर्वक देख रहा था। अर्जुनलाल सेठी अपने विद्यालय को जो कि वास्तव मे क्रातिकारी युवको को प्रशिक्षण देने का केन्द्र था जयपुर से इन्दौर ले गए थे क्योंकि वहा के सेठ कल्याणमल बाफना ने विद्यालय के लिए भवन इत्यादि निर्माण कराने का उत्तरदायित्व लिया था। उसी समय बिहार के आरा जिले मे निमाज के धनी महन्त की हत्या कर दी गई। अर्जुनलाल सेठी के विद्यालय के विद्यार्थी माणक चन्द, जयचन्द, मोतीचन्द तथा ठाकुर केशरी सिंह के भाई जोरावर सिंह बारहट उसमे शामिल थे। उस सम्बन्ध मे विद्यालय तथा छात्रावास की इन्दौर मे तलाशी हुई। श्री अर्जुनलाल सेठी की तलाशी मे पुलिस को दो पत्र मिले जिनकी भाषा साकेतिक थी। उस पत्र मे लिखा था कि "पुराना आटा मछलियो को डाल दिया जाय।" ठाकुर केशरी सिंह के एक मित्र रामकरण तथा उनकी बहिन प्रभावती भी क्रातिकारी दल के सदस्य थे। एक दिन प्रभावती ने अपने भाई रामकरण से कहा कि "मछलिया आटा खाकर मोटी हो गई होगी।" धर्मसिंह गुप्तचर जो एक साधु के वेश मे उस स्थान पर उपस्थित था समझ गया कि उस पत्र का इस वाक्य से सम्बन्ध है और यह किसी षडयत्र को या क्रातिकारी रहस्य को समझने की कुजी है।

पुलिस ने छान बीन की और प्यारे राम महन्त के रहस्यमय ढग से लापता हो जाने की दो साल पुरानी रिपोर्ट को निकाला। इन्दौर का पुलिस अधिकारी जिसने सेठी जी के विद्यालय और छात्रावास की तलाशी ली थी, वह शाहपुरा पहुचा क्योंकि

ठाकुर केशरी सिंह बारहट कोटा में अपने पैतृत गृह शाहपुरा गए हुए थे। वह अपने साथ पोलीटिकल एजेन्ट का पत्र भी ले गया था। राजाधिराज नाहरसिंह ने केशरी सिंह जी को गिरफ्तार करवा दिया। यही नही राजाधिराज ने केशरी सिंह तथा उनके भाइयो की सारी जागीर हवेली और सम्पत्ति भी जब्त करली। इन्दौर का पुलिस अधिकारी आर्मस्ट्राग उन्हे इन्दौर ले गया। ठाकुर केशरी सिंह बारहट के क्रातिकारी भाई जोरावर सिंह बारहट तथा पुत्र प्रताप सिंह बारहट पहले ही शाहपुरा से निकल गए थे क्योकि गिरफ्तारियो की अफवाह जोरो पर थी और वे दोनो महाविप्लवी नायक रासविहारी के साथ अनेक षडयत्रो मे सम्मिलित थे अतएव वे शाहपुरा से ठाकुर केशरी सिंह बारहट की गिरफ्तारी से दो दिन पूर्व निकल गए और भूमिगत हो गए।

ठाकुर केशरी सिंह बारहट को तीन महीने तक मऊ मे सेना की कैद रखा गया और तदउपरात उन्हे कोटा लाया गया और उन पर तथा अन्य व्यक्तियो पर प्यारे राम की हत्या का अभियोग चलाया गया। भारत सरकार के उच्च पुलिस अधिकारी इस ऐतिहासिक अभियोग मे आकाश पाताल एक कर रहे थे। कोटा के जज श्री विशनलाल कौल निष्टावान और न्याय प्रिय न्यायाधीश थे। भारत सरकार के उच्च पुलिस अधिकारियो ने उस अभियोग के सम्बन्ध मे अभियोग चलाए जाने के पूर्व उनसे परामर्श किया। जब श्री कौल ने बताया कि ठाकुर केशरी सिंह बारहट पर अभियोग सिद्ध नही होगा तो कोटा राज्य पर राजनीतिक दबाव डलकर भारत सरकार ने श्री कौल को कोटा से हटवा दिया और उनके स्थान पर श्रीराम भार्गव को जज नियुक्त किया गया। जब भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के सर चार्ल्स क्लीवलैंड ठाकुर केशरीसिंह का क्रातिकारी दल से सम्बधित होना सिद्ध नही कर सके तब उन पर हत्या का अभियोग चलाया। इस सम्बन्ध मे उनके अतिरिक्त शात भानु लाहरी, हीरालाल जालौरी, लक्ष्मीलाल तथा रामकरण को भी गिरफ्तार किया गया। लक्ष्मी लाल सरकारी गवाह बन गए उन्होने अपनी खाल बचाने के लिए उन देशभक्तो को फसा दिया। श्री भार्गव ने ठाकुर केशरी सिंह बारहट, शात भानु लाहरी तथा रामकरण को आजन्म कठोर कारावास (बीस वर्ष) और हीरालाल जालौरी को सात वर्ष का कारावास दिया। जोरावर सिंह फरार हो गए थे।

इस अभियोग का महत्व इसी से अनुमान किया जा सकता था कि तत्कालीन सभी अग्रेजो द्वारा सम्पादित महत्वपूर्ण पत्र 'टाइम्स आफ इडिया' आदि इस अभियोग का प्रतिदिन मुख पृष्ठ पर समाचार देते थे। लखनऊ के प्रसिद्ध बैरिस्टर नवाब हामिद अली खा ठाकुर केशरी सिंह बारहट के अभियोग मे उनके पक्ष की पैरवी कर रहे थे। उन्होने न्यायालय मे ठाकुर केशरी सिंह बारहट की विद्वता, कवित्व, शक्ति, तथा देश भक्ति की प्रशसा करते हुए जो शेरें पढ़ी थी उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि नवाब हामिद अली जैसा व्यक्ति जो अग्रेजी शासन का प्रशसक था और जिसके उच्च अग्रेज अधिकारियो से निकट के सम्बन्ध थे वह भी ठाकुर केशरी सिंह की विद्वता देश भक्ति और उनके ऊचे आदर्शो से अत्यत प्रभावित हो गया था। यद्यपि पुलिस ठाकुर केशरी सिंह के विरुद्ध हत्या का अभियोग सिद्ध नही कर पाई परन्तु राजनीतिक दबाव के परिणाम स्वरूप उनको आजन्म कठोर कारावास का दण्ड दे दिया गया।

भारत सरकार को यह भी सहन नही हुआ कि ठाकुर केशरी सिंह बारहट

को कोटा जेल मे रहने दिया जावे। बात यह थी कोटा जेल मे राज्य के उच्च पदाधिकारी, जागीरदार तथा सभ्रात व्यक्ति उनसे बहुधा मिलने जाते थे। भारत सरकार को यह सदेह हुआ कि जेल मे उनके साथ बहुत नरमी का व्यवहार किया जाता है अतएव भारत सरकार के वैदेशिक विभाग के दवाव से उन्हे कोटा जेल से हटा कर विहार के हजारीबाग जेल मे भेज दिया गया। परन्तु जो व्यक्ति विद्वता, ज्ञान, स्वाभिमान, साहस, देशभक्त और शौर्य का धनी हो उसके व्यक्तित्व का प्रकाश जहा भी वह रहे फैलता है। हजारीवाग जेल के सुपरिटेंडेंट कर्नल मीक और उनकी पत्नी घटनावश उनके व्यक्तित्व से अत्यत प्रभावित हुए। जब जेल के निरीक्षण के लिए आए तो उन्होने देखा कि ठाकुर केशरी सिह कैदी के वस्त्र इतने साफ और स्वच्छ थे तथा उनका लोटा और तसला तथा कैदी की सख्या बताने वाला धातुप्लेट चादी की तरह चमक रहा था। उन्हे उस कैदी के प्रति कौतूहल हुआ। बुलाकर पूछा। बारहट जी ने उत्तर दिया कि यद्यपि यह वस्तुए कारागृह की हैं पर बीस लम्बे वर्षो तक मेरे उपयोग मे आने वाली है अस्तु उन्हे स्वच्छ रखना मेरा कर्तव्य है। कर्नल मीक को बतलाया गया कि वे जब गेहूँ बीनते हैं तो भारत का मानचित्र गेहूँ के द्वारा बना कर अन्य कैदियो को भारत के इतिहास भूगोल व भारत की सभ्यता के बारे मे जानकारी देते हैं। यह जानकर कि बारहट केशरी सिंह सस्कृत के उद्भट विद्वान और कवि हैं श्रीमती मीक की जिज्ञासा और अधिक जागृत हो उठी। उनसे बात करके पति पत्नी उनके आकर्षक व्यक्तित्व से बहुत अधिक प्रभावित हुए और श्रीमती मीक नियमित रूप से उनसे सस्कृत पढने लगी।

कर्नल मीक के प्रयत्न से प्रथम महायुद्ध मे विजय के उपलक्ष मे श्री केशरी सिंह बारहट को पोलीटिकल विभाग ने मुक्त किये जाने का आदेश दे दिया। श्रावण कृष्ण ७ वि० सं० १९७६ को वे हजारी बाग जेल से मुक्त हो गए।

कर्नल मीक से पचास रुपये उधार लेकर वे हजारी बाग से चले। वाराणसी मे अपने गुरु स्वामी ज्ञानानन्द जी के दर्शन किए। उन्होने अपने मित्रो को हजारीबाग जेल से ही सूचना दे दी थी। कोटा स्टेशन पर बडी सख्या मे उनके प्रशसक तथा स्नेही जन उनका स्वागत करने के लिए उपस्थित थे।

जब कोटा स्टेशन पर वे उतरे तो उनका भव्य स्वागत हुआ। एक मित्र ने पूछा कि आपको कुवर प्रतापसिह की बरेली जेल मे मृत्यु होने का समाचार कब मिला। तब बारहट जी ने कहा अभी आपसे मिल रहा है। जब उन्हे बताया गया कि वीर प्रताप ने असहनीय यातनाए सहने पर भी महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस का तथा दल के कोई भेद नही बतलाए तब उन्हे यातनाए देकर मार दिया गया तो ठाकुर केशरी सिंह ने केवल इतना ही कहा कि "माता का पुत्र माता के बधनो को काटने के लिए बलिदान हो गया।"

जब ठाकुर केशरीसिह कारागार से मुक्त कर दिए गए तो कोटा राज्य ने भारत सरकार से शिकायत की कि भारत सरकार ने हमारे कैदी को बिना हमारी सहमति लिए कैसे छोड दिया? राज्य के अधिकार का प्रश्न था। भारत सरकार के वैदेशिक विभाग ने अपनी भूल स्वीकार की और भारत सरकार ने राज्य को लिखा कि राज्य सरकार के बिना पूछे ठाकुर केशरीसिंह बारहट को मुक्त कर देने मे भूल हुई पर वे कोटा मे ही हैं कोटा राज्य की सरकार उन्हे पुन गिरफ्तार कर सकती है।

यह समाचार पाकर उनके राजनीतिक मित्र तथा सहयोगी बहुत चिन्तित हो उठे। गणेश शंकर विद्यार्थी तथा राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन बहुत चिन्तित हो गए। उन्होंने आग्रह किया कि बारहट जी कोटा से बाहर निकल जावें। अपने मित्रों तथा शुभ चिन्तकों को अत्यन्त चिन्तित और अधीर जानकर ठाकुर केशरी सिंह बारहट कानपुर गए उन्हें समझाया कि मैं सदैव ब्रिटिश सरकार द्वारा देशी राज्यों के अधिकारों को हड़पने का विरोध करता रहा हूं अतएव मैं कोटा वापस जाऊंगा और यदि मैं पुनः गिरफ्तार हो जाऊं तो आप जो भी चाहें आन्दोलन करना। यदि भारत माता की सेवा मे समस्त जीवन खप जावे तो मैं अपने जीवन को सार्थक समझूंगा। कानपुर से ही उन्होंने कोटा के महाराव को एक पत्र लिखा उसमे उन्हें सूचित किया कि भारत सरकार ने मुझे कारागार से मुक्त करके कोटा रियासत का अपमान किया है यह मुझे भी स्वीकार नहीं है। कोटा राज्य की प्रतिष्ठा और उसके अधिकारों की रक्षा के लिए मैं स्वयं कोटा जेल पर पहुंच जाऊंगा और शेष जीवन जेल में ही व्यतीत करूंगा जेलर को आदेश कर दिया जावे कि मैं जब वहां पहुंचूं तो मुझे जेल मे रख लिया जावे। पत्र मे उन्होंने कोटा जेल मे पहुंचने की तारीख भी लिखदी।

निश्चित तारीख के पूर्व ही कोटा नरेश ने ठाकुर केशरी सिंह बारहट को बुला भेजा और कोटा के दीवान चौबे रघुनाथदास के समक्ष कहा कि उस समय भी हम यह नहीं चाहते थे कि तुम्हें कारागार का दण्ड दिया जावे, परन्तु हम विवश थे। इस समय तो हमने रियासत के अधिकारों की रक्षा के लिए भारत सरकार से लिखा पढी की थी उसने अपनी भूल स्वीकार करली यही हमारी इच्छा थी तुम्हें पुनः कारागार में रखने की हमारी तनिक भी इच्छा नहीं है।

ठाकुर केशरी सिंह की इच्छा थी कि आगे देशी राज्यों मे कार्य किया जावे। इसी उद्देश्य से उन्होंने श्री जमनालाल बजाज के सहयोग से वर्धा से राजस्थान केशरी पत्र निकालने का निश्चय किया और तत्सम्बन्धी तैयारियां करने मे जुट गए परन्तु कारागार मे जर्नल मीक के परिचय के पूर्व जो उन्हें यातनाएं दी गई थी उनके कारण उनका स्वास्थ्य खराब हो गया था। इस कारण वे वर्धा मे "राजस्थान केसरी" का कार्य न कर सके और पत्र का संपादन श्री विजयसिंह पथिक को सौंप कर वर्धा से चले गए। उनका शेष जीवन कोटा मे ही व्यतीत हुआ।

ठाकुर केशरी सिंह बारहट उद्भट विद्वान डिंगल भाषा के मूर्धन्य कवि राजनीति विशारद तो थे ही उनमे देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी थी। यही कारण था कि उन्होंने अपने समस्त परिवार की मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए आहुति दे दी। उनकी गहन देशभक्ति की भावना का किंचित अनुमान उस पत्र से लग सकता है जो बीस वर्ष की सजा हो जाने पर उन्होंने हजारीबाग जेल से अपनी पुत्री को लिखा था। पत्र इस प्रकार था—

श्रीमती सौभाग्यवती चिरंजीवी बाई चिन्तामणि प्रसन्न रहो।

तुम्हारा पत्र मिला पढकर परम संतोष हुआ। मेरे सम्बन्ध मे तुम लोग चिन्ताकाल न बिताकर स्वकर्त्तव्य धर्म पर ही मनन करो। भारत मे जन्म लेने के साथ ही जो कर्त्तव्य प्रत्येक मानव जीवन के साथ अविच्छिन्न प्राप्त होते हैं, जो ऋण देश की प्रत्येक संतान पर चाहे वह पुरुष हो या स्त्री हो, सब पर रहता है उसी कर्तव्य को पूर्ण करने, उसी ऋण से मुक्त होने में ही हमारा कल्याण है। मेरे हिस्से को मेरे लिए

ही छोड दो वह भगवत परीक्षा का काल तीव्र गति से जा रहा है। उत्तीर्णता का माध्यन मेरे आतरिक बल पर निर्भर है और उम अन्तर मे वह परीक्षक आदि गुरु स्वय विराजमान है। चाहे मच्चे जीवन के रहस्य और जगद धर्म के मर्म को न जानने वाले हमारे कुटुम्ब पर आई हुई विपत्ति को देख कर नाना प्रकार के फैसले देते हुए विना कीमत की टीका टिप्पणी मे लगे होगे और वे वाक्य तुम्हारे कानो तक भी पहुचते होगे परन्तु तुम्हारे धैर्य और विचारो पर मुझे सतोष है। तुम अवश्य यह जानकर सतुष्ट होगी कि भारत के एक महत्वपूर्ण प्रदेश मे जागृति होने का प्रारम्भ अपने कुटुम्ब की महान आहृति से हुआ है। इस राजसूर्य यज्ञ मे हम लोगो की वलि मगलमय हुई है। नाशवान शरीरो की तुच्छता और इस महा भारत अनुष्ठान की महत्ता मिला कर देखने से ही यह सब प्रतीत होगा। बाहर के आत्मीय जन की कुशलता सदा चाहता हू यह समय बडी सावधानी का है। विश्वास किसी पर न करना हमारा मिलन अवश्य होगा। तुम्हारे पत्र मुझे मिल जाते हैं स्वय प्रवध है। मेरे प्रिय ईश्वर की जय हो।

जिस व्यक्ति को आजन्म कारावास हुआ हो। जिसका समस्त परिवार वृटिश सरकार के नृशस दमन का शिकार हो चुका हो उसके यह विचार इस वात के साक्षी हैं कि वह प्रत्येक क्षण केवल मातृभूमि के लिए ही जीवित रहता था। कितने भारतीय हैं जिन्होने उन जैसी उद्दात देश भक्ति का परिचय दिया हो।

यद्यपि ठाकुर केशरीसिंह वारहट देशी नरेशो के आश्रय मे रहे परन्तु जव जव उन्हें प्रतीत हुआ कि वे पथ भ्रष्ट हो रहे हैं तव-तव उन्होने निस्सकोच उनकी भर्त्सना और आलोचना की। वास्तव मे ठाकुर केशरी सिंह राजस्थान मे मातृभूमि की स्वतत्र के प्रयत्न के श्री गणेश करने वालो मे प्रमुख थे। खेद है कि स्वतत्र हो जाने के उपरात उन जैसे वीर साहसी और वलिदानी देशभक्त को देश भूल गया था।

यह हर्ष और सतोप की वात है कि शाहपुरा के प्रसिद्ध राजनीतिक नेता श्री गोकुललाल असावा की अध्यक्षता मे "वारहट स्मारक समिति" ने ठाकुर केशरी सिंह वारहट, जोरावर सिंह वारहट और प्रताप सिंह वरहट की मूर्तियो की स्थापना कर उनके स्मारक का निर्माण करवाया है। २५ अप्रेल १६७६ को तीनो क्रातिकारियो की मूर्तियो का अनावरण अत्यन्त भव्य और उत्साह पूर्ण समारोह मे राजस्थान के मुख्य मत्री श्री हरिदेव जोशी ने करते हुए उनके स्मृति ग्रन्थ को प्रकाशित करने के लिए पच्चीस हजार रुपये राज्य सरकार द्वारा देने की घोपणा की थी। वारहट स्मारक समिति शीघ्र ही तीनो महान क्रातिकारियो के स्मृति ग्रन्थ को प्रकाशित करेगी।

चेतावनी का चूंगट्या

(१)

पग पग भम्या पहाड,
धरा छाड राख्यो धरम।
(इसू) महाराणा'र मेवाड,
हिरदै वसिया हिन्द रे॥

अर्थात—पैदल पैदल पहाडो मे भटकते फिरे और धरा (भूमि) का मोह छोड़ कर धर्म (कर्त्तव्य) की रक्षा की। इसी कारण महाराणा और मेवाड यह दोनों शब्द हिन्द के हृदय मे वस गए।

(२)

घणा घलिया घमसाण,
(तोई) राणा सदा रहिया निडर ।
(अब) पेखता फरमाण,
हलचल किम फतमल हुई ॥

अनेकानेक घोर घमसान युद्ध हुए तब भी महाराणा सदा निर्भय बने रहे। किन्तु अब केवल वृटिश सरकार के शाही फरमान को देखते ही हे! फतहसिंह (महाराणा) यह हलचल कैसे मच गई ।

(३)

गिरद गजा घमसाण,
नहचै धर माई नही ।
(ऊ) मावे किम महराण,
गज दो सैरा गिरद मे ॥

निश्चय ही जिनके मदोन्मत्त हाथियों द्वारा रणभूमि मे उठा हुआ गर्दा (धूल) पृथ्वी मे नहीं समाता था वह महाराणा उसके लिए दिया गया दिल्ली दरबार में स्थान (जगह) दो सौ गज के गिरदाव (घेरे) मे कैसे समा जायगा ।

(४)

ओरां ने आसान,
हाका हर वल हालणो ।
(पण) किम हालै कुलराण,
(जिण) हरवल साहा हाकिया ॥

अ य राजाओ के लिए यह आसान है कि वे शाही सवारी मे हक ले जाने पर आगे आगे वढते चलें, किन्तु वह प्रतापी गुहिल वंश जिसमें महाराणा ने जन्म लिया है उस तरह कैसे चलेगा जिसने मुगल वादशाहो को अपनी हरौल (हरावल) मे हकाला था ।

(५)

नरियद सह नजराण,
झुक करसी सरसी जिकां ।
(पण) पसरेलो किम पाण,
पाण छता थारो फता ॥

जिनके लिए सहज है वे सब राजा लोग तो झुक झुक कर नजराने दिखा सकेंगे । परन्तु हे महाराणा फतहसिंह । तेरे हाथ में तलवार होते हुए नजराने के लिए तेरा हाथ कैसे फैलेगा ।

(६)

सिर झुकिया सहसाह,
सिंहासण जिण सामने ।
(अब) रलणो पगत राह,
फवै किम तोने फता ॥

जिस सिंहासन के सामने वादशाहो के सिर झुके हैं उसके अधिकारी होते हुए

हे पत्तहसिंह ! तुझे पंक्ति मे आसन प्राप्त करना कैसे शोभा देगा ।

(७)

सकल चढावै सीस,
दान धरम जिणरो दियो ।
सो खिताब बगसीस,
लेवण किम ललचावसी ॥

जिनके दिए हुए धर्म सयुक्त दान को ससार सिर पर चढाता है वह (हिन्दू पति) खिताबों की बखशीश लेने के लिए कैसे ललचायेगा ?

(८)

देखेला हिन्दवाण,
निज सूरज दिस नेह सू ।
पण तारा परमाण,
निरख निराशा न्हाकसो ॥

समस्त हिन्दू अपने सूर्य की ओर जब स्नेह सिक्त आखो से देखेंगे और उस समय वह एक तारे की तरह दृष्टिगोचर होगा तो अवश्य ही परिताप से निश्वास छोडेंगे ।

(९)

देखे अजस दीह,
मुलकेलो मन ही मना ।
दम्भी गढ दिल्लीह,
सीस नमता सीसवद ॥

हे शिशोदिया । तेरे सर को अपने सामने झुकता हुआ देख कर दिल्ली का वह दम्भी (घमडी) दुर्ग इस अवसर को अपने लिए अभिमान का समझ कर अहकार से मन ही मन मुस्करायेगा ।

(१०)

अन्त बेर आखीह,
पातल जे बाता पहल ।
राणा सह राखीह,
जिणरी साखी सिर जटा ॥

महाराणा प्रताप ने अपने अन्तिम समय मे जो बातें पहले कही थी उनको अब तक सब महाराणाओ ने निभाया है और उसकी साक्षी तुम्हारे सिर की जटा दे रही है ।

(११)

कठण जमानो कौल,
बाधे नर हीमत बिना ।
(यो) बीरा हदो बोल,
पातल — सागे पेखिया ॥

मनुष्य अपने मे हिम्मत न होने पर ही यह सिद्धात बाधा करता है कि जमाना कठिन है—इस वीर वाणी के रहस्य को प्रताप और सागा हृदयगम किए

हुए थे।

(१२)

अब नग सारा आस,
राण रीत कुल राखसी।
रहो स्हाय सुखदास,
एकलिंग प्रभु आपरै ॥

अब तक भी सबको आशा है कि महाराणा अपनी कुल परम्परा की रक्षा करेंगे। सुख राशि भगवान एकलिंग आपके सहायक बने रहें।

(१३)

मानमोद सीसोद,
राजनीत बल राखणो।
(ई) गवरमिण्ट री गोद,
फल मीठा दिठा ॥

अपनी प्रसन्नता और प्रतिष्ठा को राजनीति के बल से कायम रखना चाहिए। इस गवर्नमेंट की शरण मे जाने से हे फतहसिंह क्या कभी मधुर फल पाओगे।

ठाकुर केशरीसिंह बारहट के ऊपर लिखे डिंगल भाषा के सोरठो ने महाराणा के वश परम्परागत स्वाभिमान और स्वतन्त्रता की भावना को जागृत कर दिया वे दिल्ली दरबार मे सम्मिलित नही हुए। ठाकुर केशरीसिंह ने अपनी लेखनी के द्वारा उस दम्भी वायसराय लार्ड कर्जन को जिसके समक्ष भारत के राजे महाराजे भय से कांपते थे, पराजित कर दिया।

ठाकुर केशरी सिंह बारहट महाराणा फतहसिंह की सेवा मे रहे थे। महाराणा फतहसिंह ने ही उन्हें अपने जामाता कोटा के महाराव के पास भेजा था। साधारण व्यक्ति अपने आश्रय दाता फतहसिंह जैसे स्वाभिमानी नरेश को जबकि उन्होंने दिल्ली दरबार मे जाने का निर्णय ले लिया था ऐसी चुभने वाली बातें कहने का स्वप्न मे भी साहस नही करता। परन्तु ठाकुर केशरी सिंह दूसरी धातु के बने थे। उन्होंने जब यह देखा कि महाराणा ने दिल्ली दरबार मे सम्मिलित होने का निर्णय ले लिया है तो उनके नाराज होने की परवाह बिना किये उन्होने कड़ी चेतावनी देना अपना कर्त्तव्य समझा। यह घटना ठाकुर केशरी सिंह के साहस, निर्भीकता और उज्ज्वल चरित्र का एक सुंदर और सशक्त प्रमाण है।

कोटा षडयंत्र अभियोग में इंदौर के डसपैक्टर जनरल पुलिस आर्मस्ट्रांग इनवेस्टिगेशन आफिसर थे। उस महत्वपूर्ण अभियोग मे बृटिश सरकार तथा भारत के सभी अंग्रेजी भारत विरोधी पत्र बुआधार बारहट केशरी सिंह के विरुद्ध प्रचार कर रहे थे। बृटिश सरकार चाहती थी कि उनको कठोर दण्ड दिया जावे। कोटा राज्य सरकार पर दबाव डाला जा रहा था। ठाकुर केशरी सिंह की ओर से भारत के प्रसिद्ध और प्रमुख बैरिस्टर लखनऊ के नवाब हामिद अली शाह पैरवी करने आए थे। यद्यपि नवाब हामिद अली शाह अंग्रेजो के प्रशंसक थे उनकी शिक्षा दीक्षा इङ्गलैंड मे ही हुई थी और बृटिश अधिकारी उनके निकट थे परन्तु वे ठाकुर केशरी सिंह के व्यक्तित्व से इतने अधिक प्रभावित हुए कि बहस कर चुकने के उपरांत उन्होंने स्पेशल जज कोटा की अदालत में निम्नलिखित शेर कहे थे—

"यह इरशादे अदालत है, उठो तुम बहस को हामिद,
निगाहे मुलाजिमो की भी, मगर कुछ तुम से कहती हैं।
अदब से यह गुजारिश हो, हुजूर अब गौर से दम भर,
इधर देखें कि नब्जें खून होकर दिल से बहती हैं।
लहू का एक दरिया जो न देखा जायगा हरगिज,
बहेगा इस जमी पर, खूबिया जिस जा पै रहती है।
इसी इजलास मे याने कहेंगे किस्सा मुलजिम का,
वो मुलजिम शायरे एकता सभायें जिसको कहती है।
वो मुलजिम, उम्र जिसकी देश की खिदमत मे गुजरी है,
वो मुलजिम, पानी होकर हड्डिया अब जिसकी बहती है।
वही मुलजिम बराबर कैद के जिसको हिरासत है,
बदन मे हड्डिया जितनी हैं सब तकलीफ सहती है।
वो मुलजिम 'केसरी' जो जा औदिल से देश का हामी,
वो जिसकी खूबिया अखलाक का दम भरती रहती हैं।
बहुत शोहरत सुनी है आपके इसाफ की हमने,
अदालत गुस्तरी की नदिया हर शिप्त बहती हैं।
महाराज के साये मे यही नायब रहे 'हामिद,'
रियासत की भलाई हो दुआयें हक से कहती हैं।

अध्याय ६
जोरावर सिंह वारहट

बीसवी शताब्दी के प्रथम दशाब्द मे भारत मे क्रातिकारी भावना अत्यन्त उग्र हो गई थी। वग-भग आन्दोलन ने देश भर मे एक नवीन राजनैतिक चैतन्य उत्पन्न कर दिया था। दासता की असहाय पीडा के कारण स्वाभिमानी देशभक्त भारतीय यह मानने लगे थे कि ब्रिटिश साम्राज्यवादी सरकार कभी भी भारत के शोषण तथा उत्पीडन को समाप्त नही करेगी। अस्तु देश मे एक उग्र क्रातिकारी आन्दोलन उठ खडा हुआ था। सैनिको मे क्रातिकारी भावना भरने के लिए क्रातिकारी युवक क्रातिकारी साहित्य वाटने, वम वनाने के कारखाने स्थापित करने, विदेशो से पिस्तौल तथा रिवाल्वर मगवाते और ब्रिटिश अधिकारियो और देशद्रोही अग्रेजो के चाटुकार भारतीयो को अपनी गोली का निशाना बनाते, अपने दल के लिए धन प्राप्त करने के लिए डाका डालते। घिर जाने पर युद्ध करते हुए या तो वीरगति प्राप्त करते अथवा फासी के तख्ते पर 'वन्दे मातरम' का जयघोष करते हुए मातृभूमि की वलिवेदी पर आहुति दे देते थे।

उस समय उत्तर भारत मे महाविप्लवी नायक रासविहारी बोस इन क्रातिकारी दल के सर्वमान्य नेता और सगठनकर्ता थे। वे सेना मे क्रातिकारी भावना उत्पन्न कर एक महाविप्लव करने का आयोजन कर रहे थे। इसी उद्देश्य से उन्होने सभी प्रातो तथा राज्यो मे अपने सहायक और सहयोगियो का जाल बिछा दिया था। राजस्थान मे भी वे सक्रिय थे। इस विप्लव की महान योजना मे ठाकुर केशरीसिंह वारहट, महान देशभक्त, उद्भट विद्वान, कवि और राजनीतिज्ञ उनके सहयोगी थे। राजपूताने के राजदरबारो मे उनकी बहुत प्रतिष्ठा थी। उदयपुर महाराणा उनका बहुत सम्मान करते थे। कोटा के महाराणा ने उनकी ख्याति सुनकर उन्हे उदयपुर के महाराणा से माग लिया था और वे कोटा महाराणा की सेवा मे आ गये थे। उस समय उनका श्री रासविहारी वोस से सम्पर्क हुआ और वे उस महान विप्लव की योजना मे रासविहारी वोस के सहयोगी वन गये थे।

क्रातिकारी कार्य को राजस्थान मे आगे बढाने के लिए उन्होंने अपने पुत्र कुवर प्रताप सिह वारहट, अपने छोटे भाई जोरावर सिह वारहट तथा अपने जामाता ईश्वरदान आसिया को रासविहारी वोस के अत्यन्त विश्वास प्राप्त प्रसिद्ध क्रातिकारी मास्टर अमीरचन्द के पास क्रातिकारी कार्यो के प्रशिक्षण के लिए दिल्ली भेज दिया था। जब मास्टर अमीरचन्द ने उन तीनो क्रातिकारी युवको का श्री रासविहारी वोस से परिचय कराया तो उन्होने कहा था "देश भर मे ठाकुर केशरी सिंह वारहट ही एक ऐसे क्रातिकारी देशभक्त हैं जिन्होने केवल अपने को ही नही अपने भाई, पुत्र और जामाता को भी मातृभूमि की वलिवेदी पर आहुति देने के लिए भेज दिया है।

दिल्ली मे मास्टर अमीरचन्द के पास क्रातिकारी कार्यों का प्रशिक्षण प्राप्त कर वे तीनो वापस राजस्थान मे आकर क्राति के कार्य मे जुट गये। प्रताप सिंह वारहट महाविप्लवी नायक रासविहारी वोस के अत्यन्त विश्वास पात्र सहायक वन गये थे। राजस्थान मे क्रातिकारी दल के वे सगठनकर्ता थे। वे अपने चाचा श्री जोरावर सिंह के साथ सेना मे क्रातिकारी विचारो का प्रचार करते और देशभक्त युवको को दल मे सम्मिलित करने लगे।

दिल्ली को भारत की राजधानी बनाने की घोषणा की। बात यह थी कि बंगाल में क्रांतिकारी इतने सक्रिय थे कि ब्रिटिश सरकार कलकत्ता से राजधानी हटा देश के किसी भीतरी भाग मे ले जाना चाहती थी। उस समय ब्रिटिश कूटनीतिज्ञो ने सरकार को परामर्श दिया कि अत्यन्त प्राचीन काल से दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) भारत की राजधानी रही है। महाभारत काल से भारत दिल्ली को राजधानी के रूप मे देखता रहा है। मुगल बादशाहो के समय भी दिल्ली ही भारत की राजधानी थी। भारत के राजे-महाराजे, नवाब तथा सामान्य जन का दिल्ली से मनोवैज्ञानिक तथा भावनात्मक सम्बन्ध है। कलकत्ता जिसका निर्माण अंग्रेजो ने किया उसका भारतीय जनमानस के साथ कोई सम्बन्ध नही है। अस्तु यदि कलकत्ते के स्थान पर दिल्ली को भारत की राजधानी बनाया जावे तो भारतीय जन-समुदाय पर उसका अच्छा मनोवैज्ञानिक प्रभाव पडेगा और भारतीय इस परिवर्तन का हार्दिक स्वागत करेंगे। इसके अतिरिक्त उन्होने सरकार को यह भी परामर्श दिया कि भारतीय सम्राट मे ईश्वरीय अंश मानते है अस्तु यदि सम्राट स्वय भारत आकर दिल्ली को राजधानी बनाने की घोषणा करें तथा बग-भग समाप्त कर दें तो इससे भारतीयो के मानस पर इसका अच्छा प्रभाव पडेगा।

अस्तु इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए १२ दिसम्बर १९११ को एक विराट दरबार किया और स्वय सम्राट जार्ज पचम भारत आये। उस दरबार मे सभी देशी नरेश, जागीरदार, भूस्वामी, उद्योगपति, धर्माचार्य तथा सभी गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। भारत के सभी शीर्ष व्यक्ति उस दरबार मे उपस्थित थे। सम्राट ने घोषणा की कि सरकार कलकत्ते के स्थान पर अब दिल्ली को राजधानी बनावेगी क्योकि वह इन्द्रप्रस्थ के महान ऐश्वर्य का पुनरुद्धार करना चाहती है। इस दरबार का भारत के जनमानस पर अनुकूल प्रभाव पडा था। ब्रिटिश सरकार इससे प्रसन्न और सतुष्ट थी। यही कारण था जब नयी दिल्ली का निर्माण हो गया तो सरकार ने नयी राजधानी के उद्घाटन समारोह को भी उसी शान-शौकत तथा गौरवशाली ढग से मनाने का आयोजन किया।

योजना यह थी कि कलकत्ते से वायसराय लार्ड हार्डिंग की स्पेशल ट्रेन जब नयी दिल्ली पहुचे तो भारत के सभी देशी नरेश, जागीरदार, व्यापारी, उद्योगपति तथा अन्य सम्भ्रात जन उनका स्वागत करें। स्टेशन खूब सजाया जावे और वहा से वायसराय तथा वायसरीन सजे हुए हाथी पर बैठ कर जलूस मे दिल्ली मे प्रवेश करें। समस्त दिल्ली सजाया जावे, सभी देशी नरेश अपने अगरक्षको के साथ जुलूस मे चलें। जुलूस मे देशी राज्यो तथा भारत सरकार की सेनाए हो जुलूस ऐसा भव्य हो कि भारतीय चकित हो जावें और ब्रिटिश साम्राज्य की महान शक्ति को देख सकें। ब्रिटेन अजेय है कोई शक्ति उसे पराभूत नही कर सकती यह प्रभाव डालने के लिए ही यह सारी योजना की गयी थी।

उधर महान विप्लवी नायक रासबिहारी बोस ब्रिटिश शासन के केन्द्र दिल्ली मे भारत के सभी वर्गों के शीर्षस्थ लाखो की सख्या मे उपस्थित जन समूह मे ब्रिटिश साम्राज्य की शक्ति के प्रतीक वायसराय को उसकी सेना और अग-रक्षको की आख के सामने मारकर ब्रिटिश शक्ति को चुनौती देने तथा भारतीयो के मानस पर जो आतक और भय छाया हुआ था उसको समाप्त करने की योजना बना रहे थे। अतएव उन्होने अपने भरोसे के शिष्यो और सहयोगियो को दिल्ली बुला भेजा। जोरावर सिंह

बारहट तथा प्रताप सिंह बारहट को रासबिहारी बोस का सदेश मिला । वे दिल्ली पहुंच गये ।

लार्ड हार्डिंग की सजी हुई स्पेशल ट्रेन कलकत्ते से जब वायसराय को लेकर दिल्ली पहुंची तो उनका सम्राट के समान भव्य-स्वागत हुआ । तोपो की गडगड़ाहट से समस्त प्रदेश गू ज उठा । भारत के समस्त देशी नरेश स्वागत के लिए नव-निर्मित स्टेशन के प्लेटफार्म पर उपस्थित थे । स्वागत की औपचारिक रस्मो के समाप्त होने पर लार्ड हार्डिंग तथा वाइसरीन एक बहुत ऊचे हाथी पर जो कारचोबी की भूल से सुसज्जित था और जिस पर गगा–जमुनी सोने-चादी का हौदा रक्खा था सवार हुए और वह शानदार जुलूस चला । उस जुलूस को देखने के लिए लाखो की सख्या मे भारत के विभिन्न प्रातो तथा विदेशो से यात्री आये थे । जुलूस के मार्ग पर जितनी इमारतें थी दर्शको से खचाखच भरी हुई थी । लार्ड हार्डिंग के पीछे बलरामपुर राज्य का जमादार महावीर सिंह सोने का छत्र लिए बैठा था । वायसराय के हाथी के पीछे देशी नरेश तथा सर्वोच्च सैनिक अधिकारी थे । आगे सेनाए चल रही थी । सैनिक बैंड मोहक ध्वनि से बज रहे थे ।

जैसे ही लूजुस चादनी चौंक पहुचा कि गगनभेदी धडाका हुआ । लार्ड हार्डिंग तथा महावीर सिंह के बीच बम फूटा । हौदे का पिछला भाग ध्वस्त हो गया । महावीर सिंह मरकर उल्टा लटक गया । वायसराय के कधे मे चार इच लम्बा घाव हो गया । उनके कधे की हड्डी दिखाई देने लगी, उनकी गर्दन मे दाहिनी ओर कई घाव हो गये । उनका दाया नितम्ब भी जख्मी हो गया । वे बेहोश हो गये । उनके घावो से रुधिर बह रहा था । उसी समय भीड मे से एक आवाज आयी "शाबाश बहादुर ।"

पुलिस और सेना ने तुरन्त सभी मकानो को घेर लिया । सभी मकानो की तलाशी ली गयी किन्तु बम फेंकने वाला ऐसा गायब हुआ कि पकडा न जा सका । भारत सरकार तथा सम्राट भक्त देशी नरेशो ने अपराधी को पकडवाने वाले को पारितोषिक की जो घोषणाए की उनकी राशि कई करोड रुपये थी । परन्तु भारत की पुलिस तथा स्काटलैंड यार्ड के गुप्तचर अपराधी का पता न लगा सके । भारत सरकार क्रोध से उन्मत्त हो उठी । सैंकडो व्यक्तियो को सदेह मे पकड लिया गया । महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस, मास्टर अमीरचद, अवधबिहारी, बालमुकुद, प्रतापसिंह, जोरावर सिंह, बसन्त विश्वास, भोटेलाल, हनुवन्त सहाय तथा कुछ अय क्रांतिकारी उस घटना के समय वहा थे । वे सब भूमिगत हो गये कुछ समय के उपरात अमीरचन्द अवधबिहारी बालमुकुन्द, बसन्त विश्वास पकडे गये । उन पर यह अपराध तो सिद्ध नहीं हो सका कि उन्होंने वायसराय पर बम फैंका परन्तु उनके पास क्रातिकारी साहित्य निकला और विस्फोटक पदार्थ मिले । अतएव उन पर राजद्रोह तथा षडयन्त्र का अभियोग चला और उन चारो को प्राणदण्ड दे दिया गया ।

रासबिहारी बोस, जोरावर सिंह तथा प्रताप सिंह नही पकडे जा सके । रासबिहारी बाद को जापान चले गये, प्रतापसिंह पकडे गये । उनको कठोर यातनाए देकर ब्रिटिश सरकार ने बरेली जेल मे मार डाला । उनके पिता ठाकुर केशरीसिंह बारहट को इससे पूर्व ही कोटा अभियोग मे बीस वर्ष का कठोर कारावास हो गया था और वे हजारीबाग जेल मे कैद थे । प्रतापसिंह बारहट से सरकार ने कहा कि यदि वे षडयत्र का भेद बतला दें तो उनके पिता को छोड़ दिया जावेगा । उनकी समस्त जागीर

और सम्पत्ति जो जप्त हो गयी है लौटा दी जावेगी। चाचा जोरावर सिंह पर से वारट हटा लिया जावेगा। उनकी जागीर वापस दे दी जावेगी। उसको स्वय को छोड दिया जावेगा। उनकी माता उनके लिए बिलख-बिलख रोती रहती हैं। तो उस वीर युवक ने उस प्रस्ताव को घृणापूर्ण ठुकरा कर कहा, "मेरी मा को रोने दो, जिससे कि दूसरो की माताओ को न रोना पडे। जोरावर सिंह पुलिस और गुप्तचरो के हाथ नही आये और पच्चीस वर्षों तक पहाडो और जगलो मे छिपे रहे।

बम फेंकने के उपरात जोरावर सिंह तथा प्रताप सिंह कई दिनो तक दिल्ली मे ही छिपे रहे। उसके उपरात रात्रि को पैदल दिल्ली से निकले। दिल्ली से जो भी बाहर जाने के साधन थे रेल आदि सभी पर गुप्तचरो की कडी निगाह थी। स्टेशन पर तलाशी होती थी। इस कारण जोरावर सिंह तथा प्रताप सिंह ने जमुना पारकर पैदल राजस्थान की ओर यात्रा करने का निर्णय किया। जमुना मे भीषण बाढ थी उसको तैर कर रात्रि मे पार करना कठिन था। कई घण्टो तक वे लोग रेल के पुल की लोहे की जजीर पकडे हुए लटकते रहे। फिर किसी तरह वे नदी को तैरकर पार कर गये। नदी के किनारे दो कान्स्टेबिलो को सदेह हो गया। जोरावर सिंह ने उन्हे अपनी तलवार से यमलोक पहुचा कर प्रताप सिंह को जो बहुत अधिक थककर अशक्त हो गये थे, पीठ पर डाल लिया और उन्हें ले गए।

जोरावर सिंह को आरा षडयत्र केस मे प्राणदण्ड हुआ था। वे फरार थे। अस्तु वे प्रताप को सुरक्षित स्थान पर पहुचा कर चल दिये। लगातार पच्चीस वर्ष तक वह वीर पहाडो, जगलो मे घूमता रहा किन्तु भारत सरकार के गुप्तचर पुलिस तथा देशी राज्यो की पुलिस उन्हे पकड न सकी। कई बार वे बाल-बाल बच गये, नही तो वे पकड जाते।

एक बार उदयपुर मे जब कि वे घूमते हुए वहा पहुचे तो एक ब्रिटिश सरकार के गुप्तचर को उन पर सदेह हो गया कि वे सम्भवत ठाकुर जोरावर सिंह हैं। उसने उदयपुर राज्य के मन्त्री से रेजीडेंट के द्वारा उन्हे पुलिस की हिरासत मे ले लिया। महाराणा भोपाल सिंह को जब पता चला तो उन्होने वहा के एक प्रमुख चारण को कहला दिया कि यदि पुलिस तुमसे पूछे तो जोरावर सिंह को पहचानना नही। क्योकि ठाकुर केशरी सिंह और उनके छोटे भाई जोरावर सिंह उदयपुर मे रहे थे और राजस्थान के चारणो मे उनका बहुत सम्मान और प्रतिष्ठा थी, अस्तु वहा के प्रमुख चारण कवि को बुलाया गया। महाराणा भूपालसिंह के सकेत के अनुसार उन्होने स्पष्ट कह दिया कि वे जोरावर सिंह नही हैं। परतु भारत सरकार का गुप्तचर सतुष्ट नही हुआ। जोरावर सिंह पर कोटा राज्य तथा बिहार सरकार का वारट था अतएव उसने इस बात का आग्रह किया कि कोटा की पुलिस के किसी अधिकारी को बुलाया जावे। अतएव उदयपुर के अधिकारियो ने कोटा सरकार को लिखा कि एक व्यक्ति जिसकी सूरत ठाकुर जोरावर सिंह से मिलती है यहां हिरासत मे ले लिया गया है। भारत सरकार के गुप्तचर को उस पर सदेह है अस्तु किसी उच्च अधिकारी को उसे पहचानने को भेजो। कोटा की सरकार ने अपने इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस श्री रामदास को उदयपुर भेजा। श्री रामदास धर्म सकट मे पड गये यदि वे स्पष्ट कह देते कि वे जोरावर सिंह नही हैं तो बहुत सम्भव था कि आगे यदि यह सिद्ध हो जाता कि वे ही जोरावर सिंह थे तो स्वय इन्स्पेक्टर जनरल सकट मे पड़ जाते। अतएव उन्होने जोरावर सिंह को देख कर

लिख कर दे दिया कि मैं शपथ पूर्वक कहता हूं कि न तो मैं यह कह सकता हूं कि यह जोरावर सिंह है और न मैं यही कह सकता हूं कि वह जोरावर सिंह नहीं है। इस बीच जोरावर सिंह ने अपना आचरण, व्यवहार और मनोबल इतना ऊंचा रक्खा, अपने मस्तिष्क के संतुलन को ऐसा स्वाभाविक बनाए रक्खा कि देखने वाला यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि वे कोई संदिग्ध व्यक्ति हैं। साधू वेष में वे जब भजन गाते थे तो सुनने वालों को भक्ति रस में डूबो देते। इस सबका परिणाम यह हुआ कि वे उदयपुर से बचकर निकल गये।

श्री जोरावर सिंह का शेष जीवन जंगलों और पहाड़ों में व्यतीत हुआ। २५ लम्बे वर्षों तक वे पुलिस और गुप्तचरों की आंख में धूल झोंक कर मालवा प्रदेश में रहे। सीतामऊ राज्य में एकलगढ के श्री जगदीशदान जी के पास वे बहुधा आया करते थे उनकी उनसे घनिष्टता थी। उन्होंने उनके विषय में लिखा है.—

वे हमारे यहां अमरदास वैरागी साधु के नाम से प्रसिद्ध थे। उन्होंने मुझे बम फेंकने की घटना इस प्रकार सुनाई थी। दिल्ली में जब लार्ड हार्डिंग सजे हुए हाथी के होदे पर बैठ कर जुलूस में निकले तो गोला मैंने स्वयं एक ऊंचे मकान पर से फेंका। हम लोग चार पांच साथी थे। चार दिन तक हम दिल्ली में ही छिपे रहे। पांचवें दिन हम लोग बिखर गये। दिल्ली से पांचवें दिन जब निकले तो एक दिन में पचास मील पैदल चले। एक गुप्तचर हमारा पीछा कर रहा था। हम अहमदाबाद पहुंचे परन्तु गुप्तचर ने पीछा नहीं छोडा तो हम बांसवाडा, डूंगरपुर की ओर चल पडे। परन्तु हमारा पीछा हो रहा था। जब हम बांसवाडा की सीमा को पार कर रहे थे तब उस गुप्तचर ने नाकेदार को आवाज देकर कहा कि इस व्यक्ति को पकड लो। नाकेदार ने मुझे पकडना चाहा। मैंने अपनी लाठी से उस पर प्रहार किया। वह वहीं धराशायी हो गया और मैं बचकर निकल गया।

पच्चीस वर्षों तक जोरावर सिंह सीतामऊ राज्य के पहाडों और जंगलों में रहे। किसी प्रकार सीतमऊ के तत्कालीन महाराजा रामसिंह को यह पता चल गया कि वे सीतामऊ राज्य में रह रहे हैं। ब्रिटिश सरकार के कृपाभाजन बनने के लिए वे जोरावर सिंह को गिरफ्तार कर भारत सरकार को सौंप देने का विचार कर रहे थे। श्री जोरावर सिंह को एक विश्वस्त सूत्र से यह पता चला तो उन्होंने महाराजा के पास रहीम का नीचे लिखा दोहा लिख भेजा —

"सर सूखे पंछी उडे, और कहीं ठहरायें।
कच्छ मच्छ बिन पच्छ के, कह रहीम कह जाय।।"

महाराजा रामसिंह का यह दोहा पढ कर विचार बदल गया और उन्होंने उसके उपरांत श्री जोरावर सिंह को पकडवा कर ब्रिटिश सरकार को दे देने का विचार छोड दिया।

श्री जोरावर सिंह ने लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका इस सम्बन्ध में राजस्थान के वरिष्ठ राष्ट्र कर्मी और प्रसिद्ध पत्रकार श्री रामनारायण चौधरी ने लेखक को बतलाया कि प्रतापसिंह बारहट तथा श्री छोटेलाल जैन ने उन्हें बतलाया था कि लार्ड हार्डिंग पर बम श्री जोरावर सिंह ने फेंका था। श्री प्रतापसिंह तो उस कांड में उपस्थित ही थे और श्री जोरावर सिंह के साथ थे। श्री रामनारायण चौधरी प्रताप सिंह बारहट के मित्र तथा सहपाठी थे उनके क्रांतिकारी कार्यों से उनका सम्बन्ध था। छोटेलाल जी

भी चौधरी जी के मित्र तथा सहपाठी थे। श्री चौधरी ने इस सम्बन्ध मे मुझे नीचे लिखे अनुसार सूचना भेजी थी—

हार्डिंग वम केस मे मेरे सहपाठी छोटेलाल जी भी अभियुक्त थे। केशरीसिंह वारहट के पुत्र प्रतापसिंह उस काड मे शरीक ही थे। उन दोनो ने मुझे वतलाया कि वम जोरावर सिंह ने डाला था। वोस वावू (रासविहारी) तो शरीर से ही इतने भारी थे कि यह फुर्ती का काम उनके वस का नही हो सकता था। वारहाल मेरे पास तो इन दो साथियो के कथन का ही आधार है और उनके लिए मैं यह मान ही नही सकता कि वे असत्य वात कहे।' (रामनारायण चौधरी)

इसके अतिरिक्त एक साक्षी और है श्रीमती राजलक्ष्मी देवी। वे ठाकुर केशरी सिंह वारहट की पौत्री है। वीरवर जोरावर सिंह ने १६३७ मे अपनी पौत्री राजलक्ष्मी देवी से जव कि वे १४ वर्ष की थी दिल्ली मे चादनी चौक मे उस स्थान को वताकर कहा था कि इस जगह से वुर्का पहन कर मैंने लार्ड हार्डिंग पर वम फेंका था। उनके पति श्री फतह सिह मानव जो कि राजस्थान प्रशासनिक सेवा मे उच्च अधिकारी हैं उन्होंने इस कथन की पत्र द्वारा पुष्टि की है। लेखक के पूछने पर श्री फतहसिंह मानव ने उस वम काण्ड के विषय मे नीचे लिखा विवरण भेजा था—"आपने लार्ड हार्डिंग पर जोरावर सिंह जी द्वारा वम फेंके जाने के सम्बन्ध मे पूछा है। उसके लिए मैं इतना ही कह सकता हू कि १६३७ मे उस वीर पुरुष ने स्वय दिल्ली मे अपनी पौत्री को चादनी चौक मे वह स्थान वता कर इस वात का उल्लेख किया था कि इस जगह से मैंने वुरका पहने हुए लार्ड हार्डिंग पर वम फेका था। उस महान देशभक्त की इस युक्ति को असत्य मानने का कोई कारण विद्यमान नही है कि यह वात पहली वार उन्होंने घटना के २५ वर्ष वाद कही थी। और वह भी अपनी पौत्री को जिसकी उम्र उस समय चौदह साल की थी। एक दादा अपनी पौत्री से ऐसी वात किसी और अभीष्ट को लेकर नही कह सकता," (फतहसिंह मानव 'अतिरिक्त जिलाधीश' कोटा) लेखक स्वय श्रीमती राजलक्ष्मी देवी से मिला और उन्होने ऊपर दिए विवरण की पुष्टि की।

आज तक यह प्रश्न विवादग्रस्त वना हुआ है कि वास्तव मे लार्ड हार्डिंग पर वम किसने फेंका। श्री जोरावर सिंह की मृत्यु १६३६ मे हुई। वे जीवन के अन्त तक इस तथ्य को किसी से नही कह सकते थे, उन पर वारट था और लार्ड हार्डिंग पर वम अभियोग मे वे फरार थे। जो दो चार व्यक्ति इस तथ्य को जानते थे वे भी उनके जीवन काल मे इस तथ्य को प्रकट नही कर सकते थे।

वगाल के अधिकाश क्रातिकारी इतिहास लेखको ने वसन्त विश्वास द्वारा वम फेंकने की वात कही है। रोल आफ आनर के लेखक कालीचरण घोष का कहना है कि फांसी के पूर्व वसन्त विश्वास ने सम्भवत किसी मित्र या सम्बन्धी पर यह तथ्य प्रगट कर दिया था कि वम उसने फेका था इस कारण वगाल मे यही मान्यता सर्व प्रचलित है कि वसन्त विश्वास ने ही लार्ड हार्डिंग पर वम फेका था।

उधर जापान मे श्री रासविहारी वोस की पुत्री श्रीमती हिगूची का कहना है कि उनके पिता (श्री रासविहारी वोस) ने उन्हे वतलाया था कि लार्ड हार्डिंग पर वम उन्होने फेंका। यही कारण है कि अधिकतर क्रातिकारी आन्दोलन के इतिहास लेखक इस प्रश्न पर मौन है और यह प्रश्न विवादग्रस्त वन गया है। स्वय रासविहारी

बोस ने बैंगकाक सम्मेलन मे कहा था कि मैने ३० वर्ष पूर्व दिल्ली मे वायसराय पर बम फेंका था।

इसमे तो तनिक भी सदेह नही है कि बम फेकने की सम्पूर्ण योजना श्री रासविहारी बोस के मस्तिष्क की उपज थी। वे स्वय घटना स्थल पर उपस्थित थे। उन्होने ही चंदननगर से बम मगवाए थे। कौन बम फेंकेगा, कहा से बम फेंका जावेगा, बुर्का पहिन कर स्त्रियो मे मिल कर किस इमारत पर से चादनी चौक मे जुलूस पहुचने पर बम फेंका जावेगा, बम फेंक कर किस प्रकार निकला जावेगा। कौन साथी कहां रहेंगे और क्या करेंगे यह सारी योजना उनकी थी। वे ही उस काड के सूत्रधार थे। परन्तु वे शरीर से भारी थे अतएव इस फुर्ती का काम कि बम फेंक वहा से उतर कर भीड़ मे सम्मिलित हो सके उनके लिए कठिन था। साथ ही जिस सैनिक विप्लव का वे आयोजन कर रहे थे उसके सर्वमान्य नेता होने के कारण नेता स्वय ऐसे खतरे का काम करे इसकी सम्भावना कम है। पर इसका श्रेय इनको अवश्य दिया जा सकता है क्योकि सम्पूर्ण योजना उनकी ही थी।

लेखक ने लाला हनुवन्त सहाय से प्रार्थना की थी कि वे इस पर प्रकाश डालें क्योकि वे ही अकेले क्रातिकारी हैं जो बम काण्ड के समय वहा उपस्थित थे और श्री रासविहारी बोस ने उनको यह उत्तरदायित्व सौंपा था कि बम फेंके जाने के उपरात बम फेंकने वालो के बाहर निकल जाने की व्यवस्था वे करें। परन्तु वे जो कि साधिकार इस तथ्य पर प्रकाश डाल सकते हैं मौन रहना पसन्द करते हैं। उन्होने लेखक को लिख भेजा "लार्ड हार्डिग पर बम किसने फेंका इम विवाद मे मैं पड़ना नही चाहता" (हनुवन्त सहाय) श्री बसन्त विश्वास ने बम फेंका इस सम्बन्ध मे लेखक को एक साक्षी मिली है। श्री ईश्वरदान आसिया जो ठाकुर केशरीसिंह बारहट के जामाता हैं उ होने लेखक से कहा कि मास्टर अमीरचन्द ने फासी के पूर्व उनसे कहा था कि बम बसन्त विश्वास ने फेंका।

प्रतापसिंह बारहट तथा छोटेलाल जी ने श्री रामनारायण चौधरी से कहा कि बम श्री जोरावर सिंह ने फेंका। स्वय श्री जोरावर सिंह ने अपनी पौत्री राजलक्ष्मी देवी से तथा अपने घनिष्ठ मित्र श्री जगदीशदान से यही बात कही थी जब वे सीतामऊ के जगलो और पहाड़ो मे छिपे थे। अस्तु, यह भी असत्य नही हो सकता। अस्तु लेखक की मा यता यह है कि महाविप्लवी नायक रासविहारी बोस ने बसन्त विश्वास तथा जोरावर सिंह दोनो को ही बम फेंकने का उत्तरदायित्व सौंपा हो जिससे कि यदि एक का फेंका बम चूक जावे तो दूसरे का बम कारगर हो। साथ ही दोनो ने बुर्का पहिन कर स्त्रियो के झु ड मे सम्मिलित हो इमारत के ऊपर से बम फेंका इससे भी यह सिद्ध होता है कि बम फेंकने के लिए जो युक्ति काम मे लाई गई वह एक जैसी ही थी। अस्तु, इसमे तनिक भी सन्देह नही कि श्री जोरावर सिंह तथा बसन्त विश्वास ने लार्ड हार्डिग पर बम फेंका और लगभग २६ वर्षो तक जगल और पहाड़ो मे भटकते रहे परन्तु पुलिस के हाथ नहीं आये।

जोरावर सिंह ने राजस्थान के महान प्रतिष्ठित चारण वश मे जन्म लिया। इनके पिता श्री कृष्णसिंह का राजस्थान के राजदरबारो मे बहुत मान-आदर था। वे महाराणा सज्जन सिंह के अत्यन्त विश्वास पात्र परामर्शदाता तथा मन्त्री थे। उन्ही के परामर्श से महाराणा सज्जनसिंह ने प्रसिद्ध क्रातिकारी श्री श्यामकृष्ण वर्मा को

मेवाड़ का प्रधान मत्री नियुक्त किया था। शाहपुरा मे श्री जोरावर सिंह की जागीर और हवेली थी। अपनी योग्यता के परिणाम स्वरूप जोधपुर महाराजा ने श्री जोरावर सिंह को महारानी के महलों का प्रबन्धक नियुक्त किया था। यदि वे चाहते तो वैभव-पूर्ण जीवन व्यतीत कर सकते थे। परन्तु उनके हृदय मे जो देशभक्ति की प्रबल वेगवती धारा बह रही थी उसके वशीभूत हो उन्होने सब कुछ त्याग दिया और श्री रासबिहारी बोस के क्रातिकारी दल मे सम्मिलित हो गये। उनकी जागीर और हवेली तथा अन्य सभी सम्पत्ति जब्त करली गयी। २६ वर्षों तक वे पहाड और जगलो मे पुलिस की आंख बचा कर भटकते रहे और उनकी वीर पत्नी श्रीमती अनोप कु वर बाई अनेक कष्ट सह कर भी एक वीर महिला की भाति उनको देश को स्वतत्र करने के कार्य को करते रहने के लिए प्रेरणा देती रही। अज्ञातवास मे जोरावर सिंह कभी-कभी गुप्त रूप से आकर अपने परिवार वालो से मिलते रहते थे।

वीरवर जोरावर सिंह को १९ ९ मे निमोनिया हुआ। वे अज्ञात अवस्था मे फिरते थे। किसी अस्पताल मे चिकित्सा नही करा सकते थे। ऐसी भयकर रुग्ण अवस्था मे वे कोटा आये और उस क्रातिकारी वीर ने वहा अपना नश्वर शरीर त्याग दिया। जिस वीर ने जीवन के सभी भौतिक सुखो को त्याग कर जीवन पर्यन्त मातृभूमि की स्वतत्रता का अलख जगाया उसको उसके देशवासी भूल गये। उनका कोई स्मारक नहीं बना, डाक टिकट नही निकाला गया। उनकी जीवन गाथा नही लिखी गयी स्वय कृतज्ञता भी हम लोगो के आचरण को देख कर लज्जित होती होगी।

हर्ष और सतोष की बात है कि २५ अप्रेल १९७६ को उनके जन्म स्थान शाहपुरा (भीलवाडा–राजस्थान) मे उनकी मूर्ति की स्थापना की गई है।

अध्याय १०
प्रतापसिंह बारहट

'मेरी मा को रोने दो जिससे अन्य किसी की मा न रोये" .... प्रतापसिंह बारहट

यह उन दिनो की बात है जब भारत आजाद नही हुआ था। यहा अग्रेजो का राज्य था। भारतवासी दासता की पीडा से कराह रहे थे, परन्तु कतिपय साहसी भारतीय युवक अग्रेजो की दासता के जुये को उतार कर फेंकने का प्रयास कर रहे थे। गुलामी की पीडा मे उन देशभक्त क्रातिकारी युवको मे अग्रेजो के राज्य को उखाड फेंकने का अभूतपूर्व जोश पैदा हो गया था। यद्यपि सर्व साधारण भारतीय जन अग्रेजो की दासता की पीडा से दुखी हो कराह रहा था और वह यह भी भली प्रकार जान गया था कि यदि भारतीय इज्जत के साथ ससार मे सर ऊचा कर जीना चाहते हैं तो हमे देश को स्वतत्र कराना होगा, पर तु देश को स्वतत्र करने के लिए जो त्याग और वलिदान की तैयारी चाहिए वह बहुत कम लोगो मे थी। भारतीय अग्रेजो के अत्याचार और आतक से इतने भयभीत थे कि सर्व साधारण भारतीय देश की वात कहने मे भी डरता था।

उस समय इस देश मे कुछ ऐसे साहसी और वीर युवक भी थे जो देश के लिए अपने प्राणो को वलिदान करने मे भी नही हिचकते थे। वे गुप्त क्रातिकारी सगठन स्थापित करते और देश के लिए मरने की शपथ लेते। वम वनाते, वदूकें और गोली वनाने के कारखाने खडे करते, विदेशो से छिप कर अस्त्र शस्त्र मगवाते, सैनिक छावनियो मे जाते और भारतीय सैनिको को देश को आजाद करने के लिए अग्रेजो के विरुद्ध उठ खडे होने, विप्लव करने के लिए उकसाते। छिपे-छिपे विद्रोह और क्राति का सदेश छपाकर सैनिक छावनियो मे और स्कूलो तथा कालेजो में वाटते और देश भक्त युवको को अपने दल का सदस्य वनाते। उनकी योजना थी कि जब क्रांति की तैयारी पूरी हो जाय तो सब छावनियो के सैनिक एक साथ विद्रोह कर दे। अग्रेजो को कैद कर लिया जाये और स्वतत्रता का युद्ध छेड दिया जाये। उनका मानना था कि यदि सैनिको ने विद्रोह कर दिया तो समस्त भारत मे क्राति भड़क उठेगी। उस समय प्रथम महायुद्ध के कारण भारत मे अग्रेजी सेनाए तो थी ही नही, भारतीय सेनाए भी वहुत कम थी वे योरोप के रणक्षेत्र मे लड रही थी। अस्तु देश भर मे जब विद्रोह भडक उठेगा तो अग्रेज टिक नही सकेंगे। देश आजाद हो जायेगा।

इस क्रातिकारी दल के नेता वीर रासविहारी वोस थे। उन्होने समस्त उत्तर भारत मे " ' वगाल, विहार, उडीसा, उत्तर प्रदेश, पजाव, राजस्थान, मध्यप्रदेश मे अपने दल को सगठित किया था। जब विप्लवी महानायक रासविहारी वोस राजस्थान मे अपने क्रातिकारी दल के सगठन करने की वात सोच रहे थे उस समय उन्हे एक ऐसे क्रातिकारी युवक नेता की खोज थी जो राजस्थान के देशी राज्यो मे दल के कार्य का सगठन कर सकता।

यह सन १९११ की घटना है जबकि रासविहारी वोस राजस्थान मे क्रातिकारी दल का कार्य करने के लिए किसी साहसी और वीर युवक की खोज मे थे। उनके अभिन्न मित्र तथा साक्षी दल के वरिष्ठ और मान्य सदस्य मास्टर अमीरचन्द दिल्ली मे एक युवक को उनके पास लाये वह युवक और कोई नही प्रतापसिंह वारहट थे। रासविहारी वोस से उन्होने कहा कि प्रताप सिंह वारहट पर पूरा भरोसा किया जा सकता है। वे योग्य, साहसी और वीर हैं। रासविहारी वोस ने प्रतापसिंह को दल का सदस्य वना लिया। कुछ दिनो मे ही प्रतापसिंह वारहट ने

रासविहारी वोस का पूरा विश्वास प्राप्त कर लिया और वे उनके दाहिने हाथ वन गये।

क्रांतिकारी वीर प्रतापसिंह का जन्म प्रसिद्ध वारहट परिवार मे हुआ था। उनके पितामह श्री कृष्ण सिंह वारहट प्रकाण्ड विद्वान और देशभक्त थे। राजपूताने और मध्य भारत के राज दरवारो मे उनका वहुत मान था। जटिल राजनीतिक समस्याओ को सुलझाने मे दक्ष थे कई राज्य के नरेशो ने उन्हे जागीर देकर सम्मानित किया था। उदयपुर के महाराणा के वे परामर्शदाता थे। उन्ही के परामर्श पर प्रसिद्ध क्रांतिकारी देशभक्त श्री श्याम कृष्ण शर्मा को महाराणा ने मेवाड राज्य का प्रधान मंत्री नियुक्त किया था। वारहट परिवार चारण जाति मे योग्यता और देशभक्ति के लिए प्रसिद्ध था। अपनी आन को वे प्राण देकर भी रखना जानते थे। प्रतापसिंह के पिता ठाकुर केशरी सिंह वारहट का उदयपुर और कोटा राज दरवारो मे वहुत मान था। यद्यपि वे देशी राज्यो मे ऊचे पद पर थे परन्तु छिपे-छिपे उनका सम्बन्ध क्रांतिकारी दल से था। उन्होने अपने छोटे भाई ठाकुर जोरावर सिंह वारहट, अपने जामाता श्री ईश्वरदान आसिया और पुत्र प्रतापसिंह वारहट को मास्टर अमीरचन्द के पास भेज दिया था। मास्टर अमीरचन्द ने उनको क्रांतिकारी कार्य करने का प्रशिक्षण दिया था। भेष वदल कर राजकीय कार्यालयो से गुप्त समाचार प्राप्त करना, वम वनाना, क्रांतिकारी दल को सगठित करने, सैनिको तथा युवको से किस प्रकार सम्पर्क स्थापित किया जाय इत्यादि सभी प्रकार का प्रशिक्षण मास्टर अमीरचन्द ने ही उन्हे दिया था। श्री ईश्वरदान आसिया ने लेखक को वताया कि एक वार उन्होने मास्टर अमीरचन्द को ही धोखा दे दिया। जव भेष वदल कर वे उनके पास गये, उनसे वातचीत की तो मास्टर अमीरचन्द भी उनको पहचान नही सके वहुत देर तक वात कर चुकने के उपरात उन्होने मास्टर अमीरचन्द को वतलाया कि वे कौन है, तो मास्टर अमीर चन्द उनसे वहुत प्रसन्न हुए और उन्हे वहुत शावासी दी। मास्टर अमीरचन्द के पास जव वारहट परिवार के वे तीनो युवक क्रांतिकारी कार्यों का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे। तभी मास्टर अमीरचन्द प्रतापसिंह वारहट से वहुत अधिक प्रभावित हुए थे। यही कारण था कि उन्होने रासविहारी वोस से प्रतापसिंह वारहट को राजस्थान मे क्रांतिकारी दल का दायित्व देने की सिफारिश की थी। जव मास्टर अमीरचन्द ने प्रतापसिंह वारहट, ठाकुर जोरावर सिंह वारहट तथा ईश्वरदान आसिया को रासविहारी वोस से मिलाया तो विप्लवी महानायक रासविहारी वोस वहुत प्रसन्न हुए और वोले "ठाकुर केशरी सिंह वारहट एक मात्र ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होने स्वय अपने को अपने भाई, पुत्र और जामाता को मातृ भूमि की दासता की शृखलाओ को काटने के लिए वलिदान कर देने का वीरतापूर्ण पावन सकल्प किया है।

वीर प्रतापसिंह का जन्म सम्वत १९५० की जेष्ठ शुक्ला नवमी को उदयपुर मे हुआ था। उस समय उनके पिता श्री ठाकुर केशरी सिंह वारहट महाराणा उदयपुर के सलाहकार थे। वाद को कोटा के महाराव उम्मेदसिंह ने उनकी प्रशसा सुनकर उन्हें कोटा वुला लिया था। अतएव उनका वालकपन कोटा मे व्यतीत हुआ। वही उनकी शिक्षा दीक्षा आरम्भ हुई। कुछ समय के उपरात वे डी० ए० वी० स्कूल, अजमेर मे विद्याध्ययन के लिए प्रविष्ट हुए थे। उनके पिता ठाकुर केशरी सिंह वारहट कहा करते थे कि अंग्रेजो द्वारा चलाए गए विश्वविद्यालय गुलामो को उत्पन्न करने वाले साचे हैं

जहा भारत के युवको को गुलामी मे ही प्रसन्न रहने का पाठ पढाया जाता है। इसीलिए प्रतापसिंह ने मैट्रिक की परीक्षा देने की आवश्यकता नही समझी। उसी समय प्रसिद्ध देश भक्त और क्रातिकारी श्री अर्जुनलाल सेठी ने 'जैन वर्धन विद्यालय' की जयपुर मे स्थापना की थी। यो वह एक शैक्षणिक सस्था थी, परन्तु वास्तव मे वह देशभक्त क्रातिकारी युवको को तैयार करने का साधन था। प्रताप सिंह श्री अर्जुन लाल सेठी के पास चले आये। वहा रहकर प्रताप सिंह की देश की स्वतन्त्रता के लिए काम करने की भावना और भी दृढ हो गई। जब सेठी जी अपने विद्यालय को जयपुर से हटा कर इन्दौर ले गये तब उनके पिता ठाकुर केशरीसिंह बारहट ने दिल्ली के प्रसिद्ध देशभक्त और क्रातिकारी मास्टर अमीरचन्द के पास उन्हे भेज दिया। उनके साथ उनके काका ठाकुर जोरावर सिंह बारहट तथा बहनोई श्री ईश्वरदान आसिया भी मास्टर अमीरचन्द के पास क्राति का पाठ पढने के लिए भेजे गये। यो मास्टर अमीरचन्द सस्कृत विद्यालय के हैड मास्टर थे, परन्तु वे श्री रासबिहारी बोस के अनन्य मित्र, विश्वास पात्र और क्राति दल मे प्रमुख थे। देश मे गुप्त रूप से जो विद्रोह की तैयारिया हो रही थी उनमे उनका बहुत बडा हाथ था। मास्टर अमीरचन्द ने प्रताप सिंह बारहट की प्रतिभा और उनकी वीरता को परख लिया था। वे उनकी आखो मे चढ गये थे। यही कारण था कि उन्होने रासबिहारी बोस से राजस्थान मे क्रातिकारी दल तथा विद्रोह को सगठन करने का दायित्व प्रतापसिंह बारहट को देने की सिफारिश की थी। श्री रासबिहारी बोस ने कुछ दिनो प्रतापसिंह को अपने पास रखा। उन्हे विप्लव का सगठन कैसे करना चाहिए इसकी शिक्षा देकर रासबिहारी बोस ने युवक प्रताप सिंह को राजपूताने मे सैनिक छावनियो मे भारतीय सैनिको और देशभक्त युवको को स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए होने वाली क्राति मे भाग लेने के लिए तैयार करने के लिए भेज दिया।

प्रताप सिंह उस समय केवल बीस वर्ष के थे। इतनी कम आयु मे ही वे क्रातिकारियो के सर्वमान्य नेता बन गये। वे घूम-घूम कर आजादी की लडाई के लिए राजपूताने के सैनिको तथा युवको को तैयार करने लगे। उनके नेतृत्व मे राजपूताने मे क्रातिकारी सगठन बहुत शक्ति शाली बन गया।

श्री रासबिहारी बोस चाहते थे कि कोई ऐसा कार्य किया जावे जिससे कि अग्रेजी सरकार की धाक समाप्त हो जावे, उनकी प्रतिष्ठा को गहरा धक्का लगे और उनका आतक समाप्त हो। भारतीयो मे यह विश्वास उत्पन्न हो जावे कि अग्रेजो के विरुद्ध उठ खडे होने का साहस उत्पन्न हो गया है। उन्हे शीघ्र ही ऐसा अवसर मिल गया। अग्रेजो ने कलकत्ते को खतरनाक समझ कर दिल्ली को भारत की राजधानी बनाया था। वायसराय ने बडी धूम-धाम और शान-शौकत का आयोजन किया था। वह भारतीयो के हृदय पर यह अकित कर देना चाहते थे कि ब्रिटिश सत्ता के अधीन रहने और ब्रिटिश सम्राट के प्रतिनिधि वायसराय को अपना प्रभु और सर्वोच्च मानने मे गौरव अनुभव करते है। यही कारण था कि देशी राज्यो के सभी नरेश, उनके सामन्त ब्रिटिश प्रान्तो के जमीदार तथा ताल्लुकेदार, व्यापारी, उद्योगपति, धर्माचार्य कुछ सैनिक तथा नागरिक अधिकारी एव सभी महत्वपूर्ण व्यक्तियो को आमन्त्रित किया गया था। समस्त भारत के सर्वोच्च व्यक्ति उस समारोह मे उपस्थित थे। भारत सरकार के अधिकारी उस समारोह को भव्य बनाने मे कोई कसर उठा नहीं रख रहे थी। सम्पूर्ण देश का ध्यान उस भव्य समारोह की ओर आकर्षित हो गया था।

उधर विप्लवी महानायक रासविहारी बोस लार्ड हार्डिंग पर वम फेंकने की योजना तैयार कर रहे थे। सरकार ने जैसा भव्य आयोजन किया था उसी के अनुरूप क्रातिकारियो ने भी लार्ड हार्डिंग पर वम चलाने की योजना तैयार की थी। रास विहारी वोस, अमीरचन्द, वालमुकुन्द, अवध विहारी, वसन्त विश्वास तो देहली मे थे ही। रासविहारी वोस ने प्रताप सिह वारहट तथा उनके चाचा जोरावर सिंह को इस अवसर पर और वुला भेजा इनके अतिरिक्त और क्रातिकारी इस योजना मे सम्मिलित थे। रासबिहारी बोस ने अपने साथी क्रातिकारियो के सहयोग से लार्ड हार्डिंग पर वम चलाने की योजना तैयार की।

दिल्ली के स्टेशन को उस दिन खूव सजाया गया था। जैसे ही लार्ड हार्डिंग की स्पेशल ट्रेन प्लेटफार्म पर आकर रुकी, लाल किले से तोपो की गडगडाहट के साथ उनकी सलामी की घोषणा की गई सभी देश के राज्यो के नरेशो और अधिकारियो ने उनकी अगवानी की। फिर वायसराय को एक वहुत ऊचे हाथी पर जिस पर सोने व चादी का होदा रखा गया था और वहुमूल्य कारचोवी के फूलो से सुसज्जित था, विठाया गया। सेना की टुकडिया कूच कर रही थी। और सैनिक वैंड मोहक ध्वनि वजा रहे थे। पीछे देशी राज्यों के नरेश अपने सम्पूर्ण राजसी ठाठ से चल रहे थे, इस प्रकार वह शानदार जुलूस दिल्ली की ओर चला सारा दिल्ली शहर उस जुलूस को देखने के लिए उमड आया था। देश के कौने-कौने और विदेश से लाखो व्यक्ति उसको देखने आये। जुलूस के मार्ग पर सभी मकानो पर अपार भीड खचाखच भरी थी। जव वह जुलूस चादनी चौक पहुंचा और पजाव नेशनल वैंक की इमारत के सामने आया तो एक भयंकर धडाका हुआ। एक वम लार्ड हार्डिंग के होदे की पीठ पर लगा वलरामपुर राज्य का जमीदार महावीर सिंह जो लार्ड हार्डिंग पर छत्र लगाए हुए था मर कर होदे मे लटक गया। लार्ड की पीठ दाहिने कन्धे, गर्दन और दाहिने कुल्हे पर गहरी चोट आई और वह बेहोश हो कर होदे मे लुढक गया। भीड मे से आवाज आई "शावाश।" असख्य जासूसो पुलिस और सेना की चौकसी के रहते हुए लाखो की भीड में सभी की आखो मे धूल भोक कर वन्दूक से नही हाथ से वम फेक कर चलते हुए हाथी पर निशाना लगाना वडे जोखिम, साहस और धैर्य का काम था। सारे जुलूस मे मानो भूचाल आ गया। पुलिस और सेना ने सारी भीड को घेर लिया। सव सडकें रोक ली गई। सव इमारतो को घेर लिया गया। पुलिस और सेना ने कोना-कोना छान डाला किन्तु वम फेंकने वाला ऐसा गायव हुआ कि पुलिस कोई पता नही लगा सकी। ससार के प्रत्येक देश मे लम्वे समय तक चर्चा होती रही। स्काटलेन्ड यार्ड के ससार प्रसिद्ध जासूस वुलाए गए। सरकार ने एक लाख रुपये के इनाम की घोषणा की। देशी राज्यों के नरेशो ने अपनी राजभक्ति प्रदर्शित करने के लिए लाखो रुपये के पारितोषिक की घोषणाए की परन्तु सव व्यर्थ। वम फेकने वाले का कोई पता नही लगा।

आज तक यह रहस्य ही वना हुआ है कि वम किसने फेंका। लेखक की मान्यता है कि वम प्रताप सिंह के चाचा जोरावर सिंह और वसन्त विश्वास ने फेंका परन्तु सारी योजना के सूत्रधार रासविहारी वोस थे और इसको कार्य रूप मे परिणित करने मे रासविहारी वोस, जोरावर सिंह, वसन्त विश्वास, मास्टर अमीरचन्द, वालमुकन्द, हनुवन्त सहाय और अवध विहारी का सक्रिय सहयोग था। उनके

सम्मिलित प्रयत्नो से ही यह कार्य सिद्ध हुआ था। प्रताप सिंह और जोरावर सिंह बच कर निकले और यमुना के किनारे आये। नदी मे बाढ थी। तीन घण्टे तक प्रताप सिंह कभी तैरते, कभी गोता लगाते और कभी पुल के खम्भे तथा जंजीर को पकड़ कर लटकते रहे। जब अंधेरा हुआ तो उन्होंने तैर कर नदी पार की। प्रताप सिंह बहुत थक गये थे, किनारे पर पहुंचे तो पुलिस कान्स्टेबिलो को उन पर सन्देह हो गया। जोरावर सिंह ने दोनो को तलवार से धराशायी कर दिया और प्रताप सिंह को पीठ पर उठा कर ले गये।

प्रताप सिंह अब छिपे-छिपे राजपूत सैनिको मे विप्लव के लिए कार्य करने लगे। वे कभी राजपूताने मे, कभी पजाब मे और कभी हैदराबाद दक्षिण जाते और क्रांति के कार्य को आगे बढाते। रासबिहारी बोस के पीछे पुलिस हाथ धो कर पड़ी हुई थी। प्रताप सिंह और उनके बहनोई ईश्वरदान आसिया को देहली षड्यन्त्र में पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था, परन्तु कोई प्रमाण न मिलने के कारण छोड़ना पड़ा। उधर प्यारेराम साधु के सम्बन्ध में कोटा षडयत्र के मुकदमे मे उनके पिता केसरी सिंह बारहट पर मुकदमा चला और उन्हें आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया। आरा षडयत्र के मुकदमे मे जोरावर सिंह को प्राण दण्ड की सजा हुई परन्तु वे फरार हो चुके थे। केसरी सिंह बारहट तथा जोरावर सिंह की लाखो की सम्पत्ति जब्त करली गई। उनके मित्र तथा सम्बन्धी उनसे बात करना भी पसद नहीं करते थे। उस पारिवारिक विपत्ति की तनिक भी चिन्ता न कर वे क्रांति का कार्य पूरे उत्साह से करते रहे। वे क्रांति का सगठन करने के लिए बराबर घूमते थे। पुलिस उनकी परछाई भी नही छू पाती थी। रासबिहारी बोस बम काण्ड के उपरान्त दिल्ली से काशी और वहां से नवदीप चले गये थे वहा से छिप कर वे विद्रोह की योजना को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने का प्रयत्न कर रहे थे। अपने नेता से आगे क्रांति के काम को आगे बढाने के लिए परामर्श और आदेश लेने के लिए प्रताप सिंह छिप कर नवदीप पहुचे। यह भयकर खतरे का काम था परन्तु प्रताप सिंह मानो सकट से खेलने के लिए ही पैदा हुए थे। अपने नेता से परामर्श और आदेश लेकर वे नवदीप (बगाल) से राजस्थान चले आए और उनके आदेश के अनुसार काम करने लगे।

उस समय तक प्रताप सिंह के नाम गिरफ्तारी का पुन वारंट निकल गया था। पुलिस उनके पीछे पडी थी, परन्तु वे गुप्त रूप से क्रांति का काम कर रहे थे। पिता श्री केसरी सिंह बारहट को आजन्म कारावास होने पर प्रताप सिंह ने जेल मे उन्हे सदेश भेजा "आप तनिक भी चिन्ता न करे, प्रताप सिंह अभी जिन्दा है।" प्रताप सिंह पुलिस की आख बचाकर राजस्थान मे घूम-घूम कर क्रांतिकारी सगठन को दृढ करने मे लगे हुए थे।

इसी दौड धूप मे जब प्रताप सिंह हैदराबाद से बीकानेर जा रहे थे, जोधपुर के पास "आशानाडा" स्टेशन मास्टर से मिलने के लिए उतरे। पुलिस के भय से वह पुलिस का भेदिया बन गया था। प्रताप सिंह को इसकी कोई खबर नहीं थी। स्टेशन मास्टर ने धोखा देकर उन्हे पकड़वा दिया।

प्रताप सिंह को बरेली जेल मे रखा गया। भारत सरकार का गुप्तचर विभाग बहुत प्रसन्न हुआ। वह जानता था कि प्रताप सिंह विप्लवी नायक रासबिहारी बोस

मे कौन-कौन से व्यक्ति हैं वे कहा है, लार्ड हार्डिग पर बम किसने फेका और क्रातिकारी दल का भावी कार्यक्रम क्या है उन्हे सभी कुछ ज्ञात है। वे उस समय केवल २२ वर्ष के युवक थे। गुप्तचर विभाग की मान्यता थी कि उनसे सारा भेद जान लेना कठिन नही होगा।

प्रताप सिंह के वरेली जेल मे पहुचते ही चार्ल्स क्लीवलैंड भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के निर्देशक वरेली आये और प्रताप सिंह को भाति-भाति के प्रलोभन दिये जाने लगे। तुम्हे वहुत ऊचा पद मिलेगा, लाखो रुपयो का पारितोषिक दिया जावेगा। तुम्हारे पिता जो आजन्म कारावास का दण्ड भुगत रहे हैं, उन्हें छोड दिया जायेगा। तुम्हारे चाचा जोरावर सिंह के प्राण दण्ड की आज्ञा वापस ले ली जावेगी। वायसराय से अभयदान दिलवाया जायेगा। तुम्हारे पिता चाचा की लाखो रुपये की जो सम्पत्ति जब्त कर ली गई है वह तुम्हे वापस दिला दी जायगी। परन्तु चार्ल्स क्लीवलैंड को यह ज्ञात नही था कि प्रताप सिंह उस परिवार का रत्न है जो प्राण देकर भी विश्वासघात नही करते। प्रताप सिंह टस से मस नही हुए। जब प्रताप सिंह से चार्ल्स क्लीवलैंड पराजित हो गये तो उन्होने उनकी कोमल भावनाओ को छुआ। उन्होने प्रतापसिंह से कहा "मा तुम्हारे लिए निरन्तर रोती रहती हैं वे अत्यन्त दुखी हैं यदि तुमने सरकार की सहायता नही की और तुम्हे दण्ड मिला तो वे तुम्हारे वियोग में प्राण त्याग देंगी। वीर वर प्रताप सिंह ने चार्ल्स क्लीवलैंड को जो उत्तर दिया वह भारतीय क्रातिकारी इतिहास मे प्रसिद्ध है उन्होने कहा तुम कहते हो कि मेरी मा मेरे लिए दिन रात रोती है और वहुत दुखी है। मेरी मा को रोने दो। मैने अच्छी तरह से सोच कर देख लिया है, मै अपनी मा को हसाने के लिए हजारो माताओ को रुलाना नही चाहता। अगर मैं अपने साथी क्रातिकारियो की माताओ को रुलाने का कारण वना तो वह मेरी मृत्यु होगी और मेरी मा के लिए घोर कलक होगा।"

जब चार्ल्स क्लीवलैंड हार गया, प्रताप सिंह ने किसी का नाम या भेद नही वताया तो उन्हें तरह-तरह की भयकर यातनाए दी जाने लगी। प्रतिदिन उनको यातनाए दी जाती परन्तु वह वीर तनिक भी विचलित नही हुआ। अग्रेजी सरकार के यातना देने के विशेषज्ञ गये परन्तु वीर प्रताप सिंह को विचलित न कर सके। निर्दयी अग्रेजी सरकार ने उन्हे तरह-तरह की यातनाए देकर मार डाला परन्तु उनसे क्रातिकारियो के सम्बन्ध मे वह किंचित भेद भी न जान सकी।

उनकी वीरता की प्रशसा भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के डाईरेक्टर जनरल चार्ल्स क्लीवलैंड ने नीचे लिखे शब्दो मे की थी –

"मैंने आज तक प्रताप सिंह जैसा वीर और विलक्षण बुद्धि का युवक नही देखा। उसे तरह–तरह से सताये जाने मे कोई कमी नही रखी गयी। परन्तु वाह रे वीर धीर वालक टस से मस नही हुआ गजब का कष्ट सहने वाला था। हमारी सब युक्तिया वेकार हुई। हम सब हार गये उसी की वात अटल रही। वह विजयी हुआ।"

जब प्रताप सिंह वरेली जेल मे यातनाए देकर मार डाले गये उस समय उनकी आयु बाईस वर्ष की थी। सारा जीवन उनके सामने पडा था। उन्होने अपने प्राणो को वचाने के लिए लाखो रुपयो, ऊचा पद, सम्पत्ति, पिताजी और चाचा का छुटकारा और अभयदान यह सब लेकर भी साथियो के साथ विश्वासघात नही किया।

प्रताप सिंह जैसे देश भक्तों के बलिदान का ही फल है कि देश स्वतंत्र हुआ। लेकिन जिन्होंने अपना बलिदान देकर देश को स्वतंत्र बनाया उन्हें देश भूल गया। हमारी सरकार ने उनकी पावन स्मृति की रक्षा करने की आवश्यकता नहीं समझी। उनका कोई स्मारक नहीं बना यहां तक कि उनके नाम का डाक टिकट भी नहीं निकला। हम लोगों की कृतघ्नता देख कर कृतघ्नता भी लज्जित होती होगी। शाहपुरा (भीलवाड़ा) राजस्थान में अभी हाल में २५ अप्रेल १९७६ को वीरवर प्रताप सिंह बारहट की मूर्ति स्थापित की गई है।

अध्याय ११

राव गोपाल सिंह खरवा

भारत को बृटिश साम्राज्यवाद की दासता से मुक्त करने का १८५७ का प्रथम सशस्त्र स्वतंत्रता सग्राम असफल हो गया था। अग्रेजो के सभ्यता को लज्जित करने वाले अमानवीय दमन और नृशस अत्याचारो से ऐसा प्रतीत होने लगा मानो देश में स्वतंत्रता प्राप्त करने की भावना निर्मूल हो गई हो, देश में मृत्यु जैसी स्तब्धता छा गई। यद्यपि सशस्त्र क्राति के प्रमुख नेता या तो वीर गति को प्राप्त कर चुके थे अथवा भारत से बाहर निकल गए थे इस कारण बाह्य रूप से ऐसा दिखता था कि देश में स्वतत्रता प्राप्ति की भावना समाप्त हो गई परन्तु जन साधारण मे व्यापक क्षोभ था जो परिस्थितिवश प्रकट नही हो रहा था।

परन्तु बीसवी शताब्दी के आरम्भ मे भारत के अधिकाश प्रदेशों मे क्रातिकारी दल सगठित हो गए थे और सशस्त्र क्राति के द्वारा देश को स्वतत्र करने की तैयारिया की जा रही थी। वंग भग के उपरांत तो समस्त भारत में क्रातिकारी शक्तिया और अधिक बलवती और सक्रिय हो उठीं और भारत वासियो का रोष फूट पडा। बगाल, बिहार, उडीसा मे अनुशीलन समिति तथा युगान्तर जैसी क्रातिकारी पार्टिया सगठित हो गईं थी तथा उत्तर प्रदेश तथा पजाब मे भी क्रातिकारी सगठन खडे हो गए थे। महाराष्ट्र में अभिनव भारत समिति सशस्त्र क्राति की योजना बना रही थी।

प्रथम महायुद्ध के समय भारतीय क्रातिकारी विदेशो और विशेष कर जरमनी से सम्बन्ध स्थापित कर देश मे सशस्त्र क्राति की योजना तैयार कर रहे थे। जो भारतीय विदेशो मे और विशेष कर कनाडा और सयुक्त राज्य अमेरिका मे बस गए थे उनमे भी क्राति की अग्नि प्रज्वलित हो उठी थी वे भी मातृभूमि की स्वतत्रता के लिए सशस्त्र क्राति का आयोजन कर रहे थे। वहा गदर पार्टी का गठन हो चुका था।

उस समय उत्तर भारत मे महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस के नेतृत्व मे देश व्यापी सैनिक विद्रोह की व्यूह रचना की जा रही थी। उनकी प्रेरणा से राजस्थान मे भी एक क्रातिकारी सैनिक सगठन के जन्मदाता ठाकुर केशरी सिंह बारहट और खरवा के राव गोपाल सिंह थे। उन्होंने 'वीर भारत सभा' के नाम से इस सगठन को खडा किया था। खरवा के राव गोपाल सिंह राष्ट्रवर का राजस्थान, मध्य भारत तथा देश के अन्य राजपूत नरेशो से घनिष्ट सम्बन्ध था वे उनको आदर की दृष्टि से देखते थे। केशरी सिंह बारहट ने प्रसिद्ध चारण वंश मे जन्म लिया था इस कारण राजस्थान के शासको से उनका भी गहरा सम्बन्ध था। उन दोनो ने राजस्थान के राजपूत नरेशो तथा जागीरदारो को उनके प्राचीन गौरव का स्मरण दिला कर, अग्रेजो की दासता से मुक्त होने की प्रेरणा दी और उनको वीर भारत सभा का सदस्य बनाया। कुछ महाराजे तो वीर भारत सभा के सदस्य ही बन गए थे पर अधिकाश की सहानुभूति उन्होंने प्राप्त करली। छोटे जागीरदार तो बहुत बडी सख्या मे उसके सदस्य बन गए। वीर भारत सभा मे केवल जागीरदार ही नही सैनिक बडी सख्या मे सदस्य बने थे। बात यह थी कि राव गोपाल सिंह खरवा का लक्ष्य सैनिक विद्रोह कराना था अतएव उन्होने सैनिको की ओर विशेष ध्यान दिया और उन्हें क्राति के मत्र की दीक्षा दे दी। राष्ट्रवर गोपाल सिंह का राजपूत राजाओ से क्योकि रुधिर का और निकट का सम्बन्ध था इस कारण उन्होंने राजपूत नरेशो मे क्रातिकारियो का साथ देकर भारत को स्वतंत्र करने और स्वय स्वतत्र शासक बनने की महती महत्वाकांक्षा जागृत करदी।

क्रातिकारी सगठन को गति देने, राष्ट्रवर गोपाल सिह खरवा की सहायता करने तथा क्रातिकारियो के लिए अस्त्र शस्त्रो को इकट्ठा करने के लिए रासविहारी वोस ने १६०६-१० मे भूपसिह नामक क्रातिकारी युवक (जो वाद को राजस्थान में विजय सिह पथिक के नाम से प्रसिद्ध हुए) को राजस्थान मे भेजा। भूपसिह (पथिक जी) खरवा राव गोपाल सिह के निजी सचिव वन गए। उस समय राजस्थान मे राज्यो की सेना मे आधुनिक ढग की राइफिलो को खरीदा जा रहा था और पुरानी तोडेदार हैड़ी मार्टिन वदूकों को निकाला जा रहा था अस्तु पुरानी वदूकें वहुत अधिक सख्या मे उपलब्ध थीं। क्रातिकारियो ने यह अवसर अनुकूल देखा और महाविप्लवी नायक श्री रासविहारी वोस ने भूपसिह (पथिक जी) को उन वदूको और कारतूसो को भारी सख्या मे खरीदने के लिए भेजा। खरवा राव गोपाल सिह के निजी सचिव वन जाने से उनका सम्पर्क राजघरानो और जागीरदारो से भी हो गया और वदूको की खरीद आसान हो गई किसी को सदेह भी नही हुआ। कारतूसों की कमी को पूरा करने लिए पुराने कारतूसो को पुन. भरने, नए कारतूस वनाने, पुरानी टूटी हुई वदूको की मरम्मत करने का काम सीखने के लिए के लिए भूपसिह (पथिक जी) ने रेलवे वर्कशाप मे काम करना आरम्भ कर दिया। खरवा रावा गोपाल सिह ने पथिक जी की सहायता मे पुराने कारतूसो को भरने, नए कारतूस वनाने तथा वदूको की मरम्मत करने के कई गुप्त कारखाने राजपूताने मे स्थापित कर दिए।

इस समय भारत के क्रातिकारी देश मे जो भी अस्त्र-शस्त्र मिल सकते थे उनको वडी मात्रा मे इकट्ठा कर लेना चाहते थे। स्थान-स्थान पर क्रातिकारियो ने वम वनाने के कारखाने भी स्थापित किए थे। खरवा राव गोपाल सिह इस सम्वध मे स्वयं कलकत्ता गए थे और उन्होने वगाल के क्रातिकारियो से सम्पर्क स्थापित कर लिया था। श्री रासविहारी वोस के प्रमुख सहायक और सहयोगी श्री शचीन्द्र सान्याल ने वनारस मे दो वम वनाने मे विशेष दक्षता प्राप्त क्रातिकारियो को राव गोपाल सिह खरवा के पास वम वनाने के लिए भेजा। उन्होने अपने यहा वम वनाने का एक कारखाना स्थापित किया था। उस समय क्रातिकारियो की नीति यह थी कि भिन्न-भिन्न क्षेत्रो मे भिन्न-भिन्न नेताओ के मार्ग दर्शन मे क्रातिकारी सगठन खडे किए जावें, कोई एक केन्द्रीय सगठन और एक नेता न हो। क्रातिकारी सगठन का यह ढाचा इसलिए आवश्यक था कि यदि गुप्तचरो को किसी एक क्षेत्र के क्रातिकारी दल या कार्यकर्त्ताओ के सम्वध मे पता चल भी जावे तो अन्य क्षेत्रो के दल तथा उससे सम्वन्धित क्रातिकारियो पर कोई आच न आवे। इसी कारण हम देखते हैं कि प्रत्येक प्रान्त या प्रदेश मे भिन्न-भिन्न क्रातिकारी दल और अलग-अलग नेता थे। वगाल में ही कई क्रातिकारी दल थे। यही कारण था खरवा राव गोपाल सिह और वारहट केशरी सिंह ने 'वीर भारत सभा' नाम से एक क्रातिकारी दल राजस्थान मे अलग से खडा किया था।

भारतीय क्रातिकारियो का विदेशो से भी सम्वन्ध था। 'वर्लिन कमेटी' ने जरमनी के विदेश मत्री मे एक सन्धि करली थी। वर्लिन कमेटी (भारतीय क्रातिकारियो का सगठन) ने जरमनी से अस्त्र शस्त्र भेजने और कतिपय विशेषज्ञो को देने के सम्वध मे सधि की थी और यह निश्चय हुआ था कि जरमनी भारत के पूर्व तथा पश्चिमीय तटो पर वडी मात्रा मे अस्त्र-शस्त्र पहुचावेगा। परन्तु दुर्भाग्यवश जवकि सयुक्त राज्य अमेरिका मे उन सभी देशो के क्रातिकारियो का जो कि दास थे एक अन्तर्राष्ट्रीय

सम्मेलन हुआ तो भारतीय क्रातिकारियो ने जरमनी से हुई सधि की चर्चा की और यह बतला दिया कि जरमनी के जहाज भारत के क्रातिकारियो के लिए अस्त्र-शस्त्र लेकर पहुंचेंगे। चैकोस्लैवाकिया के क्रातिकारियो को वृटिश सरकार से अपने क्रातिकारी कार्यों के लिए सहायता मिलती थी उन्होने वृटिश वैदेशिक विभाग को इस सधि की सूचना दे दी। फिर क्या था वृटिश सरकार ने विदेशो मे तथा भारत मे क्रातिकारियो पर घातक प्रहार किया। कनाडा तथा सयुक्त राज्य अमेरिका से गदर पार्टी के क्रातिकारी जो कोमाटागारु जहाज से भारत आ रहे थे उन पर तथा भारत मे जो क्रातिकारी थे उन पर दमन का दावानल फूट पडा। जो जरमन जहाज अस्त्र शस्त्र लेकर भारत आ रहे थे उन्हे मार्ग मे ही रोक लिया गया। चेकोस्लावाकिया के क्रातिकारियो के इस विश्वासघात के कारण वृटिश सरकार सतर्क हो गई और उसने विदेशो मे जो भारतीय क्रातिकारी थे केवल उनका ही पीछा नही किया वरन भारत मे क्रातिकारियो की गतिविधियो का पता लगाने के लिए गुप्तचरो का एक जाल बिछा दिया और सैनिक छावनियो पर विशेष रूप से सतर्क दृष्टि रक्खी गई।

यह विषयान्तर है परन्तु राजस्थान मे खरवा राव गोपाल सिंह सैनिक विद्रोह की जो तैयारिया कर रहे थे उसके महत्व को समझने के लिए उसका उल्लेख करना आवश्यक था।

राव गोपालसिंह खरवा देश के क्रातिकारियो और देशी राज्यो के शासको के मध्य मुख्य कड़ी थे। सन १६१४ के दिसम्बर मास मे बनारस मे भारत के समस्त क्राति दलों के नेताओ का एक गुप्त सम्मेलन हुआ और देश मे सशस्त्र क्राति की पूरी योजना तैयार कर ली गई। क्रातिकारी बन्नू पेशावर से सिंगापुर तक सभी अग्रेजी सैनिक छावनियो मे पहुचे थे उन्होने सभी सैनिक छावनियो मे घुम कर उनकी सैनिक स्थिति का पूरा परिचय प्राप्त कर लिया था। उस समय भारत मे केवल पद्रह हजार गोरे सैनिक भारत की सारी छावनियो मे थे अधिकाश हिन्दुस्तानी सेनाए क्राति और विद्रोह का आरम्भ होने पर देश की स्वतत्रता के लिए शस्त्र उठाने को तैयार थी। क्रातिकारियो की योजना थी कि पहले लाहौर, रावलपिंडी और फिरोजपुर की छावनियो की सेनाए विद्रोह करेंगी और क्रातिकारियो और जनता के सहयोग से वहा के भारतीय पहरेदारो के सहयोग से शस्त्रागारो पर अधिकार कर लेंगी। उसके साथ ही देश के अन्य भागो मे भी विद्रोह होगा।

अजमेर नसीराबाद मे राव गोपाल सिंह ने हिन्दुस्तानी खानसामो और चपरासियो को मिला कर यह व्यवस्था करली थी कि क्राति का सकेत पाते ही वे अपने अग्रेज अधिकारियो को सोते मे पकड कर चुपचाप क्रातिकारियो के हवाले कर देंगे।

२१ फरवरी १६१५ को सशस्त्र क्राति आरम्भ करने की तिथि निश्चित थी। उस दिन करतार सिंह अपने-अपने दल के साथ फिरोजपुर मे भारतवर्ष मे सर्वप्रथम सबसे बडे शस्त्रागार पर अधिकार करने वाला था। राजपूताने मे राव गोपाल सिंह सेठ दामोदर दास राठी और भूपसिंह को अजमेर नसीराबाद और ब्यावर पर अधिकार कर लेने का दायित्व था।

राजपूताने मे राव गोपाल सिंह भूपसिंह (पथिक जी) के साथ २१ फरवरी १६१५ को खरवा स्टेशन के समीप जगल मे अपने दो हजार सशस्त्र क्रातिकारी सैनिको का दल लेकर सतर्क थे और सकेत पाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। रात्रि को दस बजे

अजमेर से जो ट्रेन अहमदावाद जाती थी उसमे सदेश वाहक आने वाला था। खरवा स्टेशन के निकट जगल मे वह वम का धडाका करके सशस्त्र क्राति के शुभारम्भ की सूचना देने वाला था। निश्चय था कि वम का धडाका होते ही राव गोपाल सिंह खरवा तथा भूपसिंह पूर्व निश्चय के अनुसार आक्रमण कर देंगे। परन्तु ट्रेन निकल गई धडाका नही हुआ। राव गोपाल सिंह खरवा भूपसिंह (पथिक) अपने सशस्त्र दल को लेकर प्रतीक्षा करते रहे।

दूसरे दिन सदेशवाहक ने लाहौर मे घटी घटनाओ और सशस्त्र क्राति के विफल हो जाने की सूचना दी। गुप्तचरो ने उस सशस्त्र विद्रोह का भेद लगा लिया और सरकार सावधान हो गई। सैनिक शस्त्रागारो के भारतीय पहरेदारो को वदल दिया गया। सैनिक छावनियो की भारतीय सेनाओ का स्थानातर कर दिया गया वे दूर ले जाई गई। शस्त्रगारो पर केवल गोरे सैनिक ही रखे गये भारतीयो को हटा दिया गया। इस प्रकार क्रातिकारियो ने जिन भारतीय सैनिक अधिकारियो से सम्बन्ध स्थापित कर लिया था वह छिन्न भिन्न कर दिया गया। १६ फरवरी के प्रात.काल लाहौर, अमृतसर, फिरोजपुर आदि मे क्रातिकारियो के गुप्त अड्डो पर छापा मारा गया, वहा एक दिन क्रातिकारी पकड लिए गए और राष्ट्रीय झडो और स्वतत्रता के युद्ध का घोषणा पत्र जो कि वडी सख्या मे वाटे जाने वाले थे, वे तथा अन्य गुप्त कागजात पकड लिए गए। अनेक क्रातिकारी शस्त्रागारो पर आक्रमण करने के व्यर्थ प्रयास मे गोलियो के शिकार वन गए। इस प्रकार वह देश व्यापी सशस्त्र क्राति विफल हो गई।

क्रांति के विफल हो जाने का समाचार पाकर राव गोपाल सिंह खरवा तथा भूपसिंह (पथिक जी) ने तीस हजार हैड्री मार्टिन वन्दूकें और वहुत वडी राशि में गोला वारूद सब ले जाकर गुप्त स्थानो पर गाड दिया और दो हजार सशस्त्र क्रातिकारी सैनिको का दल विखर गया।

इस घटना के लगभग सात आठ दिनो के उपरांत राव गोपाल सिंह को अपने क्रातिकारी भेदियो के द्वारा यह सदेश प्राप्त हुआ कि अजमेर का अग्रेज कमिश्नर शीघ्र ही उनको तथा उनके साथियो को गिरफ्तार करने के लिए आ रहा है। राव गोपाल सिंह ने भूपसिंह से मत्रणा की, उन लोगो ने यह निर्णय किया कि चुपचाप आत्म समर्पण कर अग्रेजो की जेल मे अनिश्चित काल तक वन्द रहने अथवा चोर डाकुओ और हत्यारो की भाति फासी पर लटकाए जाने की अपेक्षा युद्ध करते हुए मरना अधिक श्रेयस्कर है। वात यह थी कि राव गोपाल सिंह राष्ट्रवर यद्यपि वीसवीं शताब्दी में उत्पन्न हुए थे परन्तु उन्हें देख कर या उनसे वात करके किसी को भी यह भान होता था कि वह पद्रहवीं शताब्दी के किसी स्वाभिमान शौर्य और वीरता के प्रतीक राजपूत नरेश से वात कर रहा है जो आन पर मर मिटना जानता है।

लम्वा कद वलिष्ट शरीर, उन्नत ललाट, चौड़ा वक्ष, लम्वे और कठोर भुजदण्ड, आखों मे अपूर्व तेजस्विता, मुख मण्डल पर अन्तर के स्वाभिमान और शौर्य की नैसर्गिक आभा सव मिला कर उनका व्यक्तित्व इतना अधिक तेजमय था कि कोई भी व्यक्ति उनसे मिल कर और वात करके प्रभावित हुए विना नही रह सकता था। लेखक को जव खरवा मे उनके प्रथम दर्शन करने और उनके सानिध्य मे कुछ समय रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तो उसको प्रतिक्षण यह अनुभव हुआ कि वह अपनी मातृभूमि को

विदेशियो की दासता से मुक्त करने के प्रयत्न में अपने प्राणों को निछावर कर सकने वाले एक मध्य युगीन स्वाभिमानी और शौर्यवान राजपूत नरेश से बात कर रहा हो। उनको देख कर लेखक को ऐसा प्रतीत हुआ कि प्रात स्मरणीय महाराणा प्रताप की परम्परा अभी समाप्त नही हुई है।

राव गोपाल सिंह जैसे स्वाभिमानी और वीर पुरुष का यही निर्णय हो सकता था कि युद्ध करते हुए मरा जावे। अस्तु राव गोपाल सिंह, भूप सिंह (पथिक जी) मोडसिंह, रलियाराम और सवाई सिंह को साथ लेकर रात्रि के समय जबकि गढ मे सभी सो रहे थे यथेष्ट मात्रा मे अस्त्र-शस्त्र तथा कारतूस लेकर और आठ दस दिन की भोजन सामग्री लेकर निकले और समीप के जगल मे शिकार के लिए बने हुए शिकारी बुर्ज मे मोर्चा बन्दी करके जा डटे। प्रात काल अजमेर का अग्रेज कमिश्नर एक सैनिक टुकडी लेकर खरवा पहुंचा। राव गोपाल सिंह रात्रि मे ही गढ को छोड कर चले गए थे अस्तु उसने उनकी खोज की और जगल मे उस शिकारी बुर्ज (ओहदी) को चारो ओर से घेर लिया। कमिश्नर ने राव गोपाल सिंह को आत्म समर्पण करने के लिए तो कहा परन्तु राव गोपाल सिंह आत्म समर्पण करने के लिए तो वहा आए नही थे अतएव खरवा राव ने घृणा पूर्वक कमिश्नर के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। कमिश्नर ने जब देखा कि खरवा राव लडने के लिए तैयार हैं तो उसे भय हुआ कि यदि युद्ध हुआ तो इस बात की अधिक सम्भावना थी कि आस-पास की जनता मे रोष उत्पन्न हो जावे और वह उनके विरुद्ध उमड पडे। बात यह थी कि राव गोपाल सिंह को वहा की जनता अत्यन्त श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखती थी और राजपूत तो उन्हे अपना सर्वोच्च नेता स्वीकार करते थे। इसके अतिरिक्त राव गोपाल सिंह को राजपूताने के कई महाराजाओ का आदर और सम्मान प्राप्त था। कमिश्नर के साथ जो सेना की टुकडी थी उस पर भी कमिश्नर को भरोसा नही था कि यदि खरवा राव से युद्ध हुआ तो उनके प्रभाव के कारण वे सैनिक विद्रोही नही हो जावेंगे। यदि खरवा राव युद्ध करते हुए मारे गए जिसके लिए वे कृत सकल्प थे तो राजपूताने मे भयकर क्षोभ और उत्तेजना फैल जाने का भय था जिसके लिए कमिश्नर तैयार नही था। यही नही भारत सरकार के वैदेशिक विभाग का भी उसको यही सकेत था कि जहा तक सम्भव हो गोली न चलने दी जावे, नही तो उसके परिणाम गम्भीर हो सकते हैं।

अतएव अजमेर के अग्रेज कमिश्नर ने राव गोपाल सिंह को कहलाया कि अभी तक उन पर कोई अभियोग या आरोप नही लगाया गया है केवल इस सदेह मे कि उनका सम्बन्ध उस क्रातिकारी दल से है कि जो देश मे सशस्त्र क्राति करने का उपक्रम कर रहा था उनको जानने के अनुसार हिरासत मे लेने भर का उसे आदेश मिला है। यह भी सम्भव है कि उन पर कोई आरोप सिद्ध न हो। ऐसी दशा मे व्यर्थ मे सरकार से युद्ध करके अपने ऊपर एक नया अपराध मोल लेना बुद्धिमानी नही होगी। दोनो पक्षो मे लम्बे तर्क वितर्क के उपरात यह समझौता हुआ कि उन्हे किसी हवालात या जेल मे न रख कर उन्हें एकान्त स्थान मे नजर बन्द किया जावेगा जहां आस-पास जंगल हो जिसमे वे शिकार कर सकें क्योंकि वे शिकार करके ही मास खाने के अभ्यस्त हैं। उन्हे जंगल मे जाने और शिकार कर सकने की छूट होगी और उसके लिए अस्त्र-शस्त्र रखने तथा घोडे रखने की सुविधा होगी। उनके उस जगल मे आने जाने पर कोई प्रतिबन्ध नही होगा और उनके निवास स्थान के आस पास जहा तक दृष्टि

जावे पुलिस या सेना का कोई पहरा नही होगा जिससे कि उन्हे कैदी होने का भान हो।

इस शर्त को कमिश्नर ने स्वीकार कर लिया और उन्हे मेवाड की सीमा पर टाटगढ मे नजर वन्द कर दिया गया। जहा राव गोपाल सिह खरवा (पथिक जी) तथा उनके साथी नजर बन्द किये गए उसके चारो ओर सघन वन था जहा वे लोग शिकार खेलते थे। उनके अपने निवास स्थान मे जगल मे तीन तीन मील तक जाने की खुली छूट थी। नजर वन्द हो जाने के पद्रह दिन उपरात ही भूपसिह (पथिक जी) की गिरफ्तारी का वारट टाटगढ पहुच गया। बात यह थी कि लाहौर और फिरोजपुर षडयंत्रो के सम्बन्ध मे गिरफ्तारिया हुई तो उनमे सोमदत्त नामक व्यक्ति मुखवीर वन गया उसने षडयत्र मे सम्मिलित होने वालो मे भूपसिह का भी नाम वतलाया। भूपसिह को अपनी गिरफ्तारी के वारट की पूर्व सूचना मिल चुकी थी। वे रात्रि के निविड अधकार मे टाटगढ से निकल गए और मेवाड के कतिपय जागीरदारो तथा जनता के सहयोग से भूमिगत हो गए। वे पकडे नही जा सके। आगे चलकर अज्ञातवास मे उन्होने अपना नाम वदल कर विजय सिह पथिक रख लिया, भूमिगत अवस्था मे वाल और दाढी वढ़ाली और विजोलिया के किसानो का सगठन किया।

इसी सम्बन्ध मे केसरी सिह बारहट के यहा जो तलाशिया हुई उनमे अंग्रेजी सरकार को वीर भारत सभा के सदस्यो की सूची हाथ लग गई। उससे यह स्पष्ट हो गया कि खरवा के राव गोपाल सिह का क्रातिकारियो से सम्बन्ध था। वीर भारत सभा के सदस्यो की सूची मिल जाने तथा तत्सम्वन्धी अन्य कागज पत्रो से यह भी सदेह दृढ हो गया कि राजपूताने के कतिपय राजपूत राजाओ की क्रातिकारियो के प्रति सहानुभूत थी। इस कारण राजपूताने के राजे और महाराजे भी भयभीत हो उठे अब वे क्रातिकारियो से सम्पर्क रखने मे कतराने लगे। भारत सरकार ने राजाओ के उन समस्त सैनिक अधिकारियो को उत्तरी अफ्रीका की रणभूमि मे लडने के लिए भेज दिय जिन पर क्रातिकारियो के साथ होने का तनिक भी सदेह था। वहुतो को राज्यो की सेनाओ से हटा दिया गया और उन पर कडी निगरानी रक्खी गई। यही नही भारत सरकार ने इस सशस्त्र क्राति की सूचना पाने के उपरात भारतीय सेनाओ को युद्ध के मोर्चों पर विदेश भेज दिया और गोरे सैनिको को वाहर से बुलाकर भारतीय सेना मे उनकी सख्या वढ़ादी। इस प्रकार प्रथम महायुद्ध के काल मे भारतीय क्रातिकारियो की सशस्त्र क्राति की योजना विफल हो गई। वगाल के कतिपय क्रातिकारी मारे गए और रासविहारी वोस तथा कुछ अन्य क्रातिकारी विदेश चले गए। वे विदेशो से भारतीय क्रातिकारियो को अस्त्र-शस्त्र भेजने का प्रयत्न करते थे।

भूपसिह के टाटगढ़ से निकल जाने के उपरात अवसर पाकर खरवा के राव गोपाल सिह भी अपने साथियो के साथ टाटगढ से निकल गए। कई महीनो तक वे इधर उधर छिपते और भटकते रहे परन्तु उन्हें कही निरापद आश्रय नहीं मिला क्योकि राजपूताने के राजे और जागीरदार अत्यत भयभीत हो उठे थे। समस्त राजपूताने मे गुप्तचरो का एक जाल विछा हुआ था कोई भी राजा या जागीरदार उनको आश्रय देने का साहस नही कर सकता था। अज्ञातवास मे भटकते हुए वे किशनगढ राज्य मे स्थित सलेमावाद जो राठौड राजपूतो का एक प्रसिद्ध ठाकुरद्वारा था, पहुचे। किसी देशद्रोही ने खरवा राव के वहा पहुचने की सूचना किशनगढ़ भेजदी। समाचार मिलते

ही किशनगढ के दीवान पोनास्कर सशस्त्र सैनिको सहित सलेमावाद पहुंचे और उन्होंने मदिर को घेर लिया। खरवा ठाकुर गोपाल सिंह ने मदिर के फाटक बन्द करवा दिए और मदिर के ऊचे बुर्ज पर मोर्चा वन्दी कर जम गए।

दीवान पुनास्कर ने राव साहब से पूछा "क्या इच्छा है ?" राव गोपाल सिंह ने निर्भीकता से उत्तर दिया "जिस प्रतिष्ठा के लिए हमने टाटगढ छोडा है और निरन्तर जगलो मे भटक रहे हैं उसकी रक्षा शरीर मे प्राण रहते करना।"

दीवान पुनास्कर ने घवडा कर चीफ कमिश्नर तथा वायसराय को सूचना भेजदी।

जिस समय राव गोपाल सिंह सलेमावाद के मदिर मे घिरे हुए थे उसकी सूचना पथिक जी के पास भाणा गाव मे पहुची। समाचार मिलने पर काकरोली के देशभक्त युवको ने पथिक जी के नेतृत्व मे खरवा राव की सहायता करने का निश्चय किया। पथिक जी के नेतृत्व मे वे साहसी युवक ऊटो पर चढ कर सलेमावाद की ओर चल पडे। रात भर मे लम्वा रास्ता पार करके जव वे सलेमावाद पहुचे तो उन्हे ज्ञात हुआ कि उनके पहुचने के पूर्व ही राव गोपाल सिंह, मोढसिंह तथा उनके साथियो ने कुछ शर्तो पर अंग्रेजी सेना के अधिकारियो को आत्म समर्पण कर दिया था। भारत सरकार ने उन्हे तिहार (देहली के समीप) जेल मे नजर वन्द कर दिया। १६२० तक राव गोपाल सिंह तिहार जेल मे नजर वन्द रहे। १६२० के उपरात वे नजरवन्दी से मुक्त हुए। अजमेर के इस्पैक्टर जनरल पुलिस श्री के ने उन्हें आश्वासन दिया था कि उन्हें राजनीतिक व दी के रूप मे रखा जावेगा।

नजर वन्दी से रिहाई के उपरात राव गोपाल सिंह सन १६२० मे अजमेर मे होने वाले प्रथम दिल्ली व अजमेर मेरवाडा प्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलन के अध्यक्ष चुने गए।

२८ मार्च १६२० को अजमेर मेरवाडा राजनीतिक सम्मेलन के अध्यक्ष पद से बोलते हुए अपने भाषण मे राव गोपाल सिंह खरवा ने जो विचार व्यक्त किये थे वे उनके अन्तर के विचारो का सही चित्रण करते हैं।

"मैं पाच वर्ष तक नजर वन्दी भोगते हुए जन्म स्थान और निज प्रान्त से बाहर रह कर कल ही यहा पहुचा हूं और आज आपने मुझे इस राजनैतिक सम्मेलन का सभापति बनाया। जो कुछ दृश्य आज इस समय, देख रहा हूं, उससे मुझको भारी परिवर्तन प्रतीत हो रहा है। हिदुस्तान के सब प्रान्तो मे राजपूताना पिछड़ा माना जाता है। परन्तु इस समय यहा के लोगो मे जैसी राजनैतिक जागृति हुई है, उसको देखते हुए उसे पीछे नही कहा जा सकता। इस सभा मे जैसा उत्साह हम लोग दिखा रहे हैं उससे भविष्य मे आशा वडी प्रबल हो चली है। ईश्वर वह दिन शीघ्र दिखलाने वाला है जब राजपूताना किसी से पीछे नही किन्तु अपने पूर्वजो के समान कर्त्तव्य-पालन मे सबसे आगे रहेगा। ' ...

वास्तव मे देखा जाय तो एक वर्ष नही, दो वर्ष नही, दस वर्ष नही, बीस वर्ष नही किंतु निज देश की स्वतत्रता, मान, गौरव और मर्यादा की रक्षा के लिए एक हजार वर्ष तक तलवार चलाने वाले धर्म परायण महानुभावो का खून जिन लोगो की रगो मे वह रहा है, उनमे का एक आदमी आपके सामने सेवा मे खडा है।

.... इस समय सारे देश मे हलचल मची हुई हैं राष्ट्रीय भाव दिन पर

दिन वढता चला जाता है जिसका कि हमारी सभा एक प्रमाण है । इस सारी हलचल का कारण राजनीतिक स्वत्व का भेद भाव है। पेट की रोटी के पीढ पर असबाव की पोटरी, हाथ मे गज लिए योरोप से हिन्दुस्तान मे आकर घर-घर फिरने वाले वनियो ने युक्ति और धूर्तता के आश्रय से यहा राज्य जमाने का प्रपच रचा। इसमे इङ्गलैंड के व्यापारी सफल हुए। देश के लोगो ने साधारण राजनैतिक स्वत्व जब अधिकारियों से मागे तो उनकी सुनाई नही की गई। इससे शासको और शासितो मे परस्पर वैर भाव वढता गया अधिकारियो की दमन नीति से दुखी होकर देश के स्थानो मे आत्म त्यागी उग्र प्रकृति के लोगो ने उस दमन नीति के प्रतिकार मे तमचे, वम वगैरह से काम लेने का रास्ता पकडा। . . .

अधिकारियो ने देश सेवा जैसे पवित्र काम को कलकित सावित करने की विधि रची और सैकडो आदमियो को दण्ड देने और उनको वुरा सावित करने का निष्फल प्रपच रच कर भी उनको वुरा सावित न कर सके। मैं भी एक ऐसा व्यक्ति हूँ जिसके साथ यही घटना हुई है। मुझे अनेक प्रकार के कष्ट तो दिए ही गए परन्तु उस पर कलश चढाया गया कि जब मैं जेल मे था तव श्रीमान लार्ड चैम्सफोर्ड ने सन १९१७ के नवम्बर मास मे यहा अजमेर मेरवाडा के इस्तमरारदारो के दरवार मे भाषण करते हुए कोई कारण प्रकट किए विना ही फरमाया कि "मैंने अपने कामो से साथी इस्तमरारदारो और अपने निज वश के सुनाम पर धब्बा लगाया।" . . .

मैं श्रीमान लार्ड चैम्सफोर्ड को चैलेंज करता हूँ कि कोई मुझे कलकित काम करने वाला सिद्ध करे। क्या सरकार को और क्या हमको दोनो को इस वात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि देशभक्ति होने वाले राष्ट्र द्रोही नही हो सकते। स्वदेश सेवा जैसे परम पवित्र कर्तव्य पूर्ण मेरे कार्य पर अधिकारियो ने उलटा रग चढाया और मुझे नजरबन्द कर दिया। रियासत कुर्क करली गई और श्रीमान लार्ड चेम्सफोर्ड ने मुझको वश के सुनाम पर धब्बा लगाने वाला कह कर दुर्व्यवहार की हद करदी। क्या यह न्याय की वात है? ......

अधिकारियो को शर्म आनी चाहिए ......

पाठक कल्पना करें कि अग्रेजी शासन काल मे वायसराय को खुले आम इस प्रकार चुनौती कितने जागीरदार या नरेश दे सकते थे। वात यह थी कि जब राव गोपाल सिंह खरवा की राजगद्दी पर बैठे तभी से उनका अग्रेज अधिकारियो से सघर्ष खडा हो गया था सवत १९५६ मे राजस्थान मे भयकर अकाल पडा। स्थिति इतनी भयकर हो उठी कि पतियो ने अपनी पत्नियो को और माताओ ने अपने वच्चो को वेच दिया। सारा प्रदेश मृत्यु की विभीषिका से उत्पीडित था। खरवा राव गोपाल सिंह का हृदय द्रवित हो उठा। जागीर के पास इतना धन तो था नही कि वे अपनी प्रजा के प्राणो की रक्षा कर सकती अस्तु राव साहब ने लाखो रुपये ऋण लिया परन्तु अपने प्रजा के प्राणो की रक्षा की। दुर्भिक्ष मे अपनी प्रजा की प्राण रक्षा के लिए उनके इस सद्प्रयत्न के कारण उनका चारो ओर यश फैल गया। एक कवि ने उनके प्रजा प्रेम का स्मरण करते हुए लिखा था।

"भय खायो भूपति केता, दुर्मख छपनो देख,
पाली प्रजा गोपालसी, परम धरम चहु पेख।"

प्रजा के लिए राव साहब ने जागीर की स्थिति को देखते हुए वहुत अधिक

ऋण ले लिया था। अजमेर मेरवाडा के कमिश्नर ने उनके समक्ष यह प्रस्ताव रक्खा कि यदि वे अपने अधिकार त्याग देने के लिए तैयार हो तो सरकार उनको ऋण दे देगी। परन्तु निर्भीक और साहसी राव गोपाल सिंह ने दृढता पूर्वक इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। कमिश्नर मिस्टर मिचर्ड ने उनको धमकाया तो राव गोपाल सिंह का क्षत्रित्व जाग उठा। उन्होने कठोर शब्दो मे कमिश्नर की भर्त्सना की और उ हे चलता कर दिया। कुछ ही समय के उपरात 'मसूदा' ठिकाने के उत्तराधिकार के प्रश्न को लेकर राव साहब का सघर्ष तत्कालीन कमिश्नर श्री मेलविन से हो गया मसूदा की गद्दी के दो दावेदार होने के कारण सरकार ठिकाने को जब्त करने की दुरभि सधि कर रही थी। जब खरवा राव गोपाल सिंह को यह ज्ञात हुआ कि सरकार 'मसूदा' के ठिकाने को जब्त करना च हती है तो उन्होने एक आन्दोलन खडा कर दिया और सरकार को चुनौती देते हुए घोषणा की कि "यदि सरकार ने मसूदा को जब्त करने का प्रयास किया तो राठौडो का बच्चा-बच्चा मसूदा का हकदार बन कर विद्रोही बन जावेगा और उन सब मे अग्रसर होने वाला पहला व्यक्ति मैं होऊगा।" खरवा राव गोपाल सिंह के इस मसूदा आन्दोलन से भयभीत होकर सरकार ने मसूदा को जब्त करने का विचार छोड दिया किन्तु जहा खरवा राव की यश कीर्ति फैल गई वहा वे भारत सरकार की आखो मे काटे की भाति खटकने लगे।

जब राव गोपाल सिंह ने महाविप्लवी रासबिहारी बोस और श्री अरविन्दु से सम्पर्क स्थापित किया वे कलकत्ता जाकर उनसे मिले और राजस्थान मे क्रातिकारी दल खडा किया तो सरकार को उ के विरुद्ध कोई प्रमाण न मिलने के कारण वह प्रत्यक्ष कुछ नही कर सकी परन्तु जब क्राति का प्रयत्न असफल हो गया तो सरकार ने उन्हें सदेह में नजरबन्द कर दिया। पाच लम्बे वर्षो तक वे नजरबन्द रहे। नजरबन्दी से मुक्त होने के उपरात उनका समस्त जीवन मानो देश के लिए अर्पित था। आरम्भ मे वे कांग्रेस मे सम्मिलित हुए परन्तु उनका अहिंसा मे विश्वास नही था इस कारण वे उससे अलग हो गए।

राव गोपाल सिंह की दृढ इच्छा शक्ति तथा धर्म के प्रति दृढ आस्था का चमत्कार पूर्ण प्रमाण हमे उनकी मृत्यु के समय की घटना मे देखने को मिलता है। जीवन के अन्तिम दिनो मे राव साहब अधिकतर अस्वस्थ रहने लगे थे। वे कृष्ण के भक्त थे अतएव सारा समय कृष्ण भक्ति मे लगता था। उनके मित्र तथा चिकित्सक अजमेर के प्रसिद्ध डाक्टर श्री अम्बालाल जी थे उन्होने उनकी मृत्यु के समय की घटना का "एक भक्त के महाप्रस्थान का चमत्कारिक दृश्य" शीर्षक लेख मे जो कि कल्याण के "गीता तत्वाक खड तीन मे पृष्ठ १२३० पर प्रकाशित हुआ है इस प्रकार वर्णन किया है, हम उसके कुछ अश यहां देते हैं।

"मृत्यु के लगभग दो मास पूर्व उनके शरीर मे उदर विकार के लक्षण प्रकट हुए। मैंने ऐक्सरे द्वारा परीक्षा कराई एव निश्चय हुआ कि आतो का कैन्सर रोग है। वेदना इतनी भयकर थी कि मर्फिया के इजेक्शन से भी आराम नही मिलता था किन्तु इस भीषण वेदना मे भी मन को आश्चर्यजनक रूप से एकाग्र करके वे कृष्ण ध्यान मे नियम पूर्वक बैठते थे। वेदना की रेखा उनके ललाट पर तनिक भी न रहती थी।

मृत्यु के पहले दिन सायकाल मैंने उनको निवेदन किया कि अब अधिक समय नही है यदि आपको कोई वसीयत आदि करनी हो तो शीघ्र करलें। विष (Toxemia)

के कारण आप रात्रि मे मूर्छा की अवस्था मे अवश्य हो जावेगे। राव साहव कहने लगे यह असम्भव है कि गोपाल सिंह इस ग्रह नक्षत्र मे हिजड़े की मौत मर जाय, शुभ ग्रह आने पर ही गोपाल सिंह मरेगा, आप देखते जाइए, भगवान श्री कृष्ण क्या करते हैं। मृत्यु से भी दो दो हाथ होंगे।

मेरे आश्चर्य की सीमा नही रही जब मैं प्रात काल ५ बजे उठा मैंने उन्हें ध्यान मे बैठे देखा। ध्यान पूरा होने पर वे कहने लगे, डाक्टर साहव आज हिचकी बद है वमन भी बन्द है दस्त भी स्वत एक महीने बाद आज ही हुई है। मैं बहुत अच्छा हूँ हल्का हू · शरीर नही रहेगा किन्तु भगवान के भजन मे विघ्न न हो इसलिए श्री कृष्ण ने यह बधायें दूर कर दी हैं शुभ ग्रह भी आ गया है।

करीब १० बजे मैं आया तो देखा कि उनकी नाडी जा रही है। मैंने कहा 'राव साहव अव करीब आधा घण्टा शेष है" राव साहव कहने लगे नही अभी पाच घण्टा शेष हैं घबरायें नही। सवा दो बजे मैं पहुंचा नमस्कार किया। मुझे गीता सुनाने को कहा। जब वे गीता सुन रहे थे तब उनका मस्तिष्क कितना स्वच्छ था। उस समय भी वे किसी किसी पद का अर्थ पूछते थे। ठीक मृत्यु से पाच मिनट पूर्व वे आसन पर बैठ गए। गगा जल पान किया तुलसी पत्र लिये, गगाजी की माटी का ललाट पर लेप किया, एव वृ दावन की रज सर पर रक्खी। हाथ जोड कर ध्यान करने लगे।

कहने लगे डाक्टर साहब अब आपका चेहरा नही दिख रहा है किन्तु भगवान श्री कृष्ण के दर्शन हो रहे हैं।

महात्मन अब कूच हो रहा है। यह श्री कृष्ण खडे हैं उनके चरणो मे लीन हो रहा हूं।

हरि ओउम तत् सत् हरि ओउम, वस एक सेकिन्ड मे महाप्रस्थान हो गया। हम सब विस्फरित नेत्रों से देखते रह गए।

जीवन भर देश की स्वतत्रता के लिए सघर्ष करने वाले तथा अपना सर्वस्व देश के लिए अर्पण कर देने वाले, ब्रिटिश सत्ता के समक्ष न झुकने वाले और मृत्यु से भी लड कर इच्छा मृत्यु मरने वाले उस महान क्रातिकारी देश भक्त महापुरुष को देश भूल गया। हमने उन वलिदानियो के वलिदान की कथा को देश को नही सुनाया जिनकी हड्डियों से इस देश की स्वतत्रता के भवन की नींव रक्खी गई है। आज की पीढी को यह ज्ञात ही नही है कि लाखो क्रातिकारी देश भक्तो के आत्म त्याग के फल स्वरूप ही हम स्वतत्र हुए हैं। जिस देश ने महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस को भुला दिया और जो प्रात स्मरणीय नेताजी सुभाष चन्द्र वोस के प्रति उदासीन हो सकता है, उनको भी भुला देने का उपक्रम कर रहा है यदि उस देश ने खरवा के राव गोपाल सिंह को भुला दिया तो यह हमारी कृतघ्नता की परम्परा के अनुकूल ही है इसमे कोई आश्चर्य की बात नही है।

राव गोपाल सिंह तथा श्री केशरी सिंह बारहट के सम्बन्ध मे डायरेक्टर क्रिमिनल इटैलीजैस (गुप्तचर विभाग के निदेशक) ने नीचे लिखे अनुसार रिपोर्ट दी थी।

"गोपाल सिंह और केसरी सिंह बृटिश भारत के क्रांतिकारियो से मिले हुए थे और वे बृटिश भारत के षडयत्रो मे सक्रिय भाग ले रहे थे। जब ठाकुर गोपाल सिंह से उनकी इन कार्यवाहियो के बारे मे स्पष्टीकरण करने को कहा गया तो वे हर बार गोल माल वक्तव्य देते रहे और साथ ही षडयत्रकारी कार्य करते रहे और उनके अधिकार मे

अग्नि अस्त्रों का एक असाधारण रूप से बड़ा शस्त्रागार था ।"

(फौरेन पोलिटिकल विभाग, गोपनीय १ मार्च १९१७ सख्या १ से २९ तक राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली) ।

राव गोपाल सिंह ने बगाल के क्रातिकारियो और उत्तर भारत में महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस से घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित कर लिया । वे स्वय कलकत्ता गए थे और अनुशीलन समिति के मुख्य व्यक्तियो से मिले थे । शचीन्द्रनाथ सान्याल के द्वारा राव गोपाल सिह ने दो बगाली बम विशेषज्ञ बुलाये थे जो खरवा मे बम तैयार करते थे । राव गोपाल सिह ने अपने गुप्त शस्त्रागार मे बहुत बडी सख्या मे अस्त्र शस्त्र एकत्रित कर लिए थे ।

मनीलाल ने अपने ब्यान मे कहा था कि राव गोपाल सिह का रासविहारी बोस से निकट का सम्बन्ध था । प्रथम महायुद्ध के समय रासविहारी बोस के नेतृत्व में जो २१ फरवरी १९१५ को विद्रोह आरम्भ होने वाला था वे उसमे सम्मिलित थे । उसने अपने बयान मे यह भी कहा था कि राव गोपाल सिह को आशा थी कि जब विद्रोह आरम्भ हो जावेगा तो जोधपुर के सर प्रताप तथा बीकानेर के महाराजा से भी सहयोग मिलेगा मनीलाल के कथन के अनसार राव गोपाल सिह लाहौर षडयत्र मे भी सम्मिलित थे । (सरकारी गवाह मनीलाल का बयान—वैदेशिक तथा राजनीतिक विभाग गोपनीय १ मार्च १९१७) सख्या १ से २९ तक राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली ।

अध्याय ०२

जब लार्ड हार्डिग पर बम फेंका गया

दिल्ली का राजधानी बनाना—बग भग आन्दोलन के उपरात ब्रिटिश सरकार ने यह निश्चय कर लिया था कि भारत की राजधानी कलकत्ता से हटा कर दिल्ली ले जाई जावे। बात यह थी कि बगाल मे उग्र क्रातिकारियो ने जन मानस को क्षुब्ध कर दिया था और सर्व साधारण मे अग्रेजो के प्रति घृणा और रोष उत्पन्न हो गया था। बगाल क्रातिकारियो का गढ़ था, आए दिन उच्च सरकारी अधिकारियो पर क्रातिकारी आक्रमण करते थे, इससे भारत सरकार गम्भीर रूप से चिन्तित हो उठी थी। उसकी समझ मे आ गया कि बगाल जैसे खतरनाक प्रात मे राजधानी रखना निरापद नहीं है। उस समय ब्रिटिश कूटनितिज्ञो ने सरकार को यह परामर्श दिया कि अत्यन्त प्राचीनकाल से इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) भारत की राजधानी रही है। महाभारत काल से समस्त भारत इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) को देश की राजधानी के रूप मे देखता रहा है। भारत के राजे महाराजे और नवाब तथा जन साधारण का दिल्ली से मानोवैज्ञानिक तथा भावना का सम्बन्ध रहा है अस्तु कलकत्ता जिसका निर्माण अग्रेजो ने किया और जिसका भारतीय जनमानस के साथ कोई सम्बन्ध नही है यदि उसके स्थान पर इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) को भारत की राजधानी बनाया जावे तो उसका भारतीय जनता पर अच्छा मनोवैज्ञानिक प्रभाव पडेगा, और वह इसका स्वागत करेगी। इसके अतिरिक्त उनकी यह भी धारणा थी कि भारतीय लोग परम्परागत विश्वास के कारण सम्राट को ईश्वर का अश मानते हैं अतएव स्वय सम्राट को भारत आकर इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) को भारत की राजधानी बनाने की घोषणा करनी चाहिए साथ ही बग भग को भी समाप्त कर देना चाहिए। इससे भारत और विशेष कर बगाल का जनमानस जो आज क्षुब्ध है वह भी शात हो जावेगा।

इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए दिल्ली मे १२ दिसम्बर १९११ को एक विराट दरबार किया गया। स्वय सम्राट पाचवें जार्ज दरबार मे भाग लेने के लिए इगलैंड से भारत आए। उस ऐतिहासिक दरबार मे भारत के सभी राजे, महाराजे नवाब, जागीरदार, भूस्वामी, धर्माचार्य, उद्योगपत्ति, व्यवसायी तथा अन्य क्षेत्रो के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। एक प्रकार से समस्त भारत के शीर्ष पुरुष वहा आए हुए थे। उस दरबार मे सम्राट ने स्वय घोषणा की थी कि भारत की राजधानी कलकत्ता के स्थान पर अब दिल्ली होगी। क्योकि सरकार चाहती है कि प्राचीन इन्द्र प्रस्थ के महान ऐश्वर्य का पुनरुद्धार हो। इसके अतिरिक्त उन्होने यह भी घोषणा की कि भारत और विशेष कर बगाल की जनता के असतोष को ध्यान मे रख कर प्रजा-वत्सल सम्राट बगभग को समाप्त करते हैं, और पूर्वी तथा पश्चिमी बगाल को एक प्रात बना दिया जाता है। नई दिल्ली का शिलान्यास भी सम्राट के हाथो से ही कराया गया। इस वैभवपूर्ण दरबार का भारत के जनमानस पर अनुकूल प्रभाव पड़ा। भारत-वासियो ने सम्राट भक्ति का अपूर्व प्रदर्शन किया। ब्रिटिश सरकार इससे अत्यन्त प्रसन्न और सतुष्ट थी। यही कारण था कि सरकार ने नई राजधानी के उद्घाटन और धूमधाम समारोह को भी उसी शानशौकत और गौरवपूर्ण ढग से मनाने का निश्चय किया।

लार्ड हार्डिग का जुलूस—

योजना यह थी कि कलकत्ता से वायसराय लार्ड हार्डिग की स्पेशल ट्रेन जब

दिल्ली आवे तो भारत के सभी राजे महाराजे, नवाब तथा अन्य सभी गणमान्य आमन्त्रित व्यक्ति स्टेशन पर उनका स्वागत करें। स्टेशन खूब सजाया जावे और वहा से वायसराय वायसरीन के साथ सजे हुए हाथी पर बैठकर जुलूस मे दिल्ली मे प्रवेश करें। देश के सभी राजे महाराजे अपने अग रक्षको के साथ और अपने राजसी ठाट बाट मे वायसराय के पीछे उनके जुलूस मे रहे। समस्त दिल्ली सजाया जावे। उस विशाल जुलूस मे अस्त्र शस्त्रो से सज्जित कूच करती हुई भारत सरकार और देशी राज्यो की सेनाए हो। जुलूस ऐसा भव्य और प्रभावोत्पादक हो कि उसे देख कर भारतीय आश्चर्य चकित हो जावें और ब्रिटिश साम्राज्य की महान शक्ति और वैभव का दर्शन कर सकें। ब्रिटिश सरकार इस अवसर का उपयोग इस प्रकार करना चाहती थी कि भारतीय जनमानस पर यह छाप पडे कि ब्रिटिश शक्ति अजेय है, उसका वैभव अतुलनीय है, ससार की कोई भी शक्ति उसको चुनौती नही दे सकती।

जहा एक और ब्रिटिश सरकार और उसका यशोगान करने वाले सम्राट भक्त चाटुकार भारतीय इस अवसर का उपयोग भारतीयो की ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति भक्ति को दृढ करने के लिए करना चाहते थे वहा दूसरी ओर भारतीय सशस्त्र क्राति के अग्रदूत महाविप्लवी नायक रासविहारी वोस ब्रिटिश शासन के केन्द्र दिल्ली मे, ब्रिटिश सत्ता और शक्ति के प्रतीक गवर्नर जनरल को उनकी सेना और अगरक्षको की आखो के सामने लाखो भारतीयो के मध्य समाप्त करके ब्रिटिश शक्ति को चुनौती देने की योजना बना रहे थे।

जब लार्ड हार्डिग की सजी हुई स्पेशल ट्रेन कलकत्ता से २३ दिसम्बर १९१२ को प्रात.काल दिल्ली पहुची तो उनका शाही स्वागत हुआ। भारत के सभी देशी नरेश उनके स्वागत के लिए स्टेशन पर उपस्थित थे। जब स्वागत की सभी औपचारिक रस्मे पूरी हो गई तो लार्ड हार्डिग एक बहुत ऊचे हाथी पर जो बहुमूल्य कारचोबी की झूलो से सुसज्जित था और जिस पर चादी सोने का गगा-जमुनी भारी हौदा रखा हुआ था सवार हुए और वह विशाल और भव्य जुलूस चला। लार्ड हार्डिग के पीछे बलरामपुर का जमादार 'महावीर सिह' सोने के काम का अत्यन्त सुन्दर छत्र सम्राट के प्रतिनिधि पर लगाए हुए पीछे बैठा था। वायसराय की बाई ओर लेडी हार्डिग बैठी थी और उनके पीछे उनका निजी सेवक खडा था। लार्ड हार्डिग के पीछे देशी राज्यो के नरेश तथा भारत सरकार के सर्वोच्च अधिकारी तथा सैनिक अधिकारी चल रहे थे। उस जुलूस को देखने के लिए लाखो की सख्या मे भारत के विभिन्न भागो से तथा विदेशो से दर्शक यात्री आए थे। जुलूस के मार्ग पर जितनी भी इमारतें थीं वे दर्शको से खचाखच भरी थी। जुलूस के आगे सेनाए चल रही थी और सैनिक बैंड मोहक ध्वनि बजा रहे थे।

बम विस्फोट

जैसे ही जुलूस चादनी चौक के मध्य मे पजाब नेशनल बैंक के भवन के सामने पहुँचा कि गगनभेदी भयानक धडाका हुआ और एक बम हौदे के पिछले भाग पर आकर फटा। लार्ड हार्डिग और छत्रधारी जमादार महावीर सिह के बीच मे बम फटा था। हौदे मे लार्ड हार्डिग का जो सिहासन था उसके पश्र्व भाग के कारण, जो ऊचा था, बम विस्फोट का वायसराय पर पूर्ण आघात नही हुआ परन्तु हौदे का पिछला भाग पूर्ण रूप से ध्वस्त हो गया। मोटा और भारी उस सोने चादी के हौदे का पिछला भाग उड़

गया। छत्रधारी महावीर सिंह मर कर लटक गया उसके पैर हाथी की रस्सी मे फसे हुए थे। लेडी हार्डिंग के पीछे जो सेवक खडा था वह बुरी तरह घायल हो गया था। वायसराय भी भीषण रूप से जख्मी हो गये थे। बम विस्फोट का एक छोटा सा भाग छिटककर वायसराय के दाहिने कधे को जख्मी करता हुआ निकल गया था। वायसराय के कधे मे चार इच लम्बा और डेड इच गहरा घाव हो गया था उनके कधे की हड्डी दिखलाई पड रही थी, उनकी गर्दन मे दाई ओर अनेक घाव हो गए थे और उनका सीधा नितम्ब भी जख्मी हो गया।

स्वय लार्ड हार्डिंग ने उक्त घटना का वर्णन इस प्रकार किया है। "वह एक अत्यन्त मनमोहक प्रभात था और हाथियो का वह जुलूस भारतीय शान शौकत तथा रगीनी का सुन्दर और भव्य चित्र प्रस्तुत कर रहा था। हम क्वीन्स गार्डन मे से गुजरे जहा से जनता को हटा दिया गया था। कुछ समय के उपरात देहली की मुख्य सडक चादनी चौक मे जुलूस घुसा जहा असख्य जन समूह एकत्रित था। जनता ने मेरा अत्यन्त उत्साह से स्वागत किया। तालियो की गडगडाहट और स्वागत सम्बन्धी शोर से कान बहरे हो रहे थे। मैं तीन सौ गज से अधिक दूरी पर नही गया होऊंगा कि एक भयानक धडाका हुआ। मेरा हाथी रूक गया, चारो ओर मृत्यु जैसा सन्नाटा छा गया। मेरा शिरस्त्राण सडक पर पडा था। मैंने अपनी पत्नी की ओर दृष्टि डाली वे सुरक्षित थी तुरन्त ही मैंने हौदे के पीछे देखा तो मुझे पीला पाऊडर दिखलाई दिया मैंने कहा कि वह बम था। मेरी पत्नी ने पूछा कि क्या मेरे चोट लगी है तो मैंने उत्तर दिया कि मुझे ऐसा ज्ञात हुआ कि मेरी पीठ पर भीषण आघात लगा है और किसी ने खौलता गरम पानी मुझ पर उडेल दिया है। पुलिस के सर्वोच्च अधिकारी ने मेरे शिरस्त्राण को भाले की नोक पर उठाकर मुझे दिया और आज्ञा देने की याचना की। मैंने कहा कि जुलूस को आगे बढने दो। परन्तु जब जुलूस थोडी ही दूर गया होगा कि मेरी पत्नी ने पीछे मुडकर देखा तो मैं बुरी तरह घायल हो गया था और जो सेवक मेरे पीछे राजछत्र लिए खडा था वह मर चुका था। उसका शरीर हौदे की रस्सियो में फसा हुआ था। उन्होने मुझसे मृत जमादार के सम्बध मे कहा और मैंने तुरन्त हाथी को रुकवा दिया। जबकि मृत जमादार के शरीर को हटाया जा रहा था तो अधिक रक्त बह जाने के कारण मैं बेहोश हो गया और जब मुझे होश आया तो मैंने देखा कि मैं सडक के किनारे लेटा हुआ हूं और मेरी प्राथमिक चिकित्सा हो रही है। मुझे एक मोटरकार मे बेहोशी की अवस्था मे वायसराय भवन मे पहुँचा दिया गया।

मुझे बाद को याद आया कि मेरा निजी भारतीय सेवक जो कि उससे पूर्व वाले दिन मेरे साथ शिकार मे था और जिसने खाकी शिकारी वर्दी पर चमकदार गहरे-लाल रग की पोशाक पहन रक्खी थी वह विनीफ्रेड (लेडी हार्डिंग) के पीछे खडा था। बम विस्फोट के बाद मैंने उसको हाथी पर से खाकी पोशाक मे, वह जुलूस की वर्दी मे नही था, उतरते देखा। मैंने पूछा कि तुम खाकी वर्दी मे यहा क्यो आए। बाद को पता चला कि बम के विस्फोट ने उसकी जुलूस की वर्दी को चिथडे-चिथडे करके उडा दिया था और उसके शरीर पर तीस चालीस छोटे बडे घाव थे। मैंने उससे जो कुछ कहा वह उसने नही सुना क्योकि उसके दोनो कानो के कर्णपट(इयर ड्रम)फट गए थे जैसा कि मेरे एक कान का भी कर्णपट फट गया था। मेरा कान तो ठीक हो गया परन्तु वह बेचारा उसके उपरांत सदैव के लिए बहरा हो गया। मैंने उसके लिए दुगनी

पेन्शन की व्यवस्था कराई ।

एक विचित्र बात है कि बम विस्फोट इतना तीव्र और भयानक था कि वह ६ मील दूर तक सुनाई दिया था परन्तु न विनीफ्रेड (लेडी हार्डिंग) और न मैंने ही उसको सुना। मेरा अनुमान है कि हमारी श्रवण शक्ति बम के कारण आवाज सुनने के पूर्व ही नष्ट हो गई होगी।

मेरे जख्म जो कि बहुत कष्टदायक थे उनके अच्छा होने मे बहुत समय लग गया। अनेक छोटे आपरेशन करने पडे क्योकि बम की किरचो को शरीर से निकालना था उसमे स्क्रू (पेंच) कीलें ग्रामोफोन की सुइया आदि थी।

लेडी हार्डिंग ने बम कांड को जो विवरण दिया है वह वायसराय के उपरोक्त विवरण मे मिलता जुलता है। केवल उसमे केवल एक नया तथ्य है जो इस प्रकार है।

"जब हम चांदनी चौक से निकल रहे थे जहा चारो ओर जयजयकार और तालियो की ध्वनि सुनाई दे रही थी मुझे एक साथ धक्का लगा और मैं आगे की ओर गिर गई। जब मैं उठ कर अपनी जगह बैठ गई तो मेरी आखो के आगे अधेरा सा प्रतीत हुआ और सर मे भीषण झनझनाहट के कारण मेरी श्रवण शक्ति जाती रही। हाथी रुक गया था। उस समय भीड मे निस्तब्ध शान्ति थी। वायसराय के आदेश पर जब जुलूस फिर आगे बढा तो लोग चिल्लाने लगे थे और मैंने सुना कि कुछ आवाजें कह रही थी शाबाश बहादुर।"

पुलिस और सेना ने तुरन्त सभी मकानो को घेर लिया। सभी मकानो की तलाशी ली गई परन्तु किसी को भी पकडा नही जा सका। भारत सरकार तथा प्रत्येक देशी नरेश ने अपराधी को पकडवाने वाले को पुरस्कार घोषित किए। सभी पुरस्कारों की राशि मिल कर कई करोड रुपए हो गई परन्तु भारत का गुप्तचर विभाग, पुलिस तथा लदन के स्काटलैंडयार्ड के प्रमुख गुप्तचर विभाग के अधिकारी भी बम फेंकने वाले का पता नही लगा सके।

क्रातिकारी ने इस काड की प्रशसा करते हुए गुप्त रूप से एक विज्ञप्ति वितरित की। उसमें लिखा था:—"गीता, वेद, कुरान मत्र हमे आदेश देते हैं कि मातृभूमि के शत्रु को फिर वह चाहे किसी जाति, सम्प्रदाय, रग और धर्म का क्यो न हो, मारना हमारा धर्म है। अन्य बडे और छोटे क्रातिकारी कार्यों की हम बात नही करते परन्तु गत दिसम्बर मास मे देहली मे जो देवी शक्ति प्रकट हुई वह इस बात का निस्सदेह प्रमाण है कि भारत के भाग्य को स्वय भगवान बदल रहे हैं।"

भारत की राजधानी मे सम्राट के प्रतिनिधि वायसराय पर विशाल जुलूस में जो कि भारतीयो पर ब्रिटिश साम्राज्य की अजेय शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए आयोजित किया गया था सेना, पुलिस और गुप्तचरो से घिरे होने पर भी क्रातिकारियो ने बम फेंक कर ब्रिटिश साम्राज्यशाही को चुनौती दी थी अतएव भारत सरकार क्रोध और ग्लानि से खीज उठी। सब कुछ प्रयत्न करने पर भी यह पता नही लग सका कि बम-फेंकने वाला कौन था।

घटना के दो वर्षों के उपरात कही जाकर सरकार को पता चला कि इस षडयन्त्र के जनक रासबिहारी बोस थे। दिल्ली के अतिरिक्त पुलिस सुपरिटेंडेंट डी० पैटी ने ग्यारह नवम्बर १९१४ को बम काड के बारे जो रिपोर्ट दी उसमे उन्होंने यह बतलाया कि १९११ मे कलकत्ता के डलहोजी स्क्वायर मे और उसी वर्ष मिदनापुर

मे, तथा १९१२ मे मौलवी बाजार (सिलहट जिला) मे और १९१३ में लाहौर मे (दोनो स्थानो पर गार्डन को मारने के लिए) और देहली मे लार्ड हार्डिग को मारने के लिए जो बम फेंके गए थे वे एक ही प्रकार के थे अतएव उनको क्रातिकारियो के एक ही समूह ने बनाया होगा, और उन्होने ही उसका उपयोग किया होगा। रिपोर्ट के अन्त मे डी० पैटी ने लिखा "इस अनाचार का कर्त्ता वसन्त विश्वास था और रासविहारी बोस प्रधान कुटिल षडयन्त्रकारी था।"

देहली षडयंत्र अभियोग

इस घटना के थोडे समय पश्चात कलकत्ता के राजा बाजार मे शशांक मोहन हाजरा जिनका दूसरा नाम अमृत हाजरा भी था, राजनीतिक डकैती के सम्बन्ध मे उनके मकान की तलाशी मे कुछ कागज पत्र मिले तथा बम खोल मिले जो लार्ड हार्डिग पर फेंके गए बम के खोल जैसे थे। उस तलाशी मे मिले कागज पत्रो के आधार पर दिल्ली के मास्टर अमीरचन्द के मकान की तलाशी ली गई। तलाशी मे एक बम की टोपी लिबर्टी नामक क्रातिकारी विज्ञप्ति का मास्टर अमीरचन्द के हाथ का लिखा मैटर और कुछ पत्र मिले। जिसके परिणाम स्वरूप अन्यो के साथ दीनानाथ गिरफ्तार कर लिया गया।

कायर देशद्रोही दीनानाथ भयभीत होकर सरकारी गवाह बन गया। अपने बयान मे दीनानाथ ने यह तो कहा कि वायसराय पर बम फेंकने का काम रासविहारी बोस के नेतृत्व मे लाहौर के विप्लववादी दल का है, परन्तु वायसराय पर बम फेंकने की घटना के सम्बन्ध मे वह कुछ भी न बता सका कि किसने बम फेंका और उसमे कौन -कौन सम्मिलित थे।

रासविहारी बोस और उनके शिष्य तथा अनन्य सहयोगी जोरावर सिंह बारहट और प्रताप सिंह फरार हो गए थे। परन्तु रासविहारी बोस के दल के अन्य प्रमुख क्रातिकारी दीनानाथ की गवाही के पश्चात गिरफ्तार कर लिए गए। अन्त मे मार्च १९१४ मे सरकार ने नीचे लिखे अभियुक्तो पर मुकदमा चलाया—

दीनानाथ, सुलतानचन्द, मास्टर अमीरचन्द, अवध विहारी, भाई बालमुकुन्द, वसन्त कुमार विश्वास, बलराज, छोटेलाल, लाला हनुवन्त सहाय, चरनदास, मन्नूलाल, रघुवर शर्मा, रामलाल और खुशीराम। दीनानाथ और सुलतानचन्द★ सरकारी गवाह बन गए इस कारण उनको छोड दिया गया। सेशन जज ने ५ अक्टोबर, १९१४ को अवध विहारी, मास्टर अमीरचन्द और भाई बालमुकुद को प्राण दण्ड, तथा बलराज, लाला हनुवन्त सहाय और वसन्तकुमार विश्वास को आजन्म कालेपानी की सजा देकर शेष सबो को छोड़ दिया। पजाब के गवरनर भारत के शत्रु सर माइकेल ओडायर को बम फेंकने वाले का पता न लगने से बहुत अधिक क्रोध था। उसने बसन्त विश्वास को प्राण दण्ड दिये जाने के लिए उच्च न्यायालय मे अपील की। उच्च न्यायालय ने बसत विश्वास को भी प्राण दड की सजा दे दी। प्रिवी काऊसिल ने दंड की पुष्टि करदी। ११ मई १९१५ को अवधविहारी, मास्टर अमीरचन्द, भाई बालमुकुन्द देहली

★ सुलतानच द एक अनाथ लडका था, मास्टर अमीरचन्द ने उसका पालन पोषण किया था और उसको अपना दत्तक पुत्र स्वीकार किया। जिस दिन उस नराधम ने अपने पालन कर्ता पिता के विरुद्ध गवाही दी अदालत मे उपस्थित सभी उसे धिक्कारने लगे। मास्टर अमीरचन्द को गहन वेदना हुई और कृतघ्नता भी उस दिन लज्जित हो गई।

जेल मे और वसन्त-विश्वास अम्बाला जेल मे मातृभूमि को स्वतंत्र कराने के अपराध मे वन्दे-मातरम का घोष करते हुए फांसी के तख्ते पर चढ गए। जब वसन्त-विश्वास को प्राण दण्ड होना निश्चित हो गया तो उसने सम्भवत किसी मित्र सम्बन्धी या पुलिस अधिकारी को यह बतलाया कि बम उसने फेंका था। यही कारण था कि डी० पैंटी ने अपनी रिपोर्ट मे उसको उस काड का कर्त्ता कहा था। यद्यपि न्यायालय में यह तनिक भी सिद्ध नही हो सका कि किसने बम फेंका था परन्तु चार व्यक्तियो को फासी दे दी गई। यद्यपि इस बात का कोई प्रमाण नही मिला और न सरकार कोई साक्षी ही उपस्थित कर सकी कि जिससे यह सिद्ध हो सकता कि लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने वाले कौन लोग थे पर न्याय का दावा करने वाली ब्रिटिश सरकार ने देहली बम काड के सम्बन्ध मे चार क्रातिकारियो को फासी देदी। तब से आज तक यह रहस्य ही बना हुआ है कि लार्ड हार्डिंग पर बम किसने फेंका। इस सम्बन्ध मे क्रातिकारी इतिहास लेखको ने तीन नामो की चर्चा की है। कुछ लेखक यह मानते हैं कि स्वय रासविहारी बोस ने बम फेंका था, अधिकाश क्रातिकारी और विशेषकर बगाल के क्रातिकारी मानते हैं कि बम बसन्त विश्वास ने फेंका था। राजस्थान के कतिपय क्रातिकारी तथा बारहट परिवार के लोगो की मान्यता है कि बम बारहट जोरावर सिंह ने फेंका था। हम यहा तीनो के सम्बन्ध मे विस्तार से चर्चा करेंगे।

यदि इस सम्बन्ध मे कोई व्यक्ति साधिकार कह सकता है तो वे दिल्ली के लाला हनुवन्त सहाय हैं। वे ही अकेले जीवित क्रातिकारी हैं जो बम काण्ड के समय वहां उपस्थित थे और रास विहारी बोस ने उनको यह उत्तरदायित्व सौंपा था कि बम फेंके जाने के उपरात बम फेंकने वालो के बाहर निकलने की व्यवस्था वे करें। परन्तु वे जो साधिकार इस तथ्य पर प्रकाश डाल सकते हैं मौन रहना पसद करते हैं। लेखक के पत्र के उत्तर मे उन्होंने लेखक को लिख भेजा "लार्ड हार्डिंग पर बम किसने फेंका इस विवाद मे मैं पडना नही चाहता।" (हनुवन्त सहाय)

स्वय रासविहारी बोस ने बैंगकाक सम्मेलन मे इडियन इन्डिपैंडेंस लीग के अध्यक्ष पद से जो भाषण दिया था उसमे उन्होने कहा था—

"It is about thirty years ago I threw a bomb at the Viceroy and as I was active member of the Lahore, Delhi, and Banaras conspiracies, I had to leave my country and to seek foreign help"

"आज मे लगभग तीस वर्ष पूर्व मैंने वायसराय पर बम फेंका था और क्योंकि मैं लाहौर, दिल्ली और बनारस पडयत्रो मे सक्रिय था मुझे अपना देश त्याग देना पड़ा और विदेशो से सहायता मागनी पडी (रासविहारी बोस) रासविहारी बोस स्मारक समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तक—रासविहारी बोस पृष्ठ २२२।"

रासविहारी बोस की पुत्री श्रीमती हिगुची ने भी यही कहा था। "मेरे पिता ने दिल्ली मे लार्ड हार्डिंग पर बम फेका था (हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली, १९ मार्च १९६१)"

श्रीमती हिगुची ने यह बात श्री कुदावन्त सिंह को जब वे टोकियो में उनसे मिलने गए थे तब कही थी। उन्होंने "फादर अयू ए बाम्ब" शीर्षक लेख मे जो हिन्दुस्तान टाइम्स न्यू दिल्ली १९ मार्च १९६१ मे प्रकाशित हुआ था यह तथ्य लिखा था। स्वयं श्री रासविहारी बोस ने श्री टी० पोहलोराम से टोकियो मे कहा था "मैंने ही हार्डिंग

पजाव नेशनल वैंक की इमारत से वम फेंका था("प्रदीप जालधर २२ फरवरी, १९६८)".

श्री रासविहारी वोस की एक मात्र जीवित सतान उनकी पुत्री ने कई भारतीयो से जो उससे टोकियो मे मिले कहा कि "मेरे पिता ने मुझे वतलाया कि उन्होंने लार्ड हार्डिग पर वम फेंका था।"

वसन्त विश्वास ने वम फेंका था ऐसा अधिकाश क्रातिकारी और विशेषकर वगाल के क्रातिकारी मानते हैं। "रोल आव आनर" के लेखक श्री कालीचरण घोष ने लेखक को लिखा था कि फासी के पूर्व वसन्त विश्वास ने किसी जेल अथवा पुलिस अधिकारी तथा अपने किसी मित्र या सम्बन्धी से यह वात कही थी। इस कारण बंगाल मे प्रत्येक व्यक्ति यही मानता है कि वसन्त विश्वास ने ही वम फेंका था।

लेखक को श्री ईश्वरदान आसिया जो कि मास्टर अमीरचन्द के साथ रह कर श्री रासविहारी वोस के क्रातिकारी दल मे काम करते थे और और आज भी अपने गांव (मेगटिया) जिला उदयपुर मे रहते हैं वतलाया कि मास्टर अमीरचन्द ने उनको वतलाया था कि लार्ड हार्डिग पर वसन्त विश्वास ने वम फेंका था। इसके अतिरिक्त दिल्ली के अतिरिक्त पुलिस सुपरिंडेंट डी० पैटी ने भी अपनी रिपोर्ट मे यही लिखा था "Real author of the outrage was Basant Kumar Biswas" "कि उस काड का वास्तविक कर्ता वसन्त विश्वास था।" अभी हाल मे श्री जेम्स कैम्प वैल केर आ० सी० यस की पुस्तक "पोलिटिकल ट्रवल इन इडिया—१९०७-१९१७ का भारतीय संस्करण प्रकाशित हुआ है उसमे इस घटना का वर्णन करते हुए लेखक ने लिखा है कि वसन्त विश्वास ने देहली के युवक जैसे वस्त्र पहन कर वम फेंका और रासविहारी उसके पास खडे थे। वह गोल टोपी लगाए था। (पृष्ठ ३२०)★

जोरावर सिंह वारहट भी अपने भतीजे प्रताप सिंह वारहट के साथ इस काड मे उपस्थित थे। दोनो ही रासविहारी के अत्यन्त विश्वास पात्र क्रातिकारी कार्यकर्त्ता थे और मास्टर अमीरचन्द के द्वारा उनका रासविहारी वोस से सम्पर्क स्थापित हुआ था। श्री केशरी-सिंह वारहट ने अपने भाई जोरावर सिंह वारहट, पुत्र प्रताप सिंह वारहट और जामाता ईश्वरदान आसिया को मास्टर अमीरचन्द के पास क्रातिकारी कार्यों का प्रशिक्षण प्राप्त करने भेजा था मास्टर अमीरचन्द के द्वारा उनका सम्पर्क श्री रासविहारी वोस से हुआ था। राजस्थान के क्रातिकारियो तथा वारहट परिवार के लोगो का मत है कि हार्डिग पर वम जोरावर सिंह वारहट ने फेंका था। लेखक को इस सम्बन्ध मे दो विश्वासनीय साक्षी प्राप्त हुए हैं। राजस्थान के वरिष्ठ राष्ट्रकर्मी प्रसिद्ध लेखक तथा सपादक श्री रामनारायण चौधरी ने लेखक को नीचे लिखा पत्र इस सम्बन्ध मे लिखा था।

"लार्ड हार्डिग वम केस मे मेरे सहपाठी और मित्र छोटे लाल जैन अभियुक्त थे। मेरे सहपाठी और मित्र ठाकुर केशरी सिंह के पुत्र- प्रताप सिंह उस काण्ड मे शरीक ही थे। उन दोनो ने मुझे वतलाया कि वम जोरावर सिंह ने डाला था। वोस वावू (रासविहारी) शरीर से ही इतने भारी थे कि यह फुर्ती का काम उनके वस का नही हो सकता था। वारहाल मेरे पास तो इन दो साथियो के कथन का ही आधार है और उनके लिए मैं यह मान ही नहीं सकता कि वे असत्य वात कहे (रामनारायन चौधरी)"

★ जेम्स कैम्पवैल केर का मत है कि जव वम फेंका गया तो हाथी चादनी चौक के उत्तर की ओर धूलिया कटरा के सामने था। उसी मे पजाव नेशनल वैंक था। कैम्पवैल की मान्यता थी कि विश्वास ने वम सडक के किनारे से फेंका(पृष्ठ ३२४)

श्री रामनारायण चौधरी के अतिरिक्त एक साक्षी और है श्रीमती लक्ष्मी देवी। ये ठाकुर केशरी सिंह की पौत्री हैं। वीरवर जोरावर सिंह बारहट ने १९३७ मे अपनी पौत्री राजलक्ष्मी देवी से जबकि वे १४ या १५ वर्ष की थी दिल्ली मे उस स्थान को बतलाकर कहा था कि इस जगह से उन्होंने बुर्का पहिन कर लार्ड हार्डिग पर बम फेका था। यह बात उन्होने घटना के २५ वर्षों के उपरात अपने भाई की पौत्री राजलक्ष्मी देवी से कही थी। एक पितामह अपनी पौत्री से ऐसी बात किसी और अभीष्ट को लेकर नहीं कह सकता। अस्तु इसमे सदेह करने का प्रश्न नही रहता। श्रीमती राजलक्ष्मी देवी राजस्थान प्रशासनिक सेवा के एक उच्च अधिकारी श्री फतहसिह मानव की पत्नी हैं। जोरावर सिंह को आरा (नीमाज) षडयत्र अभियोग मे प्राण दण्ड मिला था। वे फरारी का जीवन व्यतीत कर रहे थे। प्रसिद्ध क्रातिकारी ठाकुर केशरी सिंह बारहट ने अपने भाई जोरावर सिंह, पुत्र प्रताप सिंह और दामाद ईश्वरदान आसिया को मास्टर अमीरचन्द के पास क्रातिकारी कार्यों का प्रशिक्षण लेने के लिए भेजा था और उनके द्वारा ही उनका सम्पर्क रासबिहारी बोस से हुआ था। रासबिहारी बोस का प्रतापसिंह और जोरावर सिंह पर अटूट विश्वास था। जोरावर सिंह जीवन के शेष वर्षों मे भूमिगत रहने पर विवश हो गए। उन्होने अपना नाम अमरदास वैरागी रख लिया था और वे मालवा के पहाड़ो और जगलो मे रहते थे।

सीतामऊ के एकलगढ गाव मे वे अपने एक हितैषी मित्र श्री जगदीशदान जी से मिलने आया करते थे। उनके पुत्र श्री मणिराज सिंह जगावत ने लेखक को बतलाया कि जोरावर सिंह ने स्वय यह बात उनके पिता से कही थी कि लार्ड हार्डिग पर उन्होने बम फेंका था। सेमलखेडे (सीतामऊ) के श्री शक्तिदान जी की भी जोरावर सिंह से घनिष्टता थी, उन्होने भी लेखक को बतलाया कि जोरावर सिंह ने लार्ड हार्डिग पर बम फेंकने की बात उनसे कही थी। स्वय ठाकुर जोरावर सिंह तथा उनके हितैषी और मित्र जिन्हे यह भेद ज्ञात था उनके जीवन काल मे इस तथ्य को प्रगट नही कर सकते थे। जोरावर सिंह का १९३९ मे स्वर्गवास हुआ। इस कारण सर्व साधारण को इसकी जानकारी नही हुई।

आज तक यह एक विवाद का विषय बना हुआ है कि लार्ड हार्डिग पर बम किसने फेंका। श्री रासबिहारी बोस ने स्वय बम फेंकने की बात कही है। मास्टर अमीरचन्द ने श्री ईश्वरीदान आसिया से कहा कि बसन्त विश्वास ने बम फेंका। पुलिस रिपोर्ट भी बसन्त विश्वास को बम फेंकने वाला स्वीकार करती है। प्रताप सिंह बारहट ने तथा छोटेलाल जी ने रामनारायन चौधरी से कहा कि बम जोरावर सिंह जी ने फेंका तथा स्वय जोरावर सिंह ने अपनी पौत्री राजलक्ष्मी देवी तथा कतिपय मित्रो से बम फेंकने की बात कही।

लेखक ने इस सम्बन्ध मे अधिक छानबीन की तो उसे श्री केशवचन्द्र ने बतलाया जो राजस्थान के प्रसिद्ध क्रातिकारी नेता अर्जुनलाल सेठी के विश्वास पात्र शिष्य थे। सेठी जी का रासबिहारी बोस तथा मास्टर अमीरचन्द से घनिष्ट सम्बन्ध था, वे रासबिहारी बोस के दल के एक प्रमुख कार्यकर्ता थे, जयपुर मे एक विद्यालय चलाते थे और क्रातिकारी युवक तैयार करते थे। सेठी जी ने केशवचन्द्र को बतलाया कि जब लार्ड हार्डिग पर बम फेंका गया तो उस समय वहा चार व्यक्ति थे, स्वय रासबिहारी बोस, जोरावर सिंह, बसन्त कुमार विश्वास और एक मुसलिम युवक था जिसका नाम उन्हे याद नही रहा। इस तथ्य की पुष्टि श्री जोरावर सिंह के द्वारा एकलगढ के

श्री जगदीशदान को बम काड के सम्बन्ध मे दिए गए विवरण से भी होती है जो इस प्रकार है "दिल्ली मे जब लार्ड हार्डिग सजे हाथी के हौदे पर बैठकर जुलूस मे निकले तो गोला (बम) मैंने स्वय एक मकान पर से फेंका। हम लोग चार साथी थे। चार दिन तक हम दिल्ली मे ही छिपे रहे पाचवें दिन हम लोग बिखर गए।

एक विचारणीय तथ्य यह है कि बम काड के सम्बन्ध मे घटना के दो वर्षों के उपरात दिल्ली के अतिरिक्त पुलिस सुपरिटैंडैंट डी० पैटी ने १२ नवम्बर, १९१४ को जो सरकार को रिपोर्ट दी उसमे उन्होने बाक्स शब्द का उपयोग किया है। उनके शब्द है "Before Delhi Bombs, two machines of very similar type have already been used in India The first of these was thrown in Dalhousie Square, Calcutta at the beginning of March 1911 but failed to explode The second exploded in Midnapur in the house of an informer about a fortnight before the Delhi outrage occurred".

देहली के बमो के पूर्व ही ठीक उसी प्रकार के दो यत्रो का भारत मे उपयोग किया जा चुका था। पहला कलकत्ता के डलहौजी स्कायर मे मार्च १९११ के आरम्भ मे फेंका गया परन्तु वह फटा नही। दूसरा मिदनापुर मे देहली बम काड के लगभग एक पखवाडे के पूर्व पुलिस के एक भेदिये के घर मे फटा था। अवश्य ही रिपोर्ट मे यह स्पष्ट रूप से कहीं नही कहा गया कि वायसराय पर एक से अधिक बम फेंके गए। परन्तु 'बाम्स' शब्द मे यह आभास मिलता है कि पुलिस अधिकारी को सम्भवतः यह सदेह था कि हो सकता है कि एक से अधिक बमो का प्रयोग किया गया हो।

यदि ऊपर लिखे तथ्यो का विश्लेषण करें तो महाविप्लवी नायक रासबिहारी बोस ने स्वय घोषणा की कि उन्होने बम फेंका, उनकी पुत्री श्रीमती हिगूची का भी यही कहना है। उधर मास्टर अमीरचद ने श्री ईश्वरदान आसिया से कहा था कि बम बसत विश्वास ने फेंका। पुलिस रिपोर्ट में भी बसन्त विश्वास को उस काड का जनक बताया गया है। श्री प्रताप सिह बारहट जो घटना स्थल पर उपस्थित थे और जो कि रासबिहारी बोस के अत्यन्त विश्वास पात्र और निकट थे तथा छोटे लाल जैन जो देहली बम केंस मे स्वय अभियुक्त थे उन्होने श्री रामनारायन चौधरी से कहा कि बम बारहट जोरावर सिह ने फेंका था। स्वय जोरावर सिह ने कई व्यक्तियो से यह बात कही थी। इन तीनों कथनो पर अविश्वास करने का कोई कारण नही दिखता। महान क्रांतिकारी रासबिहारी बोस, मास्टर अमीरचन्द, जोरावर सिह, प्रताप सिह बारहट तथा छोटेलाल ऐसे व्यक्ति थे जो असत्य बात कह ही नही सकते थे।

इसमे तनिक भी सदेह नही कि बम फेंकने की सम्पूर्ण योजना श्री रासबिहारी बोस के उर्वर मस्तिष्क की उपज थी। वे स्वय घटना स्थल पर उपस्थित थे। उन्होने ही चन्दननगर (फ्रेंच भारत) से बम बनाने के विशेषज्ञ मनीद्र नायक द्वारा बने हुए बम मगवाये थे जिन्हें अमर चटर्जी ने बसन्त विश्वास के द्वारा रासबिहारी बोस के पास भेजा था। बम कौन फेंकेगा, कहां से बम फेंका जावेगा, बुर्का पहिन कर स्त्रियो मे मिल कर किस इमारत पर से चांदनी चौक मे जुलूस पहुंचने पर बम फेंका जावेगा, बम फेंक कर किस प्रकार निकला जावेगा, कौन साथी, कहां रहेगे और क्या करेंगे, यह सारी योजना उनकी थी। वे ही उस काड के वास्तविक सूत्राधार थे। जिस प्रकार कोई महान नेता या गुरु अपने अनुयायियो अथवा शिष्यो द्वारा कोई कार्य का सपादन

अपनी देख रेख में करवाये तो वह कृत्य उसी का माना जावेगा। इसी प्रकार महान क्रांतिकारी रासविहारी वोस को इसका श्रेय दिया जाना उचित है और यदि उन्होने इस आशय की घोषणा की कि तीस वर्ष पहले उन्होने वायसराय पर वम फेंका था तो वह गलत नहीं था। परन्तु वे शरीर से वहुत भारी थे (मोटे)। यह आश्चर्य जनक फुर्ती का काम था कि बुर्के मे से हाथ निकाल कर वम फेंक कर वहा से उतर कर भीड मे मिल जाना। अतएव इस बात की सम्भावना कि रासविहारी वोस ने स्वय वम फेंका हो कम, है। यही कारण है कि वम उन्होने स्वय फेंका इसमे वहुतो को सदेह है। इसके अतिरिक्त वे क्रांतिकारियो के सर्वमान्य नेता थे और उस समय वे भारत व्यापी सैन्य विप्लव के आयोजन मे सलग्न थे। ऐसी दशा मे क्रातिकारियो का सर्वोच्च नेता जो देश व्यापी सैनिक विद्रोह की व्यूह रचना कर रहा हो वम फेंक कर स्वय अपने को खतरे मे डाले इसमे वहुतो को सदेह है।

जहां तक वसन्त कुमार विश्वास और जोरावर सिंह का प्रश्न है लेखक की मान्यता है कि सम्भवत. रासविहारी वोस ने दोनो को ही वम फेंकने का कार्य सौंपा हो। जहा तक जोरावर सिंह का प्रश्न है ऐसे प्रमाण मिलते है कि वे गोला फेंकने का पहले से ही अभ्यास करते थे। वे लाठी, तलवार और गोली चलाने मे दक्ष थे, वलिष्ठ, सुडौल, फुर्तीले युवक थे। "राजस्थानी आजादी के दीवाने" पुस्तक मे लेखक श्री हर प्रसाद अग्रवाल ने रणवाकुरा ठाकुर जोरावर सिंह शीर्षक मे उन्होने लिखा है—

"हाथ उनका इतना सधा हुआ था कि ऊपर ओढी हुई चादर का पल्ला ऊपर उठा तेजी के साथ हाथ से वम निकाल देते थे' इससे पता चलता है कि चादर या बुर्का ओढकर गोला फेंकने का उन्होने अभ्यास किया था। अवश्य ही श्री रासविहारी वोस के आदेशानुसार वे चादर ओढ कर गोला फेंकने का अभ्यास कर रहे थे। उनके सम्बन्धियो और परिवार वालो ने भी इस तथ्य की पुष्टि की है। स्पष्ट है कि श्री रासविहारी वोस ने उन्हे वम फेंकने के लिए चुना था।

वसन्त विश्वास भी इक्कीस वर्ष के फुर्तीले युवक थे, उनको ही अमर चटर्जी ने कुछ वम (कतिपय लेखक दस की सख्या लिखते है) देकर रासविहारी वोस के पास भेजा था। वसन्त कुमार विश्वास रासविहारी वोस के अत्यन्त निकट विश्वास पात्र साथी थे। स्वय रासविहारी के पास देहरादून मे उनके रसोइये के रूप मे रहकर उन्होने क्रातिकारी कार्य की शिक्षा और दीक्षा प्राप्त की थी। नारायणदास फरनीचर के व्यापारी ने वसन्तकुमार विश्वास को पहचान कर कहा था २३ दिसम्बर, १९१२ को वह रासविहारी वोस के साथ प्रात काल आए थे और चादनी चौक की ओर गए थे। स्पष्ट है कि वसन्त विश्वास उस दिन देहली मे थे।

सम्भवत रासविहारी वोस ने श्री जोरावर सिंह वारहट तथा वसन्त कुमार विश्वास दोनो को ही लार्ड हार्डिंग पर वम फेंकने का उत्तरदायित्व सौपा था। जिससे कि यदि एक का वम निशाना चूक जाये तो दूसरे का कारगर हो। साथ ही दोनो ने वुर्का पहिन कर स्त्रियो के झुड मे सम्मिलित हो इमारत के ऊपर से वम फेंका इससे भी यह सिद्ध होता है कि वम फेंकने के लिए जो युक्ति काम मे लाई गई वह एक जैसी थी। यदि दोनो ने वम फेंका हो तो इतनी सावधानी तो अवश्य ही वरती गई होगी कि दोनो ने एक ही स्थान पर खडे होकर वम नही फेंका होगा, क्योकि ऐसा करने से पकडे जाने का खतरा अधिक था। वम फेंकने के उपरांत जोरावर सिंह प्रताप सिंह को

साथ दिल्ली से निकल गए और फिर पच्चीस छब्बीस वर्षो तक मेवाड तथा मालवा के पहाडी तथा वन आच्छादित प्रदेश मे पुलिस तथा गुप्तचरो से अपने को वचाकर फिरते रहे। यद्यपि प्रताप सिह तो अपने नेता रासविहारी वोस से इस घटना के उपरात मिले परन्तु जोरावर सिह का फिर उनसे या वसन्त कुमार विश्वास से मिलना नही हुआ। वसन्त कुमार विश्वास पकडे गए और उनको फासी हो गई। रासविहारी वोस देश त्याग कर जापान चले गए और मास्टर अमीरचन्द आदि साथियो को फासी दे दी गई। अस्तु इस वात की सम्भावना है कि जोरावर सिह तथा वसन्त कुमार विश्वास दोनो ने ही लार्ड हार्डिग पर वम फेंका हो। दूसरे ने क्या किया उसका उन्हें ज्ञान न हो, अतएव दोनो ने ही यह सही दावा किया है कि वम उन्होने फेका था।

इस सम्वन्ध मे एक तथ्य और है जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। जोरावर सिह वारहट पर आरा (नीमाज) षडयत्र अभियोग मे वारट था वे फरार थे उनको उस अभियोग मे प्राणदण्ड दिया जा चुका था। ऐसी दशा में यह स्वाभाविक था कि रासविहारी वोस उन्हें वम फेंकने के लिए चुनते। जोरावर सिह फरार अवस्था मे ही लार्ड हार्डिग वम काड मे सम्मिलित हुए थे। रासविहारी वोस भारत व्यापी सैनिक विप्लव कराने की योजना को कार्यान्वित कराने का उस समय प्रयत्न कर रहे थे, वे क्रातिकारी दल के सर्वमान्य नेता थे, अतएव वे स्वय अपने को खतरे मे डालते इसकी सम्भावना कम है। अस्तु वस्तु स्थिति का विश्लेषण करने से हम इसी निश्कर्ष पर पहुचते हैं कि लार्ड हार्डिग पर वसन्त कुमार विश्वास और ठाकुर जोरावर सिह वारहट दोनो ने ही सम्भवत वम फेंका था।

कुछ दिनो के उपरात प्रताप सिह वारहट मारवाड के आशानाडा स्टेशन मास्टर के विश्वासघात के फलस्वरूप गिरफ्तार कर लिए गए और वनारस षडयत्र अभियोग में उन्हे पाच वर्ष का कठोर कारावास हुआ। भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के निदेशक सर चार्ल्स क्लीवलैंड ने वहुत कुछ प्रयत्न किया परन्तु वे क्रातिकारी दल के भेदो को उनसे न जान सके। उनसे कहा गया कि यदि तुम रासविहारी वोस के दल के भेद वता दो तो तुम्हारे पिता ठाकुर केशरी सिह वारहट का आजन्म कारावास का दड माफ कर दिया जावेगा चाचा जोरावर सिह पर से वारट वापस ले लिया जावेगा उनके प्राण दण्ड की सजा माफ करदी जावेगी, परिवार की जागीर हवेली और सम्पत्ति जो जब्त करली गई हैं वापस करदी जावेगी, तुम्हे पारितोषिक मिलेगा परन्तु वह महान देशभक्त वीर विचलित नही हुआ तव उसकी कोमल भावनाओ को जाग्रत करने का प्रयत्न किया गया उनसे कहा गया कि तुम्हारी मा विलख-विलख कर तुम्हारी याद मे रात दिन रोती है। उस वीर युवक ने उत्तर दिया मेरी मा को रोने दो जिससे कि अन्य सैकड़ो क्रातिकारियो की माताओ को न रोना पड़े यदि मैं अपने दल के भेद प्रगट करता हूं तो यह मेरी मृत्यु होगी। अन्त मे उस महान क्रातिकारी युवक को ब्रिटिश सरकार ने वरेली जेल मे यातनायें देकर मार डाला।

जोरावर सिह ब्रिटिश सरकार के गुप्तचरो की आख मे धूल डालकर पहाड़ो और जगलो मे २५-२६ वर्षों तक भटकते रहे अन्त में १९३९ मे निमोनिया से उनका फरारी की अवस्था मे ही स्वर्गवास हो गया।

लाला लाजपतराय इस वम काण्ड से इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होने उसके सम्वन्ध मे लिखा था.—

"जिस आदमी न १९१२ ई० के दिल्ली दरवार के मौके पर लार्ड हार्डिंग पर वम फेंका उसने एक स्मरणीय याद रखने लायक काम किया। उस आदमी की दिलेरी व वहादुरी अपना सानी नहीं रखती। इससे भी अधिक हौसला दिलाने वाली वात यह है कि एक शक्तिशाली शानदार साम्राज्य के सव साधन व शक्ति उस वीर का पता लगाने मे आजन्म असमर्थ सावित हुई है।" (आत्मकथा लाला लाजपतराय)

परिशिष्ट

जहा यह निश्चय पूर्वक नही कहा जा सकता कि लार्ड हार्डिंग पर वम किसने फेंका था वहां यह भी विवाद का विषय वन गया है कि वम कहा से फेंका गया था। जेम्स कैम्प वैल कैर आई० सी० यस जो भारत सरकार के गुप्तचर विभाग के निदेशक का निजी सचिव था—ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "पोलीटिकल ट्रवल इन इडिया (१९०७-१९१७) मे पृष्ठ ३२४ पर इस सम्बन्ध मे नीचे लिखा विवरण प्रस्तुत किया है:—

"जव वम फेंका गया तव वायसराय का हाथी इमारतो के एक समूह (ब्लाक) के सामने था जिसे धूलिया कटरा कहते हैं और जो देहली के प्रमुख मार्ग चादनी चौक के उत्तर में स्थित है। धूलिया कटरा एक विशाल चौकोण ब्लाक है जिसके मध्य मे एक खुला मैदान (वडा आगन) है। इस इमारत का जो भाग सडक के सामने था उसमें पजाव नेशनल वैंक था। वम काड के आखो देखे साक्षियो ने तथा जुलूस मे नियुक्त सर्वोच्च राजकीय अधिकारियो ने वम कहा से फेका गया था इस सम्वन्ध मे जो वक्तव्य दिए वे भ्रमोत्पादक और परस्पर विरोधी थे। लम्वे समय तक सरकारी क्षेत्रो में यह मान्यता वनी रही कि वम पजाव नेशनल वैंक की इमारत से फेका गया। इस सम्बन्ध मे अत्यन्त विस्तृत और गहरी जाच से यह सिद्ध नही हुआ कि वम पजाव नेशनल वैंक की इमारत पर से फेंका गया और अव इस वात की सम्भावना प्रतीत होती है कि हो सकता है कि वम उस पटरी (पेवमेंट) पर से फेंका गया हो जो कि उस चौडी सडक (३५५) के मध्य मे थी। अन्य विन्दुओ पर भी साक्षी प्राप्त कर सकना अत्यन्त कठिन था। वहुत लम्वी और विस्तृत जाच जो कि लाहौर से सिलहट (आसम) तक के विशाल क्षेत्र मे की गई उससे वे मूल्यवान सकेत मिले जिनसे सारा षडयन्त्र स्पष्ट हो गया। उन कारणो से जिनके वारे मे आगे कहा जावेगा किसी भी न्यायालय में तत्सम्वन्धी मुकदमा प्रमाणित नही किया जा सका। पर इस सीमा के रहते हुए भी उस कांड के मुख्य तथ्यो का पता लग गया था।"

उक्त सरकारी विवरण से भी यह सिद्ध होता है कि आंखो देखे साक्षियो के वक्तव्य भ्रमोत्पादक और परस्पर विरोधी थे। वम कहां से फेका गया इस सम्वन्ध मे जुलूस मे उपस्थित आखो दखे साक्षियो मे जिनमे जुलूस मे नियुक्त सर्वोच्च राजकीय पुलिस अधिकारी भी थे, मतभेद था, वे एक मत नही थे। यह तथ्य इस वात की सम्भावना प्रगट करता है कि वम एक स्थान से नही दो स्थानो से फेके गए और दो व्यक्तियो ने फेंके।

भाई परमानन्द रासविहारी वोस के निकटतम सहयोगी और मित्र थे। उन्होने अपने कई लेखो मे वायसराय लार्ड हार्डिंग पर वम फेंकने का श्रेय स्वय रासविहारी वोस को दिया था। श्री धर्मवीर से उन्होने स्वय कहा था कि वम रासविहारी वोस ने फेंका था। भाई परमानन्द ने लाहौर के 'हिन्दू' मे एक लेख मे लिखा था कि

रासविहारी लार्ड हार्डिग पर वम फेंक कर दिल्ली से निकल गए और उसी दिन उन्होने सायकाल को देहरादून मे एक सार्वजनिक सभा कर उसमे इस काड की कठोर निन्दा की।

भारत के गुप्तचर विभाग के निदेशक श्री क्लीवलैंड ने इस सम्बन्ध मे ३१ मार्च १९१५ को एक लम्बा नोट लिखा था जिसमे नीचे लिखे अनुसार विवरण दिया था।

"अमृतसर के मीरन कोट का मूल सिंह जो गदर पार्टी का नेता था और वाद को सरकार का मुखबिर वन गया उसने वतलाया कि एक रासविहारी का अत्यन्त विश्वास पात्र सहयोगी पिंगले उसके पास आया, उसके साथ एक वगाली था उसका मूलासिंह ने जो हुलिया वतलाया वह ठीक रासविहारी का ही हुलिया था। मूलासिंह ने उससे वात करते हुए पूछा कि क्या वह जानता है कि देहली मे वायसराय पर वम किसने फेंका था, उसने कहा 'हा" वाद को कपूर्थला के रामसरनदास ने वतलाया कि उसी वगाली ने वम फेंका था। पिंगले ने भी मुझे यही कहा कि वम फेंकने वाला वही व्यक्ति था। वाद को स्वय उसने ही मुझसे स्वीकार किया कि वम मैंने ही फेंका था।"

यह हम पहले ही लिख चुके हैं कि हनुवन्तसहाय ही देहली षडयत्र के क्राति-कारियो मे एक मात्र जीवित हैं। वे जानते हैं कि वम किसने फेंका परन्तु उन्होने शपथ ले रक्खी है वे यह प्रगट नही करना चाहते कि वम किसने फेंका। अभी कुछ वर्ष हुए श्री वलराज (देहली षडयत्र के दूसरे जीवित क्रातिकारी) ने दिल्ली मे अपनी मृत्यु के पूर्व अपने छोटे भाई से क्रातिकारी दल के एक सकेत शब्द (कोड वर्ड) को श्री हनुवन्त सहाय तक पहुचा देने का आदेश दिया परन्तु वलराज के छोटे भाई ने वह सदेश (जो सकेत शब्द में था) लाला हनुवन्त सहाय तक नही पहुचाया। जव लाला हनुवन्त सहाय को श्री वलराज की मृत्यु के उपरात यह ज्ञात हुआ तो वे अत्यन्त दुखी हुए। सम्वन्धित व्यक्तियो का अनुमान है कि उस सकेत सदेश का सम्वन्ध २३ दिसम्वर १९१२ की लार्ड हार्डिग पर वम फेंकने की घटना से था।

इस सम्वन्ध मे स्वय चटर्जी ने लिखा है "जव मैं लदन मे था तो रासविहारी ने मुझे एक पत्र में लार्ड हार्डिग पर वम फेंके जाने की घटना का व्यौरा लिखा था और मुझे उन्होंने इसलिए धन्यवाद दिया था कि मैंने उन्हें उस कार्य को करने का अवसर प्रदान किया था।

ब्रैम्बले की साक्षी

पी० ब्रैम्वले, डी० आई०जी० पुलिस यू० पी० ने अपनी गवाही मे कहा था—

"जैसे ही मैंने चादनी चौक में ईस्ट इडिया रेलवे बुकिंग आफिस को पार किया मैंने अपने पीछे भयानक धडाके की आवाज सुनी मैं जान गया कि वह वम है पर उसके साथ ही वार्ड के छज्जे पर से आवाज आई "शावाश मारा" वह सराहना और हर्ष पूर्ण आवाज थी मैं समझ गया कि कोई गम्भीर घटना घटी है। मैंने अपने घोड़े को पीछे घुमाया तो देखा कि हिज ऐक्सीलैंसी (वायसराय) के हौदे की पीठ से धुआ निकल रहा है। मैं हाथी के पास आया तो देखा कि छत्र हौदे के पीछे गिरा हुआ था और जमादार का मृत शरीर हौदे के पीछे लटक रहा था। हौदे की पीठ उड गई थी। हिज ऐक्सीलैंसी वेहोश होकर हौदे में गिर गए थे। मैंने हाथी को रुकवाया और उन्हें नीचे उतारा।

वायसराय की सुरक्षा के लिए सैंकडो की सख्या मे उच्च पुलिस अधिकारी, सैनिक अधिकारी जो गुप्त पुलिस का कार्य कर रहे थे और लदन के प्रसिद्ध स्काटलैंड

यार्ड के गुप्तचर और हजारो की सख्या मे पुलिस कास्टेबिल तथा पोशाक मे जुलूस मे उपस्थित थे। पुलिस और सेना ने तुरन्त सभी मकानो को घेर लिया, सभी मकानो की तलाशी ली गई परन्तु बम फेंकने वाला ऐसा अदृश्य हुआ कि सब कुछ प्रयत्न करने पर भी जो लोग चादनी चौक के मकानो मे जुलूस देखने के लिए इकट्ठे थे उनको रोक कर उनकी जाच करने पर भी बम फेंकने वाले का कोई पता नही लग सका। खान बहादुर फतेह मुहम्मद ने पजाब नेशनल बैंक के भवन को सैनिको से घिरवा लिया सबकी तलाशी ली पर तु सब व्यर्थ हुआ। बम फेंकने वाला ऐसा अदृश्य हुआ कि पुलिस उसकी परछाई को भी न पकड सकी।

माईकेल ओडायर का कथन

भारत द्रोही कुख्यात माइकेल ओडायर जो उस समय पजाब का गवरनर था उसने अपनी पुस्तक "इडिया ऐज आई नो इट" मे पृष्ठ १६६ पर इस सम्बन्ध मे इस प्रकार लिखा है "दो बगाली जो कलकत्ता से बम लाए थे और उन्होने लाहोर मे लारेंस क्लब के पास बम रक्खा था जिससे कि क्लब का चपरासी मारा गया। उन दोनो को फासी हुई थी। दूसरे बगाली ने फासी लगने के कुछ दिन पूर्व गुप्तचर विभाग के अधिकारियो को बतलाया कि उसने एक मुसलमान स्त्री के वेष मे बुर्के के अन्दर चादनी चौक मे पजाब नेशनल बैंक के सामने खडे होकर बम फेंका था जिससे वायसराय का छत्रधारी मारा गया और वायसराय जख्मी हो गया।" ओडायर ने उन दोनो बगालियो का नाम नहीं दिया।

अमरेन्द्रनाथ चटर्जी का मत

अमरेन्द्रनाथ चटर्जी ने अपनी पुस्तक "भारतेर स्वाधीनतार इतिहास" मे इस घटना के सम्ब ध मे इस प्रकार लिखा है "आम तौर पर यह विश्वास किया जाता है कि बसन्त ने एक स्त्री के वेष मे एक इमारत की छत से बम फेंका। रासबिहारी उसके सुरक्षित निकल जाने की व्यवस्था करके उसी रात्रि को देहरादून लौट आए।" अमरेन्द्र नाथ चटर्जी को यह जानकारी स्वय बसन्त कुमार मे प्राप्त हुई थी। बसन्त कुमार हार्डिंग बम काड के कुछ समय उपरात अपने पैतृक स्थान नदिया जाते हुए कलकत्ता रुका था और "श्रम जीवी समवाय" मे उसने यह बात स्वय अमरेन्द्र नाथ चटर्जी से कही थी।

मोतीलाल राय का मत

श्री अरविन्दु के क्रातिकारी शिष्य मोतीलाल राय चन्दरनगर क्रातिकारी दल के सर्वमा य नेता थे जब रासबिहारी बोस अपनी रुग्ण माता को देखने के लिए देहरा-दून से चन्दर नगर गए तो मोतीलाल राय से उनके प्रिय क्रातिकारी शिष्य गिरीष चन्द्र घोष के साथ मिले थे और उनमे इतने अधिक प्रभावित हुए थे कि उन्होने आत्म समर्पण योग को अपना ध्येय बना लिया था। इसी बीच रासबिहारी बोस की माता का स्वर्गवास हो गया और क्योकि उनकी छुट्टी समाप्त हो गई और वे देहरादून वापस लौट गए। इसके उपरात सितम्बर १९११ मे वे लम्बी छुट्टी लेकर पुन. चन्द्रनगर आए। उस समय रासबिहारी बोस, मोतीलाल राय, गिरीष चन्द्र घोष तथा प्रतुल चन्द्र गगोली मे वार्तालाप हुआ और उस समय इस विचार की सृष्टि हुई कि लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका जावे। उनका उद्देश्य भारतीयो के क्षोभ को व्यक्त करना और नौकरशाही को आतकित करना था।

मोतीलाल राय का मत था कि वायसराय पर बम फेंकने का विचार गिरीष चन्द्र घोष के मस्तिष्क की उपज थी। प्रतुलचन्द्र गगोली ने भी इसकी पुष्टि की है। रासविहारी बोस ने उस विचार को कार्यरूप मे परिणित करने का तुरन्त निश्चय कर लिया। अमरेन्द्रनाथ चटर्जी के "श्रमजीवी समवाय" में वसन्त कुमार विश्वास काम करता था। रासविहारी बोस ने वसन्त कुमार को इस कार्य के लिए चुना। वे उसे अपने साथ देहरादून ले आए और उसे इस कार्य के लिए प्रशिक्षण देने लगे। वसन्त कुमार विश्वास को आवश्यक प्रशिक्षण देकर उन्होंने बालमुकुन्द की सहायता से लाहौर मे पापुलर डिस्पेंसरी मे कम्पाऊडर रखवा दिया। २१ दिसम्बर १९१२ को वसन्त विश्वास लाहौर से देहली आ गया और मास्टर अमीरचन्द के मकान पर ठहरा, २३ दिसम्बर १९१२ को स्वय रासविहारी देहली पहुंच गए।

जहा तक बम फेंके जाने का प्रश्न है मोतीलाल राय का कहना है कि वसन्त कुमार विश्वास ने एक सुन्दर स्त्री के वेष मे चांदनी चौक के एक मकान की छत पर से बम फेंका। वसन्त कुमार विश्वास को अमरेन्द्र नाथ चटर्जी ने भेजा था और रासविहारी बोस ने उसे इस कार्य के लिए चुना था। अमीरचन्द के मकान पर वसन्त कुमार विश्वास ने स्त्री का वेश धारण किया और लक्ष्मी बाई नाम रख कर वह रासविहारी बोस के साथ घटना स्थल पर गया। बम फेंक कर उसने स्त्री के कपडे उतार कर फेंक दिये और भीड मे मिल गया।

ऐसा प्रतीत होता है कि चन्दर नगर मे श्री मोतीलाल राय के साथ जब बम फेंकने की योजना पर विचार हुआ तो वसन्त कुमार विश्वास द्वारा स्त्री वेष में बम फेंकने की बात तय हुई होगी। पर वसन्त कुमार विश्वास ने स्वय अमरेन्द्र नाथ चटर्जी से कहा था कि उसने सड़क पर से बम फेंका था। उधर ठाकुर जोरावर सिंह ने कहा था कि उन्होने बुर्का ओढ कर पजाब नेशनल बैंक की इमारत पर से बम फेंका था। जब रासविहारी बोस ने चन्दर नगर से वापस लौट कर योजना पर और अधिक गम्भीरता से विचार किया होगा तो यह सोच कर कि कही निशाना चूक न जावे अस्तु केवल एक नही दो व्यक्तियो को यह कार्य भार देना चाहिए अस्तु उन्होंने जोरावर सिंह को भी यह कार्य सुपुर्द किया। यही कारण हैं कि वसन्त कुमार विश्वास ने सडक पर से और जोरावर सिंह ने बुर्का ओढ कर पजाब नेशनल बैंक की इमारत से बम फेंका।

यह जो सदेह और भ्रम प्रचलित हो गया कि बम सड़क पर से फेंका गया अथवा पंजाब नेशनल बैंक की इमारत से फेंका गया उसका कारण यह है कि सभी जानकार लोगों ने यह मान लिया कि एक बम फेंका गया। सभी तथ्य इस बात के सूचक हैं कि एक व्यक्ति ने नहीं दो व्यक्तियों ने बम फेंके। बम फेंके जाने के उपरान्त वसन्त कुमार विश्वास और जोरावर सिंह कभी नही मिले। वसन्त कुमार विश्वास को फांसी हो गई और जोरावर सिंह फरार होकर २५-२६ वर्ष तक जगलो और पहाडो मे भटकते रहे। फांसी लगने से पूर्व वसन्त कुमार विश्वास ने अमरेन्द्र नाथ चटर्जी से तथा गुप्तचर और जेल अधिकारियों को बतलाया कि बम "मैंने फेंका था" पर ठाकुर जोरावर सिंह २५ वर्षों तक फरार रहे वे किसी से यह नहीं कह सकते थे कि बम उन्होंने फेंका। जो उनके निकट सम्बधी और मित्र इस तथ्य को जानते थे वे भी इस तथ्य को प्रगट नहीं कर सकते थे।

अध्याय १६

क्रांतिकारी देश भक्त–सूफी अम्बा प्रसाद

महान क्रातिकारी-सूफी अम्बा प्रसाद का जन्म मुरादाबाद मे कानूनगोयान मुहल्ले मे सन १८६२ ई० मे अपने पैतृक गृह मे हुआ था। उनकी जन्म तिथि उनके परिवार के सदस्यो को भी ज्ञात नही है। अनेक वार उनके घर तथा प्रेस की क्राति-कारी विचारो का प्रचार करने के कारण तलाशी हुई, और पुलिस उनकी पुस्तकें और सम्पूर्ण कागज पत्र उठा कर ले गई, अतएव उनकी जन्म तिथि के वारे मे कोई लेख उपलब्ध नही है।

सूफी जी के पिता गोविन्द्र प्रसाद जी मुरादाबाद के नवाव नब्बू खा के यहा सात रुपये मासिक वेतन पर लेखन कार्य करते थे। नवाव नब्बू खा ने सन् १८५७ ई० मे भारत के प्रथम स्वतत्रता सग्राम मे विद्रोह का झडा खडा किया था। १८५७ की सशस्त्र क्राति मे रुहेल खड क्राति का प्रमुख केन्द्र था। मुरादाबाद मे ब्रिटिश शासन समाप्त हो गया था। मुरादाबाद म केवल नवाव तथा सैनिको ने ही विद्रोह नही किया वरन वहा साधारण नागरिको ने स्वतत्रता की घोपणा की और स्वतत्रता के लिए ब्रिटिश शासन से लम्बे समय तक घनघोर युद्ध किया। जब स्वतत्रता का वह युद्ध असफल हो गया तो ब्रिटिश शासन ने अत्यन्त निर्दयता पूर्वक दमन किया। नवाव नब्बू खां को भयकर यातनाए देकर वे रहमी से मारा गया। सर्व साधारण को भयभीत करने के लिए नृशसता पूर्वक कत्ले आम किया गया। हजारो को तोपो के मुह पर बाध कर उडा दिया गया जिसमे उनके शरीर के चियडे होकर उड गए और उनके परिवार के लोग उनका अन्तिम सस्कार भी न कर सके। क्योकि मुरादाबाद ने मानवता को लज्जित करने वाले अग्रेजो के उस नृशस और अमानवीय वीभत्स अत्याचार को देखा था और उसके शिकार हुए थे, अतएव वहा के स्त्री, पुरुष, वाल, वृद्ध, उस रोमाचकारी तथा हृदय को दहलाने वाले दृश्य को भूल नही सकते थे। १८५७ तथा १८५८ की उस क्रूरतापूर्ण कहानी को मुरादाबाद के निवासी याद कर ब्रिटिश शासन के प्रति यदि गहरी घृणा को अपने हृदयो मे पोपित कर रहे थे तो यह कोई आश्चर्य की वात नही थी।

ऐसे समय जवकि मुरादाबाद की जनता मे ब्रिटिश शासन के विरुद्ध गहरी घृणा फैली हुई थी स्वतत्रता के उस प्रथम युद्ध के चार वर्प उपरात १८६२ मे सूफी अम्बा प्रसाद का जन्म हुआ। वाल्यकाल मे जब वालक अम्बा प्रसाद भारत की स्वत-त्रता के उस प्रथम युद्ध की गाथा अपने अग्रेजो से सुनता तो आत्म विभोर हो उठता। वह उस युद्ध की कहानी सुनान का आग्रह करता और जब वह किशोर अवस्था मे शिक्षा प्राप्त करने लगा तो उसे उस क्राति की कहानी और अधिक विस्तार से सुनने को मिली। क्योकि १८५७–५८ की क्रूर और रोमाचक गाथा मुरादाबाद के प्रत्येक स्त्री पुरुप को ज्ञात थी कुछ समय पूर्व हो वे उस अग्नि मे से होकर निकले थे। अतएव अम्बा प्रसाद के कोमल तथा भावनामय हृदय पर देश को स्वतत्र करने की दृढ भावना अकित हो गई।

जन्म से ही उनके दाहिने हाथ मे अगुलिया नही थी। केवल हथेली का ही कुछ भाग था, अतएव वे वाये हाथ से ही सारा कार्य करते थे परन्तु उनका लेख अत्यन्त सुन्दर था। वे व्यग मे बहुधा कहा करते थे भाई हमने १८५७-५८ मे स्वतत्रता के युद्ध मे देश के शत्रुओ अर्थात अग्रेजो से युद्ध किया था। युद्ध मे हाथ कट गया और हमारी वीरगति हो गई। अब पुन. देश की स्वतत्रता के लिए युद्ध करने के लिए पुनर्जन्म हुआ

है। हाथ की अगुलिया कटी की कटी आ गई ।

उनकी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा जालधर मुरादाबाद मे हुई। मुरादाबाद की शिक्षा समाप्त कर वे बरेली कालेज बरेली मे उच्च शिक्षा प्राप्त करने चले गए। बरेली कालेज स उन्होने स्नातक (बी. ए) की उपाधि प्राप्त की और कानून की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। जब वे अन्तिम वर्ष मे थे तभी बरेली मे ही उनका विवाह हो गया। उस समय जो युवक कालेज मे उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा हो उसका विवाह हो जाना एक सामान्य बात थी। उनकी पत्नी का नाम सुदर्शना देवी था।

शिक्षा समाप्त कर कुछ समय बरेली मे और बद को मुरादाबाद मे उन्होने अध्यापन कार्य किया। उस समय लोग उन्हें मास्टर अम्बा प्रसाद जी के नाम से सम्बोधन करते थे। उनका वैवाहिक जीवन शीघ्र समाप्त हो गया पाच वर्ष के उपरात ही उनकी स्नेहमयी प्रिय पत्नी का स्वर्गवास हो गया और वे गहरे शोक मे डूब गए। परिवार के अग्रेजो ने उन्हे बहुत समझाया कि वे दूसरा विवाह करलें क्योकि उस समय उनकी आयु पच्चीस वर्ष के लगभग थी और वे तरुण थे, परतु उन्होने दृढता पूर्वक दूसरा विवाह करना अस्वीकार कर दिया। अपनी प्रिय दिवगत पत्नी के प्रति उनका स्नेह और श्रद्धा इतनी गहन थी कि उन्होने अपने बडो के आग्रह को अस्वीकार कर दिया।

अम्बा प्रसाद जी ने स्वय मैडम ब्लावत्स्की थियासफी की संस्थापक से थियासफी की दीक्षा ली थी अस्तु उन्होने हिन्दू दर्शन का गम्भीर अध्ययन तो किया ही था अन्य धर्मों का भी गहन अध्ययन किया। अपनी प्रिय पत्नी के स्वर्गवास के उपरात शोकमग्न अम्बा प्रसाद जी रामगगा के किनारो घटो बैठ कर सोचते और गम्भीर विचार करते। लम्बे समय तक उनकी यह दशा रही लोग तब से उन्हे सूफी जी कहने लगे और मास्टर जी से अब वे अब सूफी अम्बा प्रसाद जी हो गए। उन्होने सूफी धर्म की विधिवत किसी सूफी गुरु या फकीर से दीक्षा नही ली थी। उनके गम्भीर अध्यात्मिक ज्ञान और धार्मिक विचारो के कारण ही लोग उन्हे सूफी जी कहने लगे थे।

सूफी जी के अन्तर मे देश को स्वतत्र करने की भावना तीव्र से तीव्रतर हो रही थी। अध्यापन के द्वारा उन्हे अपने स्वतत्रता प्राप्ति के लक्ष्य का मार्ग बना सकना कठिन दिखाई देने लगा। उन्होने अध्यापन कार्य समाप्त कर पत्र निकाल कर जन-जन मे स्वतत्रता की भावना जागृत करने का निश्चय कर लिया।

वे अरबी फारसी और उर्दू के प्रकाड विद्वान थे, और अग्रेजी पर भी उनका अधिकार था। उनकी लेखन शैली अत्यन्त हृदयग्राही और चुटीली थी वे ऐसी सजीव भाषा लिखते कि वह पाठक के मन को छू लेती थी। जहा वे लेखनी के धनी थे वहां उनकी वाणी मे चमत्कार था। वे अत्यन्त प्रभावशाली वक्ता थे। जब वे भाषण देते तो मानो ओजपूर्ण वाणी की अविरल धारा बहने लगती और श्रोता उसमे बहने लगते।

देश मे स्वतत्रता प्राप्ति के लिए क्रातिकारी विचारो का प्रचार करने के उद्देश्य से उन्होने 'सुदर्शन' प्रेस, स्थापित कर पत्र निकालना आरम्भ कर दिया। वे जानते थे कि उनके पत्र पर शीघ्र ही सरकार का आक्रमण होगा अस्तु उन्होने पहले से ही कई नामो से पत्रो का रजिस्ट्रेशन करवा लिया जिसमे कि यदि एक पत्र बन्द हो तो दूसरे नाम मे क्रांतिकारी विचारो का प्रचार और प्रकाशन होता रहे।

अस्तु १८८७ मे उन्होने मुरादाबाद से "सितार ए हिन्द" पत्र निकाल कर क्रांति की अग्नि प्रज्ज्वलित करना आरम्भ कर दिया। जब 'सितार-ए-हिन्द" पर

शासन का वार हुआ तो उन्होने "जाम्युल-अलूम" निकाला और जब उसको बन्द करना पड़ा तो "चार पूज" निकाला ।

"सितार-ए-हिन्द" मे जब सूफी जी अपने सम्पादकीय लेखो द्वारा क्रांति के स्फुलिंग छोडने लगे तो सरकार चौकी और उन पर शासन के विरुद्ध जन साधारण को भडकाने तथा मिथ्या प्रचार करने के लिए अभियोग चलाया गया। मुरादाबाद के डिप्टी कलक्टर सिराजउद्दीन ने उनके विरुद्ध फैसला दे दिया। अराजकता फैलाने के अपराध में उनको तीन महीने के कठोर कारावास का दड दिया गया। सूफीजी ने सेशन में अपील की उन्होने अपने अभियोग की स्वय पैरवी की और यह सिद्ध कर दिया कि उनके लेख राजद्रोहात्मक नही हैं अस्तु सेशन के न्यायालय ने उन्हे मुक्त कर दिया।

अब सूफी जी ने सितार-ए-हिन्द के अगले सस्करण मे एक कार्टून प्रकाशित किया उसमे प्रदर्शित व्यक्ति ठीक वैसे ही कपडे पहने था जैसे कि डिप्टी कलक्टर सिराज-उद्दीन पहिनते थे, परन्तु उनका मुख सुअर जैसा था। कार्टून के नीचे लिखा था "जो हाकिम इंसाफ नही करेगा उसका कयामत के दिन यही हश्र होगा।"

मुरादाबाद के समीप ही रामपुर राज्य था। वहा के नवाब अत्यन्त विलासी और दुश्चरित्र थे, प्रजा अत्याचार से पीडित थी। सूफीजी अपने पत्र मे नवाब के व्यक्ति-गत जीवन तथा उनके भ्रष्ट शासन की कडी आलोचना करते थे। एक बार जनता का रोष फूट पड़ा, रामपुर नगर मे अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई तो नवाब कुछ दिनो के लिए मुरादाबाद चले आए। सूफीजी ने अपने पत्र मे मोटे अक्षरो मे लाल स्याही से शीर्षक छापा "नवाब आए कि भाग आए" नवाब साहब ने उन पर मान-हानि का अभियोग चलाया। न्यायालय मे सूफीजी ने स्वय पैरवी की और कहा कि उर्दू में "भाग्य" को "भाग" ही लिखा जा सकता है मेरा अर्थ तो यह था कि नवाब साहब के आने से मुरादाबाद वालो के भाग्य जाग गए हैं। सूफी जी की कठोर आलोचना से क्रुद्ध होकर नवाब ने सितार-ए-हिन्द का रामपुर राज्य मे प्रवेश वर्जित कर दिया। सूफीजी ने अपने पत्र का एक विशेषाक निकाला और शीर्षक दिया "यह रामपुर नही हरामपुर है।" उनके पत्र की सैकडो प्रतिया गुप्त रूप से रामपुर पहुचती थी।

ब्रिटिश शासन सूफी जी को अत्यन्त खतरनाक समझने लगा था अतएव सर-कार उनको गिरफ्तार कर लेना चाहती थी। वे भूमिगत हो गए परन्तु पत्र बराबर निकलता था, और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह की भावना को जागृति करने का कार्य अबाध गति से करता था। वे पुलिस की आखों मे धूल झोकने तथा भेष बदलने की कला मे सिद्ध हस्त थे।

एक बार पुलिस ने उनके प्रेस पर छापा मारा। सूफीजी प्रेस मे ही थे। प्रेस के मकान मे अलमारी के आकार का बहुत बडा ताख था। सूफी जी भगवान रामचन्द्र का एक बहुत बडा चित्र ताख के अगले भाग (सामने) रख कर उसको पुष्पों से भली भाति सजा कर उसके पीछे छिप गए, वे कदके नाटे थे। उन्होने इसका लाभ उठाया और पुलिस प्रेस का कोना-कोना खोज कर वापस चली गई। कुछ दिनो के उपरात पुलिस ने पुन उस मकान को घेर लिया। सूफी जी एक परदेदार डोली मे बैठ कर जिसे चार कहार कधो पर उठाए थे मकान के पिछले गुप्त द्वार से निकल गए। एक बार सूफी जी जब अपने मकान मे थे पुलिस ने मकान को घेर लिया। एक पुराना घाघरा और ओढनी पहिन कर कूडे और मल का टोकरा सिर पर रख कर मेहतरानी

के रूप मे घू घट निकाल कर वे निकले। पुलिस वालो ने फाटक पर पूछा कि क्या सूफ़ी अम्बा प्रसाद मकान मे हैं। अपनी आवाज बदल कर स्त्री योचित्त कोमल स्वर मे उन्होंने उत्तर दिया कि मैं तो पाखाना कमाने आई थी मुझे मालूम नही अन्दर जाकर देखलो। बहुत बाद को पुलिस को पता चला कि मेहतरानी के रूप मे सूफी जी ही उनके घेरे मे निकल गए।

पर आखिर सूफी जी कब तक इस प्रकार बचते, अन्त मे वे गिरफ्तार कर लिए गए और उन कर राजद्रोह का अभियोग चलाया गया। जज की अदालत से उन्हें डेढ वर्ष का कठोर कारागार का दड मिला। उनकी सम्पूर्ण जायदाद जब्त करली गई। उनके कागज पत्र पुस्तकें आदि पुलिस ले गई। २९ अक्टूबर, १८९७ को उन्हें १८ महीने का कठोर कारावास हुआ।

यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि सूफी जी ने उस समय विदेशी वस्तुओ विशेष कर विदेशी वस्त्रो के बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओ को अपनाने का आन्दोलन खडा किया जबकि भारत मे स्वदेशी आन्दोलन का सूत्रपात भी नही हुआ था। भारत मे बगभग के आन्दोलन के साथ स्वदेशी आन्दोलन का सूत्रपात हुआ था पर सूफी जी नेउससे बहुत पहले १८९० से ही स्वदेशी का व्रत धारण करने के लिए जनता का आवाहन करना आरम्भ कर दिया था। विदेशी वस्त्रो की होली जलाने का और स्वदेशी वस्त्र धारण करने का आन्दोलन राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ने १९२१ के सत्याग्रह आन्दोलन के साथ आरम्भ किया था पर सूफी जी १८९० से अपने प्रेस के सामने विदेशी वस्त्रो की होली जलाया करते थे।

देश को स्वतंत्र करने के लिए वे सशस्त्र क्राति मे विश्वास रखते थे। अतएव वे अपने पत्र तथा भाषणों द्वारा उग्र राजनीतिक जागरण का कार्य तो करते ही थे परन्तु वे उतने ही उग्र सामाजिक क्रातिकारी थे। वे मुसलमानो तथा अछूतो से तनिक भी छुआछूत नही करते थे। उनके साथ खाना पीना और उठना बैठना वे बिना किसी सकोच के करते थे। इस दृष्टि से वे उन्नीसवी शताब्दी के नही इक्कीसवीं शताब्दी के व्यक्ति थे। यही नहीं कि वे अछूतो से भेद भाव नही रखते थे वरन उन्होंने एक मेहतर दम्पत्ति को अपने प्रेस मे नौकर रख लिया था। प्रेस मे जहा सूफी जी रहते थे वही वे दोनो स्त्री पुरुष भी रहते थे और मेहतरानी उनका भोजन बनाती थी। वे उसीका बनाया हुआ भोजन लेते थे। १८९० के उस अत्यन्त रूढिग्रस्त वातावरण मे मेहतरानी द्वारा बनाए गए भोजन खाने का और मेहतर दम्पत्ति के साथ एक मकान मे रहने का साहस सूफी जी जैसा महान क्रातिकारी ही कर सकता था। उनके इस सामाजिक क्रातिकारी आचरण से सभी उच्च जाति के हिन्दू उनके प्रति उदासीन थे कट्टर लोग उनका विरोध करते थे परन्तु सूफी जी अडिग रहे।

जब सूफी जी डेढ वर्ष का कारावास भोग कर मुक्त हुए तो उन्होने पुनः ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अपनी ओजस्वी लेखनी से लेख लिखना आरम्भ कर दिया। अब पुलिस उनके पीछे पड गई, आए दिन उनके प्रेस की तलाशी होती, उनके प्रेस मे काम करने वालो को धमकाया जाता उन्हें परेशान किया जाता। अस्तु सूफी जी ने सोचा कि कुछ समय के लिए मुरादाबाद से बाहर चले जाना चाहिए। मुरादाबाद छोडने का एक दूसरा कारण भी था। उनके मन मे यह विचार मथन चल रहा था कि देशी राज्यो मे सशस्त्र क्राति की तैयारी करना अपेक्षा कृत सरल होगा वहां की सेना को

क्रांति के लिए तैयार किया जावे और अस्त्र शस्त्र एकत्रित किये जावे। वे स्वय तो सेना मे प्रवेश पा नही सकते थे क्योकि उनका सीधा हाथ वेकार था और वे नाटे थे।

अतएव सूफी जी मुरादाबाद के दक्षिण हैदराबाद गए। निजाम उनके अरबी फारसी और उर्दू के प्रकाड पाडित्य तथा अग्रेजी भाषा पर उनके असाधारण अधिकार को देख कर अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्होने सूफी जी को ऊचा वेतन पद तथा मकान आदि की सुविधा देकर अपनी सेवा मे रखना चाहा परन्तु सूफी जी विलासिता और आराम का जीवन व्यतीत करने के लिए तो हैदराबाद गए नही थे उ होने देखा कि हैदराबाद मे उनके लक्ष्य की पूर्ति नही हो सकती अतएव उन्होने निजाम के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

सूफी जी केवल एक सफल पत्रकार, लेखक तथा प्रभावशाली वक्ता ही नही थे। उन्होने अनेक ग्रन्थो की रचना की थी। आज किसी को भी इस बात की पूर्ण जानकारी नही है कि उन्होने कितने ग्रन्थो की रचना की थी क्योकि अनेक वार उनके प्रेस तथा मकान की पुलिस ने तलाशी ली थी और उनके कागज पत्र तथा पुस्तकें आदि वह उठा ले गई थी। उनके रचे हुए जिन ग्रन्थो का कतिपय पत्रो मे उल्लेख मिलता है जो ईरान से भारत मे लोगो के पास आए उनसे पता लगता है कि उनकी रची हुई नीचे लिखी पुस्तकें के नाम उनके ईरान भक्त जानते थे।

(१) जिन्दा जावेद, (२) जिन्दा करामात, (३) जाम-ए-उलूम, (४) तीर-ब-हदफ, (५) इजतमा-ए-जिदेन, (६) जामे जम, (७) इल्मियात की किताव, (८) इल्म कियफा, (६) इल्म कास-ए-सर (१०) मार गुजीदा का अजीव व गरीव इलाज, (११) कर्नल एलकाट के लैक चर्स का उर्दू तजुर्भा, (१२) उर्दू डिक्शनरी, (१३) इलाज शमशी भाग २।

पंजाव पहुच कर उन्होने "वागी मसीहा" करके एक पुस्तक लिखी थी जिसे सरकार ने जब्त कर लिया था।

इसका कोई लेख नही मिलता कि सूफी जी ने आयुर्वेद तथा यूनानी चिकित्सा पद्धति का कब और कहा अध्ययन किया अथवा किससे उन्होने चिकित्सा करना सीखा पर वे निर्धनो तथा नगर वासियो की नि शुल्क चिकित्सा और सेवा करते थे आधाशीशी (सर दर्द) तथा विच्छू काटे की चिकित्सा के वे विशेषज्ञ माने जाते थे।

जब वे मुरादाबाद से पत्र निकालते थे सम्भवत उस समय से ही उनका लाला लाजपतराय तथा सरदार अजीत सिंह से सम्पर्क स्थापित हो गया था। वे सूफी जी के लेखो से प्रभावित थे और जब सूफी जी हैदराबाद मे थे तो लाला जी की प्रेरणा तथा निर्देशन मे निकलने वाले "हिन्दुस्तान पत्र" मे सूफी जी लिखा करते थे। उनकी लेखनी के चमत्कार से सभी प्रभावित होते थे उन्हें हैदराबाद मे ही "हिन्दुस्तान" पत्र के सम्पादकीय विभाग में काम करने का निमत्रण मिला और वे निजाम के प्रलोभन को ठुकरा कर पजाव चले आए। उन्होने देख लिया था कि हैदराबाद मे उनके लक्ष्य की पूर्ति की सम्भावना नही है। हिन्दुस्तान मे वे "शकर वावा" के नाम मे नियमित रूप से लिखते थे उनके लेखो मे क्राति का स्वर मुखरित होता था।

जिस समय सूफी जी पजाव पहुचे उस समय पजाव मे राष्ट्रीय चैतन्य जागृत हो रहा था। लाला लाजपत राय और सरदार अजीत सिंह उसकी प्रेरक शक्तिया थीं अब क्रातिकारी सूफी अम्बा प्रसाद के पहुंच जाने मे क्रातिकारी आदोलन तीव्र हो उठा।

क्रांतिकारी आन्दोलन को तीव्र बनाने के लिए अनुकूल परिस्थितियां भी उपस्थित हो गई। बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशाब्द मे पंजाब की आर्थिक स्थिति भयावह हो उठी थी। कई वर्षों से निरन्तर फसलें नष्ट हो रही थी और पंजाब में भयंकर दुर्भिक्ष की स्थिति उत्पन्न हो गई। १८९७ से १९०० के वर्षों मे पंजाब मे इन दुर्भिक्षों के कारण हजारो की संख्या मे मृत्यु हुई थी। ग्राम जनता इन भयंकर दुर्भिक्षो के कारण त्रस्त थी ही, सरकार ने १९०६ मे मालगुजारी और सिचाई (आबपाशी) मे बहुत अधिक वृद्धि कर दी। बात यह थी कि पंजाब मे जो नहरो का जाल बिछाया गया था नहर उपनिवेश स्थापित किए गए थे, शुष्क और अर्द्ध मरुभूमि मे जो जलधारा बहने लगी थी उसके परिणाम स्वरूप किसानो को लाभ हुआ था उनकी आर्थिक स्थिति कुछ सुधरी थी। सरकार ने मालगुजारी और सिचाई की दरो मे अत्याधिक वृद्धि करके किसानो को उस लाभ से वंचित कर देना चाहा। यही नहीं १९०७ मे सरकार ने भूमि हस्तान्तर करण कानून (लैंड ऐलीनियेशन ऐक्ट) बना कर भूमि के स्वामित्व पर कुछ प्रतिबन्ध लगा दिए जिसके कारण नहर उपनिवेशो मे भूमि की कीमतें बहुत गिर गई। इन सब कारणो से पंजाब के किसानो में घोर असंतोष उत्पन्न हो गया।

सरदार अजीत सिंह और सूफी अम्बा प्रसाद ने इस असंतोष को संगठित और शक्तिशाली बनाने के लिए किसान आन्दोलन खड़ा कर दिया। आगे चल कर इस आन्दोलन मे आगा हैदर, तथा सैयद हैदर रिजा भी उनके साथ आ गए और लाला लाजपतराय ने उसका नेतृत्व करना स्वीकार कर लिया। सरदार अजीत सिंह और सूफी अम्बा प्रसाद ने "भारतीय देश भक्त मंडल" तथा "भारत माता सोसायटी" नामक दो क्रांतिकारी संगठन खड़े कर किसान आन्दोलन को शक्तिशाली बनाने तथा ग्रामीण जनता की सेवा करने के लिए स्थायी माध्यम उपलब्ध कर दिए।

पंजाब भारतीय सेना को सैनिक देता था। सिक्ख, जाट, पठान भारतीय सेना की रीढ थे अतएव यह स्वाभाविक था कि पंजाब सरकार पंजाब किसान आन्दोलन से बौखला उठती, उसने दमन करना चाहा। साप्ताहिक पत्र 'पंजाबी' के संपादक और प्रकाशक को आन्दोलन का समर्थन करने के अपराध मे गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें ढाई वर्ष के कठोर कारावास का दंड दे दिया गया। सूफी अम्बा प्रसाद तथा सरदार अजीत सिंह के 'देशभक्त मंडल' तथा भारत माता सोसायटी ने अत्यंत उग्र और शक्तिशाली जन आन्दोलन खड़ा कर दिया।

२२ फरवरी, १९०७ को दमन के विरुद्ध विरोध दिवस मनाया गया सम्पूर्ण पंजाब मे जन आन्दोलन भड़क उठा। सरदार अजीत सिंह और सूफी अम्बा प्रसाद सारे पंजाब मे दौरा कर रहे थे उनके ओजस्वी भाषणो से पंजाब मे अभूतपूर्व उत्साह फूट पड़ा। उसी समय पंजाब मे प्लेग का प्रकोप हुआ हजारो की संख्या मे सर्व साधारण जन चिकित्सा के अभाव मे मर गए।

मालगुजारी सिचाई की दरो मे अत्याधिक वृद्धि, दुर्भिक्ष, प्लेग से ग्रामीण जन संख्या त्रस्त और क्षुब्ध तो थी ही, उस पर सरकार के दमन से समस्त पंजाब में भयंकर असंतोष व्याप्त हो गया। सूफी अम्बा प्रसाद और सरदार अजीत सिंह अपने भाषणो से उस असंतोष की अग्नि को और अधिक भड़का रहे थे। उन्होंने उस किसान आन्दोलन को देश की स्वतंत्रता के आन्दोलन का रूप दे दिया। वे रात दिन गांवो मे घूम कर प्रचार करते, उनके क्रांतिकारी भाषणों के परिणाम स्वरूप केवल किसानो में ही नही सैनिकों में भी घोर असंतोष और अशांति उत्पन्न हो गई।

सूफी अम्बा प्रसाद और अजीत सिंह अपने भाषणों में केवल बढ़ी हुई मालगुजारी और सिंचाई की ही बात नहीं करते थे वे किसानों से कहते कि जब तक भारत से अंग्रेजों को निकाल बाहर नहीं किया जाता तब यह कष्ट दूर नहीं हो सकते। यह सब हमारी दासता का अभिशाप है। वे कहते कि तीस करोड़ भारतीय यदि निश्चय करलें तो ब्रिटिश शासन और सत्ता को भारत से उखाड़ फेंका जा सकता है। अतएव अंग्रेजों से मत डरो, उनकी सैनिक शक्ति से भयभीत न हो सेना मे अधिकांश तुम्हारे भाई बन्धु हैं, यदि मरना है तो भारत माता को स्वतंत्र करने के पावन यज्ञ मे मरो और वीर गति प्राप्त करो। माता की स्वतंत्रता के युद्ध में मरना इस प्रकार भूख और प्लेग से कीड़े मकोड़ों की तरह मरने से कहीं श्रेष्ठ और गौरवमयी होगी।

"भारतीय-देशभक्त-मंडल" और "भारत माता—सोसायटी" (समिति) के धुआंधार प्रचार से और सरदार अजीत सिंह, सूफी अम्बा प्रसाद और उनके क्रांतिकारी सहयोगियों के द्वारा प्रज्ज्वलित अग्नि के परिणाम स्वरूप केवल ग्रामीण क्षेत्रों में ही नहीं रावलपिंडी, लाहौर, अमृतसर आदि बड़े नगरों में भी विशाल प्रदर्शन हुए। रावलपिंडी में सेना और इन प्रदर्शनकारियों में जम कर युद्ध हुआ। रावलपिंडी के पांच प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित वकीलों ने प्रदर्शनकारियों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की। सरकार ने उन पांचों वकीलों को न्यायालय में उपस्थित होने की आज्ञा दे दी। सूफी अम्बा प्रसाद तथा सरदार अजीत सिंह ने इसका विरोध करने के लिए एक विशाल प्रदर्शन का आयोजन किया। प्रातःकाल से ही न्यायालय के अहाते में बहुत बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारी एकत्रित होने लगे। सरकार ने भयभीत होकर वकीलों के विरुद्ध निकाली गई आज्ञा (सम्मन) वापस लेली।

इस आन्दोलन का परिणाम यह हुआ कि सेनाओं में भी असंतोष उत्पन्न हो गया और अशांति के चिन्ह दृष्टिगोचर होने लगे। क्योंकि भारतीय सेनाओं में पंजाब के सैनिक बहुत बड़ी संख्या में थे। पंजाब के ग्रामीण परिवारों से वे आए थे, अपने भाई बन्धुओं पर होने वाले दमन से क्षुब्ध थे। भारतीय क्रांतिकारी पंजाबी सैनिकों के इस असंतोष का लाभ उठा कर उन्हें क्रांति के लिए उकसा रहे थे और उनका भारतीय सेनाओं से सम्पर्क स्थापित हो गया। दसवीं जाट रैजीमेंट में एक सैनिक विद्रोह के षड्यंत्र का सरकार को पता चल गया। उस जाट रैजीमेंट का एक भाग जो कलकत्ता के फोर्ट-विलियम में नियुक्त था—उसको बंगाल के युगान्तर क्रांतिकारी दल ने विद्रोह करने के लिए तैयार कर लिया था।

इससे भारतीय सेनाओं के तत्कालीन प्रधान सेनापति लार्ड किचनर शंकित हो उठे। उन्होंने ब्रिटेन के प्रधान मंत्री को लिखा "कि जब तक इन ग्रामीण कृषि सम्बन्धी कानूनों में संशोधन नहीं किया जाता और लाला लाजपतराय और सरदार अजीत सिंह को गिरफ्तार नहीं किया जाता मैं भारतीय सेनाओं की राज्य भक्ति का आश्वासन नहीं दे सकता। यदि मेरे सुझाव को अमान्य किया गया तो मैं पद से त्याग पत्र दे दूंगा।"

उस समय ऐसा प्रतीत होता था कि मानो सम्पूर्ण भारत में असंतोष और क्षोभ की अग्नि धधक रही हो। १९०५ में बंगभंग के परिणाम स्वरूप जो उग्र क्रांतिकारी आन्दोलन तथा बहिष्कार आन्दोलन उठ खड़ा हुआ था उससे सम्पूर्ण बंगाल क्षुब्ध था। उसकी चिनगारियां महाराष्ट्र में पहुंच रही थीं और लोकमान्य तिलक के नेतृत्व में महाराष्ट्र में भी उग्र क्रांतिकारी भावना जागृति हो चुकी थी। पंजाब धधक रहा था,

और १६०७ का वर्ष भारत की स्वतंत्रता के प्रथम युद्ध १८५७ का स्वर्ण जयन्ती वर्ष था। १८५७ की सशस्त्र क्राति को पचास वर्ष पूरे हो रहे थे। ब्रिटेन और भारत में ब्रिटिश अधिकारियो और राजनीतिज्ञो को यह आशंका थी कि भारतीय क्रातिकारी सशस्त्र विद्रोह का प्रयत्न करेंगे। उस समय यह साधारण चर्चा सुनाई पडती थी कि उस वर्ष पुन. भारत मे सशस्त्र विद्रोह होगा। ब्रिटिश सरकार सशक और सतर्क थी।

लार्ड किचनर के प्रस्ताव का परिणाम यह हुआ कि १८१८ के विनियम तीन के अन्तर्गत लाल लाजपतराय और सरदार अजीत सिंह को बिना अभियोग चलाए गिरफ्तार कर कारागार मे बन्द कर देने की आज्ञा प्रसारित करदी गई। लाला लाजपत राय को तो तुरन्त गिरफ्तार कर लिया गया परन्तु सरदार अजीत सिंह सरलता से हाथ नही आए वे फरार हो गए परन्तु अ तत. गिरफ्तार कर लिए गए और लाला जी और अजीत सिंह दोनो को ही मांडले-बरमा मे भेज दिया गया।

किसानो के असतोष को शात करने के लिए पजाब सरकार के दबाव डालने पर भी कि इससे पंजाब सरकार की जनता की दृष्टि मे सरकार की प्रतिष्ठा गिर जावेगी वायसराय "मिंटो" ने भारत सचिव "मारले" से सहमति लेकर पजाब के माल-गुजारी और सिंचाई की दरो मे वृद्धि करने के बिलो को स्वीकृत प्रदान नहीं की। किस न आदोलन का जनमानस पर इतना गहरा प्रभाव पडा था कि तत्कालीन पजाब के लैफ्टीनेंट गवरनर "सर डेनियल इबट्सन" ने अपने प्रतिवेदन मे लिखा कि सम्पूर्ण पजाब में ब्रिटिश विरोधी भावना की लहर फैली हुई है। ब्रिटिश विरोधी प्रचार इतना उग्र है कि सम्पूर्ण प्रान्त मे गम्भीर अशांति उत्पन्न हो गई।"

लाल लाजपतराय तथा सरदार अजीत सिंह के गिरफ्तार हो जाने पर आंदोलन का नेतृत्व सूफी अम्बा प्रसाद के कंधो पर आ गया परन्तु उन्हें लालचन्द फलक, भाई परमानन्द, पिंडीदास और सरदार अजीत सिंह के भाई किशन सिंह का सहयोग प्राप्त था। पजाब मे इस समय भयकर दमन का चक्र चल रहा था धरपकड बहुत बड़े पैमाने पर हो रही थी अस्तु सूफी अम्बा प्रसाद सरदार अजीत सिंह के भाई किशन सिंह तथा भारत माता सोसयटी के मत्री महता आनन्द किशोर के साथ नेपाल चले गए। सूफी जी की योजना यह थी कि वहा बैठकर सशस्त्र विद्रोह का संगठन किया जावे और नेपाल के शासको से भी भारत में सशस्त्र विद्रोह के लिए सहायता प्राप्त की जावे। परन्तु नेपाल का वास्तविक शासक राणा प्रधान मत्री का एक प्रकार से कैदी था। सारी सत्ता प्रधानमंत्री के हाथ मे थी। उसने सूफी अम्बा प्रसाद को गिरफ्तार कर भारत वापस भेज दिया। वे लाहौर लाए गए और उन पर 'इडिया' नामक पत्र मे लेख लिखने तथा राजद्रोह का अभियोग चलाया गया। किन्तु उनके विरुद्ध कोई प्रमाण न मिल सकने के कारण वे छूट गए।

सूफी जी ने एक चमत्कार और किया। उन्हे यह पता चला कि पंजाब सरकार उनके "हिन्दुस्तान" मे प्रकाशित एक लेख पर पुन उन पर राजद्रोह का अभियोग चलाने पर विचार कर रही है अस्तु वे छिप कर काश्मीर चले गए। उन्होंने वहां काश्मीर राज्य के अंग्रेज रेजीडेंट के बगले पर झाड़ू देने और सफाई करने की नौकरी करली। उन्होने वहां अपने को एक अपढ़ निरक्षर भृत्य के रूप मे ही प्रदर्शित किया। उस समय ब्रिटिश सरकार रूस से बहुत शकित और भयभीत थी क्योकि जारशाही रूस की दृष्टि भारत पर थी। काश्मीर रूस से मिला हुआ है ब्रिटिश कूटनीतिज्ञों का विचार

था कि भारत की सीमा सुरक्षा की दृष्टि से कश्मीर पर भारत सरकार का सीधा शासन होना चाहिए। अस्तु भारत सरकार का वैदेशिक विभाग यह षडयत्र रच रहा था कि कश्मीर को हडप लिया जावे। कश्मीर का अग्रेज रैजीडैंट इस आशय के जाली पत्र तथा दस्तावेज आदि बनवा रहा था कि यह प्रमाणित किया जा सके कि कश्मीर के महाराजा रूस से साठ-गाठ कर रहे हैं और इस आधार पर महाराजा को अपदस्थ कर कश्मीर को ब्रिटिश राज्य मे मिला लेने का भयकर कुचक्र और षडयत्र रचा जा रहा था। अपढ बने हुए नौकर को विदेशी विभाग के अग्रेज अधिकारियो से अग्रेजी मे रैजीडैंट से हुई बातो से इस षडयत्र का ज्ञान हो गया था। अतएव एक दिन अनुकूल अवसर पाकर उन्होने रैजीडैंट की उस अलमारी मे से जिसमे गोपनीय कागज रहते थे। कश्मीर को हडपने सम्बन्धी षडयत्र के सभी कागज पत्र और दस्तावेज आदि निकाल लिए और वे सीधे कलकत्ता गए वहा जाकर उन्होने वे सभी कागज-पत्र "अमृत बाजार पत्रिका" के यशस्वी सपादक मोतीलाल घोष को दे दिये और षडयत्र का सारा हाल उन्हे बतला दिया। श्री मोतीलाल घोष ने उन पत्रो के चित्र अमृत बाजार पत्रिका मे छाप कर षडयत्र का भडाफोड कर दिया। भारत के राजनीतिक क्षेत्र मे भूकम्प आ गया। उसका परिणाम यह हुआ कि कश्मीर समाप्त होने से बच गया। सूफी जी बाद को अपने मित्रो से व्यग मे कहा करते थे। भाई हमने कश्मीर को हडपे जाने से बचा दिया पर कश्मीर के महाराजा ने हमको एक शाल भी भेंट नही किया। इसी प्रकार उन्होने अम्बाला के डिप्टी कमिश्नर के यहा गूगे बनकर फर्राश की नौकरी करली। कमिश्नर साहब की कोठी पर अग्रेज अधिकारियो से जो प्रशासन और किसान आन्दोलन सम्बन्धी गुप्त बातें होती वे सारी की सारी अमृत बाजार पत्रिका मे प्रकाशित होतीं। कमिश्नर परेशान था गुप्तचर परेशान थे पर उस गूगे नौकर पर किसी को सदेह नही हुआ।

कुछ समय के उपरात सरदार अजीत सिह छूट कर आ गए पुन: वे दोनों क्रातिकारी सगठन को सुदृढ करने मे जुट गए। १९०८ मे सरदार अजीत सिह और सूफी जी ने क्रातिकारी साहित्य प्रकाशित करने के उद्देश्य से "भारत माता बुक सोसायटी" स्थापित की। सूफी जी द्वारा लिखित "बागी-मसीहा" अथवा "विद्रोही ईसा" इसी प्रकाशन सस्था ने प्रकाशित की थी जिसे बाद मे सरकार ने जब्त कर लिया।

इसी वर्ष १९०८ मे लोकमान्य तिलक पर केसरी और मराठा मे लिखे लेखो पर राजद्रोह का अभियोग चलाया गया और उन्हें ६ वर्ष के कारावास का दड दे दिया गया। १९०९ मे सूफीजी ने क्रातिकारी विचारो का प्रचार करने के उद्देश्य से "पेशवा" पत्र प्रकाशित करना आरम्भ किया। उस समय भारत मे क्रातिकारी भावना वेगवती हो उठी थी। महाराष्ट्र, मद्रास, बगाल मे क्रातिकारी आन्दोलन अत्यन्त शक्तिशाली और तीव्र हो उठा था। भारत सरकार उस अग्नि से पजाब को अछूता रखना चाहती थी क्योकि पजाब उनका सैनिक क्षेत्र था अतएव सरकार द्वारा पजाब मे भयकर दमन आरम्भ हो गया। देशभक्त मडल के सभी सदस्य साधू का भेष धारण कर पर्वतीय प्रदेश मे चले गए परन्तु गुप्तचरो ने वहा भी उनका पीछा नही छोडा।

सरकार ने अजीत सिह, किशन सिंह, अम्बा प्रसाद सूफी, लालचन्द फलक नन्द गोपाल, ईश्वरी प्रसाद, मुशीराम और जियाउल हक पर राजद्रोह का अभियोग चलाया। सरदार अजीत सिह और सूफी अम्बा प्रसाद नही पकड़े जा सके वे गुप्त रूप

से भारत से निकल कर ईरान चले गए। भारत सरकार को यह ज्ञात हो गया था कि सरदार अजीत सिंह और सूफी अम्बा प्रसाद जो फरार हैं भारत से निकल कर विदेशो में जाने का प्रयत्न कर रहे हैं। अतएव भारत की सीमा पर कड़ी निगरानी की व्यवस्था की गई थी जिससे कि वे भारत की सीमा को पार न कर सके। सरदार अजीत सिंह और सूफी अम्बा प्रसाद किस प्रकार भारत की सीमा पार कर ईरान पहुंचे उसकी बहुत लम्बी भयानक और रोमांचकारी कहानी है। सूफी अम्बा प्रसाद कभी स्त्री का भेष धारण करते, सरदार अजीत सिंह मुसलमान फकीर का वेश धारण करते। एक बार तो सरदार अजीत सिंह और सूफी अम्बा प्रसाद को बड़े-बड़े लकड़ी के सन्दूको में बन्द होकर ऊंटो की पीठ पर सन्दूको को लदवा कर जाना पड़ा। परन्तु भारत माता की स्वतत्रता के लिए उन्होंने अपने जीवन को अर्पित कर दिया था अतएव वे इस अत्यन्त जोखिम और कष्ट भरी यात्रा से घबराये नही और किसी प्रकार परशिया (ईरान) पहुंच गए। परशिया (ईरान) मे हैदराबाद के मिर्जा अब्बास एक अन्य क्रांतिकारी पहले से पहुंचे हुए थे। वे १९०६-७ मे युगान्तर दल के सम्पर्क मे आए थे और अलीपुर षडयत्र में उनका नाम था, व ईरान चले गए और क्योंकि वे सूफी मत के विद्वान थे वे वहा सूफी धर्म का प्रचार तथा ब्रिटिश विरोधी भावना उत्पन्न करने लगे।

यद्यपि परशिया (ईरान) स्वतत्र राष्ट्र था परन्तु प्रथम महायुद्ध के पूर्व ही उस पर ब्रिटेन का बहुत अधिक प्रभाव हो गया था। एक प्रकार से वह ब्रिटेन के प्रभाव क्षेत्र मे आ गया था वह नाम मात्र का स्वतत्र था। परशिया (ईरान) पर ब्रिटेन का इतना गहरा प्रभाव और नियत्रण था कि परशिया की सरकार ने अपनी राजस्व प्रणाली का पुर्नसगठन करने के लिए एक अमेरिकन विशेषज्ञ स्कुस्टर को आमन्त्रित किया। परन्तु ब्रिटेन का विरोध करने पर उस राजस्व प्रणाली के पुर्नसगठन का विचार छोड देना पडा और उस विशेषज्ञ को परशिया शीघ्र छोडने पर विवश कर दिया गया। स्कुस्टर ने अपने कटु अनुभव "दी स्ट्रैंगलिंग आफ परशिया" नामक पुस्तक मे विस्तार से लिखे हैं।

अस्तु सूफी अम्बा प्रसाद और अजीत सिंह के परशिया (ईरान) पहुंच जाने पर भी वे सुरक्षित नही थे। ब्रिटिश सरकार को जब यह ज्ञात हो गया कि वे परशिया (ईरान) पहुच गए हैं तो ब्रिटिश गुप्तचर उनको वहा भी गिरफ्तार करने का प्रयत्न करने लगे। पर सूफी अम्बा प्रसाद का फारसी भाषा का प्रकाड पाडित्य तथा सूफी धर्म और दर्शन के गहन ज्ञान ने उसकी सहायता की। ईरान मे सूफी धर्म को मानने वाले बहुत बडी सख्या मे हैं। सूफी अम्बा प्रसाद के फारसी भाषा मे धार्मिक प्रवचनो ने उन्हें आदर और श्रद्धा का केन्द्र बना दिया। ईरान के लोग उन्हे "हिन्दू पीर" कहते थे वे मस्जिदो में प्रवचन करते और फारसी की शिक्षा देते थे। यही कारण था कि वे ब्रिटिश गुप्तचरो से बच सके।

परशिया (ईरान) मे यद्यपि सामन्तो वर्ग तथा शेखो को ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने खरीद लिया था परन्तु सर्व साधारण मे ब्रिटिश विरोधी भावना व्याप्त थी, क्योकि वे देख रहे थे कि धीरे-धीरे ब्रिटेन और रूस ईरान को अपना आधीन देश बना कर बाट लेने का षडयत्र कर रहे हैं। अस्तु सूफी जी और सरदार अजीत सिंह ने ब्रिटिश विरोधी सगठन बना कर राष्ट्रीय भावना वाले ईरानियो का सहयोग प्राप्त कर लिया। सूफी अम्बा प्रसाद ने वहा फारसी मे "आबेहयात" पत्र निकाला और ब्रिटेन विरोधी प्रचार करने लगे।

उस समय संसार पर प्रथम विश्व युद्ध के बादल मडरा रहे थे। भारतीय क्रातिकारी योरोप, अमेरिका मे सक्रिय थे। वे अपने प्राणो को हथेली पर रख कर भारत की स्वतत्रता के लिए प्रयत्नशील थे और स्काटलैड यार्ड के गुप्तचर सम्पूर्ण योरोप मे उनका पीछा कर रहे थे। जब प्रथम विश्व व्यापी युद्ध छिड गया और टर्की भी जरमनी के साथ युद्ध मे शामिल हो गया तो भारतीय क्रातिकारी और भी अधिक सक्रिय हो उठे। बर्लिन कमेटी ने जरमन सरकार से सधि करली और राजा महेन्द्र प्रताप और बरकतउल्ला के नेतृत्व मे एक मिशन परशिया और अफगानिस्तान आया। भारतीय क्रातिकारियो का प्रयत्न यह था कि जरमनी मे ईरान और अफगानिस्तान की ओर से पश्चिम सीमा पर और गदर पार्टी के क्रातिकारी सुदूर पूर्व की ओर से भारत की पूर्वी सीमा पर सैनिक अभियान करें, तथा जरमनी से मिले हुए अस्त्र शस्त्रो की सहायता से महाविप्लवी नायक "रासबिहारी बोस" तथा "जतिन–बाघा" के नेतृत्व मे भारत मे सशस्त्र क्राति हो।

सरदार अजीत सिह तो युद्ध छिडते ही टर्की चले गए अतएव ईरान मे भारतीय क्रातिकारी केन्द्र का सचालन अकेले सूफी अम्बा प्रसाद के कधो पर आ गया। परन्तु वे अत्यत मुस्तैदी से भारत की स्वतत्रता के इस अभियान मे जुट गए। राजा महेन्द्र प्रताप, बरकत उल्ला खॉ तथा बर्लिन कमेटी के अन्य क्रातिकारियो तथा जरमनी और टर्की के सैनिक मिशन से उन्होंने सम्बन्ध स्थापित कर लिया।

ब्रिटिश सरकार इस गठबन्धन से बहुत भयभीत हो गई क्योंकि टर्की का सुल्तान मुस्लिम जगत का खलीफा था अतएव मुसलमान जनता उसको अत्यन्त श्रद्धा से अपने धार्मिक नेता के रूप मे देखती थी। अब ब्रिटिश सरकार ने परशिया मे जो भी ब्रिटिश विरोधी केन्द्र थे उन पर अपना सैनिक अधिकार स्थापित करने का निश्चय कर लिया।

शीराज मे सूफी अम्बा प्रसाद ने ब्रिटिश विरोधी अभियान खडा कर दिया। जब ब्रिटिश सेना ने शीराज पर अधिकार करना चाहा तो युद्ध हुआ। स्वय सूफी अम्बा प्रसाद एक हाथ रहते हुए भी पिस्तौल से लड़े। पराजय होने पर ब्रिटिश अधिकारियो ने सूफी जी तथा उनके अन्य साथियो को गिरफ्तार कर लिया। उनका कोर्ट मार्शल हुआ और उन्हे गोली मार देने का निर्णय लिया गया। वे कैद कर लिए गए।

जिस कोठरी मे वे कैद थे प्रात काल जब उन्हे गोली मारने के लिए ले जाने के लिए कोठरी खोली गई तो देखा गया कि वे समाधि अवस्था मे हैं। केवल उनका शव शेष है वे महाप्रयाण कर चुके हैं।

२१ (इक्कीस) जनवरी १९१७ को वह महान क्रातिकारी देशभक्त भारत माता को स्वतत्र करने के प्रयत्न मे विदेश (शीराज–ईरान) मे चिर निद्रा मे सो गया उसे अपनी मातृभूमि की गोद मे मरन का भी सौभाग्य प्राप्त नही हुआ।

ब्रिटिश अधिकारियो ने यह प्रचार किया कि सूफी अम्बा प्रसाद ने आत्म हत्या करली पर ईरान मे सूफी जी के प्रति श्रद्धा रखने वाले ईरानवासी यह मानते थे कि ब्रिटिश अधिकारियो ने उन्हें विष दिया था। बात यह थी कि जब ब्रिटिश अधिकारियो ने सूफी अम्बा प्रसाद को कैद किया तो ईरान सरकार ने कहा कि उनके विरुद्ध यदि आवश्यकता हुई तो ईरान की अदालत मे अभियोग चलाया जावेगा। परन्तु ब्रिटिश अधिकारियो ने यह सोच कर कि ईरान मे सूफी जी को बहुत श्रद्धा और आदर की

दृष्टि से देखा जाता है अस्तु ईरान के अधिकारी उन्हें मुक्त कर देंगे। ईरान की सरकार की इस माँग को ठुकरा दिया। अतएव उन्होंने उ हें ईरान सरकार के सुपुर्द न कर जहर देकर मार दिया।

दैनिक मिलाप के सम्पादक श्री रणवीर सिंह ने "ईरान मे पाच दिन" शीर्षक लेख मे लिखा है। ईरान पहुचने के कुछ दिन बाद ही सूफी अम्बा प्रसाद जी ने अपना नाम बदल लिया। ईरान के लोग उन्हें "सूफी मोहम्मद हुसैन" के नाम से जानते थे। इस नाम से वे कई अखबारो मे लेख लिखते थे। उन अखबारो के नाम थे "हयात" जामेजिम, "बरकबरीद" और "इन्तकाम।" अन्तिम समाचार पत्र आजाद हिन्द सोसायटी प्रकाशित करती थी। सूफी साहब 'मुहम्मद हुसैन' के नाम से उसका सपादन करते थे। वे बच्चो को अरबी और अग्रेजी पढाने का काम भी करते थे। आज से कुछ वर्ष पूर्व भारत मे ईरान के राजदूत "अली असगर हिकमत" ने मुझे स्वय बतलाया कि "सूफी साहब मुझे अग्रेजी पढाते थे" कई वर्ष तक वे शीराज के अन्दर हमारे मेहमान खाने मे रहते रहे।"

"शीराज के ब्रिटिश कौंसल के सैनिको ने जब सूफी अम्बा प्रसाद और उनके साथियो को कैद कर लिया तो ईरान की सरकार ने कहलाया कि वह सभी कैदियो को ईरानी सरकार के हवाले कर दे। यदि उस पर अभियोग चलाना होगा तो ईरान की सरकार चलायेगी। परन्तु अग्रेजो ने इस बात को स्वीकार नही किया। अग्रेजो ने अपनी सैनिक अदालत बिठाई और १७ जनवरी को उस सैनिक यायालय ने सब अभियुक्तो के विरुद्ध प्राण दड का निर्णय दे दिया।"

"२१ जनवरी को प्रात काल जब उनकी कोठरी खोली गई तो सूफी साहब समाधि अवस्था मे दीवार के सहारे बैठे मिले। उनका मृत शरीर था प्राण निकल चुके थे। अग्रेजो ने यह प्रचार किया कि सूफी जी ने जहर खाकर आत्म हत्या करली है लेकिन ईरानियो ने चिल्ला-चिल्ला कर कहा कि सूफी साहब को अग्रेजो ने जहर दिया है।"

"सूफी जी के बलिदान के उपरांत उनके नीचे लिखे साथियो को प्राण दण्ड दिया गया। सरदार बसन्त सिंह गोदा (उपनाम अब्दुल अजीज), गेंदाराम सिधी, जितेन्द्र नाथ उपनाम दाऊद अली। सूफी जी को शीराज मे ही गाडा गया और उनके भक्तो ने उनका मजार बना दिया। पर उसका अब कोई चिन्ह शेष नही रहा क्योकि वहा अब फुटबाल का खेल मैदान बन गया है।"

खेद है कि भारत माता के उस सपूत को जिसने जीवन पर्यन्त मातृभूमि को स्वतत्र करने के लिए युद्ध किया और ब्रिटिश साम्राज्यवाद से युद्ध करते हुए वीरगति प्राप्त की और माता की बलिवेदी पर अपने प्राणो का उत्सर्ग कर दिया देश उसे भूल गया। उसका कोई स्मारक नही बना, उसकी यशोगाथा नही गाई गई, उसकी आज तक कोई जीवनी प्रकाशित नही हुई। हम भारतियो की कृतघ्नता का इससे अधिक लज्जा जनक उदाहरण इतिहास मे ढू ढने पर भी नही मिल सकता।

देश ही नहीं मुरादाबाद जहां सूफी जी का जन्म हुआ, बालपन और युवा अवस्था व्यतीत हुई, वहा भी कोई उन्हें नहीं जानता। उनके कोई सतान तो थी नहीं मुरादाबाद मे कानून गोयान मुहल्ले मे उनका पैतृक गृह आज भी खडा है, जहा उनका जन्म हुआ था। वह "भटनागर उपकारक फड" के अधिकार मे है और उसमें

किरायेदार रहते हैं।

आज राजनीतिक सत्ता की इस अशोभनीय होड मे हम भारत वासी भूल गए कि जिन बलिदानी वीरो की हड्डियो पर भारत की स्वतत्रता का यह भव्य भवन खडा है यदि हमने उनके प्रेरणादायक जीवन की पावन गाथा आने वाली पीढियो को नही सुनाई तो मातृभूमि की बलिवेदी पर आहुति देने की वह परम्परा समाप्त हो जावेगी। और हमारी स्वतत्रता खतरे में पड जावेगी।

जिस कवि ने गाया था:—

शहीदो की चिताओ पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालो का यही बाकी निशां होगा॥

वह क्या जानता था कि भारतवासी स्वतत्र हो जाने के उपरात अपने उन शहीदो को जिनके बलिदान के फलस्वरूप देश स्वतत्र हुआ विस्मृत कर देंगे।